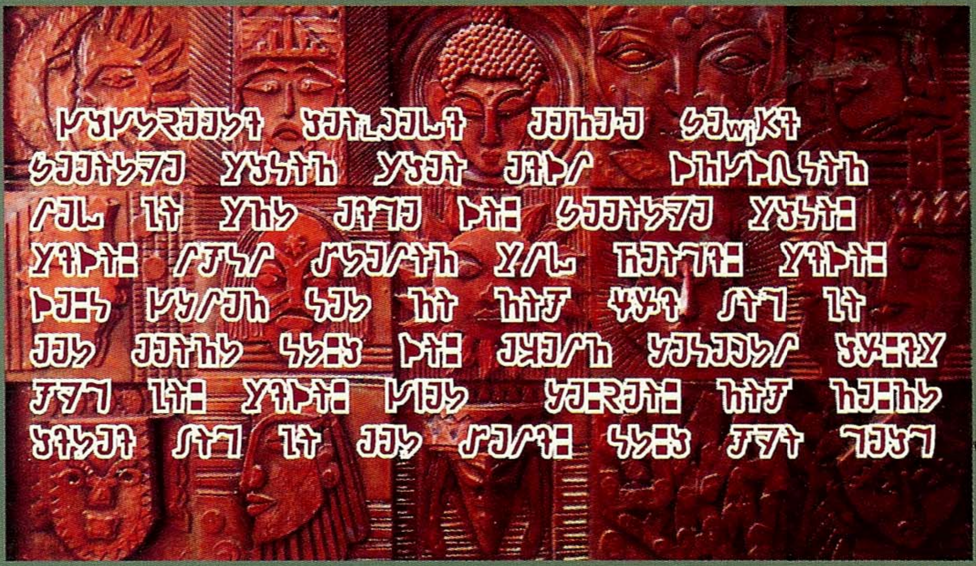
मार्गदर्शन

खोरठा

भाषा एवं साहित्य

(उद्भव एवं विकास)



डॉ. बी.एन. ओहदार

मार्गदर्शन पब्लिकेशन

मार्गदर्शन

खोरठा

भाषा एवं साहित्य

(उद्‌भव एवं विकास)

लेखक

डॉ. बी.एन. ओहदार

MARGDARSHAN PUBLICATION

मार्गदर्शन पब्लिकेशन

राँची, झारखण्ड

प्रकाशक

मार्गदर्शन पब्लिकेशन
अपर बाजार, राँची–834001
मो. 9835325084

मुख्य वितरक

उपकार बुक सेन्टर
सरस्वती मार्केट, अपर बाजार
राँची, झारखण्ड
मो. 8789218991

संस्थापक
बीरेन्द्र कुमार महतो

प्रथम संस्करण : 2007
द्वितीय संस्करण : 2012
तृतीय संस्करण : 2017

मूल्य : **180 रु.** मात्र

KHORTHA BHASHA EVAM SAHITYA (UDBHAV EVAM VIKAS)

Price : Rupees **180.00** Only

आभार

प्रथम संस्करण

इस पुस्तक के संबंध में कुछ भी कहने से पहले मैं अपने परम श्रद्धेय गुरूजनों डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. बी.पी. केशरी, डॉ. बासन्ती दी, डॉ. रोज करकेट्टा, डॉ. ए. के. झा, डॉ. गिरिधारी गाँझू, डॉ. के.सी. टुडू, डॉ. एच.एन. सिंह आदि का चरणरज अपने माथे में लेना चाहुँगा जिन्होंने मेरे अन्तःस्थल में अपनी मातृभाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम की लौ जलायी और हमारा यह छोटा सा प्रयास उनके सान्निध्य, स्नेह एवं प्रेरणा का ही प्रतिफल है।

खोरठा भाषा और साहित्य के उद्भव और विकास से सम्बन्धित पुस्तक की मांग छात्रों और खोरठा के अन्य पाठकों के बीच वर्षों से रही है। इस पुस्तक के प्रकाशन की योजना भी वर्षो पहले बनी थी किन्तु कई कारणों से प्रकाशन संभव नहीं हो पाया। उनमें से प्रथम कारण अर्थ का अभाव रहा है और दूसरा कारण निश्चय न कर पाना कि इसे हिन्दी में प्रकाशित किया जाय या खोरठा में।

दूसरी ओर अध्ययन-अध्यापन की प्रकाशित सामग्री की माँग के भारी दबाव जिसे मैं भी खोरठा के एक प्राध्यापक की हैसियत से सिद्दत से महसूस कर रहा था।

अन्ततः इसके प्रकाशन का निर्णय भारी आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद लेना पड़ा। इसमें हमारी मदद की खोरठा भाषा साहित्य-संस्कृति अकादमी एवं सुचिता कम्प्यूटिंग की नीलिमा, श्रेयान एवं श्रेया ने पुस्तक प्रकाशन का बीड़ा उठाकर। इसपर भी मुझे कई समझौते करने पड़े। उनमें से सबसे कष्टदायक बात थी कि प्रकाशन बजट को कम करने के लिए पुस्तक के आकार को छोटा करने की, जिसके कारण इस पुस्तक में भाषा-साहित्य से संबंधित कई महत्वपूर्ण सामग्रियाँ सम्मिलित नहीं की जा सकीं। किन्तु इस आश्वस्ति के साथ पुस्तक प्रकाशन पर सहमति हो पायी कि अगले संस्करण में शेष सारी सामग्रियाँ सम्मिलित की जाएँगी।

यह पुस्तक आपके हाथ में है। इससे संबंधित प्रतिक्रिया एवं सुझावों की प्रतीक्षा मुझे बेसब्री से होगी।

बी.एन. ओहदार

द्वितीय संस्करण

खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्‌भव एवं विकास) का प्रथम संस्करण आपके हाथों में देते हुए मुझे बहुत संकोच हो रहा था, किन्तु आपने किंचित त्रुटियों के बावजूद उसे आपने सहर्ष स्वीकार किया और उसे खरीदने में इतनी तत्परता दिखाई कि हजार प्रतियाँ भी कम पड़ गई और पुस्तक की मांग पाठकों के बीच ज्यों की त्यों बनी रही। पुस्तक विशेष के लिए पाठकों का ऐसा उत्साह एवं प्यार उसके लेखक के लिए एक बड़ी उपलब्धि या सम्मान से कम नहीं है। परिणामस्वरूप पाठकों के प्यार से अनुप्राणित होकर एवं उनकी मांग को ध्यान में रखते हुए दूसरे संस्करण के प्रकाशन की योजना बनाई गई। आपको स्मरण होगा प्रथम संस्करण में कई महत्वपूर्ण साहित्यिक सामग्रियाँ सम्मिलित नहीं की जा सकी थी और मैंने वायदा किया था कि अगले संस्करण में शेष सामग्रियाँ सम्मिलित की जायेंगी।

वायदे के अनुसार पुस्तक का संशोधित, परिष्कृत एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण आपके हाथों में देने में मुझे काफी हर्ष हो रहा है। आशा है, आप उसी उत्साह एवं प्यार से इस संस्करण को भी स्वीकार करेंगे। आपकी प्रतिक्रिया एवं बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा मुझे बेसब्री से रहेगी।

बी.एन. ओहदार

तृतीय संस्करण

खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्‌भव एवं विकास) पुस्तक की मांग उसके प्रथम संस्करण से लेकर अब तक आशा से भी अधिक बनी रही है। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि मांग के स्वरूप पूर्ति न होने के कारण पाठकों को इसकी छाया प्रति कराने के लिए भी विवश होना पड़ा है। बावजूद इसके, समदा भाव एवं कतिपय अथ कारणों से पुस्तक के तीसरे संस्करण प्रकाशन समय पर नहीं हो पाया।

पुस्तक का परिष्कृत एवं परिवर्द्धित तीसरा संस्करण नये क्लेवर में आपके हाथों में देते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

आशा है, यह तीसरा संस्करण भी पाठकों के बीच पूर्ववत समाहृत होगा। सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया एवं सुझावों की अपेक्षाओं के साथ आपका...

बी.एन. ओहदार

परम श्रद्धेय
करुणामयी माँ
रूपा देवी
के चरणों में
सादर समर्पित

आशीर्वाद

प्रिय ओहदारजी, बहुत - बहुत बधाई।

आपकी पुस्तक, खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्भव एवं विकास), पढ़ कर बहुत संतोष हुआ। आपने बहुत कम में बहुत अधिक जरूरी बातों को समेटने में सफलता पायी है। खोरठा भाषा एवं साहित्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी साबित होगी।

सबसे अच्छी बात जो मैं इसमें देखता हूं वह है आपकी गहन अध्ययनशीलता और वैज्ञानिक दृष्टि। आपने खोरठा भाषा - साहित्य से संबंधित प्रचुर तथ्यों को संगत व्यवस्था और व्याख्या दी है जिससे झारखंड की बहुविध विरासतों को भी समझने में मदद मिलेगी। इस पुस्तक से आपकी प्रतिभा और कार्यक्षमता का भी अच्छा परिचय मिलता है।

आशा है, आप इस कार्य को अनवरत विस्तार देते रहेंगे।

फिलहाल इतना ही। शुभकामनाओं के साथ,

आपका

विसेश्वर प्रसाद केशरी

14. 1. 08

नागपुरी संस्थान,
पिठोरिया, राँची-
834006.

विषय सूची

विषय सूची

शिष्ट साहित्य खंड

लोक साहित्य

मंगल कामना

खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़ द्वारा प्रकाशित- "खोरठा भाषाएवं साहित्य (उद्भव एवं विकास) श्री बी. एन. ओहदार द्वारा रचित बीस शोध आलेखों एवं निबंधों का सुन्दर संकलन है। इन आलेखों में लेखक की प्रतिभा, अभ्यास, अध्ययन और अध्यवसाय के दर्शन होते हैं। पुस्तक में लेखक ने 'सदान' और 'सरना शब्द की व्युत्पत्ति का नया आयाम दिया है तथा सदान और सरना के बीच के संबंध की भाषावैज्ञानिक और ऐतिहासिक आधार पर सर्वथा नई व्याख्या की है। इसके अतिरिक्त खोरठा और खरोष्ठी के नाम साम्य अनायास न होकर सयास होने को भी भाषावैज्ञानिक अधार पर पुष्ट करने का प्रयास किया गया है। पूरे प्रकरण में बी. एन. ओहदार ने तत्वों एवं तथ्यों का विवेचन-विश्लेषण अपने मौलिक चिन्तन, गहन अध्ययन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है।

लेखक ने खोरठा के पुर्नजागरण काल के दो महाकवियों श्रीनिवास पानुरी और ए. के. झा के खोरठा भाषा साहित्य के विकास में योगदान का सुन्दर चित्रण किया है।

लेखक ने खोरठा साहित्य की प्रवृत्तियाँ, खोरठा लोकगीतों में श्रृंगार, प्रकृति चित्रण, खोरठा लोककथा आदि पर भी प्रकाश डाला है। पुस्तक के 9 (नौ) आलेख हिन्दी में तथा 11 (ग्यारह) आलेख खोरठा भषा में लिखे गये हैं। हिन्दी एवं खोरठा दोनों ही भाषाएँ, सरल सुबोध एवं व्यास शैली प्रधान हैं।

लेखक स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्रतिभाशाली छात्र रहे हैं, फलस्वरूप पुस्तक में विभाग द्वारा स्थापित कीर्तिमानों की चर्चा कर तथा विभाग को झारखण्ड के 'नाभी स्थल' की संज्ञा देकर लेखक ने विभाग के ऋण से उऋण होने का भी उपक्रम किया है।

पुस्तक छात्र उपयोगी है, खोरठा भाषा साहित्य के अनुरागियों, विद्वानों और अनुसंधाताओं के लिए भी उपादेय है। मंगलकामना है कि पुस्तक समादृत हो तथा लेखक खोरठा भाषा साहित्य-सृजन कार्य आगे बढ़ाते रहें।

इति शुभ !

डॉ. कुमारी बासंती
विभागाध्यक्ष,
जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विशविद्यालय, राँची

भाषा

भाषा मनुष्य जाति का सबसे बड़ा आविष्कार या खोज है। आज मनुष्य सभ्यता के उच्चतम शिखर पर बैठा है तो इसका सारा श्रेय भाषा को ही जाता है। यदि मनुष्य ने भाषा का विकास नहीं किया होता तो यह आज भी अन्य जानवरों की तरह होता। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपनी पूरी जिंदगी के उतार-चढ़ावों, गिरने उठने और विभिन्न किस्म के अनुभवों और ज्ञान को एक दूसरे को या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करता गया। इस प्रकार पीढ़ियों से प्राप्त अनुभव और ज्ञान का एक भंडार बनता गया, जो मनुष्य जाति की थाती के रूप में उपलब्ध रहा है और जो हर अगली पीढ़ी के लिए विकास का आधार बनता रहा हैं। यदि भाषा नहीं होती तो मनुष्य अपने ज्ञान एवं अनुभवों को एक दूसरे को नहीं बता पाता या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित नहीं कर पाता।

भाषा विकास की यात्रा भी कम रोचक नहीं है। इशारा, इंगित या संकेत से शुरू होकर ध्वनि, शब्द अर्थ, रूप, वाक्य और और फिर उसका लेखन ध्वन्यांकण, इलेक्ट्रॉनिकीकरण और भाषा का कोडिफिकेशन तक की यात्रा का एक लंबा इतिहास हैं। भाषा का आरंभ संकेत से हुआ था और आज भाषा एक लंबी यात्रा तय करते हुए पुनः संकेत के दरवाजे पर खड़ी है। आज पूरी दुनिया का कारोबार, मनुष्य की पूरी जिन्दगी अंकगणित के कुछ अंकों के संकेतों तक सिमटकर रह गई है। यदि भाषा ने दुनिया को खंड-खंड में बांटा है तो पूरी दुनिया को एक गांव बनाने का भी श्रेय भाषा को ही है। भाषा के इलेक्ट्रॉनिकीकरण ने भाषा को और भी ताकतवर बनाया है, इसकी धार और भी तेज हुई है। अर्थात् पूरी दुनिया को गांव बनाने में इलेक्ट्रॉनिक कम्न्यूकेशन का ही हाथ है। एक स्थान पर भाषा विज्ञानी पीटर फंक ने कहा है- Electronic communication has turned the world into a global village.

आज आदमी ने धरती के चप्पे-चप्पे को रौंद डाला है, आकाश को खंगाल डाला है, समुद को उसकी औकात बता दी है, पाताल को पाताल नहीं रहने दिया है, नदियों को पालतू बकरियों की भांति अपने पिछवाड़े बांध रखा है, देश, काल और परिस्थिति की परिभाषा ही बदल डाली है; और मनुष्य पूरी सृष्टि का आपराजेय योद्ध बना हुआ है तो इसका एकमात्र श्रेय भाषा को जाता है। भाषा की ताकत एटम-बम से भी ज्यादा है। एक शब्द से पूरी दुनिया को तहस-नहस किया जा सकता है तो एक शब्द से पूरी दुनिया का काया-कल्प भी किया जा सकता है। शब्द या भाषा की इसी ताकत को देखकर किसी ने कहा है-

"खींचो न तीर-कमान, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।"

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय एक बार लोकमान्य तिलक ने कहा था "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसकी प्राप्ति के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं।" 'हम कुछ भी कर सकते है' लोकमान्य तिलक के मुंह से निकलते ही वह साम्राज्य थरथरा उठा, जिसके राज्य में सूर्य को अस्त होने की मनाही थी। बस क्या था, लाठी चार्ज हो गया, वे गिरफ्तार कर लिए गए। तो भाषा में इतनी ताकत होती है। हिटलर को कौन नहीं जानता। वह एक सामान्य सा आदमी था। पर वक्तृत्व कला में इतना निपुण था कि एकमात्र भाषा के द्वारा ही वह दुनिया का तानाशाह बन बैठा। शब्द या भाषा में ताकत आतीहै, प्रयोक्ता के चरित्र से । प्रयोक्ता जितना ही चरित्रवान होगा, भाषा में उतनी ही ताकत आएगी। गांधी, नेहरू, सुभाष इसके अच्छे उदाहरण हैं। आज शब्द अपनी शक्ति खो रहे हैं तो इसका मात्र कारण चरित्रवान प्रयोक्ता की कमी के कारण है। नाद (ध्वनि) या शब्द ही ब्रह्म हैं। नाद से इतर कोई ब्रह्म नहीं है। भाषा विज्ञानी वास्लाव हॉवेल ने तो इतना तक कहा है- भाषा से इतर कोई विश्व नहीं है।

प्रत्येक शब्द की अपनी सत्ता हुआ करती है। कोई शब्द दूसरे शब्द का प्रतिस्थाप्य नहीं हुआ करता है। अर्थात् किसी शब्द के बदले किसी अन्य शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक शब्द के अपने अर्थ होते हैं। कौन सा शब्द मनुष्य की कौन सी भावना या किस क्षण को अभिव्यक्ति करेगा, यह निश्चित है। कोई शब्द किसी का स्थान नहीं ले सकता। शब्द की इसी विशिष्टता को लेकर प्रशस्ति में कहा गया है- एक शब्द सययम शातः सुप्रयुक्त स्वर्ग चलोके झाम दुग्धभवति अर्थात् कोई व्यक्ति किसी एक भी शब्द का ज्ञान सम्यक्ज्ञातः सुप्रयुक्त स्वर्गे लोके च काम दुग्भवति।' अर्थात् कोई व्यक्ति किसी एक भी शब्द का ज्ञान सम्यक रूप से प्राप्त कर किया और उसके सुप्रयोग का ज्ञान हासिल कर लिये तो उस व्यक्ति के लिए इहलोक और स्वर्गलोक दोनों में जीवन सुखमय हो जाएगा।

भाषा को यदि पूरी दुनिया को ग्लोबल विलेज बनाने का श्रेय है तो पूरी दुनिया को खंड-खंड में बांटने और रक्तपात कराने का अपवाद भी इसी के हिस्से में आता है। पूरी दुनिया में आदमी-आदमी के बीच जिन कारणों से भी और जितनी भी लड़ाईयाँ हुई, हैं, उसका एक बड़ा हिस्सा भाषा के खाते में ही जाता है। भाषा ने देश बांटे हैं, प्रदेश बांटे हैं, तन बांट हैं, मन बांटे हैं, आदमी और आदमी के बीच दूरियाँ बढ़ाई है, आदमी को छोटा और बड़ा बनाया है, सभ्य और असभ्य की रेखा खींची है और क्या-क्या नहीं किया है भाषा ने। हर एक मानता और समझता है, उसकी भाषा दूसरे की भाषा से बड़ी है, समृद्ध है, दूसरे की भाष हेय है, दरिद्र है। और भाषा के इस

छोटे-बड़े के भेद के चक्कर में ऐरे-गैरे की तो छोड़िए, खुशवन्त सिंह जैसे प्रबुद्ध लोग भी आ जाते हैं। कभी खुशवंत सिंह ने हिन्दी की तुलना अंग्रेजी से करते हुए कहा था- 'हिन्दी दरिद्र भाषा है। इसी सोच ने भाषा की कई-कई श्रेणियाँ खड़ी कर रखी है- बड़-छोटी, समृद्ध-दरिद्र वैश्विक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय (Regional) आर्य-अनार्य, जनजातीय शिष्ट-अशिष्ट अैर न जाने क्या-क्या। पर भाषा को लेकर झगड़ने वाले यह भूल जाते हैं कि भाषा न तो बड़ी होती है न छोटी, न तो दरिद्र होती है न समृद्ध। भाषा तो माध्यम है अपने विचारों को अभिव्यक्ति करने और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संचारित करने का। हर समाज की अपनी भाषा होती है। पर वह किसी व्यक्ति की बपौती नहीं वरन् पूरे समाज की साझी सम्पत्ति हुआ करती है। कोई भी भाषा अपने समाज की इच्छा आकांक्षा, भावनाओं को यदि अभिव्यक्त करने में सक्षम है, यदि समाज के धड़कन को मानवीय करूणा को संवहित करने की सामर्थ्य रखती है, जो भी भाषा, भाषा की इस प्राथमिक शर्त को पूरा करती है तो वह मुकम्मल भाषा है। वह किसी से छोटी या बड़ी नहीं है। वह अपने में सर्वांगपूर्ण है। भाषाई छोटे-बड़े का झगड़ा सामाजिक दंभ राजनीतिक, आर्थिक वर्चस्व का है यह वर्गों के बीच का संघर्ष है, नस्लों की श्रेष्ठता का झगड़ा है और इस झगड़े में भाषा जौ में घुन की तरह पीस रही है। दक्षिण भारत में हिन्दी-विरोध दरअसल हिन्दी भाषा का विरोध नहीं है। वस्तुत: यह विरोध तो द्रविड़ों का ब्राह्मण विरोध है। यह विरोध कोई नया नहीं है। सभंवत: यह राम के लंका विजय के समय से ही है। चूंकि ब्राह्मण संस्कृत बोलते हैं अत: ब्राह्मण विरोध के नाम पर संस्कृत विरोध होने लगा। चूंकि हिन्दी, संस्कृत से निकली हुई मानी जाती है और इसकी लिपि भी देवनागरी है, जो संस्कृत की भी है, तब हिन्दी स्वाभाविक रूप से इस विरोध की चपेट में आ गई। इतना ही नहीं, कोंकणी जो नागरी लिपि में लिखी जाती है, वह भी इस विरोध की चपेट में आ गई।

आगे यह बात कही गई है कि भाषा किसी की बपौती नहीं होती, यह समाज की सम्पत्ति होती है और जिसने भी भाषा को बपौती बनाने का प्रयास किया, उस भाषा का बहुत बुरा हश्र हुआ है। संस्कृत भाषा तथाकथित बहुत समृद्ध भाषा थी, पर उसके दरवाजे जन-साधारण के लिए बन्द थे। संस्कृत नागर समाज या तथाकथित भद्र समुदाय या विद्वत समुदाय की सम्पत्ति हो गई थी। परिणाम हुआ कि भाषा का जन-साधारणीकरण नहीं हुआ और भाषा मर गई। संस्कृत भाषा आज मृत भाषा के रूप में जानी जाती है। दूसरी ओर आज अंग्रेजो जो संस्कृत की तुलना में बहुत तर्कसम्मत और वैज्ञानिक भाषा नहीं है, जिसके लेखन, उच्चारण एवं अर्थ बोधन में कहीं तार्किकता एवं तारतम्यता नहीं है। यह भाषा कभी इंगलैण्ड के छोटे से ग्रामीण समुदाय Anglo Saxon Community की ग्रामभाषा हुआ करती थी। पर आज यह विश्वभाषा बनी

हुई है। इसका मूल कारण इस भाषा को बोलने वालों ने भाषा के सारे खिड़की-दरवाजे खोले रखे है। इस भाषा को बोलने के लिए किसी को मानही नहीं थी। अंग्रेजों ने इसके प्रचार-प्रसार में काफी शक्ति लगा दी। भारत में काफी खर्च कर भारतीयों को अंग्रेजी सिखाया गया। इतना ही नहीं, दुनिया की ही भाषा रोमन इटैलिक, फ्रांसीसी, हिन्दी आदि से हजारों शब्द लिए, इसे अपने में आत्मसात कर लिया। और अंगेजी की इसी सर्वग्रासी प्रवृत्ति ने अंग्रेजी को समृद्ध विश्वभाषा बनाया।

निरंतर प्रवाहशीलता भाषा की प्रकृति है पर भाषा की यह नैसर्गिक प्रवृत्ति विद्वत समाज को सदैव से अखरती रही है और विद्वानों के द्वारा भाषा को व्याकरण के जुए में कसा जाता रहा है और व्याकरण सम्मत भाषा को शिष्ट भाषा और शेष को विकृत और भ्रष्ट समझा जाता रहा है।

भाषा की उत्पत्ति को लेकर भी हजारों वर्षों तक अटकलबाजियाँ ही चलती रही है। जब बात समझ में नहीं आई तो उसे ईश्वरप्रदत्त मान लिया गया। आज भी ऐस लोगों की कमी नहीं है, पर वस्तुतः ऐसा है नहीं। भाषा पर काफी अध्ययन हुए और आज भाषा उत्पत्ति की लगभग सारी गुत्थियाँ सुलझा ली गई है। सच तो यह है कि भाषा की उत्पत्ति प्रकृति से ही हुई है। भाषा उत्पत्ति के सारे तत्व प्रकृति में मौजूद रहे हैं। प्रकृति में प्राकृतिक घटनाएँ हवा का चलना, पानी का बरसना, वस्तुओं का गिरना टकराना आदि घटनाएँ होती रहती हैं। इन्हीं प्राकृतिक ध्वनियों के अनुकरण से अनुकरण प्रिय मानव ने हजारों-हजारों वर्षों के अथक प्रयास के बाद भाषा का विकास किया। आज भी तथाकथित अशिष्ट या गंवई भाषाओं में प्राकृतिक ध्वनियों से बने सार्थक शब्दों की लम्बी श्रृंखला पाई जाती है, जो धड़ल्ले से आज भी प्रयोग में आते हैं। बाद में भाषा को शिष्ट बनाने को लेकर कितने नियम-उपनियम बने। भाषा को काफी तोड़ा मरोड़ा और जोड़ा गया। भाषा जो सरल थी, प्राकृत थी, उसे क्लिष्ट बनाया गया पर मापा की नैसर्गिक प्रावहशीक्षता की प्रवृत्ति रूकी नहीं। हाँ, बाधित अवश्य हुई। किलष्ट से पुनः सरल होने की छटपटाहट उसमें बरकरार रही। तरल अपने तल को ढूंढता है। यही प्राकृतिक सिद्धान्त भाषा में काम करता रहा है। प्राकृत से संस्कृत और संस्कृत से पुनः प्राकृत और तथाकथित अपभ्रंश भाषा का बनना और फिर आधुनिक भाषाओं का बनना इसका अच्छा उदाहरण है।

भाषा-अध्ययन का महत्व

भाषा के अध्ययन- को लेकर लोग मुँह बिचकाते हैं- भाषा में अध्ययन करने की कौन सी चीज है भला। पर वे भूल जाते हैं कि भाषा का होना मानव सभ्यता के विकास की प्राथमिक शर्त है। तब जाहिर है कि मानव सभ्यता की गुत्थियाँ भी इसी भाषा के

अध्ययन से सुलझ सकती हैं। और यही हो भी रहा है। भाषा अध्ययन के द्वारा ही पूरे विश्व के मानव समुदाय के तार जुड़े हैं, के संकेत मिल रहे हैं। भाषा अध्ययन के द्वारा ही विभिन्न नस्लों के बीच की दुरियाँ भी सिमटती नजर आ रहीं हैं। वह दिन दूर नहीं जब भाषा का अध्ययन मानव-मानव के बीच की गहरी खाई को पाट देगा।

भाषा और विकास

भाषा समाज की सम्पत्ति है और संस्कृति उसका प्राण, उसका जीवन दर्शन, जीवन दृष्टि है। समाज के रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार उसकी परंपरायें, उसके नृत्य, उसके गीत, उसके पर्व-त्योहार, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियों में संस्कृति प्रतिबिम्बित होती है। समाज का हर्ष और विषाद, उमंग एवं उत्साह मतलब समाज की हर धड़कन भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। किसी भी समाज को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना आवश्यक है। समाज में प्रवेश का माध्यम भाषा ही है। भाषा को समझकर ही उसकी संस्कृति को समझा जा सकता है और बिना संस्कृति को समझे किसी भी समाज को अच्छी तरह नहीं समझा जा सकता है। उसकी जरूरतों, उसकी इच्छा-आकांक्षा को नहीं समझा जा सकता और जबतक उसे नहीं समझा जाएगा, समाज का विकास असंभव है।

आरंभ में इंदिरा आवास योजना के तहत् झारखण्ड में भी दलितों, आदिवासियों के लिए इंदिरा आवास बनाए जाने लगे और इसके तहत् गांव से बाहर दलितों के मकान बना दिए गए। पर उन मकानों में कभी कोई आदिवासी या दलित रहने नहीं गया। इन घरों को दीमक खा गए और करोड़ों की राशि बरबाद हो गई और एक बड़ी कल्याणकारी योजना पूर्णतया: असफल हो गई। इसका मूल कारण था, झारखण्ड की संस्कृति को समझे बिना इस योजना को लागू किया जाना। दरअसल झारखण्ड से बाहर के राज्यों में दलितों को गांव के बीच में गांव के अन्दर रहने की अनुमति नहीं है। वे गांव के बाहर ही रहते हैं। अत: यूपी, बिहार आदि राज्यों में दलितों के लिए गांव के बाहर इंदिरा आवास बनते थे और उसी तर्ज पर झारखण्ड में गांव से बाहर मकान बना दिए गए, परंतु इसमें कभी कोई रहा नहीं। दरअसल झारखण्ड में दलित आदिवासी सभी अन्य जातियों के साथ गांव के अन्दर ही निवास करते हैं। और जब इनके लिए गांव के बाहर टांड़ में मकान बना दिया गया तो, उस वीराने में कौन रहने जाएगा भला? यदि आरंभ में ही यहाँ की सामाजिक संरचना को समझकर यह योजना लागू की जाती तो करोड़ों का नुकसान नहीं होता। बाद में समीक्षा के बाद भूल समझ भूल समझ में आयी और अब झारखण्ड में जो जहाँ है, उसके लिए वही मकान बनाने की व्यवस्था की गई।

आज भवन-निर्माण, बांध-निर्माण एवं पूल निर्माण की तकनीक आज से सौ वर्ष

पहले से बहुत अच्छी एवं वैज्ञानिक है। इसके बावजूद आज जो निर्माण हो रहे हैं, वे इतने मजबूत नहीं होते जितने कि पूर्व के निर्माण रहते रहे हैं। आखिर क्यों? क्या कमी रह गई? दरअसल उसमें एक मसाला नहीं डाला गया और वह है ईमानदारी का मसाला। ईमानदारी जो हमारी संस्कृति थी, अब लुप्त हो रही है। विकास बाहर से थोपने की चीज नहीं है। किसी भी समाज के विकास के तत्व और सूत्र उसी समाज में मौजूद होते हैं। जरूरत है, उन्हें पहचानने की और तदनुरूप आचरण करने की। झारखण्ड की संस्कृति के प्राणवान् तत्व हैं, श्रम, समता, सहअस्तित्व, सहयोगात्मकता और प्रकृतिभिमुखता। ये ऐसे तत्व हैं कि इसके द्वारा एक सर्वथा सभ्य और विकसित समाज का निर्माण किया जा सकता है। झारखंडी समाज के विकास के लिए इन्हीं प्राणवान तत्वों की पुर्नप्रतिष्ठा करनी होगी और यह भाषा संस्कृति के अध्ययन से ही संभव है। आज वहम जिस भाषा में विकास योजनाएँ बनाते हैं, जो उन लोगों के लिए सर्वथा अबुझ है, जिनके लिए योजनाएँ बनी हैं। तब इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका प्रतिफलन क्या होगा। जब समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति की भाषा में योजना बनेगी और उनके बीच आकर बनेगी तभी योजनाएँ सफल हो सकती है। इसके अतिरिक्त लोक ज्ञान को महत्तम प्रश्रय दिया जाना चाहिए और लोक ज्ञान को तभी समझा जा सकता है जब संबंधित भाषा का ज्ञान आवश्यक रूप से हो। विकास का अर्थ ढांचागत विकास से नहीं है। ढांचागत विकास तो संसाधन है पर उन संसाधनों का समुचित उपयोग ही विकास और यह संभव है मनोविकास से या मनोबल के विकास से। और मनोबल की प्राप्ति होती है आत्मगौरव की चेतना और अपनी अस्मिता बोध से और यह आत्मगौरव की चेतना आती है अपनी भाषा और संस्कृति से। अपनी भाषा और संस्कृति पर हर व्यक्ति को गर्व करना चाहिए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है–

जिसको न अपने देश और निज भाषा ने अभिमान है,
वह नर नहीं, नर पशु हमें और मृतक समान है,

अपनी भाषा और संस्कृति हमें अपनी मिट्टी और अपनी जड़ों से जोड़ती है। पर अन्य भाषाओं का ज्ञान हमें अपने से इतर समुदाय एवं दुनिया से जोड़ता है। कई भाषाओं का ज्ञान यदि संभव नहीं हो तो हर व्यक्ति को कम से कम अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा एवं वैश्विक भाषा का ज्ञान तो आवश्यक रूप से होना चाहिए। आज वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया है कि एक भाषा मानने वाला व्यक्ति लगभग अशिक्षित है।

— — — — — —

झारखण्ड में भाषा-सांस्कृतिक आन्दोलन

झारखण्ड एक बहु प्रजातीय (Multiethnic), बहु सांस्कृतिक (Multicultural), और बहुभाषिक (Multilingual) राज्य है। यहाँ तीन प्रजातियों ऑस्ट्रिक, द्रविड़, और आर्य समुदाय के लोग अपनी संस्कृतियों और अपनी भाषाओं क्रमशः मुण्डारी, संताली, हो एवं खड़िया (Austric), कुडुख, माल्टो, कोरवा (Dravid) एवं खोरठा, कुरमाली, पंचपरगनिया एवं नगपुरिया (Aryan) के साथ हजारों वर्षों से निवास करते आ रहे हैं और सबों के साझे प्रयास से झारखण्ड की समन्वित अरण्य संस्कृति का निर्माण हुआ है, जिस प्रकार भारतीय संस्कृति भारत की अनेक प्रजातियों के साझे प्रयास का प्रतिफलन है। इस दृष्टि से झारखण्ड को भारत का छोटा प्रतिरूप (Tiny Model) के रूप में देखा जा सकता है। झारखण्ड बिहार राज्य का अंग होते हुए भी भाषिक, सांस्कृतिक एव प्रजातीय रूप से शेष बिहार से बहुत भिन्न रहा है। झारखण्ड की सामाजिक संरचना बिहार की सामाजिक संरचना से बिल्कुल ही भिन्न आरंभ से रही है। झारखण्ड हजारों वर्षों से शेष बिहार के लोगों के लिए घृणा एवं उपेक्षा का पात्र रहा है। यहाँ के लोगों को अरण्य और जंगली समझा जाता रहा है। इतना ही नहीं, बिहार और झारखण्ड की समान नाम्नी जातियों के बीच भी कभी रिश्ते कायम नहीं हुए। बिहार की तरह ही झारखण्ड में पाई जाने वाली समान नाम्नी जातियों यथा कुर्मी, तेली, ग्वाला आदि के आगे कोल उपनाम नोड़दिए गये और उन्हें क्रमश। कोण कुर्मी कोण तेली कोल खाला आदि नामों उपनाम से पुकारा गया है। बिहार के लोगों की झारखण्ड के प्रति इसी दृष्टि ने झारखण्ड के विकास को भी प्रभावित किया है। प्रचुर खान खनिज का भंडार होने के बावजूद यहां के लोग दरिद्रता का जीवन जीने को मजबूर कर दिए गए हैं। यहां की सरल आर्थिक संरचना रूपी 'लौकी के लत्तर' को चूहों ने काट डाला है। झारखण्ड से इतर प्रान्तों के लोगों ने झारखण्ड के सारे संसाधनों पर कब्जा जमा लिया है। चूकि झारखण्ड की संस्कृति सरल संस्कृति रही है, अतः बाहर से आए लोगों को झारखण्डियों ने खुलकर स्वागत किया पर वे लूटेरे साबित होंगे, ऐसा उनको अनुमान नहीं था। बाहर के लोग आए थे मेहमान बनकर पर मालिक बन बैठे और मालिक बन गए नौकर। आज यह नजारा पूरे झारखण्ड में देखा जा सकता है। झारखण्ड की संस्कृति श्रम मूलक संस्कृति रही है। बिना श्रम किए खाने की कल्पना नहीं की जा सकती है। चूंकि संस्कृति बिकाउ नहीं होती, अतः श्रम को बेचने या श्रम के बदले मूल्य लेने का रिवाज नहीं है। लोगों ने झारखण्डियों से हाड़तोड़ श्रम कराया और उसके एवज में जब उन्हीं से श्रम का मूल्य पूछा गया तो मूल्य लेने के लिए उनके पास कोई शब्द नहीं थे क्योंकि उनकी संस्कृति में ही श्रम की कीमत लेने की परंपरा नहीं है। फलनः उन्होंने सीधे

सरल शब्दों में कह दिया- 'का लेबउ बाबू, दिन भइर काम करल हियो, पेट तो खाये ले खोजबे कतरउ, दइ दे, जो बुझा बुझा हउ, से इससे बढ़िया बात क्या हो सकती थी? पूरे दिन के श्रम के बदले उतना ही दिया गया जितने मैं शाम को पेट भर सके और दारू हो सके। परिणाम क्या हो सकता है, यह स्वयंसिद्ध है। श्रम करने वाले दरिद्र होते गुए, लुटते गए, और जो हाथ-पैर भी नहीं हिलाते, वे मालामाल होते गए।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रभुत्व के साथ यह क्षेत्र पहले कलकत्ता प्रेसिडेंसी में था। फिर कुछ दिनों के लिए साउथ-वेस्ट फ्रंटियर एजेन्सी SWEFA में शामिल किया गया, जिसका केन्द्र बनारस था। इस कारण कालक्रम से इस क्षेत्र की भाषाओं पर बंगला और हिन्दी का गहरा प्रभाव पड़ा। बिहार, बंगाल उड़ीसा और मध्यप्रदेश की सीमाओं से जुड़े रहने के कारण मगही, भोजपुरी, बंगला, उड़िया और छत्तीसगढ़ी आदि भाषाओं की भी छाप, खासकर उसके सीमावर्ती प्रान्तों पर पड़ी। यहाँ की राजनैतिक और सामाजिक सामर्थ्य जैसे-जैसे छिन्न होती गई, बाहरी प्रभाव प्रखर होते गए। ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के समय तक यहाँ की भाषाओं का स्वरूप वह नहीं रह गया था जो इसका मौलिक रूप था। स्वभावत: यहाँ की भाषाएँ अपनी गरिमा और पहचान से वंचित दिखाई गई। उरांव और मुण्डा वर्ग की भाषाएं जो सर्वथा भिन्न कुल-मूल की थी, उनका स्वरूप कुछ हद तक अक्षुण रहा लेकिन सदानी, जो यहाँ की महत्वपूर्ण सम्पर्क भाषाएं थी, जिसके बिना झारखण्ड की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि यही भाषा थी, जो मुण्डा और द्रविड़ समुदायों तथा इन दोनों को तीसरे सदान समुदाय से जोड़ने का काम करती रही है, को भोजपुरी और मगही के खाते में डाल दिया गया। डॉ.सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने भारतीय भाषा-सर्वेक्षण (Linguistic Survey of India) के खंड 1, भाग 1 तथा खंड 5, भाग 2 में नगपुरिया को भोजपुरी भाषा की एक उपबोली घोषित कर दिया। बाद में जिसका अनुसरण डॉ. उदय नारायण तिवारी ने अपने शोध ग्रंथ भोजपुरी भाषा और साहित्य में हुबहु किया। इसी क्रम में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद ने (Linguistic Survey of Sadar Division of Manbhoom and Dhalbhoom) और सम्पत्ति आर्याणि ने अपने शोध-ग्रंथ ''मगही भाषा और मगही व्याकरण कोष'' में कुरमाली, खोरठा, पंचपरगनिया आदि को पूर्वी मगही नाम दे दिया। इसी परंपरा में 1961 की जनगणना में नगपुरिया को Eastern Maghi मान लिया गया। बाद के दिनों में उससे भी एक कदम आगे बढ़ते हुए झारखण्ड के लखीकान्त महतो एवं बसन्त कुमार मेहता प्रभृत विद्वानों ने खोरठा को कुरमाली का ही एक विकृत रूप मान लिया (शालपत्र, अंक 2, पृ. 35ए 37 और अंक 4 पृ. 36, 40)। बहुत विकट स्थिति थी भाषाओं की अपनी अस्मिता को लेकर। बाद के वर्षों में जब स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना हुई तब कुल 7 भाषओं को UGC से मान्यता मिली।

पुनः एक वर्ष के बाद खोरठा और पंचपरगनिया को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया पर उसे स्वतंत्र अनुभाग के रूप में नहीं, वरन् नागपुरी के साथ जोड़कर दो तीन वर्षों तक रखा गया, बाद में इन्हें स्वतंत्रता आठ्वें एवं नवें अनुभाग के रूप में स्थान मिला। झारखण्ड का प्रबुद्ध वर्ग इन सारी स्थितियों को देखता रहा था और अनुभव कर रहा था कि जातीय अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा के लिए राजनीतिक अधिकार के साथ भाषिक एवं सांस्कृतिक पहचान सर्वाधिक जरूरी है। इस प्रकार छोटी-बड़ी कई घटनाओं से एक बड़े भाषाई एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण की स्थिति बन रही थी और प्रबुद्ध वर्ग इसे बड़ी शिद्दत से महसूस भी कर रहा था। इसके साथ भाषिक पहचान भी जरूरी शर्त है। शैक्षिक स्तर पर भाषा की प्रतिष्ठा प्राप्त हुए बिना यह पचान नहीं बन सकती। अस्मिता संकट और इसके बोध के साथ राजनीतिक प्रदर्शनों आदि के साथ ही भाषा एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी काम होने लगे। सरकार की ओर से 'आदिवासी' और 'होड़ संवाद' (संताली भाषा में) इसके अतिरिक्त स्व प्रयास से 'अबुआ झारखण्ड', 'जगर साड़ा', 'बड़ाइक' आदि पत्रिकायें भी प्रकाशित हुई।

27 जुलाई 1957 ई. में आकाशवाणी राँची के स्थापना की साथ ही यहाँ की भाषाओं एवं संस्कृति की अभिव्यक्ति को गति मिली। 1957 में ही बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से श्री जगदीश त्रिगुणायत की पुस्तक 'बांसुरी बज रही' (मुंडारी गीतों का संग्रह) प्रकाशित हुई।

1958 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से प्रो. केसरी कुमार का 'नागपुरी भाषा और साहित्य', 'जगदीश त्रिगुणायत का 'उरांव भाषा और साहित्य', डोमन साहु समीर का 'संताली भाषा और साहित्य', जयदेव दास अभिनव का 'हो भाषा और साहित्य' आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई। 12 जुलाई 1960 ई. को राँची विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। भाषा और साहित्य साधना के क्षेत्र में नए उत्साह का संचार हुआ और उम्मीदें जगी।

अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाओं में काम हो रहे थे। इसी क्रम में संताली भाषा में पंडित रघुनाथ मुर्मू, कुडुख में रायसाहब बंदी उरांव, जुलियस तिग्गा, विशप दिलवर हंस, नगपुरिया में धनीराम बक्शी, फादर पीटर शांति नवरंगी, जगनिवास नारायण तिवारी, लालमोहन नाथ साहदेव, ईश्वरी बड़ाईक, सहनी उपेन्द्र पाल मंहत, खोरठा में भुवनेशवर दत्त शर्मा व्याकुल, श्री निवास पानुरी, विश्वनाथ दसौंधी राज, विश्वनाथ नागर, ए. के. झा. नारायण महतो आदि सक्रिय थे। इसी बीच नागपुरी भाषा परिषद् की स्थापना 1960 में हो गई थी, जिसके तत्वाधान में नागपुरी पत्रिका का प्रकाशन भी आरंभ हुआ। नागपुरी भाषा परिषद् की ओर से बीच-बीच में बड़े-बड़े सांस्कृतिक समारोह आयोजित किये जाते थे। 1960 में राँची के वेलफेयर सेंट्रल हॉल में प्रफुल्ल कुमार राय के संयोजकत्व में, 1964 में पुनः वेलफेयर सेंट्रर हॉल में ही एक

बड़ा सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया तब तत्कालीन पंचायती राज मंत्री सुशील कुमार वागे परिषद् के अध्यक्ष थे। इस तरह के कार्यक्रमों से लोगों में अपनी भाषा के प्रति गौरव की प्रतीति होने लगी। इसी बीच नागपुरी भाषा परिषद् के पहल पर राँची विश्वविद्यालय में क्षेत्रीय भाषा साहित्य पर अनुसंधान करने की अनुमति मिली। श्रवण कमार गोस्वामी ने नागपुरी भाषा और इसका शिष्ट साहित्य, विशेश्वर प्रसाद केसरी ने नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस, पश्चिम जर्मनी के बॉन विश्वविद्यालय में मोनिका जार्डन द्वारा नागपुरी भाषा, अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय रामदयाल मुण्डा द्वारा पंचपरगनिया गीतों के स्थापत्य पर शोध किया जा रहा था। 1965 पीटर शांति नवरंगी का नागपुरी, सदानी बोली का व्याकरण और 1967 में प्रफुल्ल कुमार राय का सोंनकइर प्रकाशित हुआ। इससे भी पहले 1950 में श्री निवास पानुरी कालिदास की विश्वकृति मेघदूत का खोरठा में अनुवाद कर खोरठा क्षेत्रीय भाषा की भाषिक अभिव्यक्ति क्षमता को उजागर कर दिया था। इसके अतिरिक्त पानुरी जी के द्वारा 'मातृभाषा' और बाद में 'तितकी' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन आरंभ हो गया था। 1956 में पानुरी जी की दो पुस्तकें 'बालकिरिण' और 'दिव्यज्योति' प्रकाशित हुई। इन दोनों प्रकाशित पुस्तकों में धनबाद क्षेत्र को अने भाषा-बोध एवं गौरव से आप्लावित कर दिया। इधर नागपुरी भाषा परिषद् ने भाषा सांस्कृतिक सम्मेलनों और समारोहों की झड़ी लगा दी। नवम्बर 1917 को पिठौरिया में 27 जनवरी 1971 को सिमडेगा में, 20 अक्टूबर 1971 को पुन: पिठौरिया में, 6 नवम्बर 1971 को सोसई आश्रम में, 20 फरवरी 1972 को डालटनगंज में, 29 अप्रैल 1972 को सिल्ली में, और 20 जून 1972 को बेड़ो में नागपुरी भाषा परिषद् के तत्वाधान में वृहत् सम्मेलन आयोजित किए गए। इसके तुरंत बाद 30 दिसम्बर 1972 को संत जॉन स्कूल, राँची के सभागार में फादर पीटर शांति नवरंगी की भव्य जयंती मनाई गई। लोगों में भाषाई अस्मिता बोध का मानो जुनून सावार हो गया था। इन कार्यक्रमों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मुख्य रूप से एक ही प्रस्ताव लिया जाता था कि सरकार हमारी भाषाओं को उचित मान्यता दे और राँची विश्वविद्यालय में इसकी पढ़ाई आरंभ करें। इन भाषिक सांस्कृतिक समारोहों का परिणाम यह हुआ कि बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् की ओर से झारखण्डों भाषाओं के सर्वेक्षण की योजना बनाई गई। इस योजना में डॉ. कुमार विमल की महती भूमिका थी। लक्ष्मीनारायण सुधांशु इसके संयोजक थे और प्रफुल्ल कुमार राय क्षेत्रीय प्रतिनिध सदस्य के रूप में रखे गए।

सिलेबस बोर्ड का गठन

फरवरी 1971 में नागपुरी, मुंडारी और उरांव भाषाओं की पढ़ाई के लिए सिलेबस बोर्ड का गठन किया गया तथा 1971-73 सत्र के लिए इंटरमीडिएट रचना पत्र के रचना

पत्र के पाठ्यक्रम बनाये गए और पुस्तकों के प्रकाशन के लिए सम्पादक मंडल का गठन हुआ। इन भाषाओं की पढ़ाई रचना स्तर से शुरू करके क्रमश वैकल्पिक विषय, ऑनर्स और एम.ए. स्तर तक पढ़ाने की योजना बनाई गई। इस कार्य में तत्कालीन हिन्दी विभाग के अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य के मुर्द्धण्य विद्वान डॉ. रामखेलावन पाण्डेय का वात्सल्य-स्नेह इन भाषओं को प्राप्त था। इतना होने के बावजू इन भाषओं की पढ़ाई आरंभ नहीं हुई। इस बीच डालटनगंज से डॉ. बी. पी. केसरी की देखरेख में 'जय झारखण्ड' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हो गया था। नागपुरी भाषा परिषद् के तत्वाधान में 7 जुलाई 1973 को गुमला में वृहत् सम्मेलन आयोजित किया गया। नागपुरी के मुर्धण्य विद्वान शारदा प्रसार शर्मा इसके संयोजक थे। ऐसे समय में गोस्नर कॉलेज में प्रधानाचार्य डॉ. निर्मल मिंज का अवतरण होता है जिन्होंने बिना विलंब किये 10 अगस्त 1973 को अपने कॉलेज में नागपुरी, मुंडारी और कुडूख के अध्यापन की घोषणा कर दी और विभाग के उद्‌घाटन के लिए तत्कालीन राज्यपाल आर. डी. भंडारे को आमंत्रित किया। इसके साथ ही राँची विश्वविद्यालय में उपर्युक्त भाषाओं के अध्ययन की इंटरमीटियड स्तर पर शुरूआत हुई और इस कार्य में डाल्टनगंज स्थित जी. एल. ए. कॉलेज और राँची स्थित गोस्नर कॉलेज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंटर की परीक्षाओं में इन भाषाओं को मौका देकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुनः 29 अगस्त 1973 को पिठौरिया में, 27 फरवरी 1974 को सिमडेगा में, 23 अक्टूबर 1974 को खूंटी में और 14 अप्रैल 1975 को गॉस्नर कॉलेज, राँची में नागपुरी भाषा परिषद् की ओर समारोह आयोजित की गई और झारखण्डी भाषा अकादमी गइन की मांग की गई। परिणाम हुआ कि बिहार सरकार ने वर्ष 1987 में झारखण्डी भाषा अकादमी की घोषणा कर दी। 1971 ई. में उपर्युक्त भाषओं के इंटरमीडिएट की परीक्षा लेने के बाद नियमतः 1973 में ही स्नातक का पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिए था पर ऐसा नहीं हुआ। अंततः दो वर्षों के विलम्ब के बाद 21 जुलाई 1975 को रांची विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति आर. एस. मंडल के प्रयास के स्नातक के पाठ्यक्रम बनाने का निर्णय लिया गया और उसी दिन रांची विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के तत्कालीन विभागध्यक्ष, डॉ. जयनारायण मण्डल की अध्यक्षता में आहूत बैठक में उपर्युक्त भाषाओं के स्नातक रचना पत्र 50 अंकों का सिलेबस तैयार कर लिया गया। बाद में डॉ. अनुज कुमार धान के रांची विश्वविद्यालय के कमान संभालने के बाद उनके द्वारा इन भाषाओं की पढ़ाई लेंग्वेजेज डिपार्टमेंट की स्थापना ही नहीं, अपने स्तर से विश्वविद्यालय अनुदान से इसकी स्वीकृति के लिए लिखा-पढ़ी करने का आश्वासन भी दिया गया। बाद में डॉ. धान के उद्योग से संबंधि त भाषाओं में पूर्णकालिक प्राध्यपकों के पदों का सृजन, पुस्तकों का प्राशन संभव हो सका। इसी बीच डॉ. धान के पटना विश्वविद्यालय स्थानांतरित किये जाने के बाद डॉ.

पी. सी. होरो, संत कोलम्बा कॉलेज के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. वाइस चांसलर बनाये गए और डॉ. होरो ने डॉ. धान के निर्णयों को दृढ़तापूर्वक लागू कर उपर्युक्त भाषओं के प्रधान भाषा के रूप में स्वीकृति देने के साथ ही हिन्दी विभाग से अलग कर स्वतंत्र विभाग की स्थापना कर दी साथ ही हिन्दी के बी. ए. आनर्स एवं एम. ए. में पाठ्यक्रमों के विशेष भाषा के रूप में पढ़ाने की स्वीकृति भी दे दी। बाद में डॉ. शालिग्राम सिंह के कुलपतित्व काल में जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग खोलने, विभिन्न कॉलेजों में पढ़ाई आरंभ होने, शिक्षकों के पद सृजित कर नियुक्ति की मांग को संस्तुष्ति दी गई और इसे फेजवाइज लागू करने की अनुशंसा की गई।

एक सर्वथा उल्लेखनीय बात है कि धनबाद से वीरभारत तलवार (वर्तमान में जे. एन. यू. में प्राध्यापक) के द्वारा 'शालपत्र' और 'झारखण्ड वाणी' पत्रिका निकाला जा रहा था जिसने झारखण्डी अस्मिता बोध के आयाम को और भी विस्तार दे दिया था। उन पत्रों ने बसन्त कुमार मेहता और लेखीकान्त महतो के छ: प्रकाशित निबंधों से कुरमाली भाषा की अहमियत स्पष्ट हुई। शालपत्र मंडली के द्वारा 6-7 मई को बेथेसदा स्कूल में झारखण्ड के बुद्धिजीवी मंच का सम्मेलन आयोजित किया गया। उस सम्मेलन में यह स्पष्ट तौर पर महसूस किया गया कि यदि झारखण्ड के लोग पूरी सिद्दत के साथ प्रतिरोध नहीं करेंगे तो झारखण्डी जातीयता सदा के लिए नेस्तनाबुत हो जाएगी। 21 मई 1979 को राँची कॉलेज में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग का उद्घाटन तत्कालीन कुलपति नड्ढा साहब ने किया। इसके बाद भी धुंध नहीं छंटे थे क्योंकि वे अपने डॉ. धान नहीं थे। पी. सी. होरो विश्वविद्यालय प्रशासन में थे। परिणाम हुआ कि स्नातक ऑनर्स एवं एम. ए. में झारखण्डी भाषाओं की विशेष पत्र के रूप में पढ़ाई और पुस्तकों का प्रकाशन खटाई में पड़ गया। ऐसे निराशा के दौर में 1980 में दक्षिण छोटानागपुर के आयुक्त डॉ. कुमार सुरेश सिंह ध्रुवतारा की तरह अवतरित हुए, जिन्हें रांची विश्वविद्यालय के कुलपति का प्रभार आयुक्त जैसे पद की महती जिम्मेवारी के अतिरिक्त सौंपा गया। कुमार सुरेश सिंह का झारखण्ड से पुराना लगाव था। अत: वे पूरी तरह झारखण्ड विकास के रहस्य (Developmental Clues) को जानते थे कि भाषा-संस्कृति के विकास के बिना झारखण्ड का विकास असंभव है।

भाषा सांस्कृतिक आन्दोलन और खोरठा क्षेत्र

भाषा सांस्कृतिक आन्दोलन अभी तक झारखण्ड के केन्द्र स्थल, राँची या दक्षिणी छोटानागपुर तक ही केन्द्रित था। उस आन्दोलन में पूरे झारखण्ड के प्रतिनिधि सम्मिलित हुआ करते थे, किन्तु आन्दोलन कुछ अर्थों में दक्षिणी छोटानागपुर तक ही सीमित लगता था। इस आन्दोलन की आंधी उत्तरी छोटानागपुर एवं संताल परगना में उतनी तेजी से

नहीं बह रही थी। इस संदर्भ में कुछ लोगों का मानना है कि खोरठा क्षेत्र में भाषा आन्दोलन थोड़ा पीछे आरंभ हुआ, किन्तु यह सही नहीं है। क्योंकि सक्रिय भाषा आन्दोलन की अगुवाई खोरठा भाषा के विद्वान ए. के. झा जी कर रहे थे। यद्यपि झा जी से भी पहले से 1948 के आसपास से ही खोरठा भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्यकारों ने लिखना आरंभ कर दिया था। उनमें से भुवनेश्वर दर्त्त शर्मा 'व्याकुल', श्री निवास पानुरी, विश्वनाथ दसौंधी 'राज', विश्वनाथ नागर, नरेश नीलकमल, नारायण महतो आदि के नाम प्रमुख हैं। खोरठा क्षेत्र से खोरठा की प्रतिनिधि पत्रिका 'तितकी' का प्रकाशन विश्वनाथ दसौंधी 'राज' के सम्पादकत्व में आरंभ हो गया था। इस पत्रिका का प्रकाशन सात-आठ अंकों के बाद बंद हो गया। और इसका पुर्नप्रकाशन 1983 ई. में कोठार-चेटर गांव से 'खोरठा ढाकी छेतर कमिटी' के बैनर तले ए. के. झा के सम्पादकत्व में आरंभ हुआ। प्रबंध सम्पादक की जिम्मेवारी मुझे (बी. एन. ओहदार) दी गई। बाद में तितकी का प्रकाशन 1995 ई. से 'खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति परिषद्' के अंतर्गत होने लगा, जिसका प्रकाशन अभी भी जारी है। वर्तमान में यह पत्रिका खोरठा की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में जानी जाती है।

1980 ई. में स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद भाषा सांस्कृतिक आन्दोलन की आंधी उत्तरी छोटानागपुर में भी पहुंचती है, जो आंधी दक्षिणी छोटानागपुर में 10-15 साल पहले आरंभ हुई थी, वह आंधी उत्तरी छोटानागपुर में बवंडर का रूप ले लेती है। यद्यपि उत्तरी छोटानागपुर में आन्दोलन थोड़ी दे से शुद्ध हुआ, फिर भी साहित्य लेखन की दिशा में जो उत्साह खोरठा क्षेत्र में पाया जाता है, उतना उत्साह शेष क्षेत्र मेरी समझ में नहीं पाया जाता। खोरठा क्षेत्र में भाषाई आन्दोलन के क्रम में 1984 में कोठार गांव के मिडिल स्कूल में भाषा-सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें डॉ. रामदयाल मुण्डा, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, डॉ. एच. एन. सिंह, कुरमाली भाषा के प्राध्यापन एवं वर्तमान में गोस्नर कॉलेज में नागपुरी भाषा के प्राध्यापक रामप्रसाद मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए थे। 1985 में ग्राम चेटर में भाषा-सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. बी. पी. केशरी, डॉ. कुमारी बासन्ती, डॉ. निर्मल मिंज तथा अमूमन पूरे झारखण्ड के विद्वान एवं नौवों भाषा-संस्कृति के कलाकार सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में प्रथम बार झारखण्ड की नौ प्रमुख भाषाओं के लिए नौ दीप जलाए गए। पुनः चेटर गांव में ही 1986 में भाषा सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें भारी वर्षा के बावजूद झारखण्ड क्षेत्र के लगभग सभी नामी-गिरामी विद्वान एवं आन्दोलन कर्मी सम्मिलित हुए। पुनः 1987 में रामगढ़ महाविद्यालय, रामगढ़ में खोरठा ढाकी छेतर कमिटी के तत्वाधान में भाषा सम्मेलन का

आयोजन किया गया, जिसमें विनोद बिहारी महतो, डॉ. रामदयाल मुण्डा तथा अन्य सम्मिलित हुए। अब तक यह भाषा आन्दोलन, झारखण्ड मुक्ति आन्दोलन का पर्याय बन चुका था।

स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना

झारखण्डी भाषाओं की विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाई के उपर्युक्त प्रयास चल रहे थे और प्रफुल्ल कुमार राय ने डॉ. सुरेश सिंह का ध्यान झारखण्ड की भाषाओं के प्रति विश्वविद्यालय की उदासीनता की ओर आकृष्ट किया। वे स्वयं रांची विश्वविद्यालय को गौरवमयी संस्कृति की महक से युक्त एक अनूठा विश्वविद्यालय बनाना चाहते थे, जिसके माध्यम से स्थानीय प्रतिभाएँ विश्व फलक पर अपनी चमक दिखा सके। उन्होंने ठीक दूसरे दिन प्रतिनिधि मंडल को आयुक्त निवास स्थल पर बुलाया। प्रतिनिधि मंडल में डॉ. निर्मल मिंज, डॉ. बी. पी. केशरी और प्रफुल्ल कुमार राय प्रमुख रूप से शामिल थे। सारी बातें सुनने के बाद डॉ. सिंह ने तुरंत आदेश लिखा तथा उसी तत्परता से उसी दिन 12 मई 1980 को ही सिंडिकेट से विभाग की स्थापना की सहमति दिलवाई। उनकी इच्छा थी कि विभाग का शुभारंभ जून के महीने में ही हो जाना चाहिए। उसी तत्परता से उन्होंने डॉ. केशरी को डालटनगंज से स्नातकोत्तर विभाग में स्थानांतरित करने तथा डॉ. रामदयाल मुण्डा को अमरीका से और डॉ. फ्रांसिस एक्का को भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर से बुलाने का आदेश जारी कर दिया। अब विभाग को बिहार सरकार से और यूजीसी से मान्यता दिलवाना बाकी रह गया। इसी बीच डॉ. सिंह का स्थनांतरण हो गया। पर वे तभी विदा हुआ जब विभाग को विधिवत मान्यता मिल गई। इस महती कार्य के लिए झारखण्ड की जनता डॉ. सिंह को युगों-युगों तक याद करेंगे। आज डॉ. सिंह नहीं है, पर उनकी यह कृति कीर्तिमान स्थपति कर रहा है।

स्नातकोत्तर विभाग के कीर्तिमान

1. **झारखण्डी जातीयता की स्थापना**- राँची विश्वविद्यालय का स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग मेरे जानते, पुरी दुनिया में एक मात्र विदेश में अनूठा विभाग है। एक स्नातकोत्तर विभाग में एक ही छत के नीचे तीन-तीन विश्व प्रसिद्ध भाषा परिवार ऑस्ट्रिक, द्रविड़ और आर्य परिवार की नौ भाषाओं की पढ़ाई होती है, जिसमें लगभग विद्यार्थी एक साथ उठते-बैठते हैं। और अध्ययन करते हैं जिन लोगों को झारखण्ड की सामाजिक संरचना के बारे में ज्ञान होग या उन्होंने देखा होगा कि कुछ साजिशों के कारण एक ओर मुण्डा और उरांव एक-दूसरे के विरोधी हो गए थे। इन दोनों मुण्डा एवं उरांव संवसार (गैर ईसाई) स्वयं अपनी ही समुदाय के लोगों, जिन्होंने

ईसाईयत स्वीकार कर लिया था, को अच्छी निगाह से नहीं देखते थे। तीसरी बात सभी जनजातीय समुदाय झारखण्डी साजिशों के कारण झारखण्ड के एक प्रमुख समुदाय सदान का विरोधी हो गया था। इस विभाग की स्थापना के साथ ही भाषा-संस्कृति के नाम पर सारे अर्न्तविरोधी को त्याग कर एक ही छत के नीचे, एक ही करम पेड़ की छाया में आकर खड़े हो गए और सबों ने एक दूसरे की ओर निहारा और मुस्करा दिया। इस विभाग की स्थापना के साथ ही अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा की लड़ाई, अलग राज्य की मांग की लड़ाई को बहुत बल मिला क्योकि झारखण्डी अब एक हो गए थे। झारखण्ड की राजनीति की धुरी यह विभाग का नाभिस्थल भी है। इस नाभिस्थल में ही अमृत घट है, जिसमें झारखण्ड का प्राण बसता है। रावण जब मारा नहीं जा रहा था, तो विभिषण ने बताया कि उसकी नाभि में अमृ कलश है। तब राम ने उसके नाभि स्थल में वाण संधान किया और सब मारा गया। झारखण्डियों से ज्यादा गैर झारखण्डी जानते हैं कि यह विभाग कितना महत्वपूर्ण है और इसीलिए इसपर बहुत बार वाण संधान भी हुए हैं, पर नाकाम रहे। झारखण्डियों को राम और विभिषण दोनों से सावधान रहने की जरूरत है। इस विभाग के प्रथम विभगाध्यक्ष और झारखण्डी भाषा संस्कृति के धुरंधर विद्वान डॉ. रामदयाल मुण्डा इसे ट्रेण्ड सेटर (Trend Setter) विभाग कहते हैं, अर्थात जिस विभाग ने सोचने की दिशा ही बदल दी। फस्वरूप झारखण्ड

2. **सदान, एक खोयी हुई कड़ी की पुनर्स्थापना**- इस विभाग ने तीसरा एक महत्वपूर्ण प्रतिमान स्थापित किया है, वह है झारखण्ड के इतिहास की एक खोयी हुई महत्वपूर्ण कड़ी, 'सदान' की पुनर्स्थापन। सदान शब्द अमूमन पूरे झारखण्ड में समान अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। यह एक बड़े समुदाय का प्रतिनिधि शब्द था जो खो चुका था और इस समुदाय के घटक, कुर्मी, तेली, राजपूत, ब्राह्ममण, बनिया, यादव बिखरकर बेपहचान बन चुके थे और अपनी पहचान के लिए भटक रहे थे। इनके प्रतिनिधित्व के लिए एक शब्द 'गैर जनजातीय' चल पड़ा था पर इस शब्द में उतनी कुबत नहीं थी कि झारखण्ड के उस महत्वपूर्ण गैर आदिवासी समुदाय या मूल्यवासी (जनजातीय नहीं) की सारी जातियों को, अपने में समेट सके। परिणाम हुआ कि ये समुदाय राजनीतिक कारणों से अपने को झारखण्ड आन्दोलन के साथ जोड़ नहीं पाते थे। उसे यह बता दिया गया था कि झारखण्ड तुम्हारा नहीं, जनजातियों का है और इस सरासर झूठ को यह समुदाय इसलिए सहने को मजबूर था क्योंकि कि अलग-अलग जातियों में बंटा हुआ था। ऐसी संकट की घड़ी, में इस विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बी. पी. केशरी ने इस सूत्र 'सदान' को पकड़कर गहन खोजबीन की और 'सदान' शब्द को झारखण्ड के वैसे तथाकथित गैर जनजातीय समुदाय या आदिम समुदाय जिनका इतिहास भरखों में

इतिहास में हजारों वर्षों पीछे तक जाता है। तक जाता है और झारखण्डके निर्माण में जिनकी भूमिका महत्वपूर्ण है, उनके प्रतिनिधि शब्द के रूप में पुनर्स्थापित किया। अपनी पुस्तक 'झारखण्ड के सदान' नाम नाम से। विशेषकर, जिसका परिणाम यह हुआ कि झारखण्ड अलग राज्य के आन्दोलन में सदानों ने शत्-प्रतिशत भूमिका निभाई और झारखण्ड अलग राज्य हुआ।

3. झारखण्डी जातीयता की पहचान का पर्व, सरहुल- सरहुल झारखण्ड का एक प्रमुख त्योहार है, पर इस विभाग की स्थापना के पूर्व कभी इतना वजनदार और महत्वपूर्ण नहीं रहा, जितना कि आज है। विभागाध्यक्ष डॉ. रामदयाल मुण्डा की सूझबुझ ने झारखण्ड में वही काम किया जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय मालवीय जी ने महाराष्ट्र की एकता एवं राष्ट्रीय एकता की चेतना बनाने के लिए 'गणपति पूजा' जैसे बिल्कुल घरेलू पर्व को पुनर्स्थापित कर राष्ट्रीय पहचान दिलवाई। डॉ. रामदयाल मुण्डा ने भी अलग-अलग गांवों में अलग-अलग दिन मनाये जाने वाले को सरहुक का आयोजन एक ही दिन पूरे झारखण्ड में पर्व बना कर इसे विश्वफलक पर पहचान दिलाई। आज यह त्योहार झारखण्ड की पहचान का पर्व गया है। इस पर्व में झारखण्ड की राजधानी रांची में बिना किसी लड़ाई या तनाव की संभावना के लाखों-लाखों स्त्री-पुरुषों के शांतिपूर्ण जुलूस वर्षों से यह साबित करता आ रहा है कि हम झारखण्डी शांतिप्रिय हैं।

4. **झारखण्ड की भाषाओं की भाषिक पहचान की स्थापना**- इस विभाग की स्थापना के पूर्व झारखण्ड की भाषाएँ बेपहचान बनी हुई थी। इसकी पहचान लगभग 'निबर की मौगी, सबकी भौजी' की तरह थी। खोरठा, कुरमाली को पूर्वी मगही की संज्ञा दी जा चुकी थी। इतना ही नहीं, हजारीबाग की भाषा को तो विशुद्ध मगही करार दिया जा चुका था। नागपुरिया सादरी को भोजपुरी का पठारी स्वरूप बताया जा रहा था। ऐसी संकट की घड़ी में इस विभाग की स्थापना झारखण्डी भाषाओं के लिए वरदान साबित हुई। अनेकों शोधार्थी इन भाषाओं के विभिन्न पहलुओं पर शोध-कार्य कर रहे हैं। आज ये भाषायें स्वतंत्र भाषा के रूप में खड़ी हो चुकी है।

— — — — — —

खोरठा भाषा : उद्‌भव और विकास

भारत विभिन्न किस्म की भाषा एवं संस्कृतियों का एक सुंदर सा बाग है। यहाँ जितनी प्रकार की भाषाएँ एवं संस्कृतियाँ पायी जाती है, उतनी दुनियाँ के किसी एक देश में नहीं पायी जाती। भाषा सर्वेक्षण के अगुवा सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 179 भाषाएं एवं 544 उपभाषाएँ पायी जाती है जो अलग-अलग भाषा परिवार-यूरोपीय (Indo European), द्रविड़ (China Tibbetian) की है। उसके अतिरिक्त सेमेटिक कुल (Semetic Family) की अरबी बहुत दिनों तक भारत में प्रचलित रही है।

भाषा एवं संस्कृति के मामले में विविधतापूर्ण देश भारत के अंतर्गत नवगठित 28वाँ राज्य झारखण्ड है।

झारखण्ड- झारखण्ड एक बहुप्रजातीय (Multi Ethnic) बहुभाषिक (Multi Lingual) एवं बहुसांस्कृतिक (Multi Cultural) राज्य है। यहां प्रोटो ऑस्ट्रोलायड - ऑस्ट्रिक प्रजाति, द्रविड़, प्रजाति और आर्य प्रजाति के लोग पाये जाते हैं उसी प्रकार ऑस्ट्रोएशियायिक परिवार की भाषाएँ - मुंडारी, संताली, हो एवं खड़िया।

द्रविड़ परिवार की भाषाएँ- कुडुख, माल्टो, माल पहाडिया आदि, आर्य परिवार की सदानी भाषाएं - खोरठा, कुरमाली, पंचपरगनिया एवं नागपुत्रिया बोली जाती है। ये सदानी भाषाएं उपर्युक्त तीनों प्रजातियों के बीच सम्पर्क सूत्र (Contact languages Lingua Franka) का काम करती है। भाषा संस्कृति के संदर्भ में देखा जाय तो झारखण्ड को भारत के लघु प्रतिरूप्र (Tiny model) कहा जा सकता है। दूसरे अर्थों में कहा जा सकता है कि जो कोई झारखण्ड को अच्छी तरह समझ लेगा उसे पूरे भारत को समझने में कठिनाई नहीं होगी।

झारखण्ड में इतनी प्रजातियों के लोग और भाषाएँ कहाँ से आयीं इसके लिए इतिहास के गर्भ में जाने की जरूरत है।

मानव विज्ञानियों के अनुसार झारखण्ड समेत पूरे भारत देश में सर्वप्रथम निग्रिटो (Negrito) समुदाय के लोग रहते थे। विकृत सिर, गहरा काला रंग, चपटी, नाक, घुंघराले काले बाल, यही उनकी पहचान थी। आज भी झारखण्ड के आदिवासी समुदाय में छिटफट निग्रिटो लक्षण के लोग कभी-कभी पाये जाते हैं। उसके बाद सुदूर थाइलैण्ड से हिमालय रेंज एवं कश्मीर घाटी और पंजाब होते हुए ऑस्ट्रिक प्रजाति के लोग यहाँ झारखण्ड पहुंचे। निग्रिटो के पूर्व पाषाण काल की नींव रखी थी और ऑस्ट्रिक प्राजाति ने उत्तर पाषाण की। आज भी वियतनाम, थाइलैण्ड और कश्मीर घाटी में ऑस्ट्रिक

प्रजाति के चिन्ह, अवशेष संसदिरि के रूप में पाये जाते हैं।

भारत के सिंधुघाटी में उच्चकोटि की नगर सभ्यता का विकास हुआ था ईस्वी सन् से 5-6 हजार साल पहले। इतिहासकार सह भाषा विज्ञानी एच. हेरास और जॉन मार्शल आदि का मानना है कि सिंधुघाटी सभ्यता का विकास करने वाले लोग द्रविड़ थे। उन लोगों ने एक लिपि का भी विकास किया था जिसे हेरास, लैंगडन स्मिथ गैंड हंटर आदि भाषा विज्ञानियों ने पढ़ने का प्रयास किया है। इस सिंधुघाटी सभ्यता को बर्बर आर्यो ने नष्ट कर दिया और द्रविड़ प्रजाति के लोग पराजित होकर पलायन कर गये। एक दल दक्षिण पहुंचा और दूसरा दल विंध्यघाटी होते-होते झारखण्ड के दुर्गम वनों में आकर रहने लगा।

आर्य समुदाय और झारखण्ड

झारखण्ड में जो तथाकथित आर्य समुदाय आदि है। उसे सदान नाम से जाना जाता है। सदानों की ही भाषा सदानी कही जाती है। सदानी को अच्छी तरह समझने के लिए जरूरत है सदानों को जानने की सदान- Badletter Parachage सदान शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में झारखण्डी भाषा संस्कृति के धुरंधर विद्वान डॉ. बी. पी. केशरी ने अपनी पुस्तक 'झारखण्ड के सदान' में भाषा, धर्म, प्रजाति, जाति की दृष्टि से व्याख्या करने का प्रयास किया है। इनके मतानुसार सदान सद+आन से बना हुआ माना जा सकता है। क्योंकि सदानी भाषाओं में 'आन' प्रत्यय जोड़कर विशेषणवाची शब्द बनाने का चलन है।

यथा - चढ़ + आन - चढ़ान
- उठ + आन - उठान
- नाभ + आन - नाभान आदि।

आगे डॉ. केशरी 'सद' शब्द की पहचान एवं प्रयोग 'सदपेरवा' शब्द में पाते है। सद पेरवा शब्द दो शब्दों सद+पेरवा से बना है। सबका का अर्थ है सदन या आवाज और पेरवा का अर्थ है कबूतर। अर्थात- सद पेरवा वैसे कबूतरों को कहा जाता है जो घर में रहते हैं या आदमी के साथ आवास में रहते है। उन्हें घुरघुसरी पेरवा भी कहा जाता है। कालांतर में बहुत संभावना है यह 'सद' शब्द झारखण्डमें वैसे लोगों के लिए प्रयुक्त होने लगा होगा जो झारखण्ड में बाहर से आये और झाखण्ड में पूर्व से रहने वाले मानव समुदायों के बीच घुसकर रहने लगे। इन्होंने अपनी पुस्तक में 'सद' शब्द की व्युत्पति संस्कृति में 'सत्' शब्द जिसका अर्थ - सात्विक, सीधा-सादा, सरल और शुद्ध होता है, से भी संभावना व्यक्त की है। आज भी झारखण्ड के दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में मूल गैरजनजातीय समुदाय के लोग अपने को सदान कहते हैं।

पीटर शांति नवरंगी ने अपनी पुस्तक 'नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण' में सदान शब्द की 'निषाद' शब्द से व्युत्पन्न होने की संभावना व्यक्त की है, किन्तु भाषा विज्ञान में व्युत्पत्ति के नियमों के अनुसार सदान शब्द की व्युत्पति निषाद शब्द से संभव नहीं है। झारखण्ड के सदान नामक पुस्तक में ही डॉ. केशरी ने सदान शब्द को मुण्डा भाषा के शब्द 'सदोम' से व्युत्पक होने की संभावना व्यक्त की है। सदोम मुंडा भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है-घोड़ा मुंडा परिवार की भाषा बोलने वाले लोगों ने जिन लोगों के लिए सदोम शब्द का प्रयोग किया होगा, व घोड़ा होंगे। ऐसे लोग झारखंड में युद्ध, व्यापार आदि के लिए आये होंगे। बाद में सदोम शब्द सदान में परिवर्तित हो गया। सदोम > सदाम > सदान। मेरे विचार से सदोम शब्द से सदान शब्द की व्युत्पति की संभावना सर्वाधिक है। झारखण्ड में दूर-दराज के गांवों में बनिया, नमक, तेल आदि घोड़े पर लादकर बेचने के लिए ले जाते होंगे आजमी जारी है। तब इन बनिया आदि लोगों की पहचान ही घोड़ा होगा। बहुत संभावना है, इन्हें सदोम , सदोम से पुकारते रहे होंगे। क्योंकि वे उन घोड़ा घारी व्यक्तियों का नाम तो जानते नहीं होंगे। कालान्तर में यही सदोम शब्द सदान बन गया होगा। बाद में यही शब्द घोड़ा घारी लोगों से मिलते-जुलते चेहरे वालों के लिए भी प्रयुक्त होने लगा होगा।

शतपथ ब्रह्ममण, पंचविश ब्रह्ममण और श्रौतसूत में 'सदब्राह्ममण' शब्द पाया जाता है और यह शब्द वैसे ब्राह्मणों के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो पथभ्रष्ट और संस्कारयुक्त हो गये थे। अर्थात् वैसे ब्राह्माणों के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता था, जो आर्यत्व की शुद्धता की परवाह किए बिना अनार्यो से यौन संबंध बना लिया था। ऐसे पथभ्रष्ट आर्यो से शुद्ध आर्य घृणा करते थे। अत: आर्यवर्जित कीकट प्रदेश या व्रात्य क्षेत्र की ओर खदेड़ दिये जाते थे। बहुत संभावना है रुदान शब्द उद्ब्राह्मण शब्द से ही व्युत्पन्न हो। सद्ब्राह्ममण > सदब्राम्हन > सदबामन > सदान

पहले ही कहा गया है कि ऐसे संस्कारच्यूत आर्यो से शुद्धरक्त आर्य घृणा करते थे। वही घृणा झारखण्ड निवासियों के प्रति या सदानों के प्रति गैरझारखण्डी बिहार (आदि) की कुरमी, राजपुत, अहिर आदि की समान नामधारी जातियों (सदानों) से घृणा करते हैं और विवाह आदि संबंध बनाना उचित नहीं मानते। उसी घृणा के परिणाम स्वरूप झारखण्ड में सदानों को कोलकुरमी, कोलतेली, कोलगोवार आदि संज्ञा दी गयी है।

सदान शब्द ही व्युत्पत्ति संस्कृत के 'सद्य' शब्द से भी मानी जा सकती है। सद्य शब्द का अर्थ होता है - तुरंत, अभी-अभी। इसी शब्द को उपसर्ग रूप में जोड़कर - सद्य प्रसवा, सद्य स्नाता आदि शब्द बनते हैं। बहुत संभावना है कि 'सद्य' शब्द वैसे लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ होगा जिन्हें तुरंत-तुरंत या हाल ही में कोल मुंडा आदि

जातियों को जनेउ आदि संस्कार करके सदान बनाया गया होगा या वैसे लोगों के लिए प्रयुक्त होता रहा होगा जो आदिवासी और आर्यरक्त से उत्पन्न होंगे। जाति बदलने की ऐसी अनेकों कहानियाँ लोक में प्रचलित हैं। इस बात की पुष्टि ई. टी. डाल्टन की पुस्तक डेस्क्रिप्टिव इथनोलॉजी ऑफ बंगाल (Description Ethnology of Bengal) में सदानों के बारे दिये गये मत से होती है। इस पुस्तक में लिखा है सदानों के पूर्वज आदिवासी ही रहे हैं जिन्हें जनेउ आदि पहनाकर आर्य समुदाय में शामिल किया गया। इन्हीं आर्य, और गैर आर्य के रक्तसमिश्रण के जन्म लेनेवाले लोग बाद में सदान के नाम से जाने गये।

There are many noble and respectable families, new admitted into the fraternity of Rajputs and calling themselves Kshatriya, who have little Aryan blood in their veins.. it is a fact that many Raja's and Chiefs, who are invented by Brahmins in due form at the proper age with sacred strings (Janeu) and who may show you a Pedigree proclaiming their descent through fifty generation from a Rashi or a cow or a snake or other animal or they are Kol, Bhuniya or Gond.

Page 310, 320

सदान शब्द की व्युत्पत्ति के बाद यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि आखिर सदान किस प्रकार, एवं कब आये और किधर से झारखण्ड में आये। इस संबंध में कतिपय ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ विद्वानों ने समय-समय पर परिकल्पनाएँ दी है, जिसे निम्न रूप में देखा जा सकता है-

(क) नमक परिवहन- नमक भोजन का एक आवश्यक घटक है, पर नमक मिलता है सुदूर दक्षिण समुद्र किनारे तब यह स्वभाविक जिज्ञासा होती है कि हजारों साल पहले पश्चिम और उत्तर के लोग नमक कैसे खाते होंगे या उन्हें कैसे प्राप्त होता रहा होगा। तब उसका उत्तर निश्चय ही यही होगा कि उत्तर और पश्चिम के लोग नमक की खोज में और परिवहन के क्रम में झारखण्ड के दुर्गम वनों को पारकर समुद्र किनारे तक जाते रहे होंगे और लौटते होंगे अपनी गाड़ियों में लादकर। आज भी खोरठा या अन्य सदानी भाषाओं में लदनी-खेदनी (सार्थवाह) शब्द प्रचलित है। स्पष्ट है, उस क्रम में बहुत समय या वर्षों लग जाते होंगे। बहुत संभावना है किन्हीं विकट या विशेष परिस्थिति में नमक परिवहन से जुड़े कुछ लोग झारखण्ड में ही रह जाते होंगे और आगे भी जारी होगा और धीरे-धीरे गैर अनार्य जातियों अनार्य जातियों के मध्य रहने लगी होगी।

(ख) जैन-बौद्ध धर्म प्रचार- झारखण्ड की 'रूप रेखा' नामक पुस्तक में डॉ. रामकुमार तिवारी ने लिखा है (पृष्ठ 77) की जैन तीर्थकार पार्श्वनाथ को ईसा पूर्व 800 में पारसनाथ पहाड़ी पर निर्वाण प्राप्त हुआ था। उसी पुस्तक में आगे लिखा है कि जैन

धर्म का केन्द्र स्थल मानभूम, (आज के धनबाद,) पुरुलिया जिले में अवस्थित था। आज भी दामोदर और कसाई नदी के किनारे जैन धर्म के ढेरों अवशेष पाये जाते हैं। झारखण्ड में 'सराक जाती' पाई जाती है, जो श्रावक (जैन धर्मवालम्बी गृहस्थ) का ही विकसित रूप है। बहुत संभावना है कि पार्श्वनाथ के साथ एवं बाद भी जैन धर्म प्रसार के सिलसिले में झारखण्ड आते रहे होंगे और बसते भी रहे होंगे।

झारखण्ड में बौद्ध धर्म के बहुत सारे प्रमाण मिलते हैं। 'आरक्योलॉजिकल सर्वे ऑफ बंगाल (Archeological Survey of Bengal) में टी. ब्लॉक के अनुसार धनबाद जिले में बुद्धपुर और दालमी नाम गाँव में अनेक बुद्ध स्मारक पाये गये हैं। ऐसा लगता है वे गाँव बौद्ध धर्म के केन्द्र रहे होंगे। इसके अतिरिक्त राँची जिला के बेलवादाग गाँव, जमशेदपुर में पटमदा तथा पलामू में बौद्ध धर्म से संबंधित ढेरों अवशेष पाये गये हैं। हजारीबाग किले के चौपारण प्रखंड अंतर्गत इटखोरी नामक स्थान बृहत बौद्ध केन्द्र रहा होगा। यहाँ विशाल शिवलिंग पर सैकड़ो बुद्ध मूर्तियाँ उकेरी गयी हैं। जिसे बाद में में ब्राह्मण धर्म वाले द्वारा नष्ट कर दिया गया होगा। आज भी यहाँ बड़ी मात्रा में बौद्ध मोक्ष के भग्नावशेष संग्रहालय संग्रहित है। एक काली सी स्त्री की मूर्ति भी पायी गयी है, जिसे भ्रमवश माँ कालाी की मूर्ति मान लिया गया है। किन्तु वस्तुत: वह बौद्ध भिक्षुणी की मूर्ति है। बोकारो-चास के निकट चेचगांव (दामोदर नदी और डोमा नदी के संगम) में अनेक बिखरी हुई बुद्ध की मूर्तियाँ मिलती है। यहाँ की बुद्ध मूर्तियों की विशेषता है कि ये शिवलिंग के ऊपर स्थापित दिखती है। किन्तु सभी मूर्तियाँ भग्न हैं। ऐसा लगता है कि ये मूर्तियों जानबूझकर तोड़ी गयी हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि बौद्ध धर्म के झारखण्ड अपने के पूर्व लोग शैव रहे होंगे बाद में बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद लोगों ने इसे स्वीकार किया होगा। बाद में शैव धर्म के ऊपर बौद्ध धर्म को माना होगा जिसका प्रतीक शिवलिंग के ऊपर बुद्ध मुर्ति की स्थापना है। बाद में जब बौद्ध धर्म का उच्छेद और ब्राह्मण धर्म की पुर्नस्थापना हुई होगी, तब ये मुर्तियाँ भग्न कर दी गई होंगी। इतिहास में यह भी पता लगता है कि अशोक ने धर्म प्रचार के लिए 'रक्षित' नाम के आचार्य को कीकट प्रदेश में भेजा था।

झारखण्ड में सरहुल पूजा जिस स्थल में सम्पन्न होता है उसे 'सरना' कहा जाता है इसी स्थान को जनजातीय भाषाओं में 'जेहरी', 'देंउसली' आदि नामों से जाना जाता है। सरना शब्द जनजातीय नहीं बल्कि सदानी शब्द है और बहुत संभावना है कि यह संस्कृत के 'शरणे' - शरण > सरन > सरना शब्द से विकसित हुआ है, क्योंकि बौद्ध धर्म के - बुद्ध शरणम गच्छामि, संघम् शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि का उद्‌घोषण होता होगा और लोग एक स्थान विशेष में धर्म प्रवचन सुनने के लिए एकत्रित होते होंगे, वही स्थान बाद में सरना नाम से जाना गया। सरना में साल, पीपल, बरगद के पेड़ पाये

जाते हैं या लगाये जाते हैं। इसे पवित्र स्थल माना जाता है। ऐसा लगता है कि सदानी भाषाओं का शब्द > गाछ, संस्कृत 'गच्छ > गच्छामि से ही व्युत्पन्न है। नागपुरी में आज भी वृक्ष को गद्द कहते हैं और खोरठा में गाछ।

गच्छ > गछ > गाछ।

सरना में साल, पीपल आदि के पेड़ पाये जाते हैं, वह महज संयोग नहीं है यह बस यूं ही नहीं है। सरना स्थल में ये पेड़ विशेष इसलिए है कि गौतम बुद्ध के साथ इन पेड़ों का संबंध है। प्रथम तो बुद्ध को निर्वाण अश्वस्थ - पीपल के नीचे प्राप्त हुआ था, दुसरा बुद्ध की मृत्यु साल वन में साल वृक्ष के नीचे हुई थी। ऐसे भी प्रमाप मिलते हैं कि गौतम बुद्ध की माँ मुंडा कुल से थी, इस प्रकार बुद्ध का संबंध मंडा जनजाति से था। प्रमाप है कि बुद्ध का जन्म भी शाल बन में ही हुआ था। मेरे विचार से बिहार (झारखण्ड) समेत हिन्दी भाषी एक बड़े क्षेत्र में प्रथम पुरुष एक वचन के सर्वनाम के लिए 'मैं' के बदले में 'हम' का प्रयोग पाया जाता है। जबकि हम प्र. पु. बहुवचन का बोधक है। किन्तु आज 'हम' का प्रयोग हिन्दी में भी एकवचन होने लगा है। व्याकरण की दृष्टि से यह गलत प्रयोग है, किन्तु एक दिन ऐसा आएगा, जब हिन्दी का नया आध ुनिक व्याकरण लिखा जाएगा तब प्र. पु. एक वचन के सर्वनाम के रूप में 'हम' को भी लिखना पड़ेगा। मुझे लगता है कि यह 'हम' शब्द भी बौद्ध धर्म-उद्घोष के शब्द 'धम्म' से व्युत्पन्न है।

धम्म > हम्म > हम।

बौद्ध धर्म में 'संघम' संघ को ज्यादा महत्व दिया गया है अर्थात् एक अकेला महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण है संघ, समुदाय है। इसलिए हिन्दी भाषा, विशेषकर बिहार जो बुद्ध का कर्मस्थल रहा है में 'मैं' के बदले 'हम' (समूहवाची) शब्द का प्रयोग होने लगा। आज भी बिहार-झारखण्ड में समूह निष्ठता, समूहबोध, सामूहिकता अन्य राज्यों की तुलना में अधिक है। दूसरे राज्यों में व्यक्तिनिष्ठता या व्यक्तिवादी या एकलप्रवृति ज्यादा पायी जाती है।

(ग) कलिंग वियज- मगध सम्राट अशोक ने कलिंग (उड़ीसा) विजय के लिए बहुत भारी फौज भेजी थी। यह तो तय है कि मगध की फौज झारखण्ड होकर ही कलिंग गयी होगी और विजय के पश्चात लौटी भी होगी, यह आवा-जाही कोई एक दो दिन की घटना नहीं होगी बल्कि वर्षों लगे होंगे। बहुत संभावना है कि किन्हीं विशेष परिस्थितियों के कारण बहुत सारे लोग झारखण्ड में रह गये होंगे।

इसके अतिरिक्त झारखण्ड के दक्षिण मध्य भारत (Central India) से नर्मदा घाटी होते हुए भी लोग झारखण्ड में आये। छत्तीसगढ़ की भाषा हलवी आदि से सदानी भाषाओं की समानता कदाचित् इसी कारण है। झारखण्ड की एक प्रमुख सदान जाति

कुर्मी अपने आपको उत्तर से आया हुआ नहीं मानते बल्कि ये मध्यभारत से आया हुआ मानते हैं। फलस्वरूप कुर्मी जातियों के बहुत सारे रिवाज दक्षिण के रिवाज से मेल खाते हैं। इड़ली और डोसा का ही रूप ख्परपोंडा (गोरगोरा) और छिलका, सांभर की तरह झोरदार सब्जी, महाराष्ट्र की तरह गणेश पूजा, मध्यभारत की तरह दोला (सुआगीत) तथा मराठी में 'आहे' सहायक क्रिया का प्रयोग तथा कुडुख और खोरठा कुरमाली के शब्दों में समानता आदि। अर्थात झारखण्ड में हजारों-हजारों साल तक, उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम से लोग आते रहे और बसते रहे। डॉ. बी. पी. केशरी ने झारखण्ड के सदान नामक अपनी पुस्तक में सदान समुदाय को परिभाषित करते हुए कहा है- झारखण्ड का वैसा गैर जनजातीय समुदाय जो यहाँ सैंकड़ों-हजारों वर्षों से जनजाती समुदायों के सानिध्य में रहता आया है, जिसकी भाषा खदानी रही है और जिसकी एक विशिष्ट संस्कृत है, सादान है जिसकी मातृभाषा सदानी है या रही है और जिनकी एक विशिष्ट पहचान और संस्कृति बन गयी है, सदान है।

सदानी- सदानों की भाषा सदानी नाम से जानी जाती है। सदानी भाषा के चार क्षेत्रीय भेद हैं- खोरठा, कुरमाली, पंचपरगनिया, नागपुरिया। विवेच्य भाषा खोरठा के उद्भव एवं विकास की पड़ताल करना यहाँ हमारा अभीष्ट है।

खोरठा भाषा का क्षेत्र एवं जनसंख्या

खोरठा भाषा झारखण्ड के समस्त उत्तरीछोटानागपुर एवं संताल परगना के अर्थात् झारखण्ड के 24 जिलों में 16 जिलों (रामगढ़, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, गिरिडीह, पाकुड़, बोबोरा जामताड़ा, देवघर, धनबाद, गोड्डा, साहेबगंज, दुमका, गढ़वा, लातेहार एवं पलामू) की डेढ़ करोड़ आबादी के नित्य दिन की व्यवहार की भाषा है। यह भाषा जनाजातीय समुदाय विशेषकर संताल समुदाय को गैर जनजातीय समुदाय से जोड़ती है। अर्थात यह सम्पर्क भाषा का काम करती है। खोरठा भाषा क्षेत्र के शेष जनजातीय समुदाय जैसे मुण्डा, बेदिया, करमाली आदि की मातृभाषा खोरठा ही है। उल्लेखनीय है कि ये जनजातीय समुदाय अपनी मातृभाषा भूल चुके हैं।

खोरठा शब्द की नामयात्रा

खोरठा शब्द की व्युत्पति को लेकर विद्वानों मे मैतक्य नहीं है। लोक में खोरठा मोटे तौर पर ठेठ, अनपढ़, गंवार, देहाती, कड़कड़िया, हुरठउआ, जैसे विशेषणों से चिन्हित है।

खोरठा शब्द की व्युत्पति के संबंध में खोरठा के धुरंधर विद्वान ए. के. झा जी का मत है कि खोरठा शब्द की व्युत्पति भारत की प्राचीन लिपि खरोष्ठी से हुई है।

ध्वनि परिवर्तन के कारण खरोष्ठी से खोरठा बना।

भाषा- खरोष्ठी - खरोठी - खरोठा - खोरठा

खरोष्ठी - खरोटी - खलोटी - खरोठा - खोरठा

दूसरे विद्वान कृष्ण चन्द्र दास 'आला' जी ने अपनी पुस्तक 'खोरठा भाखा गर्हन में लिखा है कि खोरठा शब्द खरोष्ठी से व्युत्पन्न नहीं है। वरन् यह 'खरठा' शब्द से बना है। जिसका अर्थ प्रकृति होता है। चूकि खोरठा प्रकृति मूलक भाषा है अत: खरठा से इसकी व्युत्पत्ति ज्यादा तर्कपूर्ण है। उनके मत में ही खरठा उच्चारणदोष, विशेषमत: बंगाली समुदाय के उच्चारण के कारण खोरठा बन गया। कुछ लोग खोरठा शब्द को बंगाल के खोट्टा (विकृत बंगला) शब्द से बना हुआ मानते हैं।

'आला' जी के मत से सहमत नहीं हूँ क्योंकि खोरठा भाषा में 'खरठा' नामक कोई ऐसा शब्द नहीं है जिसका अर्थ 'प्रकृति' है। 'आला' जी के हठ कि खोरठा न कहकर खरठा कहना चाहिए के संबंध में मैं यह विनम्रतापूर्वक कहना चहूंगा कि चूंकि खोरठा शब्द लोक प्रसिद्ध है तथा निर्बंधित भी है तब ऐसे समय में उसे खरठा कहना उचित प्रतीत नहीं होता। बंगाल के खोट्टा शब्द का व्युत्पन्न होने के मत के संबंध में मेरा यह मानना है कि यह विकृत बंगला नहीं वरन खोरठा पर बंगला का प्रभाव है।

ए. के. झा. जी ने खोरठा शब्द को ध्वनि परिवर्तन के कारण खरोष्ठी से व्युत्पन्न कहा है पर पुष्टि के लिए आगे कुछ नहीं कहा है। झा जी के मत को आगे बढ़ाते हुए मैंने पाया है कि खरोष्ठी भारत की प्राचीन लिपि थी। यह लिपि मोहनजोदड़ो हड़प्पकालीन सभ्यता के समय से चली आ रही थी। उसका विकास संभवत: हड़प्पा सभ्यता के जनकों ने किया था। विद्वानों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यत को आर्यो द्वारा नष्ट किये जाने के बाद हड़प्पा सभ्यता के द्रविड़ लोग दक्षिण की ओर पलायन कर गये। विद्वानों का ऐसा मानना है कि द्रविड़ों का एक दल झारखण्ड आकर रहने लगा। भागलपुर बिहार के एक शोधकर्ता निर्मल चन्द्र वर्मा ने संथालों के द्वारा सोहराय आदि त्योहारों में बनाये जानेवाली भित्ति चित्रों या आकृतियों को लिपि माना है और उन्होंने चिन्हों की एक श्रृंखला की खोज कर डाली है। उनका मानना है कि ये आकृतियाँ ध्वनि-चिन्ह है और उसे उन्होंने पढ़ने का भी प्रयास किया है। हजारीबाग-गिरिडीह जिले में ऐसी गुफाएँ पायी गयी हैं, जिनमें खेराष्ठी लिपि, चित्र लिपि उत्कीर्ण हैं जिनका काल ईसवी सन के तीसरे सहस्राब्दी माना गया है। बरमा गाँव प्रखंड काचिसकोह-इसको गुफा काफी प्रसिद्ध है।

अस्तु हमारा अभीष्ट खरोष्ठी के स्वीकृत स्वरूप से है। खरोष्ठी में 37 वर्ण चिन्ह हुआ करते थे। इस लिपि में मात्राओं की ढेर कमी है, खासकर दीर्घ मात्राएँ। इस लिपि में दीर्घ स्वर - ई, ऊ और संयुक्त स्वर (Diphthong) ऐ और औ संयुक्त व्यंजन क्ष,

त्र, ऋ, लृ, का बिल्कुल अभाव है। इसका सीधा सा अर्थ है कि इस लिपि का आविष्कार उस भाषा विशेष के लिए हुआ होगा, जिस भाषा में उपर्युक्त ध्वनियाँ होगी ही नहीं क्योंकि लिपि तो किसी भी भाषा के ध्वनि चिन्ह हुआ करते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो खोरठा में मोटे तौर पर वे ही ध्वनियाँ है जिनके चिन्ह खरोष्ठी उपयुक्त है आज भी खोरठा में मात्राओं का प्रयोग थोड़ा कम होता है। बहुत संभावना में आरंभ में बिल्कुल ही न होती हो। आरंभ में बिल्कुल ही न होता तो। उल्लेखनीय है कि खोरठा के किसी शब्द के आरंभ में मात्राओं का प्रयोग तो होता है पर मध्य और अंत में लगभग नहीं होता है- जैसे-

बढ़नी - बढ़नि - बाढइन - बढइन

पेठिया - पेइठ

कोटरि - कोटइर - झोटरी - झोटइर, गेठरी - गेठइट,

परिवर्तन - पइरवरतन, पानी - पइन। आदि

हिन्दी संस्कृत आदि के संयुक्त स्वर अपने मूल रूप में उच्चारित होते हैं। जैसे-

औ - अ + उ, ऐ - अ + इ या अ + ए

औरत + अउरत ऐनक - अइनक, अएनक

खरोष्ठी लिपि में मात्राओं की उचित व्यवस्था न रहने से संभावना है कि संस्कृत के शब्दों को जब खरोष्ठी लिपि में लिखा जाता रहा होगा तो निम्न प्रकार शब्दों के रूप बनते होंगे।

जैसे - चलति - चलइत,	मणि - मइन
करोति - करइत,	साधु - साउध
मधु - मउध,	गणपति - गनपइत
श्रृणोति - सुनइत,	मुनि - मुइन आदि।

ऐसी संभावना इस बात से पुष्ट होती है कि सदानी भाषाओं में उपर्युक्त संस्कृत हिन्दी के शब्दों का उच्चारण इसी प्रकार होता है। खोरठा, सदानी भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता मध्य स्वरागम (Epenthesis) की है। अर्थात शब्दों के मध्य में इ, उ, स्वरों का आगम। अभी तक भाषा के विद्वान सदानी भाषाओं में स्वरागम की प्रवृत्ति पर मौन हैं या कोई कारण ढूंढ नहीं पाये हैं। सीधे-सीधे तौर पर स्वीकार कर लिया है कि मध्य स्वरागम की प्रवृति सदानी भाषाओं की विशेषता है। ईरानियों की धार्मिक पुस्तक 'अवेस्ता' में भी मध्यस्वरागम की प्रवृति देखी जाती है। संस्कृत और अवेस्ता के शब्दों में तुलना करने पर हम पाते हैं-

Bhavati (भवति) - Bhavaiti (भवइति), Arush (अरूष) - Auroso (अवरूषो), Taruna (तरूणा) - Tauruna (तावरूना) (खोरठा में भी तरूणा का

उच्चारण तउरना ही होता है), Aryah (आर्यः) - Airyo (आर्यो) (खोरठा में भी) Airj (आइर्ज) हो जाता है) आदि।

सुनीति कुमार चटर्जी आदि भाषविदों ने इस प्रवृत्ति के पीछे मुण्डा भाषाओं में शब्दों के मध्य व्यंजनागम की प्रवृति के प्रभाव को माना है। अर्थात मुण्डा सदानी भाषाओं में मध्य स्वरागम की प्रवृति मुण्डा भाषाओं के प्रभाव के कारण है। मुण्डा भाषाओं विशेषकर संथाली के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

जैसे- मंझि - मुखिया, मपंझि - मुखिया लोग
दल - मारना दपल - मारामारी करना या
परस्पर मारपीट करना।

मेरे विचार से सदानी भाषाओं में मध्य स्वरागम की प्रवृत्ति मुण्डा भाषाओं के प्रभाव के कारण नहीं है। क्योंकि प्रथम तो मुण्डा भाषाओं में व्यंजनागम है। जबकि सदानी भाषाओं में स्वरागम। द्वितीय मुण्डा भाषा में शब्द के मध्य में व्यंजन के आगम से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। जबकि सदानी भाषाओं में मध्य स्वरागम से सिर्फ उच्चारण (Utterance) में परिवर्तन होता है अर्थ में नहीं। मेरे विचार से सदानी भाषाओं में स्वरागम का कारण है संस्कृत - प्रकृत तथा - हिन्दी के शब्दों का खरोष्ठी में लेखन (Scribing) जैसा की उपर्युक्त उदाहरणों में दिया गया है, होता होगा। अर्थात संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि के मात्राधारी शब्दों का लेखन जब खरोष्ठी लिपि में हुआ होगा, तब इन शब्दों की मात्राएँ स्वर वर्ण में रूपान्तरित हो गई। क्योंकि खरोष्ठी लिपि में कुछ मात्राओं के लेखन की व्यवस्था है ही नहीं। तब शब्द के मध्य स्वर का आगम हो गया और इसी के सादृश्य (Analogy) से एक ही परिवेश में रहने के कारण वैसे शब्दों में भी मध्य स्वरागम होने लगा, जिनमें मात्राएं थी ही नहीं।

जैसे - चल - चइल लात - लाइत
- कर - कइर जान - जाइन
- सुन - सुइन सुत - सुइत
- सान - साइन मान - माइन आदि

खरोठा और खरोष्ठी में ध्वनिगत समानता देखकर ऐसा लगता है कि खरोष्ठी लिपि का आविष्कार जिस भाषा विशेष के लिए हुआ होगा वह या तो खोरठा या खोरठा से मिलती-जुलती भाषा के लिए हुआ होगा। इस तरह यह कहा जा सकता है कि खोरठा और खरोष्ठी का नाम साम्य बस यूँ ही नहीं है बल्कि तार्किक आधार (Logical Base) है।

बाद में जब बौद्ध धर्म का प्रचार होने लगा तो बुद्ध वचन को खरोष्ठी लिपि में शिलाओं में उकेरा गया, जो शिलालोख्य के नाम से जाने जाते हैं। इस तरह के खरोष्ठी

लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख लगभग पूरे भारत के अतिरिक्त विदेशों - चीन, तुर्कीस्तान, खोतान, निय आदि क्षेत्रों में भी पाये गये हैं। झारखण्ड के गिरीडीह जिले में कई शिलालेखों जो खरोष्ठी में उत्कीर्ण हैं को चिन्हित किया है कई विद्वानों ने। बुद्ध की जो भाषा थी वह प्राकृत संस्कृत और लोकभाषा के शब्द थे। इन शब्दों को जब खरोष्ठी में लिखा गया तो भाषा का एक नया रूप बन गया जो संभवत: पाली नाम से जाना गया। इसका काल ई. पू. 500 से पहल ई. तक माना है विद्वानों ने।

पालि

मागधी प्राकृत के वैयाकरण आचार्य मोग्गलान और अन्य वैयाकरण के मुताबिक पालि नाम को से विकास पालि-पंक्ति से हुआ हैं। खोरठा भाषा में 'पारि' शब्द पाटी या पंक्ति के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। खेत में पानी पटाने के लिए पूरे खेत को कई छोटे-छोटे क्यारियों में बांट दिया जाता है, जिसे 'पारि' कहा जाता है। मागधी में 'र' के बदले 'ल' और ल के बदले 'र' का प्रयोग बहुधा होता है। बाद में यही पारि (पंक्ति) पालि में बदल गया। अर्थात बुद्ध वचन को पंक्ति-पंक्ति में खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण किया गया तो भाषा का एक नया स्वरूप खड़ा हो गया जो आगे चलकर 'पारि 'या' 'पालि' नाम से जाना गया।

कई विद्वान पालि की व्युत्पत्ति परियाय > पलियाय > पालि से मानते हैं। कुछ विद्वान प्राकृत शब्द से इसकी उत्पत्ति मानते हैं। उनका मानना है कि प्राकृत शब्द रूपान्तरित होकर - > प्राकृत > पाकट > पाअड़ > पाउल > पाल > पालि से मानते हैं तो कई विद्वान इसे पल्लि (गांव) शब्द से इसकी उत्पत्ति मानते हैं। और भी कई मान्यताएँ हैं, पर ये ध्वनि परिवर्तन के नियमों के अनुकूल नहीं बैठते। पालि के पारि से व्युत्पन्न होने का आधार ज्यादा तार्किक एवं वैज्ञानिक लगता है।

पालि की विशेषताएँ

पालि में ऐ, औ, श, ष, ऋ, लृ, : (विसर्ग) ध्वनियाँ नहीं पायी जाती। साथ ही पालि में हस्वतर ए और इ दो विशेष ध्वनियाँ पाई जाती है। भोलानाथ तिवारी ने भाषाओं के तत्व पाये जाते हैं। ऑस्ट्रिक और द्रविड़ भाषाओं के अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। अपनी भाषा विज्ञान की पुस्तक में लिखा है- ध्वनि और सब की दृष्टि में जाति में कई भाषाओं के तत्व पाये जाते हैं। पालि में। इसेक अतिरिक्त अघोष व्यंजन क, ख, च, ख, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ के घोष रूप में (ग, घ, ज, ड, ढ, ब, भ) में बदल जाने की प्रवृति पाई जाती है। इसके अतिरिक्त एक ही 'स' (दन्तय) की प्रवृति पायी जाती है। अघोष के घोष रूप में बदल जाने के कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं। जैसे- शाक

– साग, कंकन – कंगण आदि।

पालि और खोरठा

पालि की ध्वनिगत विशेषताएँ खोरठा की ध्वनिगत विशेषताओं से शत-प्रतिशत मेल खाती हैं। अर्थात् जब बौद्ध धर्म के प्रचारक झारखण्ड क्षेत्र में आये और धर्म प्रचार करने लगे तो झारखण्ड के जनजातीय परिवेश अर्थात् भाषा और संस्कृति के परिवेश में एक नई भाषा का विकास हुआ, वह भाषा ही वर्तमान में सदानी भाषाएँ कहलाती हैं। इसी सदानी भाषा का एक भेद खोरठा है।

खोरठा और प्राकृत

प्राकृत अर्थात प्राक + कृत अर्थात जो पहले बनी, वैसी भाषा प्राकृत कहलाई। प्रकृति में विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ दो चीजों के परस्पर टकराने से, घर्षण होने से, हवा के चलने, पानी की बूंदों के गिरने तथा पशु-पक्षियों के बोलने के कारण पायी जाती हैं। जैसे – तेज हवा के चलने से हर-हर-हर, थोड़ा कम तेज चलने से सर-सर-सर-सर इससे भी कम तेज होने से या शीत का प्रभावयुक्त हो तो – सुल-सुल-सुल-सुल की ध्वनि उत्पन्न होत है। इसी प्रकार पत्तों के उड़ने से फर-फर-फर-फर, बूंदों के गिरने से – टप-टप-टप-टप, झर-झर-रझ-रझ आदि ध्वनियाँ उत्पन्न होती है। अनुकरण प्रिय प्राणी मानव द्वारा इन्हीं ध्वनियों के नकल से भाषा का विकास किया गया होगा। इसकी संभावना भाषा उत्पत्ति के अन्य सभी संभावनाओं एवं मान्यताओं से ज्यादा तार्किक एवं प्रबल है। आज भी खोरठा में इस तरह के शब्दों की भरमार है और धड़ल्ले से प्रयोग होता है। हिन्दी आदि अन्य भाषाओं में भी इस तरह के शब्दों की भरमार है।

जैसे : खट-खट सीढ़ियाँ चढ़ गया।
पानी की बूंदे टप-टपा रही थी।
उसने दरवाजा खट-खटाया।
हवा की तेज सरसराहट सुनाई दे रही थी। आदि

ऐसे ध्वन्यात्मक शब्दों को भाषा विज्ञान में अनुकरणात्मक या अनुरणात्मक (Onomotopoetic) कहा जाता है। इस प्रकार की प्रकृति की ध्वनियों से विकसित भाषा प्राकृत कहलाई। ऐसे ही भाषा के संबंध में 'यास्क निरूक्त' के भाष्यकार नमि साधु ने कहा है – ''सामान्य लोगों में व्याकरण के नियमों से रहित, सामान्य-वचन व्यापार की भाषा प्राकृत है।''

सकल जग्गजन्तूना व्याकरणादिभिरनाहित संस्कार: सहजो
वचन व्यापार प्रकृति: तत्रं भव सैव वा प्राकृतम् ॥

आगे चलकर यही प्राकृत के रूप में जाना गया। क्षेत्र के अनुसार इसके अनेक भेद थे। इसी प्रथम प्राकृत के किसी एक भेद का संस्कार करके संस्कृत भाषा का विकास हुआ जो शिष्ट समाज के लिए आरक्षित हो गई वह भाषा। जन साधारण के लिए संस्कृत भाषा के दरवाजे सदा बंद रहे। तब जाहिर है कि सामान्य जनता उसी प्रकृति से व्युत्पन्न और पहले से चली आ रही भाषा का प्रयोग करती चली आ रही होगी। बहुत बाद में उच्चारण दोष के कारण संस्कृत में भी विकृति आने लगी और एक नई भाषा विकसित हो गई। वह भी बाद में प्राकृत कहलाई जिसे विद्वानों ने द्वितीय प्राकृत कहा है। इसके संबंध में हेमचन्द्र ने कहा है –

प्रकृति संस्कृत तत्र भवं तत आगत वा प्राकृत्म।

अर्थात् प्राकृत का जन्म संस्कृत से हुआ है। दूसरे शब्दों में संस्कृत के विकृत रूप से प्राकृत की संज्ञा प्राप्त हुई। इसी द्वितीय प्राकृत का मागधी भेद (मागधी प्राकृत) गौतम बुद्ध की भाषा थी किन्तु यह बात भी सत्य है कि गौतम बुद्ध ने अपने शिष्यों को आदेश दिया था कि हमारे उपदेशों को सामान्य जनता अपनी-अपनी भाषाओं में ही सुने और समझे। इसी आदेश के कारण आगे चलकर बुद्ध के उपदेश क्षेत्रीय लोक भाषाओं में प्रचारित होने लगे थ। तो भाषा के नये स्वरूप का विकास होना अवस्यंभावी था, जो पालि कहलाइ। विद्वानों ने स्वीकार किया है कि पालि में ढेरों क्षेत्रीय लोक भाषाओं तथा आष्ट्रिक एवं द्रविड़ भाषाओं के शब्द एवं तत्व पाये जाते हैं। चूंकि खोरठा भाषा का क्षेत्र मगध साम्राज्य के अधीन था अत: इसकी आधार भाषा को मागधी प्राकृत कहा जा सकता है पर खोरठा का विकास मागधी प्राकृत के उस भेद से नहीं हुआ है, जिससे मगही का विकास हुआ है। क्योंकि खोरठा की ध्वनिगत विशेषताएँ मागधी प्राकृत की ध्वनिगत विशेषताओं से मेल नहीं खाती। मागधी प्राकृत में 'र' ध्वनि पुरी तरह 'ल' ध्वनि के रूप में प्रयुक्त होती है। जैसे-

राजा – लाजा पुरुष – पुलिस आदि।

तीनों उष्म ध्वनियों श, स, ष के स्थान पर एक ही 'श' का प्रयोग मागधी प्राकृत की विशेषता है। किन्तु खोरठा में सिर्फ 'स' का प्रयोग होता है। 'ष' ध्वनि खा या ष में बदल जाती है।

जैसे- पुरूष – पुरूख, वर्षा – बरखा
धनुष – धनुख, धनुस आदि।

मागधी प्राकृत में 'ज' का रूपान्तरण 'य' ध्वनि में होता है। जैसे : जणाति-यणति किन्तु इसके ठीक विपरीत खोरठा में 'य' का प्रयोग विरल ही होता है। यह श्र तथा इ + अ में उच्चारित होता है। यथा : सियार – सिआर, प्यार – पिआर यदि-यदि व्याह बिआह आदि। यमुना-नमुना यश-जस आद

खोरठा में य का उच्चारण और लेखन उपर की ही भांति होता है।

खोरठाा और अपभ्रंश

अप्रभंश भाषा उकार बहुला भाषा थी। इसी कारण आज भी मगही, भोजपुरी, मैथली, अवधी, ब्रज आदि भाषाओं मे यह उकार ध्वनि पायी जाती है। जैसे – खइबू, जइबू, रामू, पियासू, भयेउ, चलेअ आदि। जबकि खोरठा आकार बहुला भाषा है। जैसे – खइबा, जइबा, सुनबा, कहबा, गेला, सुनला, चलला आदि। खोरठा के संज्ञा शब्दों में आकार जुटने की विलक्षण प्रवृति पायी जाती है। ऐसी प्रवृति अन्य भाषओं में देखने को नहीं मिलती।

जैसे : पेट – पेटा, घर – घरा, भात – भाता

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि खोरठा का आधार प्राकृतिक ध्वनियों के अनुकरण से बनी भाषा प्रथम प्राकृत रही है। यह प्रथम प्राकृत बिल्कुल सहज वचन–व्यापार की भाषा थी तथा व्याकरण के पेंच–पाँच नहीं थे। इसी के एकरूप संस्कार करके इसे व्याकरण के नियमों उपनियमों के शिकंजे में कसकर उसे कठिन और दुरूह बना दिया गया। मात्राएँ गढ़ी गई, संयुक्ताक्षर बने, इस प्रकार एक सहज वचन, व्यापार की सरल भाषा संस्कृत भाषा जैसी कठिन भाषा कठिन बना दी गई। किन्तु भाषा की प्रवृति कठिनता से सरलता की ओर जाने की सदैव रहती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भाषा अपने उद्‌गम को जो कि सरल था, को प्राप्त करना चाहती है। इस तरह समझा जा सकता है कि संस्कृत जिस प्राकृत भाषा से बनायी गयी वह सरल भाषा थी और संस्कृत कठिन। पुनः संस्कृत के उच्चारण दोष (?) या अपने सहज प्राकृत उच्चारण के कारण संस्कृत के शब्द अपने मूल प्राकृत रूप में आने लगे, जो द्वितीय प्राकृत कहलाए। इस प्राकर प्रथम प्राकृत के मौलिक रूप की भाषा और संस्कृत के विकृत रूप (द्वितीय प्राकृत) के मेल से ही खोरठा समेत आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ है। खोरठा जैसी भाषा में जनजातीय भाषाओं ऑस्ट्रिक और द्रविड़ परिवार की एवं उनकी संस्कृति के प्रभाव से एक नई भाषा का विकास हुआ, जिसे खोरठा सदानी की संज्ञा प्राप्त हुई।

भाषा वर्गीकरण और खोरठा

विद्वानों ने दुनिया की भाषाओं को महाद्वीप, द्वीप, देश, काल, धर्म प्रजाति, परिवार तथा आकृति के आधार पर वर्गीकृत किया है। पर रूप–रचना एवं पारिवारिक वर्गीकरण पर आधारित वर्गीकरण ही सर्वथा प्रमुख है।

आकृति के आधार पर खोरठा भाषा का वर्गीकरण

इस आधार पर यह भाषा द्रविड़ एवं ऑष्ट्रिक भाषाओं की तरह अश्लिष्ट, अंतयोगात्मक भाषा (Suffix Agglutinative Lanaguage) है। इस तरह की भाषा में मूल शब्द या धातु में प्रत्यय एक के बाद एक जुड़ते चले जाते हैं। तुर्की तथा यूराल आल्टायिक एवं आष्ट्रिक-मुण्डा परिवार की भाषाओं में भी इस तरह की रूप रचना पाई जाती है। तुर्की भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

एव - घर एवलेर - कई घर,
एवलेरइन - मेरे घर

एक अन्य उदाहरण : पालनगल - पालनगलएइ
पालनगलउदीय आदि।

हंगरी की भाषा का एक उदाहरण: जार - बंद करना
जारत - बंद करवाता है।
जारतगत-अधिकृत बंद करवाता है।
जारतगत - अधिकतर बंद करवाता है।

कन्नड भाषा का एक उदाहरण : कर्ता कारक - सेवकरू
कर्म कारक - सेवकरन्नू
करन कारक - सेवक रिन्दे।
सम्प्रदान कारक - सेवक रिगे।

मुण्डा भाषा का एक उदाहरण : दल-ओचो-अकंत-हेन-तीये-तये।

उपर्युक्त भाषाओं में शब्द या धातु में प्रत्यय दर प्रत्यय जुड़ते चले गये हैं। पर मूल शब्द या धातु में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। ठीक उसी प्रकार खोरठा में मूल शब्द या धातु में प्रत्यय दर प्रत्यय पजुड़ते चले जाते हैं। इस प्रकार बना हुआ एक क्रिया रूप इतना सबकुछ बोध कराने की सामर्थ्य रखता है कि कार्य को कौन कर रहा है, कौन करा रहा है, कौन कह रहा है, कि सके लिए किया जा रहा है। कहने, सुनने और करने वाले का पुरूष, वचन, लिंग सामाजिक हैसियत, आदर, अनादर तथा काल एवं परिस्थिति क्या है सब का बोध हो जाता है।

हेतुहेतुमद्भूत काल का एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

कतरलइन - कर + त + ल + इ + न। यहाँ 'कर' धातु है। इसमें 'त' कालबोधक प्रत्यय है जो भविष्य काल की तृतीय पुरूष एक वचन के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'ल' भूतकाल बोधक प्रत्यय है। 'इ' तृतीय पुरूष का सर्वनामबोधक प्रत्यय है। और न वचन बोधक प्रत्यय है। इस प्रकार इस क्रियारूप में 'कर' धातु के साथ काल, पुरूष और सर्वनाम और वचन बोधक प्रत्यय एक के बाद लगे हुए हैं। इस क्रिया का अर्थ होगा, यदि वे/वे लोग आते वह उनके लिए कार्य करता। इस प्रकार हम देखेंगे कि-

यदि कार्य प्रथम पुरुष एकवचन या बहुवचन के हित में हो रहा है और कर्ता तृतीय पुरूष एकवचन का है तो रूप बनेगा – करतलक।

द्वितीय पुरूष एकवचन के हित में किए गए कार्य – करतलउ।

द्वितीय पुरूष बहुवचन या आदरसूचक के हित में क्रिया का रूप – करतलो/करतलोन

तृतीय पुरूष एकवचन के हित में – करतलइ

यदि कर्ता प्रथम पुरूष का होता तो इस प्रकार का रूप बनता–

प्रथम पुरूष के हित में – करतली / करतलिए/करतलों

द्वितीय पुरूष एकवचन के हित में – करतलिअउ।

द्वितीय पुरूष बहुवचन आदर से हित में – करतलिओ / करतलिओन

तृतीय पुरूष एकवचन के हित में – करतलिअइ

तृतीय पुरूष एकवचन आदर / बहुवचन के हित में करतलिअइन

यदि कर्ता द्वितीय पुरूष का होता रूप इस प्रकार बनेंगे–

प्रथम पुरूष एकवचन / बहुवचन के हित में – करतलें

तृतीय पुरूष एकवचन के हित में – करतलहीं

तृतीय पुरूष बहुवचन / एकवचन आदर – करतल्हिन

इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रिया रूपों में सर्वनाम बोधक प्रत्यय (जिसके हित में कार्य होना है – कर्म) आवश्यक रूप से जुड़े होते हैं। इसीलिए इसे सर्वनामनुषंगी (Pronoun Incorporating Language) भी कहा जाता है।

दूसरी सबसे बड़ी विशेषता है कि कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप नहीं बनता पर कार्य जिसके हित में किया जा रहा है (कर्म) के अनुसार बनता है। यह बहुत हैरत करने वाली बात है। अमूमन दुनिया की अधिकांश भाषाओं में क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार ही बनता है पर इस भाषा में क्रिया का रूप कर्म के अनुसार बनता हे। भाषा की इस प्रवृत्ति से सामन्तवाद की बू आती है, जहाँ करने वाले का महत्व नहीं वरन् महत्व उसका है, जिसके लिए कार्य किया जाय। इस अर्थ में इसे कर्म प्रधान भाषा भी कह सकते हैं। कभी कभी चीनी, अफ्रीकी–सुडानी, मलय, वर्मी, स्यामी आदि अयोगात्मक भाषाओं में शब्दों का स्थान प्रमुख होता है। शब्दों में स्थान बदल देने से ही एवं तान, सूर, टोन Intonation या लहजा में परिवर्तन से ही अर्थ बदल जाते हैं।

जैसे : नाञ् करतइ । – नहीं करेगा ।

करतई नाञ् ! – उसे करना ही होगा।

इस तरह के अनेकों उदाहरण खोरठा में पाए जाते हैं।

पारिवारिक वर्गीकरण और खोरठा-

खोरठा के पारिवारिक वर्गीकरण के मामले में विद्वानों मे मतभेद है। ए. के. झा जी ने पूरे विश्व की भाषाओं का आर्य और अनार्य वर्ग में विभाजन को स्वीकार करते हुए खोरठा समेत सदानी भाषाओं को अनार्य भाषा वर्ग रखने के पक्षधर हैं। उनका मानना है कि खरोष्ठी लिपि का आविष्कार सैन्धव सभ्यता, मोहनजोदड़ो हड़प्पा के लोगों ने किया था। झा जी का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता के विनष्ट होने पर एक दल झारखण्ड में आकर बसा। लगभग सभी विद्वान मानते हैं कि हड़प्पा सभ्यता के लोग अनार्य (द्रविड़) थे। झा जी का मानना है कि उन्हीं द्रविड़ों की भाषा झारखण्ड की सदानी भाषाएँ हैं। डॉ. बी. पी. केसरी ने झारखण्डी भाषाओं की समस्याएँ और समाधान नामक पुस्तक में कहा है कि यहाँ तीन प्रमुख समुदाय की भाषायें बोली जाती हैं:

1. प्रोटो ऑस्ट्रोलाइट 2. द्रविड़ 3. नाग।

नाग जाति के इस क्षेत्र में रहने के कारण ही झारखण्ड का नाम छोटानागपुर भी है। विद्वानों का मानना है कि नाग जाति अनार्य जाति थी। डॉ. केसरी ने इसी पुस्तक के पृ. 7-8 में लिखा है - 'इधर थोड़े दिनों से यह मान्यता प्रखर होती जा रही है कि नागपुरी का मूल रूप कुरमाली है। वर्तमान में कुरमाली मुख्यत: कुर्मी जाति की भाषा के रूप में जानी जाती है। कुरमाली कुर्मी जाति की भाषा है। जो नाग जाति का ही एक कबीला है।''

लक्ष्मीकांत महतो और बसंत मेहता इस मान्यता के विशेष प्रस्तोता एवं प्रवक्ता हैं। शालपत्र (अंक 2, पृ. 35, 37, अंक 4 पृ. 36 से 40) खोरठा को उपर्युक्त दोनों विद्वानों कुरमाली का विकृत रूप मानते हैं। किन्तु में विनम्रतापूर्वक इससे अपनी असहमति दर्ज करना चहूँगा। खोरठा शब्द या भाषा मूल भाषा रही होगी जो कुर्मियों की भी भाषा थी। ऐसा इस बात से पता चलता है कि आज से कुछ दशक पूर्व तक कुरमी जाति के लोग अपनी मातृभाषा खोरठा बताते रहे हैं। ऐसा लगता है कि बाद में कुरमियों में अपनी जाति अस्मिता का गौरव बोध होने लगा या कुर्मियों को अपने आप को आदिवासी प्रमाणित करने के लिए निश्चित भू-भाग एवं अपनी निज भाषा के होने की जरूरत महसूस होने लगी तो अपनी भाषा को या कुर्मियों की भाषा कुर्मियाली कहलायी होगी। जो कालान्तर में ध्वनि परिवर्तन के कारण कुरमाली बन गई होगी।

आगे डॉ. केशरी कहते हैं कि - ''कुरमाली नाग जाति की भाषा है जो काल क्रम से आर्य एवं प्रोटोऑस्ट्रोलॉयड तथा द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव से विकसित और रूपान्तरित होती गई है।''

झारखण्ड की कुरमी जाति जो वर्तमान में सदान समदुाय के अंतर्गत परिगणित है, अपने को द्रविड़ मानती है और कुर्मी- कुरमी नहीं वरन कुड़मी या आदिकुड़मी लिखते

हें। ये झारखण्ड में अपना आगमन मध्य भारत (Central India) से हुआ मानते हैं। बहुत संभावना है विद्वान खोरठा कुरमाली आदि को इसलिए अनार्य भाषा मानते हैं कि कुरमी द्रविड़ है। बहुत संभावना है कि अपनी भाषा भूल गये हों और नागों की भाषा को संभवतः आर्य कबिला था, को अपना लिया हो। आज भी झारखड में ऐसे उदाहरण विरल नहीं है। मुण्डाओं एवं उरांव जनजाति का एक बड़ा हिस्सा क्रमशः मुण्डारी एवं कुडुक नहीं जानता, ऐसे कई उदाहरण है, जो उरांव अपनी भाषा भूलकर मुण्डारी को अपनी मूल भाषा के रूप में प्रयोग कर रहा है फिर भी खोरठा (सदानी) आर्य भाषा और है या अनार्य इस बात की परीक्षा वर्तमान में झारखण्ड के दो प्रमुख वर्ग मुण्डा और द्रविड़ वर्ग की भाषाओं से तुलना कर लेना समीचिन प्रतीत होता है।

खोरठा सदानी भाषा की जनजातीय (अनार्य) भाषाओं से तुलना

किसी भी भाषा की किसी अन्य भाषाओं से समानता- असमतान दिखाने के लिए विद्वानों ने पाँच मुख्य आधार माना है-

1. ध्वनिगत 2. शब्दगत
3. पद या रूपगत 4. वाक्यगत
5. अर्थगत

सम्प्रति यहाँ खोरठा की तुलना में झारखण्ड की दो प्रमुख प्रजातीय भाषाओं आष्ट्रिक भाषा परिवार और द्रविड़ भाषा परिवार की क्रमशः मुण्डारी, संताली, हो, खड़िया एवं कुडुख तथा मल्टो आदि भाषाओं से तुलना करने का प्रयास किया जा रहा है।

1. **ध्वनिगत समानता-असमानता**- आर्य भाषाओं की तरह खोरठा में महाप्राणत्व की प्रवृति पायी जाती है।

जैसे : जइबे - जइभे, लेबरा - लेभरा
चलले - चलल्हे खइले- खइल्हे आदि

प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी रामविलास शर्मा ने अपनी 'पुस्तक' भारतीय भाषा परिवार और इण्डोयूरोपियन ध्वनितंत्र में कहा है कि महाप्राणता एवं सघोषता आर्य भाषा की बड़ी पहचान है। किन्तु मुण्डा भाषाओं एवं द्रविड़ भाषाओं में अल्पप्राणत्व एवं अघोषता की प्रवृति पायी जाती है। जैसे मुण्डा परिवार की एक प्रमुख भाषा हो तथा द्रविड़ परिवार की एक भाषा माल्टो में महाप्राण ध्वनियाँ बिल्कुल नहीं है। 'हो' भाषा में बाघ - बाग, भाप - बाप, भाग - बाग की तरह उच्चरित होता है। ठीक इसी तरह माल्टों में भी पाया जाता है। मुण्डा परिवार की ही संताली मुण्डारी खड़िया भाषाओं में महाप्राणता की आशिंक प्रवृति पायी जाती है विशेषकर आर्य भाषाओं के लेखन एवं उच्चारण में ऐसे ध्वनियों का प्रयेग होता है। (मुंडारी व्याकरण - डॉ. रामदयाल मुण्डा)।

हो भाषा की ध्वनियाँ आदिम रूप में आज भी मौजूद हैं। मुण्डा और संताली भाषाओं में बाह्य प्रभाव सर्वाधिक पड़ा है। फलस्वरूप इन भाषाओं में आर्यतत्व आ गये हैं। हो भाषा में 'हो' (आदमी), संताली 'होड़' एवं मुण्डारी में 'होड़ो' की तरह प्रयुक्त होता है। द्रविड़ परिवार की एक प्रमुख भाषा तमिल में भी अल्पप्राणत्व की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

जैसे : धूम – तूमम, घोर – कोरम,
धर्म – तरूमम, भारतकुमार – परतकुमार

की तरह उच्चरित होते हैं। खोरठा में 'ट' वर्गीय ध्वनियों की प्रधानता है। विद्वानों की मान्यता है कि 'ट' वर्गीय ध्वनियाँ आर्यो को द्रविड़ों की देन है। खोरठा में अनार्य भाषाओं की तरह संयुक्त ध्वनियाँ नहीं है।

2. **शब्दस्तर पर समानता – असमानता**– किसी भी भाषा के आधार पर उसके मूल या ठेठ शब्द हुआ करते हैं। ऐसे ही शब्द उस भाषा की रीढ़ हुआ करते हैं। ये आध ारभूत शब्द हैं:

1. शरीर के अंगों के नाम, 2. संबंधों या रिस्तों के नाम,
3. सर्वनामिक शब्द, 4. गिनती के शब्द,
5. परिवेश से संबंधित शब्द, नदी, पहाड़

आदि और नित्य दिन सामान्य जीवन में आनेवाले शब्द जैसे :क्रियावाची तथा खाद्य सामग्री, दाल, भात आदि से संबंधित शब्द।

इस तरह के आधारभूत शब्दों में उलटफेर होने की संभावना बहुत कम होती है।

शरीर के अंगों के नाम

हिन्दी	खोरठा	मुण्डा परिवार
सिर	मुंड	बाहोक / बौक
आंख	आइंख / दीदा	मेत् / मेद्
नाक	नाक	मुवा / मु
जांघ	जांघ	काटा
पेट	लादा	लाचा / लाए:
स्तन	थन	तोआ

संबंधों के नाम

हिन्दी	खोरठा	मुण्डा परिवार
पिता	बाप	अपुंड / अपु

माँ	माय	एंगा / एमंड
बहन	बहिन	उड़िकुइ
भाई	भाइ	डंडि / हागा
मामा	मामा	कुमुंड
लड़की	छोंड़ी	कुड़ि

सार्वनामिक शब्द– किसी भी सर्वनाम वाची शब्द अपने हुआ करते हैं। सर्वनाम वाची शब्दों का लेन–देन किसी अन्य भाषा के साथ बिल्कुल नहीं होता है।

हिन्दी	खोरठा	मुण्डा परिवार
मैं	हाम	इञ / अलांग / अबु
तुम	तोंञ	आम / आवेम / आसे
वह	उ	आकिन /कुनकिन

मुण्डा परिवार की भाषा में सर्वनाम के संबंधकारकीय रूप नहीं पाये जाते हैं जबकि खोरठा सहित सदानी हिन्दी, बंगला आदि भाषाओं में सर्वनाम के संबंधकारकीय रूपों का होना प्रमुख विशेषता है जैसे–

हिन्दी	खोरठा	बंगला	कुरमाली
मेरा	हमर	आमार	मोर
तुम्हारा	तोर	तोमार	उसका
उसका	ओकर	ताहार	औकर

प्राकृतिक पदार्थ संबंधी शब्द

हिन्दी	खोरठा	मुण्डा परिवार
पृथ्वी	धरती / भुई	आते / ओते
पहाड़	पहार	बुरू
वन	बोन	बिर
सूर्य	सुरूज	सिम् / चाँद
पानी	पानी	दाक / दाउः दाः
अंधेरा	अंधर	हेन्दे

संख्यावाचक शब्द

हिन्दी	खोरठा	मुण्डा परिवार
एक	एक	मित
दो	दू	बार / बाट

चार	तीन	पें / अपे / अपि
तीन	चाइर	पौन
पाँच	पाँच	मोंडे
छः	छव	तुरूइ
सात	सात	एयाय / एया / अइ
आठ	अस	इराव
नौ	नव	नइआरे
दस	इस	गेल

आगे की संख्या बनाने के लिए दस संख्या के 1, 2 आदि जोड़कर बनाई जाती है। जैसे ग्यारह - गेल + मित = गेलमित, बारह - गेल + बार = गेलबार, तेरह - गेल + पेय = गेलपेय। आगे की संख्याएँ इसी प्रकार बनाइ जाती हैं। बीस की संख्या के लिए संथाली में कुड़ी / कोरी का प्रयोग किया जाता है।

नित्य दिन व्यवहार में आने वाले शब्द-

हिन्दी	खोरठा	मुण्डा परिवार
आग	आइग	संइगाल
हल	हर	नाहेल
सुपारी	कसइली	गुवा
बड़ा	बड़	मराड
पत्थर	पखन	दिरि
चारपाइ	खाटिया	पारकोम
शराब	दारू	मातकोम।

निष्कर्ष

भाषा विज्ञान के सिद्धांतों की कसौटी में कसने के उपरांत हम पाते हैं कि वर्तमान में खारठा भाषा का जो स्वरूप है, वह आर्य भाषा से ज्यादा मेल खाता है। यद्यपि ध्वनि, शब्द, पद आदि में अनार्य भाषाओं का प्रभाव है, किन्तु खोरठा का जन्म निश्चित रूप से आर्य भाषाओं से ही हुआ माना जा सकता है। किन्तु आगे और भी खोजने की जरूरत है और जरूरत है एम मत स्थित करने की।

— — — — — —

खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूप

भाषा के संदर्भ में एक पुरानी कहावत है - ''तीन कोस पर पानी बदले, सात कोस पर वाणी।'' अर्थात तीन कोस के अन्तर पर पानी का स्वाद बदल जाता है और सात कोस अर्थात कुछ दूरी के अंतराल पर भाषा या बोली भी बदलती हुई दिखाई पड़ती है। अर्थात कुछ-कुछ दूरी पर स्थानीय विशेषताएं दिखाई पड़ने लगती है। ये विशेषताएँ- उच्चारण के स्तर पर, शब्द के स्तर पर या व्याकरण के स्तर पर हो सकती है। भाषा या बोली में बदलाव दूरी का अंतर क्षेत्र की भौगोलिक विशेषता पर भी निर्भर करता है। पहाड़ी क्षेत्रों की अपेक्षा समतल क्षेत्र में भाषा बदलाव की दूरी का अनुपात ज्यादा होता है। झारखण्ड क्षेत्र, पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण स्थानीय बोलियों (Local Dialects) या क्षेत्रीय रूपों की प्रचुरता है। आज से कुछ सालों पहले तक गाँव-गाँव की बोली में अंतर पड़ जाया करता था। किन्तु अब यह अन्तर मिट रहे हैं।

खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों के संदर्भ में खोरठा भाषा के विश्रुत विद्वान श्री एका. के. ने अपनी पुस्तक ''खोरठा सदानी भाषा संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार'' के पृष्ठ 40 में लिखा है - ''आम तौर पर किसी एक भाषिक क्षेत्र का जितना अधिक विस्तार हो सकता है या पाया जाता है, उसपर भी, विशेषकर झारखण्ड जैसे विविधता में एकता वाले क्षेत्र के विषय में, जिसे बहुप्रजातीय समाज (Multi Ethnic Society) भी कहा जाता है। इस लिहाज से भी खोरठा का क्षेत्र विस्तार बहुत बड़ा है या यों कहे कि झारखण्ड की अन्य सदानी भाषाओं की तुलना में सबसे बड़ा........... यानि आज के उत्तरी छोटानागपुर का सम्पूर्ण भाग, पलामू एवं संताल परगना प्रमण्डल इसकी सीमा क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इतने बड़े क्षेत्र में स्थानगत, परिस्थिति परिवेशगत एवं जलवायु के प्रभाव तथा वाह्य सम्पर्क के प्रभाव के कारणों से भाषा की क्षेत्रगत भिन्नता का पाया जाना बिल्कुल स्वभाविक बात है।''

भौगोलिक परिदृश्य

'खोरठा' शब्द यहाँ उस भाषा का वाचक है, जो समस्त उत्तरी-छोटानागपुर और संताल परगना के सदानों (गैर जनजातीय मूल वासी) तथा जनजातीय समुदायों के द्वारा व्यापक रूप से बोली जाती है। यह भाषा पश्चिम हुसैनाबाद, महुआटांड़, पलामू से पूरब साहेबगंज, संताल परगना और पलामू प्रमण्डल तक तथा उत्तर से दक्षिण बुटि से बंदरचुआँ तक से भी अधिक बड़े क्षेत्र में सदानों (गैर जनजातीय-मूल वासी) तथा जनजातीय समुदायों के बीच व्यापक रूप से बोली जाती है। सदानों तथा संतालों के बीच यह सम्पर्क भाषा (Lingua-France) का काम करती है। ध्यातत्व है कि उत्तरी

छोटानागपुर तथा संताल परगना की अन्य जनजातियाँ यथा मुण्डा, करमाली, उरांव आदि जिनकी जनसंख्या संतालों की अपेक्षा बहुत कम है, अपनी मातृभाषाओं को भूलकर खोरठा को मातृभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है। दूसरे शब्दों में नवगठित झारखण्ड राज्य 16 जिलों, रामगढ़, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, गढ़वा, पलामू, लातेहार, गिरिडीह, पाकुड़, देवघर, दुमका साहेबगंज, गोड्डा, बोकारो, धनबाद की लोकप्रिय भाषा, खोरठा है। इन जिलों की कुल ग्रामीण जनसंख्या सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 1,26,24,467 है और शहरी आबादी 60,25,580 है। यदि शहरी जनसंख्या के 25 प्रतिशत को खोरठा भाषी माना जाय तो यह संख्या होती है, 15,06,395। इस प्रकार खोरठा भाषा–भाषी की कुल जनसंख्या इस भाष को बोलने वालों की संख्या लगभग 1 करोड़ 40 लाख से अधिक। तथा क्षेत्रफल 48 हजार वर्ग किमी है। तब स्पष्ट है कि खोरठा भाषा का क्षेत्रफल 48 हजार वर्ग किमी में विस्तारित है। किन्तु 2001 की जनगणना में मात्र 49 लाख लोगों ने अपने मातृभाषा को खोरठा बताया है। इसका कारण यह है कि वे अब तक इसे देहाती भाषा कहते रहे हैं, फलस्वरूप जब इनसे पूछा जाता है कि कौन सी भाषा बोलते हैं तो ये सकुचाने लगते हैं। ऐसी स्थिति में संगणक हिन्दी आदि भाषा लिख देते हैं। वर्ष 2008 प्रारंभिक शिक्षक नियुक्ति परीक्षा में पूरे झारखण्ड से 41 हजार परीथार्थी सम्मिलित हुए थे, जिसमें से 20 हजार परीक्षार्थियों ने अपनी मातृभाषा के रूप में खोरठा को रखा था। इससे भी इसके बोलने वालों की वृहत्तर जनसंख्या का पता चलता है। इतनी बड़ी जनसंख्या की भाषा है।

खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूप

ए. के. झा. ने खोरठा के दो लोकप्रचालित क्षेत्रीय रूपों का उल्लेख किया है वे है–

1. सिखरिया, या खासपइलिया, 2. गोलवारी।

खोरठा के क्षेत्रीय प्रकारों का नाम दोनों क्षेत्रों में प्रचलित अनाज नापने के लिए औजार "पइला" (A Grain Measuring Device) के प्रकार के आधार पर किया गया है, जो निम्नलिखित हैं–

1. **सिखरिया या खासपइलिया**– इस क्षेत्र में जो पइला व्यवहत होता है इसमें 14 छँटाक (लगभग) अनाज अटता है जो लगभग 1 सेर से कम होता है। इस प्रकार के पइला को 'खास पइला' कहा जाता है। इस प्रकार के अनाज मापक पात्र जो आमतौर पर पीतल या अल्युमिनियम का बना होता है जिसे इस क्षेत्र में 'सेकरा' नाम एक जनजाति के द्वार बनाया जाता है, संभवतः इस सेकरा शब्द से सिखरीया सिखरी शब्द व्युत्पन्न है। जहाँ तक इस पइला का प्रचलन है, वहाँ तक की भाषा का नाम खासपइलिया या सिखरिया है। यह क्षेत्र वर्तमान जैनामोड़ (जरीडीह प्रखण्ड) से आरंभ होकर आगे पूरब बंगाल की सीमा तक जाता है। खोरठा के सिखरी प्रकार की विशेषता

है कि इसके क्षेत्र के आरंभ से पूरब की ओर बढ़ते हुए ध्वनियों के उच्चारण में बंगला में का प्रभाव दिखाई पड़ने लगता है। 'अ' का वर्तुल उच्चारण - 'अॅ' दिखाई पड़ता है।

जैसे : हामर, हमॅर

ई बाटे की जगह ई दिगे।	तोहनिक के बदले तोहरॉक।
हमनिक के बदले हमरॉक।	हउआ के बदले गिदॅर।
लेरू के बदले बाछुॅर।	छगरी के बदले छागॅल।
साँड़ के बदले दामड़ा।	मछली के बदले मॉछ।
कुरई के बदले बेहॅन।	खरइ के बदले खमॉर/खम्हॉर।

चलने लगता है।

खोरठा-कुरमाली के सिआंडी (सीमा क्षेत्र) सेवाँती पहाड़ से उत्तर की ओर सीमा रेखा खींची जाए तो हरनाद, खैराचातर, मंइजरा, कसमार, बहादुरपुर, खुंटा और उससे उत्तर बेरमो के आस-पास का इलाका गोलवारी और सिखरी पइला के प्रचलन की सीमारेखा बनाता है जो खोरठा के दो क्षेत्रीय रूपों की विभाजक रेखा भी है। इस विभाजक रेखा से पश्चिम गोला तक का क्षेत्र गोलवारी पइला के प्रचलन का क्षेत्र है और इसकी भाषा या बोली गोलवारी कहलाती है।

2. **गोलवारी**- इस क्षेत्र में जो पइला प्रचलित है उसमें 18 छटाक अनाज अंटता है, उसे गोलवारी पइला कहा जाता है। इसक विस्तार कसमार प्रखण्ड से लेकर भेड़ा नदी तक है जो नदी रामगढ़ और गोला प्रखण्ड की विभाजक रेखा भी है। इसमें कुरमाली का थोड़ा प्रभाव दिखाई पड़ता है जैसे - 'हइ' की जगह 'आहे' 'कर-हे' की जगहर कर-इस आहे। प्रश्नवाचक 'की' जगह 'कीना' का प्रयोग होता है। एक बहुत मजेदार बात है कि, महाजन लोग अपने असामियों से गोलवारी पइला में अनाज लेते हैं, किन्तु जब देना होता है, सिखरी पइला में देते हैं। उपर कहा जा चुका है कि गोलवारी पइला में अधिक अनाज अटता है और सिखरी पइला में कम।

3. **रामगड़िया**- ए. के. झा जी ने भेड़ा नदी के पश्चिम पतरातू प्रखण्ड तक एवं दक्षिण ओरमांझी प्रखण्ड और उससे भी आगे बूटी, कांके, उमेडांडा, पिठोरिया एवं बुडमु, तक की भाषा का कोई नाम नहीं दिया है किन्तु मैंने सर्वेक्षण के दौरान पाया है और पहले से भी एक अस्पष्ट सा नाम लोक व्यवहार में है वह है 'रामगढ़िया'। यह नाम ऐतिहासिक शहर रामगढ़ के नाम पर है। बोली के इस रूप में कुरमाली और नागपुरी दोनों का किंचित प्रभाव देखा जा सकता है। - प्रश्नवाचक 'की' (क्या) की जगह कुरमाली प्रभाव से 'किना' का प्रचलन है। रामगढ़ से दक्षिण और पश्चिम की ओर ज्यों-त्यों बढ़ते जायेंगे त्यों-त्यों नागपुरी प्रभाव की सघनता क्रमशः बढ़ती जाती है।

जैसे- करहइ - करइला- छगरिअइन - छगरीमन

(मन नागपुरी में बहुवचन बोधक शब्द है)। किन्तु प्रभाव का प्रतिशत दो प्रतिशत से ज्यादा नहीं कहा जा सकता है। इस क्षेत्रीय रूप से 'रामगढ़िया' की संज्ञा प्राप्त है।

4. **देसवाली**- पतरातु प्रखण्ड की सीमा से पश्चिम पलामू जिले की आखरी सीमा तक के क्षेत्र रूप से देसवाली नाम से जाना जाता है। इसमें मगही एवं भोजपुरी का किंचित प्रभाव पलामू प्रमंडल में देसवाली एक नवजाति है, जिसे खेखार भी कहा जाता है। खेरखारों ने राजवंशी की भी स्थापना की थी। पलामू के मनातू तथा रामगढ़ के राजा भी खेखार वंशीय दी थे। देसवाली नाम उसी देसवाली जनशक्ति नाम पद है देखा जा सकता है किन्तु खोरठा की प्रच्छन्नता में कहीं कमी नहीं दिखाई पड़ती।

5. **परनदिया**- दामोदर नदी या देवनाथ (देवनद) खोरठा क्षेत्र की एक प्रमुख नदी है। पलामू के आरंभ होकर यह बंगाल की खाड़ी तक जाती है। एक मजूदार बात देखने को मिलती है कि दामोदर नदी के ठीक पर अर्थात दामोदर नदी केठीक उत्तरी किनारे से ही भाषा के रूप में किंचित परिवर्तन दिखाई पपड़ने लगता है। उदाहरण के तौर पर रामढ़ के पास दामोदर नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित नईसराय गांव है। और दक्षिणी किनारे पर रामगढ़ है। दोनों स्थानों के बीच की दूरी कुछ सौ गज से अधिक नहीं होगी। किन्तु दोनों क्षेत्रों की बबोली में थोड़ा अंतर दिखाई पड़ता है। जैसे : रामगढ़ के लोग कहेंगे - कर-हइ (करता है) तो नईसराय के लोग कहेंगे- करो हइ (करता है) और यह प्रवृति एक बड़े क्षेत्र में कोडरमा की घाटी से लेकर समस्त गिरिडीह जिले में देखी जा सकती है। यहाँ 'परनदिया' नाम किंचित अस्पष्ट है। क्योंकि दामोदर के उत्तर वाले और दामोदर के दक्षिण वाले एक दूसरे को परनदिया कहते है। किन्तु यहाँ परनदिया नाम दामोदर से उत्तर की खोरठा के क्षेत्रीय प्रकार के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। परनदिया क्षेत्रीय रूप क्रिया में पदों में 'ओ' कार और संज्ञा पदों 'आ' कार जोड़ने की प्रवृति विशिष्ट है। मगही में ये दोनों प्रवृत्तियाँ नहीं पायी जाती है। यथा:

कर हइ - करो + हई। भात खइले - भाता खइले

पेट फाइट गेलइ। - पेटा फाइट गेलइ।

6. **छिका-छिकी खोरठा या संथाल परगनिया**- खोरठा क्षेत्र के उत्तर पूर्वी हिस्से में जो संथाल पगरने में पड़ता है इसमें मैथिली के दो-चार प्रत्ययों का समावेश हो गया है, जिसे देखकर पूर्ववर्ती भाषा वैज्ञानिकों ने इसे छिका-छिकी मैथिली तक की संज्ञा दे दी है। इसमें सहायक क्रिया 'है' के लिए "छि, छिक, 'छै" आदि प्रयोग होता हैं, जिसे देखकर सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने इसे छिका-छिकी मैथिली कहा है।" किन्तु सही अर्थों मे यह मैथिली न होकर खोरठा है, क्योंकि मैंथिली में सहायक क्रिया है के लिए थिक का प्रयोग होता है। जबकि छिका-छिकी में छिक का प्रयोग होता है,

जो खोरठा के 'हिक' के ज्यादा निकट है।

खोरठा के केन्द्रीय रूप में मध्यस्वरागम की प्रवृति सघन है। किन्तु संताल परगनिया रूप में मध्य स्वरागम विरल होते हैं।

जैसे:	केन्द्रीय रूप	संताल परगनिया रूप
	हाम कइर देलिअइ	हाम करिइ देलिअइ।
	ऊ चइल गेलइ।	ऊ चलिइ गेलिइ।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि देवघर में छिका-छिकी का प्रयोग वही लोग करते हैं, जो ब्राह्मण है और मिथिला से आकर बसे हैं। सामान्य जनता छिका-छिकी का प्रयोग नहीं करती है। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार हजारीबाग की सामान्य जनता, जो यहाँ की आदिवासी (Indigenous) हैं की बोली और मगह क्षेत्र से आकर वकालत आदि पेशे के सिलसिले में बसने वाले कायस्थों, ब्राह्मणों एवं राजपूत आदि सर्वण जातियों की बोली में अंतर है। हजारीबाग का मूल निवासी बोलेगा - गइआ चरो-हइ, (गाय चरती है) तो मगह से आब्रजित हजारीबाग निवासी बोलेगा-गाय चरैत हे।

खोरठा का केन्द्रीय रूप

ए. के. झा ने कहा है - "दामोदर नदी और पारसनाथ पहाड़ से आबद्ध और उसके पार्श्ववर्ती क्षेत्रों को हम गाढ़ी क्षेत्र के अंतर्गत पाते हैं ....। इस क्षेत्र में झारखण्ड क्षेत्र की उस बेजोड़ चेतना की छाप मिलती है, जिसके चलते आर्य संस्कृति से यहाँ की संस्कृति भिन्न प्रमाणित होती है।" इस केन्द्रीय रूप को ही मानक मानकर तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों की विशेषताओं को समेटकर खोरठा के मानक स्वरूप की स्थापना का प्रयास जारी है और वर्तमान साहित्य लेखन में मानक रूप का अनुगमन लेखकों द्वारा किया जा रहा है। यह खोरठा के भविष्य के लिए एक शुभ लक्षण है।

खोरठा का मानक रूप

खोरठा वर्तमान समय में झारखण्ड के सबसे बड़े क्षेत्र और सबसे बड़ी जनसंख्या की क्षेत्रीय भाषा है। पिछले कई दसकों से इसकी पढ़ाई निचली कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हो रही है और सभी सेवा परीक्षाओं में एक विषय के रूप में यह भाषा सम्मिलित है। किन्तु अभी तक इस भाषा का पूरी तरह कोई मानक रूप स्थिर नहीं हुआ है। इसके पहले कहा गया है कि इस भाषा के कई-कई क्षेत्रीय रूप हैं और इसका मुख्य कारण खोरठा के पूरे क्षेत्र की बनावट में भौगोलिक भिन्नता का होना है। स्पष्ट है कि जब किसी भाषा के कई-कर्ठ क्षेत्रीय रूप हों तो क्षेत्रगत भिन्नता का होना स्वाभाविक है। किन्तु आज खोरठा लोक भाषा न रहकर एक शिष्ट भाषा का स्थान ले

लिया है और वर्तमान में इसे झारखण्ड की द्वितीय राजभाषा का दर्जा भी मिला है। वैसी स्थिति में इसके एक मानक स्वरूप (Standard Form) बनाने की निहायत जरूरत है, जो समय की मांग भी है। इस दिशा में विगत वर्षों में कई प्रयास हुए है जिसमें सर्वप्रथम 1984 में हुए मानकीकरण पर आयोजित कार्यशाला उल्लेखनीय है। यह तीन दिवसीय कार्यशाला झारखण्डी भाषाओं में रचना प्रक्रिया एवं भाषा मानकीकरण को लेकर संत जेवियर सोसल सर्विसेज के सभागकार में आयोजित की गई थी, जिसमें देश–विदेश के विद्वान उपस्थित हुए थे। और जिसमें मुख्य रूप से डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ॰ केसरी कुमार सिंह, डॉ. बी. पी. केशरी, अमेरिका के डॉ. नईम आदि का नाम उल्लेखनीय है। खोरठा भाषा के मानकीकरण की दिशा में उस कार्यशाला में भाषा के पांचों स्तरों : ध्वनि, शब्द, अर्थ, पद एवं वाक्य पर विशद चर्च हुई थी और कुछ निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए थे वह निम्न प्रकार हैं–

1. **ध्वनि स्तर**– सर्वसम्मति से यह बात उभरकर आई कि जो ध्वनियाँ जिस रूप में उच्चरित होती हैं, उसे उसी रूप में लिखा जाना चाहिए (ध्वनियों के उच्चारण पर विस्तृत विवरण अगले अध्याय 'खोरठा स्वन तंत्र' में की गई है।)

2. **शब्द स्तर**– विद्वानों का सिफारिश निम्न प्रकार है–

(क) खोरठा के वाचन एवं लेखन में अपने ठेठ शब्दों का प्रयोग अधिकाधिक किया जाय।

(ख) यदि खोरठा में किसी भाव की अभिव्यक्ति के लिए वैसे उपयुक्त शब्द नहीं है। तो अपने ही समुदाय की अन्य भाषाओं के शब्द विकल्प में उधार लिए जा सकते हैं।

(ग) खोरठा में शब्दों का लेखन उनके उच्चारण के अनुरूप ही किया जाय। अर्थात उच्चारण के अनुरूप ही वर्तनी का ध्यान रखा जाय। जैसे

कैसा – कइसा ऐसा – अइसा औरत – अउरत
और – अउर परीक्षा – परिछा धनुष – धनुक
बरसा – बरखा आदि

(घ) संस्कृत आदि के तत्सम शब्दों एवं पारिभाषिक शब्दों को अपने रूप में ही इन्वर्टेड कॉमा के अंतर्गत लिखा जाय। जैसे – संज्ञा, क्रिया, सभ्यता, संस्कृति, प्रकृति, सर्वनाम आदि किन्तु इस विषय में विद्वानों में सहमति नहीं बन पायी। कुछ विद्वान उच्चारण के अनुरूप लिखने के पक्ष में हैं जैसे :

संज्ञा – सइंगा सभ्यता – सभइता क्रिया – किरिआ
संस्कृति – संसकिरति आदि।

3. **अर्थ स्तर**– हिन्दी आदि से मिलते–जुलते खोरठा के शब्दों का अपने मूल अर्थ में ही प्रयोग किया जाय। जैसे

शब्द	खोरठा	हिन्दी अर्थ
कटि	थोड़ा	कमर
जरि	थोड़ा	जलने के अर्थ में
साधक	परेशान करने वाला	साधना करने वाला
पूजा	काटना/कटना	आराधना करना
	आदि–आदि।	

4. **वाक्य स्तर पर**– बिना सहायक क्रिया वाले वाक्यों के प्रयोग की बात कही गई जैसा कि खोरठा के मुर्धण्य साहित्यकार पानुरी जी के लेखन में देखा जाता है। जैसे –

हामें नाञ्।	हाम पढ़ल–लिखन नाञ्
हामें नाञ् बोले पारि।	हाम खाइ।
हाम करि।	अइसन देखाइ।
हिआँ कोइला पवाइ।	आदि।

इस विषय पर अधिकांश विद्वानों ने समहति दी है।

मानकीकरण का दूसरा प्रयास

खोरठा भाषा के मानकीकरण को लेकर 'खोरठा भाषा साहित्य–संस्कृति अकादमी, रामगढ़ और 'खोरठा साहित्य–संस्कृति, परिषद्, बोकारो' के संयुक्त तत्वाधान में नवम्बर 2010 को दो दिवसीय कार्यशाला कुशवाहा धर्मशाला, रामगढ़ में आयोजित की गई। किन्तु इसकी सिफारिशें अभी तक अप्रकाशित है।

भाषा का विकास एकान्त शून्य में नहीं होता है। ध्यातत्वय है कि भाषा एक सामाजिक सम्पत्ति है। अतः इसमें लेन–देन समाज में होने वाले लेन–देन की तरह निरंतर चलता रहता है और भाषा विकसित होती रहती है। साथ ही तकनीकी बदलावों के कारण भी भाषा के विकास में किंचित प्रभाव पड़ता है, फलस्वरूप भाषा में बदलाव की जरूरत पड़ती है। अतः भाषा का मानकीकरण एक निरंतर प्रक्रिया है और एक अंतराल के बाद हर भाषा के मानकीकरण की जरूरत पड़ती है। खोरठा भी इससे अलग नहीं है।

– – – – – –

खोरठा-स्वनतंत्र

खोरठा में निम्नलिखित स्वन (Phone) एवं स्वनिम (Phoneme) हैं। -

स्वर (Vowel)-

	अग्रस्वर	मध्यस्वर	पश्चस्वर
संवृत	ई i	-	उ u
अर्द्धसंकृत	ए a	-	ओ o
अर्द्धविवृत	-	अ ^	-
विवृत	-	आ a	-

पालि की भाँति खोरठा में संवृत तथा अर्द्धसंवृत 'ए' का ह्रस्व रूप भी पाया जाता है। चूंकि इसके लिए ध्वनि संकेत चिन्ह उपलब्ध न होने के कारण वर्तमान में 'इ' अथवा 'ए' के नीचे ह्रस्व चिन्ह देकर काम चलाया जाता है।

यथा - हिन्दी - दाल	दाइ्ल / दाए्ल
चाल	चाइ्ल / चाए्ल
कल	काए्ल / काइ्ल

अर्द्धविवृत अग्रस्वर 'ऐ' और पश्चस्वर 'औ' मगही मैथिली में पाये जाते हैं। किन्तु खोरठा में निम्नरूप में उच्चरित होते हैं-

हिन्दी	मगही	मैथिली	खोरठा
औरत	औरत	औरत	अउरत
ऐनक	ऐनक	ऐनक	अइनक
ऐसा	ऐसा	ऐसा	अइसा
और	और	और	अउर

व्यंजन (Consonant)-

	कंठ्य	तालव्य	मूर्द्धन्य	दंत्य	ओष्ठय
स्पर्श अघोष अल्प्राण	क	च	ट	त	प
स्पर्श अघोष महाप्रण	ख	घ	ठ	थ	फ
स्पर्श घोष अल्पप्राण	ग	ज	ड	द	ब
स्पर्श घोष महाप्राण	घ	झ	ढ	ध	भ
नासिक्य अल्प्राण	-	ञ	-	न	म
नासिक्य महाप्राण	-	-	-	न्हं	म्हं
अंतस्थ पर्श्विक अल्प्राण	-	र	-	ल	-
अंतस्थ पार्श्विक महाप्रण	-	रह्	-	ल्ह	-

उष्म अघोष	–	–	–	स	–
उष्म घोष	ह	–	–	–	–

खोरठा के स्वनिम (ध्वनिग्राम) और उपस्वन

(Phoneme and Allophone)-

हिन्दी में इ और ई, उ और ऊ एक ही स्वन (Phone) के दो उपस्वन (Allophone) क्योंकि ये परिपूरक वितरण (Complementary Distribution) में आते हैं अर्थात एक दूसरे का विरोध आपस में नहीं है। अर्थात एक के स्थान पर दूसरे ाक प्रयोग नहीं होता। यदि कोई करता है, तो अर्थ अनर्थ हो जाता है। जैसे दिन (दिवस) / दीन (गरीब), चिर (चिरना) / चीर (वस्त्र) किन्तु खोरठा में ये ध्वनियाँ परिपूरक वितरण में न होने के कारण ये उपस्वन न होकर स्वनिम हैं और दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। अर्थात इ और ई, उ और ऊ, इनमें से कोई भी किसी का स्थान ले सकता है। इससे अर्थ में कोई फर्क नहीं पड़ता। किन्तु आम तौर पर खोरठा में 'इ' का प्रयोग नहीं के बराबर होता है। हस्व 'इ' और हस्व 'उ' की ही प्रधानता है। 'इ' और 'ऊ' वर्णों का प्रयोग क्रमश विकखर्ती और दूरवर्ती सर्वनाम के लिए होता है

इसी प्रकार इ और ए भी अलग-अलग स्वनिम नहीं वरन् एक ही स्वनिम के दो उपस्वन हैं। अर्थात एक के स्थान पर दूसरे को लिखने से अर्थ में अंतर नहीं आता है। निम्न उदाहरण द्रष्टव्य है-

दाल दाल / दाएल

खोरठा स्वनों की विशेषताएँ-

(क) सानुनासिकता (Nasalisation of Khortha Phones)- स्वर प्राय: सानुनासिक होते हैं यथा हाँथ हाथ, हाँथी-हाथी, सोंच-सोच

काँच काच (काछ बँगला) (कपड़ा साफ करना)

नाँच नाच (नृत्य)

शब्द के अंत में स्वनों की अनुनासिकता कतिपय कारक विभक्तियों के अवशेष के रूप में पायी जाती हैं।

यथा- गथी पराइल / पराएल (चुपके से भागा) अपादान 'से'

तहीं धरा (उसी जगह धरिए) अधिकरण 'में'

सोटें सोंटलइ (छड़ी से पीटा) कारण 'से'

(ख) विभिन्न स्वनों के उच्चारण-

'अ' का उच्चारण

कई स्थानों पर इसका उच्चारण दीर्घ अथवा किंचित लम्बा सा होता है। जो दो मात्रा से भी बड़ा सुनाई देता है। मात्रा की लम्बाई को सूचित करने के लिए खोरठा में

अवग्रह (ऽ) चिन्ह का प्रयोग किया जाता था किन्तु 1984 में जनजातीय भाषा विभाग द्वारा आयोजित भाषा माननीकरण कार्यशाला में अवग्रह चिन्ह को हटाकर ('अपोस्ट्रोफी) को प्रयोग में लाने का प्रस्ताव डा. बी. पी. केशरी द्वारा लाया गया और स्वीकृत भी हुआ किन्तु कुछेक को छोड़कर लोग प्रयोग नहीं करते। यों नागपुरी में भी यह प्रवृति विरल है।

यथा- करऽ हलइ - कर' हलइ - कर - हलइ
चलऽ हलइ - चल' हलइ - चल - हलइ
नाचऽ हलइ - नाच' हलइ - नाच - हलइ

बाद में उसी मानकीकरण कार्यशाला में तय हुआ कि मूल क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में (Hyphen) डालकर अवग्रह के प्रतिस्थापप्य के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए। जिससे ध्वनि का वास्तविक बोधन हो जाएगा। किन्तु इस मत को मानने वाले सभी नहीं है। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह (-) अनावश्यक है।

'अ' का वर्तुल उच्चारण-

बंगला सीमा क्षेत्र की खोरठा में 'अ' स्वन का उच्चारण किंचित बर्तुल होता है।

यथा - मन-मोन (मॅन) चल - चोल (चॅल)
मुँछ - मोछ वन - बोन (वॅन)

दामोदर नदी के उत्तर की खोरठा में एक विलक्षण प्रवृति दिखाई पड़ती है, खासकर समान्य वर्तमान और सामान्य भूतकाल के क्रिया रूप बनाने में धातु के साथ अ की यह वर्तुलता दिखाई पड़ती है और उपर्युक्त चिन्ह के लगाने या न लगाने से मुक्ति मिल जाती है।

यथा : करो हलइ - करऽ हलइ - करता था
चलो हलइ - चलऽ हलइ - चलता था
नाचो हइ - नाचऽ हइ - नाचता है

'इ', 'उ' का उच्चारण-

पूर्व में कहा जा चुका है, इ, ई, उ, ऊ ध्वनियाँ अलग स्वनिम (Phoneme) हैं इसीलिए इ, ई, उ, ऊ, किसी को भी लिखा जाए तो भी अर्थ में कोई अंतर हिन्दी की तरह नहीं आता क्योंकि ये परिपूरक वितरण में नहीं है।

यथा हिन्दी में दिन- (दिवस) - दीन (गरीब)

'ऐ' तथा 'औ' का उच्चारण-

खोरठा में ये दोनों ध्वनियाँ नहीं है, किन्तु इसके मूल रूप

ऐ - अ + इ औ - अ + उ मूल रूप में उच्चारित होती है।

हिन्दी	खोरठा	मगही	मैथिली

औरत	अउरत	औरत	औरत
कैलाश	कइलास	कैलाश	कैएलाश
कैल	कइल	कैल	कएल

ञ का उच्चारण -

संथाली भाषा की तरह खोरठा में इसका उच्चारण निम्नवत होता है।

जैसे- कोराञ् (गोद में) - अधिकरण कारक 'में' का चिन्ह

दामुदरेक कोराञ् (दामोदर की गोद में) ञ वर्ण यं का प्रतिस्थापन है। जैसे चरञ्-चरइं चरमं

अर्थात यह अधिकरण कारक की विभक्ति की तरह प्रयुक्त होता है।

य का उच्चारण-

यह वस्तुतः तत्सम शब्दों में पाया जाता है। खोरठा में इसका उच्चारण शब्छ के आदि, मध्य एवं अंत कहीं भी नहीं होता है। शब्द के आरंभ में यह ज्व एवं ए की तरह प्रयुक्त होता है मध्य एवं अंत में यह इअ की तरह प्रयुक्त होता है। निम्न उदाहरण द्रष्टव्य है-

शब्दारांभ :	यदि	-	जदि
	यमुना	-	जमुना
	यज्ञ	-	जइग
	यकिन	-	एकिन
	यही	-	एही
शब्दमध्य :	सियार	-	सिआर।
	शब्दांत	-	दीया (दीप) - दीआ
	पिया (पति)	-	पिआ।

कभी-कभी शब्द के आंरभ में य इअ की भांति हो जाता है। विशेषकर उर्दू फारसी के शब्दों के लेखन में

जैसे - यार - इआर। याद - इयाद

अर्थात यह ध्वनि अपने मूल रूप इ + अ > य के रूप में बहुलाम में उच्चारित

'व' ध्वनि का उच्चारण-

तत्सम् शब्दों के आरंभ में आने वाले व का उच्चारण ब की तरह होता है।

यथा : वन - बोन

किन्तु अन्य विदेशी शब्द जहाँ व से आरंभ होता है खोरठा में वो की तरह उच्चारित होता है। विशेष रूप से उर्दू फारसी में शब्दों के लेखना-उच्चाप में।

यथा : वकील - ओकिल। वही - ओही

वजन – ओजन वहज – ओजह

शब्द के मध्य में आनेवाले व का उच्चारण खोरठा में ज्यों का त्यों या कभी–कभी ब की तरह होता है।

यथा : देवता – देबता – देवता। पर्वत–पटवत

स्वाद – सवाद पवित्र–पात्रित

शब्द के अंत में आनेवाले व का उच्चारण कभी–कभी ब की तरह तथा कभी–कभी इसके मूल रूप में उच्चारित होता है?

यथा : शिव – सिब नाव – नाव

कभी शब्द के मध्य तथा अंत में आनेवाले व का उच्चारण अ की तरह होता है।

यथा : जवान – जुआन खोवा – खोआ

'ष' ध्वनि का उच्चारण-

यह केवल तत्सम शब्दों में पाया जाता है जिसका उच्चारण खोरठा में सर्वत्र ख की तरह होता है। खोरठा भाषा की यह विशेषता है। मगही, भोजपुरी आदि में यह 'स' की तरह उच्चारित होता है।

यथा : वर्षा – बरखा। हर्षा – हरखा

पुरूष – पुरूख। धनुष – धनुख।

षडयंत्र – खडजंतर। दोष – दोख

कभी–कभी ष का उच्चारण स की तरह भी होता है।

जैसे : वर्ष – बरस

'ह' ध्वनि का उच्चारण

खोरठा में 'ह' ध्वनि का उच्चारण काफी अस्पष्ट होता है। फलस्वरूप खोरठा में महाप्राणत्व की प्रवृति अधिक पायी जाती है जबकि बंगला में महाप्राणत्व लोप (Deaspiration) की प्रकृति है। यथा – खोरठा हाँथ, बंगला – हात,

अल्पप्राण स्वनों के साथ ह जुड़कर महाप्राण हो जाता है। आदर बोधक क्रिया रूपों या बहुवचनार्थक क्रिया रूपों में महाप्राणत्व की प्रवृति खोरठा में सर्वाधिक पायी जाती है।

यथा – जइबा – जइब + हे – जइबहे – जइभे (जाइयेगा)

खइबा – खइब + हे – खइबहे – खइभे (खाइयेगा)

चलला – चलल + हे – चललहे – चलल्हे (चले)

ड, ढ, ड, ढ़, का उच्चारण –

ये ध्वनियाँ अलग–अलग स्वनिम नहीं है। बल्कि एक ही स्वनिम के दो उपस्वन है। किन्तु ड़ और ढ़ का उच्चारण खोरठा में बहुत प्रच्छन्न है। बिहारी भाषाओं में ये

ध्वनियाँ र के रूप में उच्चरित होती है।

हिन्दी – मोढ़, खोरठा – मोड़, बिहारी – मोर
हिन्दी – बड़ा, खोरठा – बोड़ बिहारी – बरा आदि।

'ल' का उच्चारण

इस ध्वनि का उच्चारण खोरठा में कतिपय अपवादों को छोड़कर हिन्दी की तरह ही होता है।

यथा : फल – फर किन्तु यह कहा जाता है फल मिललउ।

'न्ह', 'म्ह', 'ऱ्ह', 'ल्ह', का उच्चारण

ये महाप्राणीकृत ध्वनियाँ किसी बात पर जोर देने, आदर एवं बहुवचन बोध कराने के निमित प्रयुक्त होती है।

न्ह : कोन्हों – कोई जन्ही – जिधर, दिन्हीं – दिन में ही
म्ह : हम्ही – मैंही काम्ही – काम से ही दाम्ही – दाम से ही
रह् – : खेऱ्हा – खरगोश बेऱ्हा – बार खोऱ्हा – पलटना

ऱ्ह ध्वनि बिहारी भाषाओं मगही, मैथिली में ड़ ध्वनि की प्रतिस्थाप्य (Subsitute) हैं। किन्तु खोरठा में इनका स्वतंत्र अस्तित्व है।

ल्ह : लेल्हे – आपने लिया (आदर / बहुवचन)
खइल्हे (आपने खाया) (आदर / बहुवचन)
पइल्हे – आपने पाया (आदर / बहुवचन)

भूतकालिक प्रत्यय ल का महाप्रणीकृत रूप ल्ह है।

ध्वनि परिवर्तन

खोरठा में ध्वनि परिवर्तन निम्न रूप में पाये जाते हैं–

घोषीकरण – भक्त > भगत – क अधोष का ग घोष में परिवर्तन।
शाक > साग – क अधोष का ग घोष में परिवर्तन।

अधोषीकरण – मदद > मदइत – द घोष का त अघोष में परिवर्तन।
खुबसूरत > खपसूरत – ब घोष का प अघोष में परिवर्तन।

अल्पप्राणीकरण – सख्त > सकत – ख महाप्राण का क अल्पप्राण में परिवर्तन।
खोरठा में महाप्राणीकरण की प्रवृति विरल है।

महाप्राणीकरण– खोरठा में महाप्राणीकरण की प्रवृति सघन है।

यथा : पेड़ > फेड़ – प अल्पप्राण का फ महाप्राण मे परिवर्तन।
करबहीं > करभीं। चलबहीं > चलहीं > – ब + ह = भ
वक्त > बखत।

दन्त्य ध्वनि का ताल्वय ध्वनि में परिवर्तन- निम्न उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

सीधा > सोझा - ध दन्त्य का झ तालव्य में परिवर्तन

सिद्ध > सिझ - द दन्त्य का झ तालव्य में परिवर्तन

तालव्य ध्वनि का दन्त्य ध्वनि में परिवर्तन- निम्न उदाहरणों में यह परिवर्तन द्रष्टव्य हैं।

यथा : पिंजरा > खेंधरा - ज तालव्य का ध दन्त्य में परिवर्तन।

शोक > सोग - तालव्य श का दन्त्य स में परिवर्तन।

शोभा > सोभा - तालव्य श का दन्त्य स में परिवर्तन।

पाश्र्विक ध्वनि (lateral) का लुंठित (Trilzl) में परिवर्तन- निम्न उदाहरणों में यह परिवर्तन देखा जा सकता है-

यथा - केला > कइराहल > हर काजल > काजर ल का र में परिवर्तन यहाँ हुआ है।

अपनिहित (Epenthesis) और खोरठा

सदानी भाषाओं में मध्य स्वरागम या अपनिहित की प्रवृति विलक्ष्ण है। किन्तु खोरठा में यह प्रवृति विशेष रूप से सघन है, किन्तु नागपुरी कुरमाली पंचपरगनिया आदि में विरल। मैथिली में किंचिंत और मगही में न्यूनतम मात्रा में यह प्रवृति मिलती है। यथा –

हिन्दी/संस्कृत	खोरठा	मैथिलि	मगही	नागपुरी
भालु	भाउल	भालू	भालू	भालू
मधु	मउध	मधु	मधु	मधु
दाल	दाइल/ दाएल	दालि	दाल	दाएल
देवी	दइब	देवी	देवी	दइब
चल	चइल	चल	चल	चइल
गणपति	गनपइत	गनपति	गनपति	गनपइत
साधु	साउथ	साधु	साधु	साधु
श्रृजोति	सुनइत	सुनइत	सुनइत	सुनइत आदि

भाषा में अपनिहित के कारणों पर विभिन्न विद्वानों के भिन्न मत हैं। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी औ तारापोरवाला ने माना है कि यह एक प्रकार का स्वरागम है। उच्चारण सुविधा के लिए इसमें कोई स्वर आ जाता है। किन्तु साथ ही अपनीहिति के लिए यह आवश्यक है कि शब्द में आनेवाले स्वर की प्रवृति का कोई स्वर या अर्द्धस्वर पहले से वर्तमान हो।

मेरे विचार से संस्कृत प्राकृत के शब्द जब खरोष्ठी लिपि में लिखे जाते रहे होंगे तब यह प्रवृति विकसित हो गई होगी क्योंकि खरोष्ठी लिपि में मात्राओं की व्यवस्था न होने के कारण उनके स्थान पर स्वरों को ही लिखकर काम चलाया जाता रहा होगा। फलस्वरूप शब्द मध्य में इ, उ स्वरों का आगम हो जाता होगा। यही प्रवृति कदाचित आज तक बनी हुई है। किन्तु चल, कर, नल आदि में कोई मात्रात्मक चिन्ह न होने के बावजूद मध्य स्वरागम हुआ है।

यथा - कर - कइर चल - चइल नल - नइल आदि।

इसका कारण मात्रात्मक चिन्हों से युक्त शब्दों में आये स्वरागम के सादृश्य (Analogy) के कारण हुआ।

खोरठा शब्द सम्पदा

भाषा और शब्द

अर्थ के स्तर पर भाषा की सबसे छोटी ओर स्वतंत्र इकाई शब्द को माना जाता है। प्रत्येक भाषा की अपनी शब्द संपदा होती हौ और वह संपदा हजारों वर्षों तक एक दूसरी भाषाओं और सांस्कृतियों के लेन-देन का परिणाम है। खोरठा भाषा की भी अपनी शब्द संपदा है जो अपने ठेठ शब्दों के साथ-साथ मुण्डा भाषाओं एवं द्रविड़ भाषाओं समेत संस्कृत एवं विदेशी भाषाओं के शब्दों में के मेल-जोल से बना है।

खोरठा के ठेठ शब्द

खोरठा के ठेठ शब्द इसके आधार शब्द है। ये ठेठ शब्द मुख्यत: अनुकरणात्मक एवं अनुरणात्मक (Onomptopoetic) एवं अज्ञातव्युत्पतिक या देशज शब्द से बने हैं।

1. **अनुकरणात्मक एवं अनुरणात्मक (Onomptopoetic)-** खोरठा में ऐसे शब्दों के प्रयोग की एक लंबी परंपरा है। ऐसे शब्द प्रकृति में उपलब्ध ध्वनियों और उनके अनुकरण से व्युत्पन्न शब्द आते हैं। जैसे सुखी हुई लकड़ी के टूटने से 'पट-पट', 'ठस-ठस' की ध्वनि उत्पन्न होती है। सूखे पत्तों पर किसी के चलने से 'रच-रच', हवा के चलने से 'सर-सर', 'हर-हर' आदि ध्वनियाँ निकलती है और इन्हीं ध्वनियों के नकल से आदि मानस के द्वारा भाषा का विकास किया गया। प्राकृतिक ध्वनियों के नकल से ही उत्पन्न शब्दों को अनुकरणात्मक एवं अनुरणात्मक (Onomptopoetic) कहते हैं। खोरठा में ऐसे शब्दों की संख्या अनगिनत है, जो प्रत्येक वर्ण से आरंभ किए जा सकते हैं। जैसे 'कट-कट', 'चट-चट', 'छट-छट', 'झट-झट', 'खट-खट' आदि।

(क) ऐसे शब्दों में मात्रा आदि के प्रयोग से शब्द की तीव्रता में परिवर्तन हो जाता है। जैसे :

टपटपा हई - मोटी बूंदों के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
टुपटुपा हई - थोड़ी छोटी बूंदों के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
टिपटिपा हई - उससे भी छोटी बूंदों के गिरने से उत्पन्न ध्वनि।

यही प्रक्रिया अन्य अनुकरणात्मक शब्दों में भी घटित होती है।

(ख) अनुकरणात्मक शब्दों के क्रिया रूपों में प्रयोग-

जैसे: पटपटाइक - धुप में धान आदि का सूखना।
खदखदाइक - पानी का उबलना

चरचराइक - नोचना

(ग) विशेषय के रूप में प्रयोग-

जैसे : पटपटाइल - पटपटाइल झुरी - सूखी लकड़ी
करकराइल - करकराइल घीव - पिघली हुई घी

(घ) क्रियाविशेष के रूप में प्रयोग

जैसे : चरचराइ के कूदलइ- जोर से भागा।
हड़बड़ाय के उठलइ - तेजी से भागा।
लड़बड़ाय के गिरलइ - लड़खड़कर गिरा।

(ङ)संज्ञावाची विशेषण के रूप में प्रयोग-

जैसे : गरगरी - जोर से बोलने वाला।
लड़बड़ी के डाक - दुबले आदमी को बुलाओ।

2. **अनुकरणात्मक एवं अनुरणात्मक (Onomotopoetic)-** अनुकरणात्मक शब्दों को छोड़कर खोरठा के अन्य ठेठ शब्द भी हैं जो संस्कृत एवं संस्कृत से व्युत्पन्न भाषाओं एवं बोलियों में बिल्कुल नहीं पाए जाते। यदि पाए भी जाते हैं तो दूसरे अर्थों में। ऐसे ठेठ शब्दों में के भी दो प्रकार होते हैं।

वैसे ठेठ शब्द इसके अंतर्गत आते हैं तो मुण्डा एवं द्रविड़ भाषाओं में भी पाये जाते हैं किन्तु यह ठीक-ठीक कह पाना कठिन है कि ये शब्द मुण्डा या द्रविड़ भाषाओं से खोरठा में आए हैं यह खोरठा में आए हैं या खोरठा से उनमें लिए गए हैं फिर भी ऐसे शब्दों का आँचा-ढाँचा देखने के बाद यह लगता है कि ऐसे शब्द खोरठा से ही मुण्डा आदि में गए हैं। जैसे-

(क) संज्ञा शब्द- चिडरा (गिलहरी), गिदर (बच्चा), टील्हा (बाँबी), ढीढा (पेट), लादा (बड़ा पेट), चेंगना (चूजा), लेरू (बछड़ा), डूभ (कटोरी), डोंका (मुँह), मोचा (चेहरा), खील (परती), चीरा (गांव से बाहर की जमीन का टुकड़ा), चूटिया (चूहे की छोटी प्रजाति), खेंचा (टुकड़ा), कोचा (बंद गली) आदि।

(ख) क्रियावाची शब्द- खुंदेक (पैर से दबाना), घुसेक (वंचित होना), उसरेक (फूर्ति), कोमरेक (दाँत से काटना), हदरेक (निराश होना), पिदकेक (जोर से भागना), हुलकेक (देखना), मलकेक (चमकना), साजेक (घुसाना), खियाइक (घिसना), हिबड़ेक (भिड़ना), हिंछरेक (छीनना)

(ग) विशेषणवाची शब्द- चरक (सफदे), कउसा गोला (लाल), सउना (भूरा), गेंडरा (छोटा), डोड़गा (लंबा), ढूमका (गोल), ठूँठा (उंगली बिहीन), लेचरा, चेडरा आदि।

(घ) तुलनात्मक शब्द- तइर, तरी, तइरमा, नियर, लेखे, लेखा आदि।

(ङ)अपवचन (Slag Words)- ऐसे शब्दों का प्रयोग सामान्य स्थिति में लगभग नहीं होता है, किन्तु क्रोध या कोप की स्थिति में स्वत: प्रयुक्त हो जाता हैं। जैसे : टेड़ेक (पानी पीना), ढोढर सोंधाइक (भूख लगना), टिडुआइक (मरना), लूँड़ेक (घुसाना)ठुंसेक (खाना)।

(च)संस्कृत शब्दों का खोरठा में विशिष्ट अर्थ- खोरठा में बहुत ऐसे शब्द हैं जो संस्कृति आदि से व्युत्पन्न प्रतीत होते हैं, किन्तु खोरठा में उसके अर्थ संस्कृत शब्द के अर्थ से बिल्कुल विपरीत हुआ करते हैं।

जैसे :	शब्द	खोरठा	संस्कृत
	कटि	थोड़ा	कमर
	पूजा	काटना	पूजन
	साधना	काष्ट देना, तंगर करना	पस्या
	साधक	तंग करने वाला	तपस्या करने वाला
	कर	दिशा (इ कर, उ कर)	हाथ
	कारन	रोग	कारण
	छिलका	पकवान विशेष	छिलका-उपरी परत

इसके अतिरिक्त तत्सम, तद्‌भव एवं विदेशज शब्दों की भी खोरठा में एक लंबी श्रृंखला है।

तत्सम शब्द

खोरठा में तत्सम शब्दों की संख्या लगभग नगण्य है।

तद्‌भव शब्द

खोरठा में बिहारी भाषाओं की तरह तद्‌भव शब्द पाए जाते हैं, जिनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

चक्र - चाक	क्षेत्र - खेत	लग्न - लगन
संध्या - सांझ	दूग्ध - दूध	मध्य - मांझ
सप्त - सात	कर्म - काम	नष्टक - नाति
सत्य - सत	अद्य - आइझ	हल - हाल/हार
पुत्र -पुत/पूता	शाक - साग	काक - काग/कउआ
शाक - साग	श्रृगाल - सियार	नख - नोह
ज्येष्ठ - जेठ	पाषाण - पखन	श्लाष - सहारना
मधु - महुआ	स्तन - थन	वाष्प - भाप
कर्ण - कान	लवण - नून	

विदेशज शब्द

राज्य एवं प्रशासन के प्रभाव से खोरठा में अरबी–फारसी एवं अंग्रेजी के शब्दों का भी समावेश हुआ है। किन्तु अरबी–फारसी के शब्द की तुलना में अधिक हैं।

जैसे :

स्कूल - इस्कूल	मैनेजर - मनिजर	प्लेटफार्म - लेटफारम
डिग्री - डिगरी	रिसिप्त - चिरकुट	मैजिस्टेट - मजिस्टर
नोटिस - लुटिस	ड्राइवर - डलेवर	रूल - रूल
स्टेशन - टिसन	लाइट - लेट	टाइम - टेम
कॉलेज - कवलेज	बिस्कुट - बिसकुट	फाउन्टेन पेन - फोलटेन
मिट - मिठ	लैटर्न - लालटेन	मिक्स - मिकस
रेजल्ट - रिजल्ट	रिपोर्ट - रिपोर्ट	मर्डर - मडर
रेल - रेल	मोटर - मोटर	रिक्सा - रेकसा

— — — — — —

संइगा (संज्ञा)

सइंगा सबदेक सोझा / सोझी 'कोषगत' माने हव-हे चेतना/चेठा मकिन बेयाकरने वइसन सबद के संगा कहल जा हे जकर से कोन्हों ठांव, चीज-बसुत बा कोन्हों बेकति/बेगइत के नाम के बोध हव-हे। दोसर सबदे नाम के ही संइगा कहला जाहे (Name is Noun)

जइसन : नाम ठाँव-स्थान के - राँची, टाटा, गिरिडीह आदि
नाम चीज-बसुत के - आलू, बइंगन, सोना, माटी
नाम बेकति के - बिरसा, तिलका, सिधु-कान्हु आदि।

बिउतपति (व्युत्पति) के नइजरें सइंगा के तीन गो परकार पावल जाहे।

(क) रूढ़- मूल सइंगा सबद जे 'यादृच्छिक' (Arbitrary) हव-हे बा वइसने सइंगा सबद जकर नामकरनें बा नाम धरइते मोटा-मोटी कोन्हों तर्क 'कार्य-कारण' संबंध नाञ् रहे हे, सोझा-सोझी नाम धइर देल जाहे। अइसन सबद के टुकरा नाञ् हवे और जोदि हबो करे तो दुइओ खंड के अलग-अलग माने नाञ् हवे।

जइसन: बिसि (रीढ़) - बि + सि
बारि - बा + रि आरो-आरो

ई पटतइरें दुइओ टुकराक अलग-अलग माने नाञ् फुरछा हे।

(ख) जउगिक- बइसन सबद जउगिक कहा के जो दुगो फरक-फरक माने रखवाइआ सारथक सबद के मेल बा जोग से बनलहे आर जे सबदेक खंड करल से दुइयो खंड के फरक-फरक माने फुरछाइ जाहे।

जेरंग : घर दमदुवा - घर + दमदुवा
घरभिंजवा - घर + भिंजवा
घरवारि - घर + बारि
पेटभाता - पेट + भाता

उपरेक पइटतरें पइत सबदेक दुइयो खंड के अलग-अलग माने हइ।

(3) जोगरूढ़- वइसन सबद गुला जोगरूढ़ कहा हे, जो दुगो फरक-फरक माने रखवइआ सबद के मेल से बा जोग से बनल हे, मकिन अइसन जउगिक सबदेक अरथ दुओ मूल सबदेक मूल अरथ में भिनु अरथ फरछा हे और कोन्हो दोसर अरथ लागिन रूढ़ भइ जा हे। मेनेक अइसन सबद तो जउगिक बा मेलक तो रह-हे, संगे-संगे कोन्हों चीज के नाम खातिर रूढ़ भइ जाहे। सइ खातिर एकरा जोगरूढ़ कहल जाहे।

जइसन : गोबर, गनेस - गोबर + गनेस

हियाँ गोबर आर गनेस के भिनु-भिनु अरथ हइ सेटा तो जगजाहिर हइ मकिन ई दुइओ सबदेक मेल से बनल सबद, 'गोबरगनेस' एक दम मुरूख लोक खातिर परजोग करल जाहे।

दोसर पइटतर 'चाइरगोड़वा' के दल जाए पारे। ई जोगिक सबद चाइर + गोड दूगो सार्थक सबद के मेल से बनल हे। एक माने हव-वे चाइर गोड़ा वाला। ई रकमें जते किसिम के जीव-जन्तु या चीज-बसुत हे जकर चाइर गो गोड़ होवे हे जइसे गरू डांगर, छगरी-पठरू, कुर्सी-टेबुल ई सभे के चाइ गोड़ हवइ तबे ई गुला के चाइर गोड़वा कहल जाइ पारे मकिन अइसन हइ नाञ्। चाइरगोड़वा एगो अइसन छोटेगो परजीव हइ जो मानुस के गातें चिपकल रह-रहे, खातिर रूढ़ भइ गेल हइ।

पइन सोखा- पइन (पइन)+सोखा दूगो सबदेक मेल से बनल हे पइनसोखा। तबे जे कोन्हों चीज बा उपाइ से पइन खुतइ से सब बुला के नाम पइनसोखा हवे पारे मकिन अइसन हइ नाञ। ई सबद 'इन्द्रधनुष' खातिर रूढ़ भइ गेल हइ।

अर्थ के विचार से सइंगा के भेद- खोरठाञ् मोटा-मोटी हिन्दी रकमे सइंगा के पाचं गो भेद हवो हे।

(क) जातिवाचक सइंगा- वइसन सबद गुला ई खांधाञ् राखल जाहे जेकर से गोटा जाइत/समुदाइ के बोध हवो हे।

(ख) बेगइत वाचक सइंगा- वइसन सबद जकर से कोन्हों खास बेकति, ठांव आदिक नाम के बोध कराव-हे।

जइसन : पारसनाथ, लुगु, जिनगा दामोदर, चरकु मंगरा राँचीख झारखण्ड आदि।

हिआँ देल पटतइर गुला से खास चीज के नाम के पता चइल जाहे।

(ग) भावचावक सइंगा- जे सबद गुला से कोन्हो चीजेक अवस्था, स्थिति, भार, भाव के बोध हव-हे तकरा भाववाची सइंगा कहल जाहे।

जइसन : गिदराली, बुढ़ारि, बडउगिरि, अइगलि, पइछलि, अइगटंगी आदि। भावाची सइंगा बनवेक लाइ विसेसनवाची सबद गुलाञ् अलि, री, ई, प्रत्यय, जोइड़ के बनवल जाहे। जइसन-

गिदर + आलि - गिदरालि, बुढ़ा + रि - बुढ़ारि,
कुरचा + अइनि - कुरचइनि, नाय + आन - नायान, चढ़ान, उठान
मोट + अइनि - मोटइनि सनसन + इ - सनसनि
गाउझ + अइनि - गछइनि आदि।

(घ) समूहवाची सइंगा- हिन्दी भासाञ् वइसन सबद गुला के समूहवाची सइंगा मानल गेल हे, जकर से समूह भीड़-भाड़ हेन-तेनेक बोध हवा है।

जेरंग: जतरा, मेला, पेठिया (बाजार) सभा हेन-तेन।

मकिन जदि एकरा जातिवाची सइंगा खांद्याञ् राइख लेल जाए तो कोन्हों बेजाञ् नाञ् हतइ आर एगो भिनु अजवाइर अलग भेद् के मोह से बांचल जाइ पारे किलेना जतरा, मेरा, पेठिया आदि एगो-दूगो नाञ् ढेइर हव-हे, जेरंग नदी पहार के एगो समुदाय/ समूह हई मकिन जातिवचाक सइंगा गेल हई। ई भाभें समूहबाचि सइंगा के जातिवाची सइंगा माना टा अनुचित नाञ्।

अइसन समूहवाची सइंगा सबद बेकतिवाचि बइन जाहे। जदि अइसन लिखल जाइ-

रामगढ़ जतरा देखे चला।
खोरठा भासा परिषद्, रामगढ़।
हिजला मेला आदि।

(ङ)द्रव्यवाची सइंगा-हिन्दी बेयाकरनें वइसन सइंगा सबद गुला के राखल गेल हे जकर नाप, तउल हवे पारे जइसे तेल, घी, सोना आदि।

मकिन जोदि तेल, घी, सोना आदि के जातिवचाी सइंगा माइन लेल जाए तो कोन्हों बेजाञ् की ले कि तो ई तो कइ किसमेक हवो हे। जइसे करूवातेल, डोरीतेल आदि जे बेकति वाचक सइंगाक रूप हके। सई रकमें घी कइ किसिम के हव-हे। जइसे गाइ के घी, भंइस के घी, ऊंट के घी आदि। तइसने चोबिस करेट के सोना, बिस्कुल आदि।

बेकतिवाची सइंगा बनवेक खोरठा विधान

मोटा-मोटी हिन्दी आदि आन भासाञ् बेकतिवाची सइंगा सबदेक जनम बा कोन्हो चीज बा बेकति के नाम धरेक में कोन्हो तर्क नाञ् हवे, 'यादृच्छिक' (Abbitrary) हवो हे, सोझा-सोझी माइन लेल जाहे। जेरंग कृष्ण केकरो नाम धरल जाइ पारे भलेहुँ ऊ दग-दग गोल कि ले ना हो। सही अरथ तो कृष्ण वइसने लोक के नाम हवेक चाही जकर रंग करिया हतइ। मकिन अइसन हवइ नाञ्।

मकिन खोरठाञ् नाम धरेक बेरा कार्य-कारण आर तर्क के खेयाल राखल जाहे।

जइसे: कोन्हो लेक के चइत मइहनाञ् जनमलइ तो ओकर नाम धरइलइ-चइता, चइतु,

जोदि जेठ मइहनाञ् जमलमलइ तो जेठु

एहे रकम - फगुआ, सवनि, मंगरा, बंधु, करिया रंग ह तो करिबा/कारि, गुजा-घुजा। पियर रंग हइ तो पांडु, खेर्हा रकम कान हइ तो खेरहु।

पुरना परिआक् बेद-पुराने रूप रंग, भाइ-बाप, गांव-घर, देस के आधारें नाम धरेक परम्परा रहल हल।

जे रंग: गोकर्ण, कौन्तेय, राधेय, पांडु, कृष्ण, गांधारी, कैकेयी, कौशल्या आदि।

मकिन हिन्दी आदि ई परपंरा बाचंल नखइ एखन जबकि खोरठाय् ई परम्परा एखन्हूं बांचल हइ। ई परंपरा देइख के खोरठाक इतिहासक परंपरा आर प्राचीनताकं बुझल जाइ पारे।

खोरठा भासाञ् सइंगाक तीन रूप जाहे जे एक आपन विसेसता हइ।

जइसे :

प्रथम रूप	द्वितीयक रूप	तीसरका रूप
सोनार	सोनरा	सोनरवा
भात	भाता	भतवा
पेट	पेटा	पेटवा

उपरेक पटतइरें सोनार सबदें आदर बोध हइ मकिन 'सोनरा' सइंग रूपें अनादर बोध हइ जबकि सइंगाक तिसरका रूप 'सोनरवा' में निश्चितता के बोध हव हइ।

सइंगा सबद से क्रिया

सइंगा सबद से क्रिया–रूप बनवेक लाइ खोरठाञ् आपन बिससे बिधान हइ। जेरंग अंग्रेजी भासाञ् एइसन विधान बा नियम बगरा बा ढइर पवा हइ। अइसन सइंगा सबद के नाम धातु कहल जाहे।

जइेस : पानी + आवेक – पनिआवेक
चरक + वेक – चरकावेक
डहर + वेक – डहरावेक

निष्कर्ष

खोरठा भासाञ् सइंगा बा नाम धरेक आपन परम्प्रा हे जे बेजाञ् प्राचीन हे आर जे तर्क सम्मत, विज्ञान सम्मत हे। सइंगा के अर्थ आर व्युत्पति के लेताइरें आपन भेद आर प्रकार हे, आपन सुपट पटतइर हे। प्रत्यय जोइड़ के भाववाची सइंगा बनवेक आपन परिपाटी, आपन विधान हे जे दोसर से फरक हे।

— — — — — —

खोरठा सर्वनाम

सर्वनाम

हिन्दी सबद 'सर्वनाम', सर्व + नाम के मेल से बनल हे, जकर माने हतइ, सब के नाम। तबे व्युत्पति के नजरें सर्वनाम के परिभासा इ रंग तहइ – जे सब के नाम हके, जे सब के नाम दिये पारे, जे सब के हवे पारे।

'सर्वनाम' हिन्दी सबदेक सोझा-सोझी माने हतइ – जे सब के नाम हके। जे सब केनाम दिए पारे। जब सब के नाम हवे पारे।

एकरा ई भाभें बुझल जाइ पारे कि सभ्यातक सुरआती बेरा मानुस जे कोन्हों चीज के देखइत हवत तकर बारे बहुत जादा गिआन तो हतइन नाञ् तकर चलते ओकर कोन्हों नाम देल नाञ् हता आर ऊ चीज के ऊ, ई, ऊटा, ईटा, सेटा, ओह, इह, आरो कोन्हो-कोन्हों सबद बा साड़ा (ध्वनि) से देखवइत हता बा संकेत करइत हाता। बहुत बादें जब ऊ चीज गुलाक बारे मानुस के जानकारी बा गिआन-गियान बाढ़लइन, तकर बादें ऊ चीजेक कोन्हों नाम देल हता। ई भाभें एकरा अइसनों कहल जाइ पारे- सर्वनाम कोन्हों चीजेक सबले पहिल नाम हके आर सइंगा तकर पेछुक नाम।

बेआकरने "सर्वनाम' वइसन सबद के कहल जाहे, जे बाइकें सइंगा (नाम) के बदल बा ओइजी आव-हे।" (कामता प्र. गुरू, हिन्दी व्याकरण)

जइसे जोदि लिखल जाइ - "कारू एगो गाँवेक बेटा छउआ हके। ऊ पइत दिन हस्कुल जाहे। ऊ बड़ी तेज हे।"

उपरेक बाइके 'ऊ' सबद कारूक ओइजीं आइल हे। जोदि ई ओइजी सबदेक परजोग नाञ् करल जइतलक तो उपरेक बाइक टा ई तरी लिखल जइतलइ- "कारू एगो गांवेक बेटा छउआ हके। कारू पइत दिन इस्कुल जाहे। कारू बड़ी ते हे।"

उपरेक पटइतरें 'कारू' सबद कइ-कइ बइर आइल हे। तकर चलते भासाञ् एगो बेबधान रकम बुझा हे, कटि अटकल लखे बुझाहे। भासाञ् प्रवाह नाञ बुझा हे। एके गो सइंगा (नाम) सबदेक घुइर-घुइर दोहराल से एगो अजबे किसिम के अवरोध और ठहराव आइल हे भासाञ् एहे अवरोध आर ठहराव के मेटाय के एगो प्रवाह लानेक लाइ सर्वनामेक बेबस्था करल गेल हे। सर्वनामेक परजोग से भासाञ् एगो प्रवाह आइ जाहे और सिराय जाहे सइंगा सबदेक घुइर-घुइर लिखेक समस्या।

खोरठा सर्वनाम

पइत भासाक आपन सर्वनाम हवो हे आर एक भासाक सर्वनाम के दोसर के दोसर भासाञ् लेन-देन नाञ् हवइ जबकि सइंगा, क्रिया, आदि सबदेक लेन-देन खूब चलो हे। खोरठा भासाक आपन सार्वनामिक परिपाटी हे, आपन आँचा-ढाँचा हे, आपन बिससेता हे। खोरठाञ् सर्वनाम आपन मूल रूपें और प्रत्यय के जोग से विकृत-बेंड़ाइल - (विकसित) दुइयो रूपों पावल जाहे। जइसे, मूल रूप - हाम, उ, ऊ, तोञ्, ई, एह, ओह, से, जे, ते, मूल सर्वनाम सबद के संबंधकारकीय प्रत्यय 'र' आर 'रा' के संजोग से विकृत-बेंड़ाइल रूप (विकसित) बनो हे।

जइसे : हाम + र = हामर, ओ + कर = ओकर/उकर

तोञ् + कर = तोर इ + कर = इकर

एक + कर = एहकर - एकर से + कर = सेकर

जे + कर = जेकर ते + कर = तेकर

ई पटतइर गुला देखल कर पेछू कटि गुने गेले ई बात फरीच भइ जाहे कि पुरूषवाचक सर्वनामेक मूल रूपें संबंधकारकेक विभक्ति 'कर' जुटल हवत मकिन एगो लम्बा समइयें खिअइत-खिअइते 'कर' के क टा सिराय गेलइ आर बाइंच गेलइ 'र'। आइझ पुरूषवाचक सर्वनाम संगे संबंधकारकीय विभक्ति रूपें सिरिफ 'र' के दरसन होव हे। जैसे हमर, तोर, ओकर आदि।

मकिन सइंगा सबदेक संगे संबंधकारकेक विभकित 'कर' टा खूब पवाइ।

जइसे : राम कर, गाय कर, लेरू कर, गांव कर आदि।

खोरठाक पार्श्वर्ती भाषा बांग्लाञ् संबंधकारकेक 'कर' विभक्ति 'क' एकदम के खिआइके सिराइ गेल के बाद बाइंच गेल मात्र 'र' आर इ 'र' विभक्ति (प्रत्यय) टाइ बांगला सइंगा सर्वनाम दुइयो संगे एके रकम पवाइ।

जइसे : सइंगा रूप - रामेर, श्यामेर, सीतार आदि।

सर्वनाम रूप - आमार, तोमार, आपनार आदि।

खोरठा सर्वनामेक बहुवचन रूपें 'क' आर 'कर' संबंधकारकेक विभक्ति दुइयो एके रकम पवा हे। आर दुइयो के समान परजोग पावल जाहे।

जइसे : हमनिक - हमनिकर, तोहनीक - तोहनीकर,

ओखनीक - ओखनीकर।

खोरठा सइंगा संगे संबंधकारकेक 'एक' विभक्तिक परजोग करल जाहे।

जइसे : रामेक, सामेक, सीताक आदि।

मकिन इकरान्त सइंगाञ् 'आक' आर उकारान्त सइंगाञ 'वाक' प्रत्ययओ खूब देखल जाहे।

जइसे: इकारान्त - छगरी - छगरियाक, दहियाक, पनियाक आदि।
उकारान्त - लेरूवाक, गुरूवाक, महरूवाक आदि।

खोरठा सर्वनामेक कारकीय रूप

खोरठाक सर्वनामे सबले बेसी संबंधकारकेक, विभक्तिक संजोग हवो हे। जे तरी कि बंगला और मैथिली भासाञ् पावाइ। तकर पेछू दोसरो कारकेक रूप बइन हे दोसर-तेसर कारकेक विभक्ति जोइड़ के।

पटतइर देखल जाउक :

कर्त्ताकारक - हमरा, तोरा, ओकरा, तोहरा, ओखरा आदि

कर्मकारक - हमर से, तोर से, ओकर से, तोहर से आदि

करणकारक - हमर लाइ / लागिन, तोर लाइ, तोहर लाइ, ओकर लाइ ओखर लाइ। लाइ के बदल लागिनो समान रूपे चलो हे।

अपादान - हमर से / ले, तोर से / ले, तोहर से / ले, ओकर से / ले

अधिकरण - हमर पर / में, तोर पर / में, तोहर पर / में, ओकर पर / में

संबंधकारक - हमर, तोहर, ओकर, तोर, ओखर आदि।

सर्वनामेक भेद

परजोग के हिसाब में हेंठे उखराल सर्वनामेक भेद खोरठाञ् पावाल जाहे-

1. **पुरूषवाचक सर्वनाम**- एक मूल रूपें संबंधकारके विभक्ति लगाइ के विकृत (विकसित) रूप बनवल जाहे।

जइसे :

	एक वचन	बहुवचन	संबंधकारक रूप
1.	उत्तम पु. हम हाम	हामिन, हामिन	हमर, हामर, हामिनकर, हामनिक
2.	मध्यम पु. तोञ्	तोहिन, तोहनि, तोहरिन	तोर, तोहनिक, तोहनिकर तोहरिनकर
3.	अन्य पु. ई ऊ	एखिन, ओखिन ओखरिन	एक, ओकर, उकर एखिनेक, एखिनक, एखिनकर ओखिनेक, ओखिनकर ओखिरिनेक

2. **संकेतावाचक सर्वनाम**- खोरठाञ् एकर दू किसिम पावल जाहे।

(क) नइझकेक - निकटवर्ती (ख) दूरवर्ती - धूर के संकेत करवइया

(क) नइझकेक - निकवटर्ती

प्राणीवाची	अप्राणीवाची	संबंधकारकेक रूप
ई, एहे	इटा, एहटा, एहेटा	इकर, एकर, इटाक, इटाकर

एहटाक, एहटाकर

(ख) दूरवर्ती - धूर के संकेत करेवाला

प्राणीवाची	अप्राणीवाची	संबंधकारकेक रूप
ऊ, ओह, ओह	ऊटा, ओहटा, ओहटाय	उकर, ओकर, ओहेकर
	ओहेटाय, सेटा	ओहेक, उटाक
		ओहटाक, ओहटाकर
		सेटाक, तकर, सेकर

3. **संबंधवाचक सर्वनाम**- खोरठाञ् संबंधवाचक सर्वनाम प्राणी, अप्राणीवाची, सभे के सूचना लाइ एक किसिम में सर्वनाम पावल जा हे। एकर विकारी, अविकारी, संबंध कारकीय रूपो पावाइ।

जइसे : अविकारी - जे, से ते

विकारी - जेह, सेह, तेह, जिन, तिन (आदरवाची)

संबंधकारकीय रूप - जेकर, सेकर, तेकर, जिनकर, तिनकर (आदरवाची)

4. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**- खोरठाञृ एकर प्राणीवाची, अप्राणीवाची दूइयो रूप पावाइ।

	प्राणीवाची	अप्राणीवाची
अविकार -	के, कउन	का, की, कीना (कुरमाली)
संबंधकारकीय -	केकर, ककर, कउनटा	
आदरेक रूप -	केखर, किनकर	

5. **समइ बोधक सर्वनाम**- खोरठाञ् समइबोधक सर्वनामेक ढइर रूप पावा हे।

जइसे :

मूल रूप - कखन, जखन, तखन, एखन, कहिआ, जहिआ। क्रिया विशेषण

संबंधकारेक रूप - कखनेक, जखनेक, तखनेक एखनेक, सेखनेक, कहिआक, जहिआक, तहिआक,

6. **दिशाबोधक सर्वनाम**- इ अइस सर्वनाम हके जकर से कोन्हों दिशा बा दिगे बा बाटे बा दने बा ओर के पता चलो हे।

जइसे :

मूल रूप - कने, जने, तने, एने, हिने, हुने, हिन्दे, हुदें, जंदे, तंदे, कंदे,। (क्रिया विशेषण)

संबंधकारकेक रूप - कनेक, जनेक, तनेक, एनेक, ओनेक, हिनेक, हुनेक, एहे रकम आरो आगू।

7. **अनठेकानवाची (अनिश्चयवाची) सर्वनाम**- खोरठाञ् अइसनो सर्वनाम पवाइ जकरसे कोन्हों निश्चतता बा ठेकान के पता नाञ् चलो हे। ई रूप टा प्राणी-अप्राणीवाची

दुइओ रकम पावाइ।

जइसे :

	प्राणीवाची	अप्राणीवाची
अविकार	केउ, कोइ, कोन, आन	कटि
संबंध-	केकरो, ककरो, केकर, आनकर, आनक।	कटिक

8. **मात्रावाची सर्वनाम**- मात्रावाची सर्वनाम प्राणी-अप्राणी दुइओक लागिन एके रकम पवल जाहे।

जइसे :	प्राणीवाची	अप्राणवाची
अविकारी -	एते, ओते, जते, तते	एते, ओते, जते, तते,
संबंधकारक -	एतेक, ओतेक, जतेक, ततेक	

9. **संयुक्त सर्वनाम**- खोरठाञ् हिन्दी, मैथिली रकम संयुक्त सर्वनाम के टावान मिलो हे। जइसे : अविकारी रूप - जेकुछ, जेसब, जेबेरा, सेबेरा,
संबंधकारकेक रूप - जेसभेक, जेसब, जेबेराक, सेबेराक।

10. **गुनबाची सर्वनाम**

मूलरूप - अइसन, तइसन, कइसन, जइसन।

11. **स्थानवाची सर्वनाम**

मूलरूप - हिआँ, हुआँ, जहाँ, तहाँ,

संबंधकारकेक रूप - हिआँक, हुओक, जहाँक, तहाँक,

12. प्रकारवाची सर्वनाम

मूलरूप - अइसन, तइसन, कइसन, जइसन।

निष्कर्ष-

खोरठा सर्वनामेक हिआँ देल रूप के लेताइरें कहल जाइ पारे कि खोरठा भासा सर्वनामेक धनी भासा हके। एकर सर्वनामेक आपन विसेसता हे आर अपनउतिक नाता-गोताओ हे। सर्वनामेक एतेक रूप टाक ओजह, खोरठा भाखाक आधा दर्जनेक आस-पास छेतरीय रूप बा प्रकार हे। ढइर अइसन सर्वनाम हे, जे कटि भनि-भेद तो हे मकिन एकेगो सइंगाक बदल आव हे। खोरठा भाखाक मानकीकरण भेल से सर्वनामेक रूप टा कम हवे पारे। एखन और आइझेक समइयें एकर आञा दरकार हें सबसे बड़ बात कि खोरठाञ् सर्वनामेक एतेक रूप रहलहुँ कोन्हों खोरठा भाखी बइजेक में कभूँ कटिको भूल नाञ् करे। चाहे बोलवइया पढ़ल-लिखन बा अनपढ़, जवान हो बा बुढ़ा हो बा गिदरे किले न हो। खोरठा सर्वनामें आपन माटिक सोंधापन हे, महक हे आर सब बोड़ इ खोरठाक आपन पहचान हके।

खोरठा विसेसन

सइंगा बा सरबनाम के रंग-रूप आकार-परकार गुन-दोस बतवइआ / बतउनिहार सबद के बेआकरनें बिससेन कहल जाहे।

जइसे : (क) गोला गरू, (ख) कनकन पानी,
(ग) ढांगा डहर।

हिआँ गोला, कनकन, आर ढांगा बिसेसतावाची सबद हके, जे गुरू पानी आर डहर सइंगा के विसेसता बतलव हे।

हाम बेकार तोञ् बेस। ऊ लुइरगर गिदर हके।
तोञ् बेलूरा हकें।

हिआँ बेकार, बेस हाम आर तोञ् सरबनाम के बिसेसता बतवल है।

विसेसनेक भेद

खोरठा बेआकरनेक मतें बिसेसन के चाइर भेद पावल जाहे-

1. गुनबाची
2. सइंखबाची
3. मातराबाची
4. सरबनामी
5. तुलनात्मक बिसेसन
6. बिसेसनेक बिसेसन

1. **गुनबाची बिसेसन**- जकर से सइंगा बा सरबनाम के रूप, रंग, सुभाव, दसा, काल हेन-तेन के पता चलो हे।

एक पाँच गोद भेद पावल जाहे -

(क) कालाबोधक गुणबाची- पुरना चाउर। नावां लुगा। टटका (ताजा) जिनोर। अवइया दिनें। आइझेक जुगें।

(ख) दिशाबोधक- पूरबें दूरा, उपर टोला, हेंठ टोला।

(ग) आकारबोधक- चइरकोनिया खेत, गोल चक्कर

(घ) रंगबोधक- चरका बकरा, गोला बरद

(ङ) दसाबोधक- कनकन पानी, तातल भात, जुड़ाइल खिचरी, सेराइल पानी खेंचा रोटी, टोना कतारी।

2. **संइखाबाची बिसेसन**- जकर से सइंगा बा सरबनाम के गनती के पता चलो हे।

जइसे : चाइर गो कुकुर। ओखिन ओखिन चाइरा अइला।

एक दू गो भेद पावल जाहे -

(क) ठेकान (निश्चित) बाची (ख) अनठेकान (अनिश्चित) बाची

(क) ठेकान गनति (निःश्चित बाची)- एकर हेंठे लिखल भेद पावल जाहे -

(i) सोझवरी गनती- चाइर गा आदमी। पाँच गो जनि बेटी।

(ii) क्रमबाची- पहिलका आदमी। दोसर बरद।

(iii) गुनबाची- डेउड़ा लंबा। दोबर मोट।

(iv) समुदायइबाची- दुइओ भाइ गेला। तीनों बहिन अइला।
चाइरो गोतिआ बइसला।

(ख) अनठेकान गिनतिबाची (अनिश्चित सइंखाबाची)- जकर से कोन्हों निश्चित संइख के पता नाञ् चलो हे।

जइसे : कई गो आदमी। कटि दिन आगू। एतेक दिन पेछू अइल्हे।

3. **मातराबाची (परिमानबाची)**- जकर से मातरा बा परिमान के पता चलो हे। एकर दू गो भेद पावल जाहे।

(क) निसचित (ठेकान) परिमानबाची-

जइसे : एक बीता जमीन । दू मन अलुवा

(ख) अनिसचित परिमानबाची -

जइसे : तनिसन दूध।	रिचिएक तियन।
जरिसुन बात।	कम पानी
गोटा संपइत।	ढेइरे कचिया।

4. **सरबनामी विसेसन**- जे सरबनाम वाइकें सइंगा के आगू (पइहले) आव हे, ऊ सरबनामी विसेसन कहा है।

जइसे : उ गिदर कांदो हे। इ गाय चाउर किलो दूध दे हे।

हिआँ 'उ' आर 'इ' दूरबाची सरबनाम हके, जे क्रम से गिदर आर गाय से पइहले आइल हे, से खातिर इ सरबनामी बिसेसन हके।

5. **तुलनात्मक बिसेसन (जोख-जोखी)**- एकर में दू बा दू ले बेसी चीज के मइधें तुलना या जोखा-जोखी करल जाहे।

जइसे : झारखंडे बसी बोन झार पवाइ।
झारखंडे बिहार से बेसी बोन झार पवाइ।
झारखंडे सबसे बेसी बोन झार पवाइ।

हिआँ 'बेसी', 'से बेसी' आर 'सबसे बेसी' जोखा-जोखी सरबनाम हके। सइ खातिर बिसेसन के तीन गो अवस्था पावल जाहे-

(क) मूल अवस्था (Positive)

(ख) उत्तर अवस्था (Comparative)

(ग) उत्तम अवस्था (Superlative)

जइसे : झारखंडे बेसी कोइला पावल जाहे - मूल अवस्था
झारखंडे बंगाल ले बेसी कोइला पावल जाहे - उत्तर अवस्था

झारखंडे सोबले बेसी कोइला पावल जाहे- उत्तम अवस्था

5. **बिसेसन के बिसेसन**- जे सबद बिसेसन के बिसेसता बताव-हे उ बिसेसन के बिसेसन कहा हे। प्रदिशेषय हिन्दी भासान कहल जाहें

जइसे : पंजाबी बड़ी साहसी हवो हथ
ऊ बड़ी बेस गावो हे।

हिआँ 'बड़ी' बिसेसन सबद साहसी के बिसेसता बताव हे

रेचना के नजइरें बिसेसन के भेद-

1. **मूल बिसेसन**-

जइसे : बल, डुब, लुइर, गुनाह, डांट, सकत, जोर।

2. **परतइ (प्रत्यय) जोइड़ के बनवल बिसेसन**

जइसे : गर परतइ
बल + गर - बलगर,
एहे रकम - हुबगर, लुइरगर, चेतगर, डंटगर
आहा परतइ -
खिस + आहा - खिसाहा,
एहे रकम - जरलाहा, परलाहा, गिरलाहा, सुतवाहा
इल परतइ
जुडा + इल - जुडाइल
एहे रकम - सेराइल - सेराइल खिचरी
कनकननाइल - कनकनाइल पानी।

3. **उपसर्ग जोइड के बनल बिसेसन**

जइसे : निर उपसर्ग - निरधनिया, निरबंसा, निरलजा
बे उपसर्ग - बेकसुरिया, बेलूरा, बेसहुर

4. **क्रिया के बनल बिसेसन**

जइसे : खाइक-खाइक, मेसाइक-मेसाइल, देखेक- देखल, मरेक- मरल

पटतइर : खाइल-पीयल लोक। दाइलें मेसाइल कांकर।
देखल छोड़ी समधिन। मरल घोड़ा घांस खाइ।

— — — — — —

खोरठाक कारक

हिन्दी सबद 'कारक' के सोझा-सोझी कोसगत मानो हवो हे- करवइया/करनिहार/करेवाला (करनेवाला)।

जइसे : कारक शब्द के जोग से सबद बन-हे- हानिकारक, हितकारक, आनंदकारक, सुखकारक आदि।

मकिन बेयाकरनें 'कारक' आर सर्वनाम के वइसन रूप के कहल जाहे जेकर से वाक्य के आरो-आरो सबदेक माँझे नाता-गोता (संबंध) के पता चलो हे। एगो पटतइर देखल जाउक: जोदि कहल जाइ बा लिखल जाइ - शिबू सोरेन सूरज मंडल तीरधनुस झामुमो राँची चुनाव लडेक नामाकंन करवइलथी।

उपरेक सबदगुला से कोन्हों पता नाञ् चलो हे कि, की कहे खोजो हथ आर एकर की माने-मतल हतइ। कीलेकि उपरेक सबदगुलाक मांझे कोन्हों नाता-गोता के पता नाञ् चलो हे।

जोदि उपरेक सबदगुलाके ई तइर लिखल जाइ - "शिबू सोरने सूरजमंडल के तीरधनुस छाप से झामुमोक लागिन राँची में चुनाव लड़के लाइ नामांकन करवइलथी।"

ई तइर लिखला बा कहल से बात साफ-साफ समझ में आइ जाहे कीलेना हिआँ सइंगा सबदेक रूप बदइल गेल हे तकर चलते वाक्य के आरो सबदेक मांझे एगो नाता-गोता (संबंध) बइन गेल हे।

सइंगा आर सर्वनामेक आगु 'प्रत्यय' जोड़ल से रूप बदइल जाहे। जे प्रत्य के जोड़ल से सइंगा और सर्वनाम के रूप बदइल जाहे तकरा कहल जाहे - कारकीय प्रत्यय बा कारकीय परसर्ग बा कारकीय विभक्ति आर सइंगा - सर्वनाम के बदलल रूप टा कहा हे- 'कारक'।

खोरठा कारक

खोरठा भाखा के नाम जइजका बिद्वान ए. के. झा. जी आपन किताब - 'खोरठा सहित सदानिक बोयाकरन' में लिखल हथ कि खोरठाञ् कारक मोटामोटी हिन्दिये रकम चलो हे।

हिन्दी भासाञ् आठ गो कारक पावल जाहे। ई सभेक नाम, विभक्ति आर लछन के संगे-संगे खोरठा कारकेक विभक्ति हेंठे देल जाहे-

कारक	हिन्दी विभक्ति	खोरठा विभक्ति
कर्त्ता	ने - राम ने	0 (शून्य) - राम कहलइ एँ - रामें कहलइ।/बापें

		कहलइ।
कर्म	को - राम को	के - राम के कहलइ। रा - हमरर, तोरा, ओकरा
करण	से - राम से	से - राम से नाञ् हतइ।
संप्रदान	के लिए	ले - राम ने लानल हिअइ। लाइ/लागिन- राम लागिन..। खातिर - राम खातिर .... ।
अपादान	से - पेड़ से ...।	गाछ ले गिरलइ। घर ले बाहइर भेलइ बेटिया।
संबंध	का, के, की	क - सीताक एक - रामेक कर - हामिनकर, तोहनिकर, ओखिनकर र - हमर, तोर, ओकर
अधिकरण	में, पर	एँ - घरें (घर में) वाञ् - घरवाञ् - घर में
सम्बोधन	हे, अरे, अजी	रेकार - एलो, रे, अरे, अगे आदर - एहो, एगो, अगो, ऐ मइआँ, ऐ नुनी, ऐ नुनू, ऐ बुचु।

1. **कर्त्ताकारक**- मोटा-मोटी खोरठाञ् कर्त्ता कारकेक शून्य (0) विभक्ति पावल जाहे। जइसे : कारू कहलइ - कारू ने कहा।

मकिन खोरठाक सिखरी क्षेत्रीय रूपमें 'एँ' विभक्ति लगवेक चलन हइ।

जइसे : बापें कहलइ - पिताजी ने कहा।

खोरठाञ् सर्वनाम के संगे कर्ता कारकें 'एँ' प्रत्यय (विभक्ति) जोड़ल जा हे।

जइसे : हामें कहलिअइ - मैंने कहा।
तोहें कहल्हक - आपने कहा।

कर्ता कारकें 'ए' विभक्तियों पावाइ। खास कइ के जब कर्ता बाठे ले काम के निश्चित रूप से करल के बोध हवो हे।

जइसे : ओहे कहलइ - उसने ही कहा।

2. **कर्मकारक**- खोरठाञ् कर्म कारकेक विभक्ति 'के' आर 'रा' पावल जाहे।

जइसे : हामें चरकू के देखलिअइ। - मैंने चरकू को देखा।

मकिन जोदि कर्म सर्वनाम रहे तो संबंध कारकीय विभक्ति :रा' बा 'रो' विभक्तिओ लागो हे।

जइसे : हामें तोहरा कहलिओ। - मैंने आपको कहा।
ओखिन तोहरो गगइलथु - उन लोगों ने आपको भी बुलाया।

3. **करनकारक**- खोरठाञ् करन कारकेक विभक्ति अनुस्वार ( ) आर 'आञ्' पावल जा रहे।

जइसे : लाठीं पिटलइ। - लाठी से पीटा।
छुरीं काटलइ। - छूरी से काटा

आकारान्त सइंगा सबदें 'यं' या 'ञ' विभक्तियों लागे हे। जइसे-

सोंटाञ् सोंटलइ। - छड़ी से पीटा।
पइनाञ् गादलइ। - डंडे से मारा।
रेकसाञ् अइल्हे - रिक्शा से आए।

हिन्दी भासाक अरसें सहरी छेतरें 'से' विभक्तिओं के परओग चलो हे।

जैइसे : सोंटा से मारलइ। - छड़ी से पीटा।

4. **सम्प्रदान कारक**- सम्प्रदान करके 'ले', 'लाई', 'लागिन' आर 'खातिर' विभक्ति के प्रयोग पावल जा हे।

जे रंग: पढे लाइ दिल्ली गेलइ।
पढेक लागिन दिल्ली गेलइ।
पढ़ेले दिल्ली गेलइ।

'लाइ' विभक्ति बदले कभूँ-कभूँ 'ले' के भी परयोग चल-हे।

खाय ले खुदी नाञ् ढकरे ले चिउरा।

बहुत बेइर सम्प्रदान कारकें उपरेक विभक्ति बदले 'खातिर' उर्दू-फारसी सबद के परजोगों विभक्ति रूपें पावल जाहे।

जइसे : तोहर खातिर अइलिओ।
जमीन खातिर लड़ाई जोरलइ।

कभुँ-कभुँ विभक्तिक रूपें हिन्दीक परभावें 'चलते' सबद के भी परजोग विभक्ति रूपें पावल जाहे।

जइसे : पेटेक चलते की नाञ् करे।

5. **अपादान कारक**- जहाँ दिकगाव आर तुललना रहा हे हुआँ आपदान कारमेक विभक्ृि लाग हे। खोरठाञ् अपादान कारके 'ले' विभक्ति के परजोग पावल जाहे।

जइसे : घार ले बाहइर भेलइ। सीता के गीत सुंदर हइ (तृष्नना)

गाछ ले गिरलइ। ओकर से बेस तो हुआँ हकइ (डकना)
उपर से झांप देलइ।
दामोदर पलामूक दोहर से बहराइल हे।

हिन्दीक प्रभाव से कटि-कटि 'से' के भी परजोग पावल जाहे।

जइसे : गाछ से गिरलइ।

6. **संबंध कारक**- संबंध कारकें 'क', 'कर', 'र' विभक्ति पावल जाहे।

परक धिया - दूसरे की संतान ('क' विभक्ति)
हामनिक् आपन - हमारा अपना ('क' विभक्ति)
अनकर धनें विकरम राजा ('कर' विभक्ति)
गायकर घीव ('कर' विभक्ति)

खोरठाञ् 'रे' विभक्ति परजोग संबंध कारकेक बिसेसता हे। सर्वनाम के संग 'रे' के अनखाय (ढइर) परजोग पावल जाहे।

जइसे : हमर, तोहर, ओकर

हिआं ध्यान दिएक बात हइ कि 'र' विभक्ति 'कर' विभक्तिक लघुरूप हकइ।

जइसे : कर - हमकर > हमर।
तोहकर > तोहर
उनकर > उनखर (क के महाप्रणीकरण)

7. **अधिकरन**- करन कारके तरी सइंगा सबदें अनुस्वारन (ं) आर अकारान्त सबदें 'एं' विभक्ति परजोग पावल जाहे।

जइसे : तोहर बारीं माड़ल हों - आपकी जमीन में बसा हूँ
पानीं छउपलाइल हलइ। - पानी में तैर रहा था।
तोहर पितिया घरें हथु। - आपके चाचा घर में हैं।
बाइहरें बइसल हथु। - बाहर में बैठे हैं।

एक छाडा 'आञ', 'वाञ' 'वे' चिन्हाउक परजोग पावल जाहे।

जे रंग: दामुदरेक कोराञ्। - दामोदर की गोद में।
गढवाञ् गिरल हो। - गड्ढे में गिरा है।
गढ़वें गिरल हो। - गड्ढे में गिरा है।
टेबुलवें धरल हो। टेबुलवाञ् धरल हो। टेबुल में धरा है।
वे आर वाञ् टुइयो एक दूसर के बदले चल हे।

8. **संबोधन**- खोरठाञ् संबोधन कारकेक विभक्ति रूपें रेकार- एलो, रे, अरे, अगे आद- एहो, एगो, अगो, ऐ मइयाँ,

ऐ नुनी, ऐ नुनू, ऐ बुचू।

"एहो / अहो", अरे, अगो, एगो, एगे के परजोग पावल जाहे।

जेरंग : एहो / अहो, कटि सुना। अरे! तोञ् गेलें?
अगो / एगो ! माइ। अगो! अलुला की भाव बेच हे।
अगे! करइली कइसे किलो बेचो हें।
अगे! माइ

अगो आर अगे दुइयो समानार्थी हइ आर स्त्री जाइतेक संबोधन लाइ परजोग करल जाहे। अगो दामुदरेक दखिन और अगे दामुदरेक उत्तर चल हे। दुइयो समानार्थी तो हे संबोधन लाइ। 'अगे' के परजोग करभें तो मारतो। दामुदरेक उत्तरें अगो के सोधन बेटीछउआ के देभें तो हंसतो।

सइंगा शब्देक कारकीय रूप - 'कारक' एगो नाम।

एकर विभिन्न कारकें रूप देखल जाउक-

1.	कर्त्ता - कारू	दामुदर
2.	कर्म - कारू के	दामुदरके
3.	करण - कारू में	दामुदरसे
4.	सम्प्रदान - कारुक लागिन	दामुदर लाइ / लागिन / ले कारू लाइ
5.	अपादान - कारू ले, कारू से	दामुदर ले, दामुदर से
6.	संबंध - कारूक, कारूकर	दामुदरक / दामुदरेक दामुदरकर
7.	अधिकरण - कारूञ् दामुदरें	
8.	संबोधन - अहो! कारू अरे!	

सर्वनाम सबदेक कारकीय रूप

खोरठाञ् सर्वनामेक कारकीय रूप टा सर्वनामेक संबंधकारकीय रूप संगे बन हे। पटतइर देखल जाउक :

1.	कर्त्ता	-	हम / हामें
2.	कर्म	-	हमरा
3.	करण	-	हमर से
4.	सम्प्रदान	-	हमर लाइ, हमर लागिन, हमर ले
5.	अपादान	-	हमर ले - हमर से
6.	संबंध	-	हमर, हमरे, हामनिक
7.	अधिकरण	-	हमरठीन - मुझमें, मुझपर, हमपर

खोरठा कारके बिसेसता

- खोरठा 'सइंगा', सर्वनामेक कारक रूप प्रत्यय का विभक्ति लगवल से बन हे आर ई प्रत्यय बा विभक्तिगुला आपन हे। ई तो जानल बात हे कि कोन्हों भाखाक प्रत्यय भाखाक पहचान बनो हे किलेना कि सब भाखाक आपन-आपन प्रत्यय हवो हे।
- खोरठाञ् कर्म कारक आर संबंध कारक के विभक्ति मोटामोटी समान हे खासकइर के सर्वनामेक रूपें (संबंधकारकीय रूपें 'आ' कार दइ के कर्मकारकीय रूप बनवल जाइ।)
- करण कारक आर अपादान कारकेक विभक्तियों मोटामोटी समान हे।
- करण कारक आर अधिकरण कारक के विभक्तियों समान हे। संदर्भ सेमेदकाल जाहे।
- खोरठाञ् कारकीय विभक्तिक भरमार हे हिन्दी रकम दू चाइरगो नाञ् आर कटि आरो बेस नामें खोजे गेले आरो विभक्ति से भेंटे हवे परे।
- संबोधन कारकेक विभक्ति से खोरठा-छेतरेक संसकिरति के पता चल हे।
- खोरठाक कारकीय विभक्ति आपन हे आर एकर में आपन संसकिरति, आपन माटी के गंध पावा हे। सबले खास बात कि ई आपन हे, केकरो से बोरो करल बा मांगल-चाहल नाञ् जोदियों हिन्दीक प्रभाव में कभूँ-कभूँ हिन्दीक विभक्तियों अगुवाइ जाहे मकुन खोरठा तरी उसे नाञ् आर नाञ् तो नरटीं हिटइक जाहे।

निष्कर्ष

वर्तमान समइयें खोरठा लोकभासा से सिष्ट भासाक सरूप गरहन कइर रहल हे। जइसे कि रूप के बहुलता ठावें-ठावें एके चीजेक अभिव्यक्ति लाइ फरक-फरक शब्द आर पद के बेबहार। भाखाक क्षेत्रीय भिन्नता एखन्हु बरकरार हे सइ लागिन हिन्दीक तुलनाञ् खोरठाक कारकीय विभक्तियों बहुत ऐसी पवाइ। जोदि बेस भाभें खोजल जाइ तो विभक्ति आरो रूप टा से भेंट हवे पारे ई में कोन्हों दू राय नाञ्। एखन दरकार हे खोरठाक विभिन्न छेतरेक छेतरीय रूप के बेस भाभें अध्ययन कइर के आर विभक्ति गुलाक मानक रूप स्थित करेक। जखन तइक खोरठा के एगो मानक रूप स्थित नाञ् करल जितइ तखन तइक सिष्ट भासा रूपें खोरठा विकासेक डहर सीधा नाञ् मेढ़ाइ रहतइ।

— — — — — —

बचन

सबदेक जे रूप से कोन्हो चीज के एक ले बेसी हवेक पता चल हे,, तकरा बचन कहल जाहे।

जइसे : काड़ा – कड़वइन छगरी – छगरिअइन
हम – हामिन तोंञ् – तोहितन

हिआँ 'काड़ा' सबद जकर से एके गो काड़ा के पा चलो हे से खातिर 'काड़ा' सबद भेलइ एक बचन।

मकिन 'कडवइन' सबद जकर से एक ले बेसी काड़ा के पता चलो हइ, तबे ई, 'कडवइन' सबद भेलइ बहुबचन।

मेनेक खोरठाञ् एक बचन ले बहुबचन बनेवेक आपन विधि–विधान बा काइदा–कानून हे।

परतइ (प्रत्यय) जोइड़ के बहुबचन बनवेक विधान

एक बचन से बहुबचन बनवेक लाइ सबदें बहुबचन बोधक परतइ जोड़ल जाहे।

(क) 'अइन' परतइ– ईकारान्त/इकारान्त – मेनेक जे सबदेक सेसें 'इ' (ि) बा 'ई' (ी) रहे वइसन सबदें 'अइन' परतइ जोडल जाहे।

जइसे : छगरी + अइन – छगरिअइन
गाइ + अइन – गइअइन
बेटी + अइन – बेटिअइन

'अइन' पतरइ जोडल परे एक बचन सबदेक बोड़ 'इ', छोट 'इ' में बदइल जाहे।

जइसे : छगरी से छगरिअइन भेलइ।

सइ रकम सबदेक सेस से आगूक बा पइहलेक आछरें 'आकार' हइ तो सेटा परतइ जोडल पर सिराइ जाहे।

जइसे : गाइ–गइअइन काड़ा – कडवइन

(ख) 'वइन परतइ'– अकारान्त, आकारान्त, उकारान्त सबदें 'वइन' परतइ जाइड़ के बहु बचन बनवल जाहे।

जइसे : हर – हरवइन, डहर–डहरवइन – अकारांत सबद
नादा – नदवइन, लादा – लदवइन – आकारांत सबद
गरू – गरूवइन, लेरू – लेरूवइन – उकारांत सबद

परतइ जोड़ल पेछु सबदेक सेसेक आर ओकर पइहलोक आछरेक आकार दिआइ जाहे। जइसे - नादा - नदवइन काड़ा - कड़वइन

(ग) 'इन' परतइ-

(i) पुरूस बाचक सबरनाम सबद के बहुबचन बनलेक लाइ सबदें 'इन' परतइ जोडल जाहे।

जइसे : हाम + इन - हामिन
तोंञ्/तोह + इन - तोहिन

(ii) दूर आर नञ्जकेक संकेत अपरानी बाची सबरनाम के 'इन' परतइ जोइड़के बहुबचन बनवल जाहे।

जइसे : नइजकेक	दूरबाजी
इ / इटा - इटिन	से / सेटा - सेटिन

(घ) 'खिन' परतइ- संकेतबाची सरबनाम परानीबाची दूर आर नइझकेक संकेत दुइओ में 'खिन' परतइ जोडल जाहे।

जइसे : ई / ए (यह) - इखिन / एखिन - नइझकेके संकेत
इ / जे-जेखिन, त / ते - तखिन / तेखिन - अनठेकान संकेत

बहुबचन बोधक सबद जोइद के बहुबचन बनवेक विधान

खोरठाक बंगला परभावित ढांगा छेतरें एक बचन ले बहुबचन बनवेक लाइ बंगलाक 'गुला' सबदेक परजोग एक एकर खोरठा रूप 'गुलि', 'गुलइन' 'गुलिन' सबदेक परजोग खूब चल हे-

जइसे : गुरू गुला, छगरि गुला, नेता, गुला, मास्टर गुला
डांगर गुलिन, उछला गुलिन, इ गुलि, ऊ गुलइन
आरो-आरो।

नोट- गुला सबद के सभे सबदें समान रूपें लगाइ के बहुबचन बनवल जाइ पारे। अलग-अलग सबद खातिर अलग-अलग बहुबचन बोधक परतइ- अइन, वइन, इन खिन, आदि लगवेक दरकार नाञ् परे। इसन भेलें बहु बचन बनवेक नियम सरल / आसान भइ जाहे भासा सरल भेल्हीं बेस। चांडे लोकप्रिय भइ जाहे।

'गुला' सबदेक परजोग से भासाञ् 'सिस्टता' (शिष्टता) आइ जाहे जे आइझेक सिस्ट खोरठा भासा के मांग के जुकुर / अनुकूल हइ। किलेकि आदरबाची परानी के बहुबचन बनवेक लाइ 'वइन', अइन पतरइ कटि बेस नाञ् बुझाइ आर एकर से भासाञ्

असिस्टता (अशिष्टता) आइ जाहइ।

जइसे : मासटरवइन, मासअरनिअइन
नेतवइन, गुरूवइन

अइसन परजोग से भासाञ् असिस्टता आइ गेल हइ। जदि 'गुला / गुलि' सबदेक परजोग करल जाइ तो ई रंग रूप बनतइ–

जइसे : मासटर गुला, मासटरनिगुला, नेता गुला, गुरू / गुरूजी गुला

सेसें कहल जाइ पारे कि खोरठाञ् बहुबचन बनवेक लाइ अपन विधान हे जे आपन मसइ आर परकीरति के हिसाबें उपयुक्त आर अनुकूल हे।

— — — — — —

अव्यय

अव्यय सबद दूगो सबदेक मेल अ + व्यय से बनल हे। 'अ' (उपसर्ग) = नाञ् आर 'व्यय' = खरच। मेनेक अव्यय ओइसन सबद हके जकर खरच नाञ् हवे, जकर मे बिकार नाञ् हवे बा जे बेंड़ाञ् नाञ्। सइ खातिर विद्वान सब बिआकरने पइरभासा उखरवल हथ

अव्यय- ओइसन सबद हके जकर में लिंग, वचन, पुरूस, कारक आदिक ओजहें कोन्हों बदलाव नाञ् हवे हे।

जइसे : सीता करे-करे जाहि/जाहे। - स्त्री. अ.पु. ए. बचन
राम करे-करे जाहे। - पु. अ.पु. ए. बचन
हाम करे-करे जाहि। - प्र.पु. सर्वनाम, ए. बचन
तोञ् करे-करे जाहें। - अ.पु. सर्वनाम, ए. बचन
ओखिन करे-करे जाहथ - अ.पु., सर्वनाम, ब. बचन
ओखिनक काम करे-करे हवे- अ.पु., आदर ब.ब. संबंधकारक

ई पटतइरें लिंग, बचन, पुरूस आदिक ओजहें करे-करे सबदें कोन्हों बदलाव नाञ् भेल हे। सेले करे-करे सबद **अव्यय** सबद हके।

अइसन अव्यय सबद आरो हे।

जइसे : हाम जुनजुनार अइबों।
ऊ बेजाञ् बोलो हे।
तोहिन हिंदे-हिंदे हवा।

ई पटतइरें- जुनजुनार (जरूर), बेजाञ् (खराब), हिन्दे-हुंदे (एने-अनो) सबद **अव्यय** लागे।

अव्यय के भेद

खोरठा भासाञ् अव्यय सबद चाइल किसिम के पावल जाहे।

1. किरिया बिसेसन बाची
2. संबंध
3. जोरनी बाची (संजोगी बा जोइवइया)
4. हइचकवा सबद।

1. किरिया बिसेसन- जे सबद से किरिया के सेरेस्ता (तरीका) के टवान मिलो हे ओइसन सबद के किरिया बिसेसन कहल जाहे।

पटतइर: ओकरा गते-गते गताउलइ।

गाड़ी गड़गड़इले गुड़कल।

हिआँ गते-गते (करे-करे) गड़गड़इले सबद किरिया के बिसेसता बताइ रहल हे। से ले इ किरिया बिसेसन हकइ।

किरिया बिसेसन के किसिम (भेद)

एकर तीन गो भेद पावल जाहे-

(क) ठाँवबाची (स्थान वाची) Aduseb of place

(ख) कालबाची (समय वाची) Aduseb of time

(ग) सेरेस्ता बाची (रीतिवाची) Aduseb of manner

(घ) मातराबाची (परिमाण वाची)

(क) ठाँवबाची (स्थान वाची)- जे सबद से किरिया हवेक ठाँव के पचा चलो हे मेनेक कोन ठाँवे काम भेलइ तकरा जानल जाइ पारे। तइसन सबद ठाँवबाची किरिया बिसेसन कहा हे।

जइसे : हिंदे, हुंदे, कंदे, जंदे, तंदे, धुर, नझिक, आगु-पाछु, कर, दने बाठे, हिआँ-हुवाँ आदि।

चुरामइन हुँवा गेलक।
सोमर हिआ अइलक।
ऊ दने चोर परइलक।
हमर पेछु अइलक।
ओकर आगु बइसल।

(ख) कालवाची (समय वाची)- जे सबद से काम हवेक समय के पता चलो हे ओकरा बाची बिसेसन कहल जाहे।

जइसे : कखन, जखन, तखन, एखन, आइझ, काइल, परसु आरो-आरो
जखन जइबे, तखन पइबे।
कखन जइबे, एखन जउ।
आइझ अइतइ, काइल रहतइ, परसु जइतइ।

(ग) सेरेस्तावाची (रीति वाची)- जे सबद से काम होकर तइरका बा नीति के टवान मिलो हे, ओकरा सेरेस्ता बाची अव्यय कहल जाहे।

जइसे : करेकरे, गतेगते, अच्च्के, सेले आदि
करे-करे पछुअइलक।
गते-गते अगुअइलक।

अच्चके कंदे ले अइलक, सेले हम डेराइ गेली।

ई बाइकें अच्चके आर सेल सेरेस्ताबाची हके जबकि कंदे ठांवबाची बिसेसन हके।

खोरठाञ् 'अनुकरणात्मक-ध्वन्यात्मक' सबदेक परजोग अनखाइ पावल जाहे मकिन अइसन सबद के मातरा आदि कटि बदलाव कइन के कामेक तीब्रता जोर या कम के देखवल जाहे।

जइसे : ठपर-ठपर बइरस हइ।
टपर-टपर बइरस हइ।
टिपिर-टिपिर बइरस हइ।
टुपुर-टुपुर बइरस हइ।

हिआँ उपरेक अव्यय सबद पानीक ठोप (बूंद) के आकार आर Frequency के बताव हइ।

(घ) मातराबाची (परिमाण वाची):

जे सबद से किरिया के मातरा बा Magnitude के पता चलो हे, ओकरा मातराबाची विसेसन कहल जा हे।

जइसे : एतेक, ओतेक, जतेक, ततेक, एतने, ओतने आदि।
जतेक करबे तते पइबे।
एतने करले बनतो नाञ्।

संबंधी बाची अव्यय (नार-जोर अव्यय)

जे अव्यय सबद सइंगा बा सर्वनाम के पेछु (बाद) आइ के बाइक के दोसर सबद से सइंगा के नाता-गोता देखव हे ओकरा संबंध बा नार-जोर अव्यय कहल जाहे।

जइसे : राम के बेगइर श्याम के नाम नाञ् चलतइ।
हामर बेगइर ओकर काम नाञ् भेतइ।
ऊ ओकर गा व तइक गेलइ।
पुजाक आगुवे गेलइ।

मोटामोटी सइंगा बा सर्वनाम संगे लागकल कारकेक विभिक्तिक पेछु अवइआ सबद नार-जोर (संबंधवाची) अव्यय मानल जाहे। मकिन नकारात्मक बाइकें मेनेक जे बाइक से ई फुरछा हइ कि जोदि अइसन नाञ् हतलइ तो अइसन नाञ् भेतलइ। तो अइसन बाइकें अव्यय सबद सइंगा बा सर्वनाम सबद के आगुओ (पहिले) आइ जा हइ।

जइसे : बेगइर हामर ओकर काम नाञ् भेतइ।
बेगइर कचियाक काम नाञ् चलतइ।

नारजोर बाची अव्यय के कालबाची, ठांवबाची, दिसाबाची बा दिक्‌बाची भेद पावल जाहे।

(क) कालबाची-

ओकर आगु तोहें अइले।

रामेक पेछु श्याम गेलइ।

हिआँ आगु आर पेछु कालबाची अव्यय सबद हके।

(ख) ठाँववाची- जे सबद से ठाँव बा स्थान के बोध हवो हे, ओकरा ठाँवबाची अव्यय कहल जाहे-

जइसे : हेंठ, उपर, भीतर, बाइहर, मुँहा-मुँही, पीठा-पीठी आरो-आरो।

ओकर घर ले हेंठे हमर घर हे।

तोहर घारेक उपरे ऊ रहो हो।

घारेक भीतर रहले कइसे काम चलतो।

दुइयो भाइ मुँहामुँही भेला।

(ग) दिगवाची बा दिसाबाची- जे अव्यय सबद से बइकें दिस के पता चलो हे ओकरा दिगबाची बा दिसाबाची अव्यय कहल जाहे।

जइसे : हमर दने ले बोलता।

ओकर बाठ ले आइल हथ।

घरेक आसे-पासे बगइचा हइ।

जोरनी बाची अव्यय- अइसन अव्यय सबद बा पद जे एक बाइक के दोसर बाइक बा एक पद के दोसर पद से जोड़ो हे तकरा जोरनी अव्यय कहल जाहे।

जइसे : हामर आर तोर, एकर बा ओकर

हाम कहलिये जा इ बात बेस नाञ्।

हामरा दे चाह ओकरा देहिं, बात बराबर।

हाम ओकर बिसुवास नाञ् कहरी कीलेकि ब बेस लोक नाञ्।

उपरेक बाइकें आर, बा, जे, चाहे, कीलेकि जोरनी अव्यय हकइ।

हइचकवा अव्यय- जे सबद से सुख, दुख, कुरचइनी आदि के भाव फुरछा हइ आर जेकर मोटा-मोटी बाइक बा कोनो पद से संबंध नाञ् रहो हे वइसन अव्यय के हइचकवा अव्यय कहल जाहे।

जइसे : ओह !, वाह !, वाह-वाह!, हाँ-हाँ! ठीक!

बेस ! आदि।

— — — — — —

खोरठा भासा आर लिपि

लिपि

भासा के आधार हे ध्वनि बा साड़ा। ध्वनि बोलल जाहे आर तबे सुनल जाहे। ध्वनि तबे सुनल जाइ पारे जब उ बोलल जाइ। आर एकरा हुँवे तक सुनल जाय पारे, जहाँ तक आवाज बा ध्वनि बा साड़ा जाइ। माने भासा के स्थान आर दूरी के नजइरें एगो सीमा हे। भासा के समइ आर दूरी बा स्थान के बंधन से मुक्त करे लाइ भेलक लिपिक खोज बा आविस्कार।

भाषा आर लिपि

भासा आपन मूल रूपें ध्वनि उपरें ओठंगल टिकल हे। आर ध्वनिक उसरान बोली पर निरभर हे। मकिन लिपि गुला के बोलल नाञ् चाहे बिचुकन रेघा बा डांड़ी बा आछरें उखरावल (Scribe) जाहे। माने भासा आ लिपि कर मांझे फरक सिरिफ माधिअम के हे। बात साफ हइ कि आगू भासा बनलक आर तकर ढेइर पिछू उ भासाक ध्वनिगुलाक उखरावे ले लिपि बनलक। इ बात से एहटाव फरीच भइ जाहे कि पइत भासाक आपन लिपि हतक बा हवेक चाही। किलेकि पइत भासाक आपन ध्वनि बा साड़ा हवो हे। अइसे तो मूल ध्वनि गुला गोटे संसारेक भासाञ् मोटा-मोटी एके रकम रहो हे मकिन पइत भासाञ् दू-चाइर गो आपन खास ध्वनि पावा हे, जे दोसर भासाञ् नाञ् पावा हे। पइत भासा के सब ध्वनिगुला के उखरावे ले आपन-आपन ध्वनि-चिन्ह (Vocal Symbol) बा लिपि हवेक चाही। मेनेक पइत भासा लाइ आपन लिपि हवेक चाही। मनेक आपन भासाक आपन लिपि भेलहीं भासा के सब ध्वनि गुलाक प्रतीक प्रतिनिधित्व (Symbolic Representation) हवे पारे। मकिन लिपि बनवेक टा खेइल नाञ्। ईटा एगो कठि काम । दोसर बात, गोटे दुनिआइएक भासाक मूल ध्वनि गुला तो मोटा-मोटी एके हवे करें। तब भासा भासाक माझें महज गनतीक कइगो ध्वनिक फरक हवो हे। बाकी ध्वनि स्तर पर गोटे दुनिआइएक भासा एक। एहे सोइच के दुनिआइएक पइत भासा लागिन आपन लिपि नाञ् पावा हे। आर एके लिपि काइ-काइ जो भासा के उखरावल बा लिखल जाहे। जइसे कि रोमन लिपि काइ-काइ जो भासा के उखरावल बा लिखल जाहे। जइसे कि रोमन लिपि के अंगरेजी समेत यूरोप के मोटा-मोटी सब भासा आपन लिपिक रूपें आपनवल हथ। सइ रकम नागरी लिपि के हिन्दी समेत भारतेक ढइर आधुनिक भासा गुला अपनावल हथ। झारखंडेक आनाइर्ज भासा संताली

एखन नागरी, बंगला, रोमन लिपि उखरावल जाहे। जबकि कुछ बछर आगू पंडित रघुनाथ मुर्मू 'ओलचिकी' नामेक एगो लिपिक आविस्कार संताली भाखाक लागिन करथ हथ। सइ रकम 'हो' भासाक एखन नागरी लिय में लिखल जाहे। किन्तु एहउ भासाक लागिन 'वाराद्रचिति' नामेक एगो लिपिक खोज करल हथ। सइए रकम झारखंडेक द्रविड़ भासा पइरवारेक प्रमुख भासा कुडुख लाइ डॉ. राजेन्द्र उराँव 'तोलोंगसिकि' नामेक एगो लिपिक खोज कइर लेब हथ, जोदियो एखन कुडुख नागरी लिपिं ही लिखल जाहे। झारखंडेक भासा 'कुरमाली' बंगला आर नागरी दुइओ लिपि समान भावें लिखल जाहे एखन ऊ सभेक मांझे एकमत एखन तक नाञ् भेल हें कि केकरा लेल जाए आर केकरा छोड़ल जाइ। खोरठा भाखाञ् ई दिसाँञ् प्रयास चइल रहल हे। तेलिडीह चास के डॉ. नागेश्वर महतो खोरठा लिपि, खरोष्ठीक आधार लइके बनवल हथ। किन्तु ई लिपिं बड़ी अबेबसथा हइ। मेनेक झारखंडे नागपुरिया आर पंचपरगनिया छोइड़ बाकी सभे भासा आपन-आपन लिपिक टावानें प्रयास नारी राखल हथ।

खोरठा ध्वनि आर तकर वर्तमान लिपि

एखन खोरठा लिखेक लाइ देवनागरी लिपि से कटि समझउता आर सर्त के दाइएँ अपनवल गेल हे। जोदिओ खोरठा भाखाक जन्म टाइ खरोष्ठी लिपि प्राकृत संस्कृत भाखाक लिखेक चलते भेल हे। किन्तु आइझ खरोष्ठी अस्तित्व में नाञ्। सइएक लागिन खोरठाक उखरवेक लाइ 'नागरी' लिपि के परजोग करल जाहे। आब इटा हिआँ देखेक दरकार हइ कि नागरी लिपिं खोरठाक ध्वनि गुलाक प्रतिनिधित्व (Symbolic Representation) कते भइ रहल हइ।

खोरठाक सामान्य ध्वनि आर नागरी लिपि

खोरठा ध्वनि प्रतिनिधित्व नागरी लिपि को रंग मइ रहल हइ सेटा के हेंठे देखल जाउक–

(क) खोरठा भाखाञ् मुर्द्धण्य 'ण' मुर्द्धण्य 'ष' और तालव्य 'श' ध्वनि नाञ् सइ खातिर नागरी के इ ध्वनि-चिन्ह गुलाक परजोग गैर खोरठा सबदेक लिखे में नाञ् करल जाहे। एकर ओइजीं मुर्द्धण्य 'ण' के बदल दन्त्य 'न' लिखल जाहे।

जइसे :	वाण – बान।	कर्ण – करन / कर्न
	कारण – कारन।	मरण – मरन आरो – ओरा

मुर्द्धण्य 'ष' के बदल 'स' आर 'ख' के परजोग करल जाहे।

जइसे :	वर्षा – बरखा।	मनुषय – मनुख – मनुस
	हर्षा – हरखा।	उषा – उसा

पुरूष - पुरूख। घनुष - धनुखआरो - आरो

तालव्य 'श' के बदल 'स' परजोग चल हे-

जइसे : कोशिश - कोसिस । आकाश - आकास
कोश - कोस। निराशा - निरास
केश - केस। आशा - आस आसे।

(ख) खोरठाञ् संयुक्त ध्वनि संयुक्तछर नाञ हे सइ लागिन नागरी लिपि के ऋ के बदल 'रि' 'क्ष' के बदल 'छ'

जइसे : ऋषि - रिखि। परीक्षा - परीछा
ऋतु - रिझु। दक्षिणा - इदछना
ऋण - रिन। दक्ष - दइच्छ, दछ

(ग) साइ रकम 'श्च' 'च्छ' केहु परजोग नाञ् हवे ओकर ओइजी सोझे 'श्च' के बदल 'छ' आर 'च्छ' के बदल 'छ' लेल जाहे।

जाइसे : पश्चिम - पछिम इच्छा - इच्छा
पश्चात् - पाछे

(घ) व्यंजन ध्वनि संगे लगवल आधा (्र, ृ) के परजोग नाञ् चले की ले कि ई ध्वनि हिआँ हइउ नाञ् सेहे लागिन एकर ओइजीं सोझा-साझी र के चलन हइ।

जइसे : प्रयोग - परजोग पृथक - पिरथक
धृतराष्ट्र - पाछे

(ङ) खोरठाञ् अंतस्थ ध्वनि 'य' आर 'व' के परजोग हिन्दी आदि गइर खोरठा सबदेक लिखेक बेरा सबेदक सुरूआते आर कभू-कभू सबदेक आखरिओं में नाञ् हवे आर ओकर ओइजीं क्रमशः ज, अ, ब, वर्ण में लिखल जाहे।

जइसे : यदि - जदि याद - इआद
फरियाद - फरिआद सियार - सिआर
पिया - पिआ दीया - दीआ
वन - बोन वनस्पति - बनस्पति
हवा - हबा पौवा - पउआ

(च) एकर छाड़ा खोरठाञ् 'औ', 'ऐ', (संयुक्त स्वर) आर 'इ', 'ऊ' दीर्घ ध्वनि गुलाक परजोग नाञ् हवे। दीर्घ स्वर 'ई' आर 'ऊ', एकर परजोग कोनो चीज के उपरें जोर दिए बा निर्देशित करे में हव-हे।। एकर परजोग मोटा-मोटी सर्वनाम खातिर हवो हे। (Demontration pronoun)

जइसे : ई चीज के देख। ऊ देख हइ।

संयुक्त स्वर 'औ', 'ऐ', आपन मूल रूपें - आ + उ = औ आर अ + इ = ऐ

रकम उसर-हे आर परजोग हव-हे।

जइसे :	औरत – अउरत।	ऐनक – अइनक
	औकात – अउकात।	ऐसा – अइसा
	औजार – अउजार।	पैसा – पइसा

(छ) नागरी लिपिक विसर्ग (:) चिन्हाव के खोरठाञ् परजोग नाञ् जा-हे कीले कि खोरठाञ् ई ध्वनि नाञ हे।

जइसे : दुःख – दुख

खोरठा आर मध्य स्वरागम

खोरठा समेत सदानिक आरो भासाञ सबदेक मांझे स्वर आगम के प्रवृत्ति आम हइ। सेटा के भासाविज्ञानी सब मध्यस्वरागम कहल हथिन।

जेरंज :	दाल – दाइल – दाएल	नजर – नजइर।
	चाल – चाइल	पानी – पाइन।
	कल – काइल	जान – जाइन।
	भालू – भाउल	मधु – मउध।
	साधु – साउध,	चार – चाउर

ई मध्यस्वरागम टा सदानी भाखा, गुलाक बिसेसता हइ। एखन तइक विद्वान सब ई बात के पता नाञ् करे पारल हथ किन्तु एकर गइर-मोआइर के पता टवान खरोष्ठी लिपिं पवा हे। किन्तु ई ठावें, इर्अ लेताइरें विस्तार से जाइका टा कटि मुसकिल आर एक प्रसंगो नाञ्।

खोरठाक आपन विशेष ध्वनि आर नागरी लिपि

खोरठा भाखाक आपन खास ध्वनि गुलाक उखरवेक लाइ नागरी कोन्हों ध्वनि-चिन्हा नाञ्। तबे हिआँ ओइसन मूल खोरठा सबद के नागरीं लिपिं लिखे मे बड़ी कच-कच बुझा हे। जोदि लिखिओ देल जाइतो आञा प्रतिनिधित्व (Proper Representation) हवे नाञ्।

खोरठाक खास ध्वनि गुला हेंठे उखरवल जाहे।

(क) मूल क्रियाक अंत में खास कइर के सामाइन बरतमान आर भूत कालें 'अ' ध्वनि सुनाइ पर हे। ई ध्वनि टाक उखरवेक लाइ नागरी लिपिं कोन्हों ध्वनि चिन्ह नाञ्।

जइसे : कर, चल, सुत, खा, जा, आरो आरो।

ई क्रिया गुला के जोदि सामाइन बरतमान कालें और भूत कालें बोलल जाइ तो ऊ ध्वनि के सुनल जाइ पारे।

जइसे :	बरतमान काल	भूतकाल
	कर हइ।	कर हलइ।
	चल हइ।	चल हलइ।
	पढ़ हइ।	पढ हलइ।

उपरेक मूल क्रिया के नागरी लिपि लिखले 'अ' ध्वनि के पता नाञ् चल हे। किन्तु जोदि केउ खोरठा भासी ऊ क्रियारूप के पढ़तइ तो आपन्हीं 'अ' ध्वनि का बोलइ जइतइ किन्तु जोदि केउ गइ खोरठा भाखी पढतइ तो मूल क्रियांञ् लुकाइल ध्वनि टा बोलबे नाञ करतइ। और हँसिक जुकुर स्थित भइ जइतइ। ई मरम के खोरठा समेत सदानी के आरो भाखा-भाखी नगपुरिया, कुरमाली, पंचपरगनिया सभे बुझ हथ। की ले कि ई ध्वनि टा ओखनिओठन एके रकम पवा हे।

एखन ई समसिआ ले छुटेक लागिन बिद्वान गुला कटि कोसि करल हथ कि ऊ लुकाइल ध्वनि लाई कोन्हो चिन्हा उखरलवल जाइ। कोसिस कटि देखल जाइ-

एखन खोरठा भाखाञ् लिखवइया कुछ बिद्वान गुला उपरेक 'अ' ध्वनि के बोधन लाइ 'संस्कृतेक' अवग्रह (ऽ) चिन्हा के परजोग कर-हाथ।

मकिन ई अवग्रह (ऽ) टा दू मातराक बोध कराव हे जबकि खोरठाक लुकाइल 'अ' ध्वनि टा एक मात्रा ले बेसी आर दू मात्रा ले कम हइ, सइ खतिर अवग्रह चिहन टा के परजोग उचित नाञ्। कुछ बिद्वान खास कइर के खोरठाक बिद्वान ए. के. झा जी मूल क्रिया आर सहायक क्रिया के माझे एगो हाइफन दइ दे हथ उ लुकाइल ध्वनि के बोधन लाइ।

जइसे : कर-हइ। चल-हइ। उखराव-हइ।

नगपुरिया भासाक बिद्वान डॉ. बी.पी. केशरीजी ई लुकाइल 'अ' ध्वनिक देखवेक लाइ मूल क्रियाक उपरें एगो 'अपोस्ट्रोपी' बा 'इनवर्टेट कॉमा' लगवेक मतें हथ।

जइसे : चल 'हइ । सुत' हइ। पढ़' हइ। एहे रकमें आरो।

स्नातकोत्तर जनजातीय भाखा के प्रोफेसर, डॉ. गिरिधारी गंझू, डॉ. बी. एन. ओहदार समेअ आरो आरो लोकेक मत हइन कि ई लुकाइल ध्वनि के कोन्हों संकेतें देखवेक दरकार नाञ्। जे खोरठा भाखी हतइ ऊ पइढ़ लेतइ। जे खोरठा नाञ् जाने से खोरठा लीखे जाने। ईटाञ् मगज मारेक दरकार नाञ्।

खोरठा आर बंगला लिपि

बंगला भासा और लिपि खोरठाक पार्श्वर्ती पास पड़ोसेक भासा। सइए लागिन खोरठाक लिखेक लाइ बंगला लिपि कते उपयुक्त हे सेटा जानेक दरकार। बंगला लिपिं अकारात्मक उच्चारण हवे नाञ् सइलागिन अकारात्मक सबदेक उच्चारण लाऊ सब के

बेजाउ मेहनइत करे पर हइ।

जइसे : बंगलाञ् लंदन के लॅन्दॅन बा लॅन्डॅन अंगरेज के इंगरेज,
जल के जोल अमेरिका - आमेरिका
पटना - पाटना बस - बास
घर - घर।

एहे रकमें बंगलाञ् 'व' ध्वनि नाञ् आर 'व' के ओइजीं कखनु तो 'ब' भइ जाहे कहीं लुकाइ जाहे।

दोसर बात बंगलाञ् लिखेक आर उसरेक (उच्चारण) दुइओ टाञ् भेद भइ जाहे अंगरेजी रकम।

जइसे : लिखता 'आत्मा', पढ़ता 'आत्ता'
स्मरण के संरंण, स्वर के शॅर आरो-आरो।

बंगला लिपिक उसरेक (उच्चारण) आर उसरेक मइधें कोन्हों समन्वय नाञ्। सइलागिन खोरठाक लाइ बंगला लिपि उपयुक्त नाञ्।

खोरठा आर रोमन लिपि

रोमन लिपि वार्णिक लिपि हके आर नागरी लिपि आक्षरिक। आक्षरिक लिपि कइगो वर्ण (ध्वनि चिन्ह) के मिलाइ के एगो अक्षर बनवल जाहे।

जइसे : हिन्दी 'क' अक्षर + अ के मेल से बनल हे। जबकि रोमन के ध्वनि हिच्ह टा एकला 'क' k के प्रतिधित्वि कर हे। रोमन लिपिं पइत ध्वनि इकाई लाइ अजब चिन्हा के परजोग करल जाहे। भासा विगिआनेक नइजरें ई एगो आदर्श लिपिं Ideal Script हके। किन्तु लिपिं ठउर कमी हे खोरठाक ध्वनि के उखराइक लाइ।

सबसे आगू ट, ठ, ड, ढ, द ध्वनि खोरठाक आपन विसेसता हइ किन्तु ई ध्वनि में उखरावे ले रोमन लिपिं कोन्हों ध्वनि चिन्ह नाञ् जोदि हइ तो ओकर उच्चारण इरंग हवे:

d - द, t - त,। रोमन लिपि 'ढ' ध्वनिके लिखेन लाइ rh लिखे पड़ हइ। जइसे Ramgarh - रामगढ़। सेउ सबदेक आखिरीं 'ढ' रहे तब 'rh' से काम चलचल जाइ पारे किन्तु जोदि ढ, ड, ट, ठ शब्देक सुरूवे रहे तो रोमन लिपि लिखइबे नाञ् करे। एकर छोडाइ 'i' ध्वनि कहीं 'अ' के काम करे तो कहीं 'इ' के, कहीं 'य' के काम करे तो कहीं 'व' के। रोमन लिपिं 'च', 'थ' आर 'द' ध्वनिक पाइ जाइ जो ध्वनि मिलाइ के बनवल जाहे जइसे च - ch, थ - th, श - sh।

मेनेक रोमन लिपिं खोरठाक सब ध्वनि लाइ भिन-भिनु ध्वनि-चिन्ह नाञ् जबकि 'आदर्श लेखन' लाइ ईटा जरूरी हइ। सइ लागिन रोमन लिपि के खोरठा लेखन लाइ

नाञ् अपनावल जाइ पारे।

निष्कर्ष

एक बइर सुभाष चन्द्र बोस हिन्दीक लेखन लाइ रोमन लिपिक अपनावेक सिफारिस करल हलथ। सुने में ईटा अजबे बुझा हइ आर मने पतिआर नाञ् हवे जे सुभास बोस जइसन राष्ट्रभक्त लोक हिन्दीक लेखन लाइ विदेसी लिपि-रोमन लिपि के सिफारिस करलथीं। किन्तु नेताजीक ई बातें उनखर 'दूर दृष्टि' के देखेक दरकार हइ। उनखर दृष्टि हलइन कि भारतेक सब ले बड़ जनसंख्यापक भासा हिन्दी, जे भारतेक प्रतिनिधित्व करे पारे, ई भासा के विश्व-मंच तइक जाइक चाही आर ईटा नागरी से हवे नाञ् पारतक, हवे पारे तो रोमन लिपिं। की ले कि रोमन मोटा-मोटी अंतराष्ट्रीय लिपि अनेक दिशाञ् बाढ़ल जाइ रहल हे तो हिआं नेताजीक दूर दृष्टि के बुझेक दरकार हइ। सह रकम आइझ 'वैश्वीकरण' (Globalization) के दउर हे। जबकि गोटे दुनिआइ एगो गांव बइन रहल हे तब भिनु-भिनु भासा लाइ भिनु-भिनु लिपिक खोजाइर कटि अजवाइर काम बुझा हे जदिओ भासाक सटीक लेखन Exact Scribing लाइ पइत भासाक आपन लिपिं हवेक चाही। किन्तु आइझेक जुगें जखन समय आय दूरी मेटाइ रहल हे, गोटे दुनिआइ एगो गांव बइन रहल हे से ठांवे आपन-आपन ढोल बजवेक टा ठीक नाञ्। एखन खोरठाक लेखन लाइ नागरी लिपिक परजोग, नागरीक कुछ ध्वनिक प्रतिनिधि माइन के, कटि समझउता कइर के परजोगे भइ रहल हे तो इटा छोड़ेक दरकार नाञ्। कीलेकि दुनिआइ समन्वय् आर समझउता के पइरनाम हके (Society is Corssed by Conflict and Contract) खाइस कइर के गोटा भासा टाइ यादृच्छिक (Arbitary) के पइरनाम के लिखन लाइ मोटा-मोटी उपयुक्त हे। एखन जोदि खोरठाक लाइ भिनु लिपि के परजोग करल जाइ तो ई भासा हिगराइ (Isolate) भइ जइतक आर एकर विकास बंद भइ जइतइ कीलेकि खोरठाभासी छोइड़ दोसर केउ खोरठा जानेक, सीखेक चेष्टाव नाञ् करतक कीलेकि खोरठा जानेक लाइ एगो लिपि सीखेक आगू दरकार हतइ। आर ई. भागा-भागीक जुगें आदमी ठिन समइ नाञ्। खोरठा भासा एखन विकासेक डहरें सोझाइल हे आर अगर एखन एकरा विकासेक डहरें गड़गड़ाइ के चलेक हे तो ई समइझ लिपिके ब्रेक दिएक टा उचित रहतइ।

वाइक

संस्कृत भाषा के आचाइर्ज पतंजलि (महाभाष्य 110 ई. पू.), आचाइर्ज भरत (वाक्य पदीय) आर अंग्रेजी के आचाइर्ज थ्रेक्स (100 ई. पू.) तीनों आचाइर्ज एकमतें वाइक, सबद के वइसन सबसे छो, पू आर सार्थक बेबसथ के मानल हथ जकर से पूरा-पूरी माने फरीच भइ जाई। ईसभेक मतें पइत भासांञ् बाइक बनवेक आर्पन बिधान आर बेवस्था हवो हे आर बाइक के आपन किसेसता।

सउ रकमे सदानी भासा खोरठाञ् वाइक बनवेक आपन बेवस्था हे जे एकर बिसेसताव हके। जेकरा हेंठे रकम देखल जाइ पारे

1. छोट आकार- वाइक छोट-छोट आर सुंदर हवो हे। जइसे- ई बेजाञ् बात। ई बेसनाञ्।

2. सहायक क्रिया बिहिन- वाइकें सहायक क्रिसाक परजोग मोटा-मोटी कम हव-हे। जकर से आसाञ् एगोगति, प्रवाह आर कवितात्मकता आइ जाहे। जइसे- हामें एरवन माई बनलों। मकिन हाम जे कुंवारी। कहा मुंह तुकवों। हमर खातिर गदा-दादाव नाञ जहाँ गाइ मोरों। (उदबासथ कर्न- पानुरी)

ई वाइकें हइ, हे, हल, हलइ आदि सहायक क्रियाक परजोज एकदम नाञ भेल हे।

3. क्रिया केन्द्रित वाइक- खोरठा वाइकेक बिसोसतर हइ कि ई क्रिया केन्द्रित स्वइ। मेनेक एगो क्रियासम अहइ देल जाइतो ई जमे बात फरीय अहजाहे विकर्ता केहके आ स्कटलिंग, वचन, पुसस की हे। कर्म के लिंग वकत पुरूस, क्रिया कोन काकें का समइके मेस दहइ समे के जानकारी एक संगे मिल जाहे। जइसे एगो क्रिया रूप देखल जाइ।

करतकइन

हिऑ- **कर्ता** - एकवचन, तृतीय पुरूस, अनादरनीय हइ
कर्म - बहुवचन, तृतीय पुरूष, आदरनीय हइ
काल - भूत काल के हेतु हेतु मद्‌भूत भेद हकइ।
अर्थ - जदि ऊसब अइतलथि तो ऊ ओखकिक सेवा करतबइन। मेनेक ऊ सभिन नाञ् अइलथि सइसे काम नाञ् भेलइ।

4. कर्म प्रधान वाइक- खोरठाक क्रिया रूप कर्म के आधारे बने हे कर्ताक आधारे नाञ्। जबकि हिनदी भासाञ कला के आधारों क्रिया बने हे। मेनेक वाइकें कर्ता

(करवइआ) के महत नाञ् महत हइ कर्म (जकर काम भह रहल हइ) के। अइसने बेवस्था संताली भासाञ पावल जाहे। ग्रियर्सन एकरा सदानी भरसाञ् संताली के प्रभाव मानल हथि।

5. लिंग बोध नाञ हवे- वाइकें लिंग बोध नाञ् हवे। मकिन कखनो-कखनों प्रथम पुरूस सदगे जब अपैनउतिक नाता बेसि देखवल जाहे तब लिंग क्रियाञ् देखाई परो हे। जइसे-

हमर बेटि गेलिक (प्रथम पुरूस कर्म हमर)

अकिन तीय आर तृतीय पुरूसे ई बेवसथा नाञ। जे रकम

तोर बेटि गेलउ (कर्म द्वितीय पुरुष-तोर)

ओकर बेटि गेलइ (कर्म तृतीय पुरुष-ओकर)

6. सकारात्मक वाइच (Voice) नाञ- सकारात्मक वाइच (Voice) के वाइक मोटा -मोटी समाइन परजोगें नाञ् चले। जइसे-

हमर से खाइल जइतइ। हमर से किताब पढल जइतइ।

अइसन वाइक नहिंएक गुकुर हवइ।

मकिन नकारात्मक वाइक परजोगे खूब चलो हइ।

जइसे- हमर से किताब पढल नाञ् जइतो।

हमर से खाइल नाञ् जइतो।

7. बहुवचन कर्म के एक वचन क्रिया बनेक- खोरठाञ् अप्राणीवाची बहुवचन कर्म के एक वचन क्रिया वन-हे। जइसे कठवउन गइल गेलइ (अप्राणी वाची कर्म)

मकिन हिन्दीं प्राणीवाची अप्राणी वाची दुइओ खातिर बहुवचन क्रिया रूप बनो हे।

जइसे- लकड़ियाँ सड़ गयीं (अप्राणीवाची कर्म)

लड़किया चली गयीं (प्राणीवाची कर्म)

8. अनुतान से माने बदइतल जाहे- अन्नतान से दाइक के माने बिना सबदे फरबदल करल बदइल जाहे।

जइसे- चरकी करतइ - चरकी करतइ (समाइन कर्म)

चरकी करतइऽऽऽ? माने चरकी नाञ् करतइ।

9. सबदेक क्रम बदलने अर्थनाञ् बदले- अंगरेजी रकम सबदेक क्रम बदलाल से खोरठा कर्म नाञ् बदले।

जइसे- राम आम खा-हे।

राम खा-हे आम

आम खा-हे राम

सबके एक माने हवइ। सइ रकम हिन्दीओ में वृवइ। मकिन अंगरेजी सबदक्रम

बदलल से माने बदइल जाहे।

जइसे- राम इट्स मैंगो - राम आम खा-हे

मैंगा इट्स राम - आम राम के खा-हे।

निष्कर्ष : ई तइर हगनि देख-हि कि खोरठाक वाइक उसमे 'शर्त' के पूरा करो हे जे कोन्हो शिस भासाक वाइक बनेक लाइ जरूरी हइ। मेनके एकरा एगो वाइक कइह देले खोरठाक गोटा भासिक परंपरा, समाजेक बनावट, पुरूस-बोध, काल, वचन, लिंग आर आदर-अनादर-बोध आदि सभे के पता चलो हइ।

— — — — — —

खोरठा भासाक बिसेसता

खोरठा सदानी भासा गोछेक सबसे सकत, सुसंतर आर संइतल भासा हके। जे झारखडेक 31 हजार वर्गमील जइसन ढांगा आर ओसार छेतरें पसरल हे। मेनेक झारखंडेक 24 जिला मइधें 16 जिलाक सवा डेढ़ करोड़ ले बेसी लोकेक लोकप्रिय भासा हके खोरठा।

खोरठाक आपन भासिक बिसेसता हे, जे हेंठे रकम देखण जाइ पारे-

साड़ाक (ध्वनिक) बिसेसता-

1. खोरठाक ङ, ण, श, ष, क्ष, त्र, श, ऋ, लृ छोइउके नागरि लिपिक समे ध्वनि चिन्ह (आखार) के परजोग हवो हे।

- श, ष के बदल दंत्य स के प्रयोग हवो हे 10 मकिन 'ष' के उसरान 'ख' टकमो हवो हे। जइसे- धनुष - घनुख, पुरूष - पुरूख-पुरुस

2. खोरठाञ् संजोगी साड़ा नाञ पावल जाहे सइ खातिर संसकिरित हिन्दी आदिक अइसनं सबदेक उसरान-उखरान हेंठे देल रकम हवो-हे।

क्ष - परीक्षा - परिछा, परिखा, दक्षिण- दखिण
त्र - पवित्र - पबितर, क्षेत्र - छेतर
ज्ञ - ज्ञान - गिआन, आज्ञा - आगिआं
ऋ - ऋषि- रिषि-रिखि

3. संताली भासा रकम 'ञ्' के उखरान कोराञ्, डेराञ्, आआ रकम हवो हे।

3. समाइन बरतमान कालें मूल किरिआ आर सहायक किरिआक मांझे विशिष्ट ध्वनि 'अ' पावल जा हे जकर उखरान दुओ किरिआक मांझे हाइफेन (-) दइके लिखल जाहे। जे रकम- चल-हे, कर-हे, सुत-हे, गाव-हे आरो-आरो।

4. मइध स्वरागम- सबरेक मांझे 'इ' साड़ा के ह्रस्वर रूप आपन्ही उससे हे। जइसे- चल-चइल, कर-कइर, डर-डइर घर-घइर, दाल-दाइल

ई खोरठा समेत सताली भासा के बिसेसता हके। अइसन ह्रस्व ध्वनि पालि भासाञ पावल जा हे।

5. खोरठांय कइगो विशिष्ट ध्वनि पावल जाहे जे अनुनासिक साड़ा आर अंवस्थ साड़ा ल आर र के महाप्राणिकृत रूप हके।

जइसे- न्ह, म्ह, ल्ह, र्ह - nh, mh, lh, rh.
न्ह - नान्ह, आपन्ही,
म्ह - हाम्ही
ल्ह - करल्हे, खइल्हे

र्‌ह - खोर्‌हा, बेर्‌हा

6. संजोगी स्वर साड़ा खोरठाञ् नाञ् मानल जाइ सइ खातिर हिन्दी, संस्कृत आदिक वइसन सबदेक उसरान-उखरान हेंठे रकम हवो हे।

जइसे- और - औरत-अउरत, फौज- फउज, दौड़ - दउड़
ऐ - ऐसा - अइसा, कैसा - कइसा, पैसा - पइसा

7. य अंतस्थ साड़ा के उसरान - उखरान हेंठे रकम हवो दे-

सबदेक सुरू 'ज' आर इअ रकम

जइसे - यदि-जदि, याद - इआद, यार- इआर।

सबदेक माझे आर सेसें इअ - रकम।

जइसे - सियार - सिआर, प्यार - पिआर
दिया - दिआ, पिया - पिआ

8. पाइर्खिक साड़ा स् आर र् जखने-तखने एक दोसर के अदल-बदल उसरान हवो दे। जइसन - हल-हर, फल- फर, मदिर - मदिल

9. साड़ा-पइरवरतन (ध्वनि परिवर्तन)-

(क) खोरठाञ् महाप्राणीकरण आर धोषीकरण दुआ। गजगजाइ के पावल जाहे।

महाप्राणीकरण - केंकड़ा - खंखड़ा, पेड़ - फेड़, वक्‌- बखत
करवहीं - करभी, चलवही - चलभीं
खइलहे - खइलहे

अलाप्राणीकरण - सख्त - सकत

धोषीकरण - भक् > भगत, शाक-साग - के अघोष ग घोस में बदल गेलइ

अघोषीकरण - मदद - मदइत - द् घोप साड़ा अघोष सड़ाञ बदइल गेलइ
खूबसूरत - खबसूरत - ब घोष साड़ा प् अ घोप सादाञ् बदइल गेल हइ।

(आ) सबदगत बिसेसता -

अनुकरणात्मक सबद - परकिरति पावल भिनु-भिनु साड़ा के नकल से बनल सबद खोरठें गजागजा हइ आर जगजगा हइ।

जेरंग - सरसर, फरफर, टरटर, गरगर, रटरट, खरखर, पटपट, टरटर, गरगर, हरहर, पटपट, टपटप, टिप टिप, पिट पिट

मेनेक अइसन सबद पइत अछर से सुरु हवो हे आर तकर उलटाव पावल आहे।

जइसे- रटरट > टरटर, पर पर > रप रप, पट पट > टप टप

अइसन सबदें इ आर उ भातरा लगाइ के तकर आकरा आर तीव्रता के खांट करल गाइ पारे।

जइसे - टप टपा हइ - पानीक बोड-बोड बुद गिर-हइ
टुप - टुपा हइ - पानीक कोट-कोट बुंद गिर-हइ
टिप-टिपा हइ - पानीक आरो छोट बुद गिर-हइ

(क) अनुकरमात्मक सबदेक क्रिया रूपें परजोग - अइसन सबदे 'इक' परतइ जोहड के क्रियाबाची सबद बनो हे।

जइसे - परमपा + इक - परपराइक - रउंद सुखेक
खदखदा + इक - खदखदाइक - पानी डबकेक

(ख) विसेसन रूपें परजोग - 'इल' परतइ जोइद के बिसेसन सबद बनोहे

जइसे - पटपटा + इल - पटपटाइल - पटपटाइल झुरी - सुखी लकड़ी
डबडबा + इल - डबडबाइल - डबडबाइल दीदा - लोरें भोरल आंइख

(ग) किरिआ बिसेसन रूपें परजोग - 'आइ' परतइ जोइड के किरिआ बिसेसन बनो हे। जइसे - लडबडाइ के गिरलइ
हडबडाइ के उठलइ
फरफराइ के मोरलइ

(घ) संइगा बाची बिसेसन रूपें परजोम - अनुकरणात्मक सबदें 'इ' परतइ जोइइ के बनो हे।

जइसे - करकरी - करकरी मुरगी - अंडादेनिहार मुरगी
गरगरी - गरगरी लोक - जोर से बोलनिहार लोक

अनाइर्ज भासाक सबद से समानता - खोरठाञ् ढइर अइसन सबद पावल जाहे जे ओहे अरर्थ मुंडा उरांव आदि भाषाहुं पावला जाहे। मकिन ई कहोक बडी कठिन हइ कि अइसन सबद खोरठाक हकइ ना अनाइर्ज भासा कर। जेरंग-

(क) सइंगा सबद - गिदर (छउवा), टील्हा (बांकी), ढीढा (पेट), लादा (बडका पेट), चेंगना (चूजा), लेरू (बाछा), डुभा (कटोरी), डोंका (मुँह), खैंचा (टुण्ड़ा), टोना (लबा चीज के टुकरा), खील (परती), लुगा (कपड़ा)

(ख) क्रिया बाची सबद - उसरेक (उच्चारण), उखरेक (लिखेक), हुलकेक (देखेक) मलकेक (चमकेक), साजेक (घुसावेक), खिआइक (घिसेक), पिदकेक (उछलेक), हदरेक, (हइनिसार हवेक), कोमरेक (दांते काटेक), घुसेक (वंचित ह्वेकी), खुंदेक (गोड़ से दबदेक)

(ग) बिसेसनबाची सबद - सवना (भूरा), डोडगा (लेंबू), ठूठा (जकर अंगरी नाञ्) चेडरा (दिन मुड़ला), चरका (सफेद), लेंगा (बाबा हाथ) ढेना (रोगेंक मारल)

आईज भासाक सबद से भिनु अरथेक सबद- खोरठाञ् ढहर अइसन सबद हइ

जे उसराने आर उखराने संसकिरित सबद से मेल राख–हइ मकिन एकर अरथ बेजाञ् फरक भइ जा हइ। जइसे–

खोरठा – संस्कृत
साधक – टंञ कखइआ – तपसिआ कखइआ
साधना – तंग करेक – तपसिआ करेक
कारन – रोग – कारंण – ओजह
पूजा – काटेक – पूजन, अभ्यर्थना
कटि – तनि – कमर

साइंगा सबद से क्रिया बनवेक– सइंगा सबद से क्रिया बनवेक ढांगा लोताइर दे खोरठाञ् जे रंग अंगरेजी भासाञ् पावल आहे।

जइसे – डहर – उहरावेक – ऊ गरू गिल के डहराइ देलइ
एड़ि – एडियावेक
पइना – पइनाठेक

बिसेसन सबद से क्रिया बनवेक – अंगरेजी भासा रकम खोरठाञ् विसेसन बाची सबद से क्रियावाची सबद बनवेक ढांगालेताइर हे–

चरक – चरकवेक, उसुम – उसमावेक – उसनावेक
रंग – रगावेक, कारी – करियावेक

सइंगा सबदेक तीन रूप – खोरठाञ् सइंगा सबदेक तीन उम पावल जाहे–

जइसे – पेट – पेटा – पेटवा
भात– भाता – भतवा
सोनार – सोनरा – सोनरवा
घर – घरा – घरवा आदि।

आकार बहुला भासा – सबेद आकार लगवे खोरठाञ् विसेस–बिधान हे, आकार द् ओजेंह लगवल जाहे–

1. निश्चित बोध खातिर–

जइसे – खइते–खइते पेटा फाइट गेलइ
सब मानतो मकिन पेटा तो मानतो नाञ्।

2. आदर दिएक लागिन–

जइसे – खइला, गेला, करला, खइबा, गइबा, जबकि आदर दिए खातिर मगही, मैथिली आदि भासाञ् उकार जोड़ल जाहे। जइसे – खइलु, गेलु, कइलु, पइलु, अइलु आदि।

3. रूपगत बिसेसता – खोरठाञ् रूप बा पद बनवेक आपन विधान हे।

(क) अश्लिष्ट अंतप्रत्यय योगात्मक भासा- सबदें (धातु) परतइ दरपरतइ जेडेक विधान हे। जे रंग - कर+त+ल+इ+न > करतलइन
हिआँ कर धातुंञ् एक के पेछुए चाइर गो परतइ जोइला गेल हे
अइसन बिधान संताली, हंगरी, आदि भासाहु पावल आहे।

(ख) सर्वनामानुसंगिकता - किरिया रूपे सर्वनाम बोधक परत आवश्यक/जुनजुनार लगवल औहे। जइसे - करतलइ, करतलइ करतलो, करतल। इ पटतइरे इ, इ, ओ अ सरबनाम बोधक परतइ हकइ।

— — — — — —

खोरठा भासाक प्रभाव
मगही, मैथिली, बंगला, उड़िया भासाञ्

मानसेक समाज आर सभ्यता लेन-देन (Sharing) के कल हके। ई लेन-देन टा चीज-बसुत, जिनगीक अनुभव, अकिल आर गिआन, रीद भांइत, चाइल आर चलनेक मांझे नाञ् बिचकुन भासा आर संस्कृति आदि करो मांझे हव-हे।

खोरठा भासा झारखंडेक एगो प्रमुख भासा हे। जे सबले बड़ छेतरे 31 हजार वर्ग किमी. ले बेसी आर सवाकरोड़ो ले बेसी लोकेक लोकप्रिय भासा हके। ई भासाके उत्तर बटे मगही, उत्तर-पूरबें-मैथिली, पूरूबे-बंगला, पइछमें-भोजपुरी मगही आर दइखने नागपुरिआ, दइखने-पूरबें-कुरमाली भाखाक सिञांडी-टेहड़ा बनाव हे। भासाक सिञांडी छेतरे एक-दोसर भासा माही लोकेक मांझे मेल-जोल, उठन-बइठन, सामाजिक नाता-गोत चलबे करहे तो ईबात तय हइ कि भासाख-संसकिरतिक लेन-देन चलवे करतइ। हाँ, ईटा दीगार बात कि कोन भासा ककरा कतेक प्रभावित करला हे बा प्रभावित भेल हे।

एगो सामाइन सिद्धांत हे कि बोलगर आर हुबगर समाज आर सइसमाजेक भासा संसकिरति करिं निबर-दुबर समाज के आर तके। भासा-संस्कृति के बेसी पभावित कर हे। हिआँ छोट-बोड भासाक फेचांग नाई पइर के हामें हिआँ हिगराइ के उखरावेक चेस्टा कर हों कोन भासा ककरा कोन-कोन छेतरे ध्वनि, शब्द, पद, अर्थ, वाक्य आदि कतके प्रभावित करल हे।

1. खोरठा आर मगही- खोरठा आर मगही के मांझे हइतो भारी फरक किन्तु सिआड़ी छेतरें मगही खोरठा के ढइर प्रभावित करल हइ सइले सिञाडी छेतरे खासकर के कोडरमा, गिरिडीह खोरठांय मगहीक प्रभाव पावल जाहइ।

(i) ध्वनिगत प्रभाव - अग्रस्वर 'ऐ' पश्चास्वर 'औ' मगही मैथिली भासाञ पावल जाहे किन्तु खोरठाय एकर ई ध्वनि गुलाक खोरठाञ 'अइ' आर अउ रकम उसर-हइ किन्तु सिञाड़ी छेतरे मगही-मैथिली रकम परजोग काटि पावल जाहे।

जेरंग -	मगही	खोरठा	सिञाड़ी छेतरें
	औरत	अउरत	औरत
	ऐनक	अइनक	ऐनक
	ऐसा	अइसा/अएसा	ऐसा-एनयसा
	और	अउर	और

पालिक रकम अर्द्धसंवृत अग्रस्वर 'इ' के ह्रस्व रूप खोरठाञ पावल जाहे। जइसे-

दाइल/दाएल, खाएक/खाइक, कल-काएल/काइल किन्तु सिञाडी छेतरे मगहीक प्रभाव से ह्रस्व दीर्घे भइ रहल हइ आर मध्य स्वरागम प्रवृत्ति खिआइ रहल हइ। कटि लोग मगही रकम परजोग कर-हथ। दाइल-दाल, चाइल-चाल, मगही मैथिली ड़, ढ़ ध्वनि नखइ। मगहीं घोड़ा-घोरा, गढ़ा-गर्हा रकम उसर-हइ। किन्तु ड़ ढ़ ध्वनि स्पष्ट उच्चारण खोरठाय हव हे।

संताल परगनाक खोरठाञ् सहायक क्रिया हइ, हलइ, हिअइ आदिक बदल मैथिलिक परभाव से कइ, दिक, छलउ, छिअड् रकम-चल-हे।

ईटा देइख के अब्राहम ग्रिगयर्सन एकरा दिका दिकी मैथिली कहल हइ/सिखर छेतरेक सीञाडी गैनामोइ ले पूरब बाठल गेले बंगला ध्वनि पावेक सुरू भइ जाहे आर 'अ' के बदल 'आ' ध्वनि चले पलाग हे। जइसे हामर > हामैर, गिदर > गिदैर, दही > दैही, कलम > कॉलॅम, छगरी > छागैइर

बंगलाक प्रभाव से व ध्वनिक ओइजी खोरठा हु 'ब' के परजोग खासकर सिखरी खोरठाञ पावल जाहे। जइसे- विचार-बिचार

(ii) सबदेक उपर प्रभाव- भासाक आधार तो ध्वकि हव हे आर ध्वनि आपन भासाक बिसेसताव हव हे। साइसे ध्वनिक स्तरें दोसर-तेसर भासाक प्रभाव चांके नाञ परु हे और बेसी नाञ पर हे की ले कि ध्वनिस्तरे बदलाव एगो लंबा समइए हवे पारे। किन्तु सबदेक स्तरें भासाञ् लेन-देन बड़ी सहञें हव-हे। बंगला, मगही, मैथिलीक उड़िआक मांसु सबदेक लेन देन ढेइर पावाइ। खोरठाक संबोधन वाचक सबद पुरुस लाइ 'हे' आर बेटी छउप्रा लाइ 'गो' के परजोग चलहे मकिन भगहीं बेटी छउआलाइ से संबोधने 'गे' के परजोग देखल जाहे खोरठा-मगहीक सिआड़ी छेतरें।

बहुबचन बनवेक जाइ सिखरी खोरठाञ् 'गुला/गुली/गुबीन' के परजोग बंगलाक प्रभाव से हे।

आदर दिएक लाइ मगही, मैथिली भासाञ 'अपने/आपने' शब्देक परजोग हव हे। किन्तु मगही-खोरठाक सिञांडी छेतरे 'अपनेक' परजोग खोरठाहु हवे।

खोरठाञ रांचीएक मगहीक शबद 'मेहरारू' कर परजोगो पावल जाहे।

झारखडेक संस्कृति ले भिनू सबदेक परजोग टा मगही, मैथिली भासाक प्रभावें खोरठाञ पावल जाहे। जइसे- तिलक, छेका, आदि।

बंगलाक परभाव से 'आहे' बंगलाक 'आछेक' बदलल रूपटा खोरठाञ पावा दे।

मगहीक सिञांडी छेतर सरिआ, बगोदर, बरकट्टा, गिरिडीह आदि छउआक बदल 'रेंगा', 'सिआर' के बदल 'लेढुआ' नगपुरिआक 'मोञ्' मगहीक 'उनखा' क्रमश: 'हम' आर 'ओखर' के ओइजी चलहे।

एहे रकम ढइर सबदेक परजोग मगही, बंगला, मैथिली ले खोरठाञ् आइल हे।

(iii) पदगत परभाव- धातु आर प्रत्यय के परजोग से पद बन हे। कोन्हो भासाक प्रत्यय आपन भासाक 'निजत्व बोध' अपनउतीक नाता-गोता बेसी हने सइल दोसर भासाक प्रत्यय कटि मुसकिले से दोसर भासाञ् जाहे। वइसो खोरठाञ् कुछ मगही, मैथिली, बंगलाक कुछ प्रत्यय 'वन' खोरठाञ् कटि रूप बदइल के 'वइन' के रूपें आव हे। जेरंग - धोडवन-धोडवइन लड़कवन-लड़कवइन, गरूवइन, डगरवइन आदि।

भगहीक बहुवचन बोधक 'सब/सम (मैथिली)' के परजोगों छाटे-बेड़े देखल जाइ जारे।

क्रियापद टाञ् संख्या बोधक प्रत्यय 'न' के परजोञ मगही के प्रभाव से पावल जाहे।

जइसे- कहलथू-कहलथून

करलो-करलोन, सुनलोन्, बइठलोन ऐहेरकम आरो

खोरठाञ् क्रियापद संरचना मगही, मैथिली रकम पावा हे ईटा ई बात के प्रमाणित करे पारे कि मगही, मैथिलीक जनम एके प्राकृत से मेल हे।

एखन क्रियार्थक संज्ञा बनवेक लाई खोरठाञ् मगहीक, हिन्दीक प्रभाव से 'ना' प्रत्यय के परजोगो देखल जाहे जबकि खोरठाक आपन क्रियार्थक संज्ञा बोधक प्रत्यय 'एक' 'इक' वेक पाना हे।

जइसे- बनवेक-बनाना, करेक-करना, चलेक-चलना आदि।

खोरठाञ् गेलइ के बदल गेलकइ आर से रकम कहलकइ, सुनलकइ, आदिक परजोग मगहिक प्रभावे चलहे।

छाटे-बेड़े एकर दोसर रूप में मैथिलीक प्रभाव से सताल परगनाक खोरठाञ् पावल जाहे जेरंग - कहलकइक, सुनलकइक, देखलकइक आरो एहे रकम।

खोरठाञ् निहार, आर वइआ प्रत्यय के बादल एखन 'वाला' प्रत्ययो के 'दर्शन' खोरठाञ् मगही के प्रभाव से करल जाइ पारे।

जइसे- करनिहार / करइआ - करेवाला

जइनिहार / जवइआ - जाइवाला

गवइआ / गवनिहार - गावेला सहरकन आरो

कभूं-कभूं अन्य पुरूस बहुवचन लाइ भकिसकालिक क्रिया रूप करलथू टा करतथू रकम पावल जाहे। ए रकम-चलवथू-चलतथू, सुनलथू-सुनलथू । खोरठाञ् भकिसकालिक प्रत्यय 'त' के परजोञ् अन्य पुरूस एक बचनेक लाइ चल हे।

मगही, मैथिली, खोरठा, हिन्दी रूपें भासाञ् सर्वनाम सबदेक संबंधकारकीय रूप एके रकम मोंटा-मीटी पावल जाहे।

हिन्दी - हमारा, तुम्हारा, उसका

खोरठा – हमर, तोर, ओकर

मगही – हमर, तोर, ओकर

मैथिली – हमर, तोर, ओकर

बांगला – आमार, तोमार

हिआं ईटा कहेक कटि मुसकिल हइ कि ककर प्रभावे सभे भासाञ समान रूप पावल जाहे। एगो बात कहल जाइ पारे कि हिन्दीक संबंध कारेक विभक्ति चिन्हा – का, के, की हइ कहीं र, कर नाञ हे हिन्दीक संबंध कारकीय विभक्ति हिन्दीक संज्ञा सबद टाञ् जोउल जाहे– राम का, सीता के, पदसंगे हिन्दीक रुकम् खोरठाहू संज्ञा पदसेमे हवे– कारूक, चरकीक आरो एहे रकम। हिन्दीक सर्वनाम सबदेक हिन्दीक सर्वनाम संगे 'र' विभक्ति क्षेत्रीय भासा से लेल गेल हे। ईटा हिन्दी भासा के आगू दिनें स्वीकार करे हटइ।

(iv) अर्थगत प्रभाव– खोरठाञ् कटि मगही, मैथिली, बंगला समेत हिन्दीक सबद गुला के उलटा माने बा अर्थ पावल जाहे ईटा ई रकम की लेहइ सेटा खोजकर विसइ हके।

जइसे– उपरेक समे सामाज 'करन' माने हवे– ओजइ (Cause) किन्तु खोरठाञ् स्तर माने हवे– 'रोग'। एकरे से आगू आरो सबद बन–हे। जेरंग– कारनी–बीमार लोक कारन काइछ देलइ–बीमार का बहाना बना दिया।

एहे रकम हिन्दी, मगही, मैथिली, बगलाक सबद, 'साधक' माने हवे जे साघना करे, जे तपस्या आदि करे। किन्तु खोरठाञ् एकर विपर्यय अर्थ हवे– साधक–तंग कर वइआ, दिक करखइआ ई तो बड़का साधक हेके– गढ़जो बड़ा परेशान करने वाला है।

उपरेक, भाखा गुलाञ् 'पूजा' सबदेक माने हके पूजा–अर्चना प्रार्थना आदि किन्तु खोरठाञ् एकर माने हवे–काटेक, कोन्हो चोख–चीज से काइट के छिनगाइ दिएक।

जइसे– आइल तोरा पूजा करतो। आइल तोरा काटती। एहे 'पूजा' सबद से 'पुजाइक' (कटाइ के गिर जाइक) सबद बन हे।

बंगलाक सबद चरेख जकर माने हवे आँइख, खोरठाञ् एकर माने हवे धारदार (Sharp)

उपरेक भाखा गुलाञ खोरठाञ् सबद किसनी को के माने हवे मारे 'कृष्णा' (द्रौपदी) किन्तु खोरठाञ् एकर माने हवइ 'मैना' ई सबद मुंडारी संताली के सबद हके आर बेटी छउआक नाम देल– दोसर सबद 'पारवा'। मगही, मैथिली, बंगला, हिन्दी भासी लोक एकरा सुधाइर के कइह देरब पार्वती की ले कि ऊ सब बुझहथ कि ई 'पारो', पारवा नाम टा पार्वतीक बेडाइल रूप टा लागइ। किन्तु ईटा यही नाञ्। सच तो हइ कि 'पारवा' बा पारो मुंडारी, संताली, सबद 'पेरवा'–कबूतर से बहराइल रे। जोदि

एकर हिन्दी अनुवाद करे खोजा तो हतइ–कबूतरी।

एहेरकम - चाटा - सुखइ जाइन, डींडा-पिंडा के माने बदइल जाहे।

(v) वाकयगत प्रभाव- खोठा वाइक बनवेक लाइ पदक्रम तो हिन्दी, मगही, मैथिली, बंगला उडिकाइ रकम हके। ई भासा गुलांञ् पदगुलाक सामान्य क्रम हे- कर्ता-कर्मन-क्रिया। सहायक क्रिया। खोरठाञ् अटसन बाइक टा सामान्य परजोगें चल हइ किन्तु आइझ काइल सहायक क्रिया के बाइक से मोटा-मोटी हटाइ देल जाइ रहल हे।

जइसे- एगो बेटी छऊआ। वड़ी सुंदर, वड़ी लुइरगर। चांदे दाग मकिन ओकर-चेहराञ नाञ्। कोन्हो कमीनाञ ओकर कामें। बेगर सहायक क्रिया बाइक बनवेक चलन बगला आर तकर प्रभावे मैथिली में पावल जाहे। सइ रकमें खोरठाञ् अइसन काइले वाइकेक परजोञ् बंगलाक प्रभाव से पावल जाहे।

खोरठाञ् बाइक बनवेक लाजिन सहायक क्रिया के वाइक के शुरूवे राखेक परजोग शिष्ट सादितें चइल रहल दे। जेरंग- हलिक एगो बेटी छउआ। बेंजाञ सुंदर। बेंजाञ कमनिहार। चांदे दाग मकिन ओकर चामें नांञ्। अइसन परजोग से भासाञ् प्रवाह आइ जाहे। कवितात्मकता आइ जाहे भासाञ।

निष्कर्ष- समाजेक प्रभावकारी (Influencing, Dominating) समुदाय के भासा, आचार बेबंहार से ओकर हेठेक समुदाय प्रभावित हबे कर हे। ईटा प्राकृतिक नियम हके। भारतेक भासागुलांञ भारतें जखन जखन जे समुदाय के शासन रइलइ तकर प्रभाव पइल गेलइ आर भासाञ परिवर्तन भेल गेलइ। आइलेक हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, अरबी, रोमन जर्मनीक, अनार्य भासा गुलाक प्रभाव साफ-साफ देखल जाइ पारे। सइ रकम झारखडेक भासा खोरठाञ् मगही, मैथिली, बंगला भासाक प्रभाव कटि देखल जाइ आरे। हाँ एहटाव सही हे कि बाइहरेक रूप कटि बदइल जाहे मकिन ओकर आत्मानाञ्। सइरकम खोरठा भाखा हूं बाइहरी प्रभाव के एहे भामें देखल जाइ जाहे। जे कोन्हो बाहरी प्रभाव परल हे सेटा आल रूपे अंगीकार नाग करल हे बिलुक ओकर खोरठा करल करल गेल हे। ओकर सकल बदइल के आपनावल गेल गेल। आर इटा 'भासाक बिकास लाइ शुभ लक्षण'।

— — — — — —

शिष्ट साहित्य खंड

खोरठा साहित के काल विभाजन

कोन्हों चीज के बेस भाभें जानेक लाइ खेंचा-खेंचा कइर के, खाँधा-खाँधाञ् बाँइट के जाने, सुने आरे देखेक जिगिरता करल जाहे कीलेकि एके बेर कोन्हों चीज के गोटा रूप टाक दरसन बड़ी कठिन काम। सइ रकम भासा साहितों के अधिअन लाइ, साहितेक पूरा परंपरा के काइगो आधारे आर कइगो खोंधाञ् बाँइट के जाने-सुनेक उता-सुता करल हथ बिद्वान गुला। जेरंग कि हिन्दी साहित के काल विभाजन जे आध रे करब हथ सेटा इ रंग हइ-

1. इतिहासेक कालक्रमेक आधारे - जइसे : आदि, मध्य आर आधुनिक काल।
2. कोन्हों शासनेक कालेक आधारे - जइसे : विक्टोरिया, जुग, एलिजाबेथ जुग।
3. लोकनायक आदिक नामे - जइसे : गांधी जुग, चैतन्य जुग
4. कोन्हों सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलनेक नामे - जइसे ' भकति : जुग, पुनर्जागरण काल।
5. साहितेक प्रवृतिक आधारें-जइसे : भकित काल, रीतिकाल आरो-आरो।

ई समय माँझे "**इतिहासिक कालक्रम**" आर "**साहितेक प्रवृति**" इ दुइयो आधार के बिद्वान गुला सबले सुपट आर 'तार्किक' आधार मानल हथ।

खोरठा साहितेक काल बिभाजन

खोरठा भासाञ् साहित लेखन के एगो ढांगा परंपरा मोटा-मोटी तीन सउ बछर (1700-एखन तइक) हइ। आर ई परंपरा के भिनु-भिनु बिद्वान आपन-आपन मते कइ-कइ गो कालखंडे बांटेक जिगिप्ता (चेष्टा) करल हथ जेटा देखल जाइ।

ए. के. झा जीक मतें खोरठा साहितेक काल बिभाजन

खोरठा भासा के बेपरटिया आर धुरंधर बिद्मान डॉ. ए. के. झा जी खोरठा भासा सहित के तीन कालखंडे बाँटल हाथ-

खोरठा भासा के सुरू से लइ के 1920 तक के काल के प्राचीन (आदिभाषा) काल बा आदिकाल, 1920 से 1970 तक के काल के मइध (मध्य) काल आर 1970 से एखन तक के काल के आधुनिक काल कहल हथ।

झा जी आदिकालें खोरठा लोक साहित समेत खोरठाक पहिल रचनाकार राजा दलेल सिंह आर गीत, झूमइर आर नचनी गीत आदि गवइआ-जोरवइआ, गांगू राम, हाड़ी राम, चोपली नचनी भावें प्रातीनंद ओझा (1886-1972), तितकी राय (साठेक दसके) सिराइल, चामू कमार (1851-1939), लछुमन पाठक (1770) आदि के नाम गनवल हथ। 1920 के आगू खोरठाञ् बिधिवत लिखेक सुरू नाञ् भेल हल।

मइधकाले भुनेश्वर दत्त शर्मा व्याकुल, श्री निवास पानुरी, ए. के. झा, विश्वनाथ नागर विश्वनाथ दसौंधी 'राज', नरेश नीलकमल, नारायण महतो, आदि रचनाकार आर उनखर रचा के चरचा करल हथ। आधुनिक काले श्री निवास पानुरी समेत बी. एन. ओहदार प्रमाणिक, श्याम सुंदर महतो, महेश गोलबार, शांति भारत, बंशीलाल बंशी, आदि नाम गनवल हथ। गिरिधारी गोस्वामी आकाश खुटी, चिटांजन महतो 'चित्रा' वष्णुदेव महतो, धनंजय प्रसाद, विदोद दिनमाणि आरो-आरो।

कृष्ण चन्द्र दास 'आला' के मतें खोरठा साहितेक काल बिभाजन

खोरठा भासा के दोसर विदवान **कृष्ण चन्द्र दास 'आला' जी** पूरा खोरठा सहित परंपरा के तीन खंडे बाँटले हथ-

1. **गोड़ाक पहर (1951-1971)**- के काल जकर में श्री निवास पानुरी आर उनखर सहित के सामिल करल हथ।
2. **मइधेक पहल (1977-1990)**- एक मइधे झा जी आर उनखर रचना, शिवनाथ प्रमाणिक आर उनखर सहित संतोस कुमार मुहतो, गजाधर महतो, बिनोद कुमार, बी. एन. ओहदार, चितरंजन महतो, शांति भारत आदिक नाम गनवल हथ।
3. **आबगा पहर (1991-एखन तक)**- ई पहरें ए. के. झा, श्याम सुन्दर महतो बंशलाल 'बंशी', सुकुमार, घनपत महतो, शिवनंदन पांडे 'गरीब', 'जनार्दन गोस्वामी, पंचम महतो, मनमोहन पाठक, कृष्ण चन्द्र दास 'आला' आदिक नाम राखल हथ।

वंशी लाल 'वंशी' के मतें खोरठा साहितेक काल बिभाजन

सइ रकमें बंशीलाल 'बंशी' जी **'खोरठा दर्पन'** किताबें 1857 से 1945 तक के काल के **आरंभिक काल,** 1946-1980 तक के **मइधकाल** आर 1980 के एखन तक के काल के **आधुनिक काल** मानल हथ।

दिनेश दिनमणि के मतें खोरठा साहितेक काल बिभाजन

दिनेश दिनमणि **'खोरठा साहित्य का उद्‌भव और विकास'** लघुशोध प्रबंधे खोरठा साहित के काल विभाजन, साहितेक प्रवृति आर सामाजिक सांस्कृतिक

आंदोलनेक आधारें **प्राचीन (1900-1950) ई. मइधकाल** (1951-1980), **आधुनिक काल (1981 से एखन तक)** ती खंडे बाँटल हथ।

दिनमणि जी प्राचीन काल के साहितेक प्रवृति, पइद बिधाक प्रधानता, भाटगिरी, संगीतात्मकता, भगति आर सिंगार आदि रूपें देखवल हथ। ई काल के **'बीजबपन'** काल नामेहुं डाकल हथ।

मइधकाल (1951-1980) के मुइख प्रवृति, महाजनी, जमींदारी, शोषण के विरोधें जनवादी सोचेक बढ़ोतरी, 'औद्योगीकरण' के परभाव, गइद विधाञ् लिखेक सुरूआत आर साहितेक मोटा-मोटी सोभे बिधा - कहनी, उपनियास, नाटक, संस्मरण आरो-आरो बिधाञ् लिखेक चेस्टाक रूपें चिन्हवल हथ।

ई. काल के खा बात ई हइ कि खोरपाठञ्-पत्रिका बहरवेक चेष्टाओ हव हइ आर कइगो पत्रिका तितकी (1951), सम्पादक पानुनी जी, मातृभासा (1957) संपादक श्री निवास पानुरी, खोरठा (कुछ अंक) बादें तितकी (1977-1978) से सुरू भेलइ बहराइक। ई जुग के प्रमुख रचनाकार पानुरीजी, ए. के. झा, विश्वनाथ नागर, विश्वनाथ दसौंधी राज, नरेश नील कमल, आरो-आरो हथें।

1981 से एखन तक के काल के दिनेश जी आधुनिक काल मानल हथ आर एकर भासा 'सांसकृतिक आस्मिता बोधा' के साहितेक मुइख प्रवृति रूपें चिन्हवल हथ। ई काल खंडेक रचनाकार शिवनाथ प्रमाणिक, शांति भारत, वंशीलाल वंशी, बी. एन. ओहदार, बिनोद कुमार, दिनेश दिनमणि, श्यामसुंदर महतो 'श्याम', फतेश्वर करमाली, घनपत महतो, गजाधर महतो 'प्रभाकर', चितरंजन महतो 'चित्रा', वासुदेव महतो, रामटहल ओहदार आदि के नाम गनवल हथी।

ई कालखंड के मुइख रचना रूपें **जिनगीक टोह** (उपनियास)- चितरंजन महतो, दामुदरेक कोंराञ (काइब), तातल-हेमाल (कबिता संग्रह) - शिवनाथ प्रमाणिक, डींड़ाक डोवानी (काइब) - वंशीलाल वंशी, खोरठा निबंधा - बी. एन. ओहदार, सांध माटी - विनोद कुमार, समाजेक सरजुत निसइन (काइब) ए. के. झा, भगजोगनी (उपन्यास), अजगर (नाटक) - विश्वनाथ दसौंधी 'राज', फरीच डहर (कहानी संग्रह) पंचम महतो हेन-तेनेक नाम आव हे।

गिरिधारी गोस्वामीक मतें खोरठा साहितेक काल विभाजन- सइ रकमे लुआठी पत्रिकाक संपादक बिरिधारी गोस्वामी जी के मतें 1947 के आगू के काल के खोरठा साहितेक प्राचीन काल मानल हथ। इनखर मतें 1947 के पहिले तइक सभे टा मौखिकें चलो हलइ आर सब सिंगार-पटारेक गीत-नाद हलइ। कीलेकि सब के सब नचनी राख-हलथ मकिन व्याकुल जी 1940 के आसपास खोरठाञ् सई जुगेक सिंगार प्रवृति से हइटके प्रगतिशील रचना शुरू कइर देल हलथ। गोस्वामी जी, रामगढ़ राजा

दलेल सिंह आर कतरासगढ़ेक राजा गंगा नारायण सिंह जकर दूगो किताब रघुवर विनय (1902), गीता संगीत (1909) के इ कहिकेक खोरठा साहितेक परंपराञ् नाञ् मानल हथ कीलेकि इन्खर मतें इ सब रचना गुला ब्रज भाषा आर अवधी भासाञ् लिखल गेल हइ।

गिरिधारी गोस्वामी जी मइध काल (1947–1980) के पानुरी काल के नामे जानेक ओकालत करल हथ। कीलेकि गोस्वामी जी, पानुरी जी के खोरठाक धुरी मानल हथ आर उनखर चाइरो बठ, नारायधा महता, विश्वनाथ दसौंधी राज, नरेश नीलकमल, ए. के. झा आदि साहित रच हलथ। एहे कालखंडे पहिल बइर आकासबानी राँची ले खोरठाक कबिता प्रसारित भेल हलइ। नारायण महता पहिल कबि हलथ तकर पिछू पानुरी जी, विश्वनाथ दसौंधी राज, नरेश नीलकमल, ए. के. झा आदिक रचना प्रसारित हवे लागलइ। एहे काल खंडे खोंरठा भासांञ 'मातृभासा' नाम से पतरिका बहराइक सुरू भेलइ पानुरीजीक परयासें। ई खंडेक मूल परबिरति रह हलइ सोसन, समाजे पसरल 'भ्रष्टाचार', समाजेक बिसंगति आरो–आरो बिसइ।

गोस्वामीजी आधुनिक काल (1980 से एखन तइक)– के लेताइरें कह–हथ "अइसन बुझा हइ जे ए. के. झा जी खोरठा खातिर किरिया खायल हला आर आपन सामरथें खोरठाके विश्वविद्यालयें पढ़ाई करउला, तितकी परकासन शुरू करउला आर एक लगायत 'एक टोकी फूल', 'खोरठा सहित सदानिक बेयाकरन', 'खोरठा गइदेक खंडी', 'खोरठा पइदेक खंडी', 'समाजेक सरजुइत निसइन', 'मेकामेकी ना मेटमाट', छउवा साहित आर भिनु–भिनु छिटपुट रचनाक ढेइर लगा देला।' गिरधारी जी ई काल के झा जुग मानेक सलाह–टाउ देल हथ। इनखर मतें 1951 से 1982 तक 32 सालें 10 गो खोरठाक किताब नाञ् छपलई मकिन 1983 से 1990 तइक मोटे आठ बछरें खोरठाञ् 20 गो ले बेसी किताब साहितेक भिनु–भिनु बिधाञ् छपलइ। ई काल खंडे भासा संसकिरति, अस्मिता–बोध एगो आन्दोलनेक रूप लइ लेल हलइ।

बी.एन. ओहदार के मते खोरठा साहितेक काल विभाजन

ढेइर खोज–बिन करल कर पिछू हामे गोटा खोरठा साहित के, ओकर प्रवृति के आधारें भिनु–भिनु कालखंडे बांटेक विनम्र चेष्टा करल हों।

आदि काल (प्राचीन काल) (1700–1800)–

हामें 1700 इस्वी से 1800 इस्वी तइक के कालखंड के खोरठा साहितेक आदि काल (प्राचीन काल) मान हों आर ई काल के आरंभिक रचनाकार रामगढ़ेक राजा दलेल सिंह 'दलशाह' आर उनखर ृति 'शिवसागर' महाकाइब के मान हों। इनखर तीन गो आर रचना 'राम रसारनव', 'गोविन्द लीलामृत' आर 'राज रहस्य' के पता चलो हे।

एकर छाड़ा रामगढ़ेक दरबारी कवि पदमदास आर उनखर रचना 'काइब मंजरी'र, हितोपदेश के अनुवाद आर संगे संगे दलसाह के बेटा राजा रूद्र सिंह आर उनखर रचना 'ज्ञान सुधाकर' के टावान मिल हइ। जे घरी खोरठा छेतरें इ सब रच हलथ, जे घरी खोरठा छेतरें इ रचनाकार गुला रचना कर हलथ से घरी हिन्दी साहित जगतें भक्ति काल के सिरसिरउति रहे आर रीति काल के सुरूआती। सइसे, से घरिक खोरठाक रचना गुलाञ् भासा आर प्रवृति दूइयो छेतरें हिन्दीक परभाव देखल जा हइ। मेनेक भासाञ् अवधी आर ब्रज के परभाव हइ आर साहितेक बिसय हइ, भक्ति आर रीति। आर इ दूइयो किसम के रचना पावल जाहे इ कालखंडे। भासाञ् जोदियो उपरेक भासा गुलाक परभाव हइ मकिन खोरठाक ढांचा के दलसाह के 'गोविन्द लीलामृत' काइबेक इ पटतइरें बेस भाभें देखल जाइ पारे।

"सुमिरहुं श्री जगरनाथ, भजिलेहुँ बैजनाथ
जमको का करे।
लेत नाम लेगिहें हरिहरे सरिख,
नाहक नर चिन्ता का करे।" (गोविन्द लीलामृत)

मइधकाल (1800 से 1947)-

इ कालखंड हिन्दी साहितकेगं रीतिकाल के सिरसिरौति रहइ, सई से हिन्दी साहितेक रीतिकालेक प्रवृति सिंगार, खोरठा साहितेहुँ मुइखर प्रवृति रूपें पवा हइ। ई जुगेक मुइख बि हल- सिगारगीत, झुमइर आदि। आर रचनाकार हलथ, भावप्रीतानन्द ओझा (1886 से 1972), चामु कमार (1851 से 1935), विनन्द सिंह 'विनन्दिया' (1770 ई. जनम), लछुमन पाठक (19 वीं सदी)। एकर छाड़ा गांगु राम, हाड़ी राम, तितकी राय आदि सिंगार भावेक गीत के जोड़वइया, गवइया आर नचवइयो हलथ। इ कालखंडे कतरासगढ़ेक राजा गंगा नारायधा सिंह के दू गो छपल किताब 'रघुवर विनय' (1902) आर 'गीता-संगीत' (1909) धरम-करम बिसइयें लिखल गेल हई।

आधुनिक काल (1947 से आइझ तक)-

हामें इ काल खंड के तीन काल खाँधाञ् बाँटेक चेस्टा करल हों।

(1) खोरठाक नवजुग - (1947 से 1975)
(2) पुनर्जागरण काल - (1975 से 2000)
(3) विकास काल - (2000 से एखन तक)

गोटा आधुनिक काल के तीन उपखंडें बाँटेक चेस्टा भिनु-भिनु साहितिक प्रवृति के आधारे करल हों। हामें पाव हों 1947 से 1975 के मइधें जे रचना खोरठाञ् भेल हे, तकर बिसइ एकर ले अशिक्षा मेनेक 1947 ले पहिलेक बिसइ से एकदम फरक हई। सोसन, गरीबी, दलिदरी, भ्रष्टाचार बिसइ के आयाँ छापा तो रहइ मकिन दुसमन

के फरीच बोध नाञ् हल सइ खातिर दुसमन के खिलाफ कोनो चर्चा नाञस् पावल जा हइ खोरठा साहितें। जोदियो कहीं हइओ हइ तो बड़ी कम। जोदि अइसन कहल जाय कि दुसमनेक पता रचनाकार गुलिन के नाञ् हलइ तो इटा कटि बेजाञ् बात हतइ। ई जानल बात हे कि रचनाकार गुलिन के दुसमन के पता तो हतइन मकिन ऊ सब के खिलाफ बोले-बइजके आर लिखेक खेमोता नाञ् हतइ। सइ से एकरा हामें नवजुग मान हों। मेनेक धरम, भगति, सिंगार-पटार के निंगइछ के जिनगीक टटका आयाँ (यथार्थ) बात के टोवे-टोमड़ेक सुरू भेलइ ई जुगें। मेनेक एगो नवा जुग पोंगाइ गेलइ से खातिर एकरा नवतजुग मानल जाइ पारे।

1975 के पेछु झारखंड मुक्ति मोर्चा जइसन राजनीतिक दलेक जनम भेल कर पेछु झारखंड मुक्ति आन्दोलन मनुष्य जोर पकड़लइ आर संगे-संगे माञ्, माटी, मातरिभासा, संसकिरति, 'आत्मगौरव बोधा', 'अस्मिताबोध', आरो-आरो भावना जोर पकड़लइ। नवजुगें तो दुसमन के खिलाफत करेक खेमोता नाञ् हलइन रचनाकार गुलिन के मकिन ई जुगें 'राजनीतिक संरक्षण' पाइ के रचनाकार गुलइन के हिमइत बाढ़लइ न आर दुसमन के खिलाफ खुब रचना करल गेलइ। सभे लोक ई बात बेस भाभें बुझे लागला कि बेगइर अलग राइज के कलिआन नाञ् आर तबे साहितेके सभे बिधाञ् एके सुर बाजे लागलइ – मुकति आर मुकति। आर दुसमनेक खिलाफ 'आक्रोश' टाओ फूइट बहराइल हई सइ जुगेक रचना गुलाञ्। एगो पटतइर देखल जाउक-

धरबो हाम लुआठी, आब नाञ् पारबो सहे ले।
परदेसिया अइला पेट पोसे ले, मानुस बुइझ देलिअइ डँड़ाइले,
आपन पेट तो पोसबे करल, टेंग पसाइर देल रहे ले,
आब नांञ पारबो सहे ले।

<u>सिराजुद्दीन सिराज</u>

उठ जाग झारखंडी, अब तो नजइर खोल।
समइझ के डांड़ाइ आर हकंइद के बोल।
उठ जाग झारखंडी अब तो नजइर खोल।
हाथें धइर धनुस, बइरिक ताकइत तोल।
देखाय दे दुनिया के आपन सभइता-संसकिरति अनमोल।
उठ जाग झारखंडी अब तो नजइर खोल।

<u>बी.एन. ओहदार (1984)</u>

इ जुकेक साहित के आर समाज के प्रवृत्ति के देखलकर बादें बुझा हे जे कंउ सुतल लोक फइर से जाइग गेल हे। सइ से ई जुग के नाम पुनर्जागरण काल दियेक टा बड़ी 'तर्कसंगत' बुझा हे। इ जुगेक बड़का जोद्धा झा जी हथ, से खातिर जोदि इ जुग

के नाम 'झा जुग' राखल जाय तो एकर ले कोन्हों दोसर बेस बात होबे नाञ् करतइ।

विकास काल

झारखंड अलग भेल (2000) कर पेछू समाजें आन्दोलन कर बिसई मोटा-मोटी बदइल गेलइ तो साहितेक सुर टाओ बदइल गेलइ। आर साहितेक सुर टा 'प्रतिकार आर मुक्ति' नाञ् बिचकुन बिकास टा भइ गेलइ। सइ से इ जुग के विकास जुग मानल जाय पारे। इ भाभें खोरठाक गोटा रचना परंपराके एहे सब काल खंड गुलाञ् बांटल जाय पारे।

निष्कर्ष- सार रूपें

हियाँ भिनु-भिनु बिद्वान गुला के मत गुलाक सार ई हइ कि हमर छोड़ाय मोटामोटी सभे बिद्वान 1920 से 1950 के आगु काल के आदि बा प्राचीन काल मानल हथ 1920 से 1980 तक के मधय काल तकर बादे 1980 से आइज तक के काल के आधुनिक काल मानल हथ। किन्तु हामें दलसाह के आदि कबि आर उनखर रचना के आदि रचना मन-'हों। इ जुग के अलिखित आर मौखिक साहित परंपरा के दोसर बिद्वान गुला सिस्ट साहित रूपें 'स्वीकार' नाञ् कइर के लोक साहित रूपें स्वीकार कर हथ आर एहे लेताइरें श्री कृष्ण चन्द्र दास आला जी खोरठा शिष्ट साहित के परंपरा के सुरूआत 1951 से मानल हथ आर 1951 से लेइके एखन तक के काल के तीन खंडे बांटल हथ। किन्तु हामर मतें खोरठा जइसन समृद्ध भासा के साहित के काल विभाजन करेक में एते कोताही बरतेक टा उचित नाञ् आर बेस भाभें अध्ययन करल कर पेछू काल विभाजन करा टा उचित हतइ।

खोरठा व्यंग्य रचना

कोन्हो सबद के माने तीन रूपें पावत जाहे पहिल (1) अविधा जकर से कोन्हों सबद के मूल अर्थ जानल जाहे। जइसे- केउ मोट-माट ताकतवर आदमी के पहलवान कहल जाइ तो एकर सीधा-सीधा अरथ फरीछ भइ जाहे।

दूसरा (2) लछना- एकर में सबद गुला के अरथ लछन से फरीछ हव- हे। जइसे- केउ पहलवान रकम आदमी के हाथी कहल जाइ तो तब ही माने पहलवान के अरथ फरीछ हव-हे।

तीसरका (3) व्यंजना- एकर में सबद के अरथ अयिधा आर लछना से नाञ् फुरछाहइ के व्यजना से फुरछाइ हे बा फरीछ हव-हे। जइसे- कोन्हों दूबर-पातर आर कमजोर लोक के पहलवान कहल जाइ तो, एकर माने फरीछ भइ जाहे किऊ तो पहलवान रकम नाग हे, मकिन ओकर कमजोरी के हंसी उहवल गेल हे बा व्यंग्य करल गेल हे।

टाय चल-हे, बखेड़ा में बखेड़ा लिंग बखेड़ा हामें खडा हों। बइजका बगरा, काम कम। सब टाञ् चल-हेक एगो अंस देखल जाइ

"............... तोहीन पूछभे कि साजीव तो चलबे कर-हे, निरजीव की रकम चल-हे भला। पर जनाब निरजीव चल-हे आर सौ फिसदी चल-हे। जखन हड़ताली बा परदरसनकारी कोन्हो रकम काबू में नाञ् आवथ तखन देखभे की रकम लाठी चल-हे आर परदरसन करवइआ गुता बटले ईटा आर पखन की रकम चल-हे।"

बइजका बगरा काम कम के व्यंग्य देखल जाइ ".............. एक बेइर इंदिरा गांधिक मगज बेंडाइल हलइन जे चाइरो बट लिखउलो हलथ काम अधिक बातें कम। ई कोन्हो बात भेलइ हर धरि काम आर काम, की हमनि कोन्हो गरू-डांगर हकी जे हाउ-गोड़ रगडइत रही"

ई तो हमनिक संस्किरति उपरें हमला। तकर मजा देखा इंदिरा गांधिक अइसन पटकनिया मिललइन जे चेते चढ़लइन।"

हामें खड़ा हों के एगो नमूना देखल जाइ- "................. जोदि तोहें चाइर-छो महइना जेहलेक हवा खांञ् घुरल हा तबे तो सुभान अल्लाह। ई तो गइरव के बात। गांधी, सुभास, जवाहर, भगतसिंह समीन जेहलेक चक्की पिसल हथ। तोहें जेहलेक हवा खाञ् घुरल हा तो लजाएक-सरमाइक की बात बुझ्झ ला तोहें गांधी, नेहरू परम्परा के लोक हा तोहें। जोदि तोहर ठीक एतना गुन हो तब तो खड़ा हवे में बोनस नम्बर मिलतो।"

1989 ईसवी बोकारो से परकासित 'उड़ान' पतरिकाऐं गिरधारी गोस्वामी जीक एगो बेस व्यग्य रचना छपल हलइ - अब नेता नाञ् अइतइ हमनिक दुवाइरे।

लुआठी पतरिकाक अंक 6 में ए.के. झा जी क फिंगाठी रचना छपल हलइ- 'महाप्रभुक किरपांञ् झारखण्ड'

2. पइद रचना- खोरठाा हास्य व्यंग्य रूपें एखन तक एगो गोटिना किताब छपल हे जनारदन गोस्वामी जीक- चांदीक जूता एकर में नाना रकमेक छंदे व्यथित जी हास्य आर व्यग्य के बेस नमूना पेस करल हथ। खास कइर इनखर कुडलिआं सइली के फिंगाठी बा व्यंग्य एकर बेस पटतइर हके। एक दूगो उदाहरण देखल जाइ-

1. दोसर काम छोइड के खेले बेटा तास
   तासेक भीतर बेटा हइ लछमीक वास
   हवे लछमीक बास, जुआञं जी जान दइ दे
   घर करना सेटाइ जुआंञ अरपन कइर दे
   कह व्यथित कवि राय
   जुआञ् सुजोधन जीतल

पाडव के बनवास
अंधाक छाति सीतल

2. रोज कर रंगदारी बेटा, हरदम कर उत्पात
आइझ दुनिया बदइल गेलो एकरे मे हो भात
एकरे में हो भात लोकें करतो सलाम

3. सिआव खादिक कुरता कर नेताक साथ
जोड नेता से नाता, धो गंगाञ् हाथ
धो गंगाय हाथ लोक के झांसा दिही
बांध झुठ के पूल नित कर नित उगाही आर उडाही।

श्याम सुन्दर महतो जीक एगो गजल विधाञ् व्यग्य देखल जाइ-

''बेटीक बनवा पुरा लेकी
ठाय-ठाय कुटतो ढ़ेकी
धरें राखा बनाञ् बोकी
तबे करतो चुल्हा चाउकी
बेटीक काम चुल्हा फूंका
पढ़ले लिखले मारा मूका।''

एगो आर पटतइर देखल जाइ-

जमीन बेच बहरिया हाथें
फाइदा पारबे जाइदा
बेचेक खातिर जोगवल हथ
हमनिक बाप दादा।
कते करबे हार-फार
कोडी कुदाइर कादा
हाथें नकद टाका रहलें
खाएक-पिएक जादा।

हास्य-व्यंग्य के कवि रूपें रामसरण विश्वकर्मा जीक एगो परमुइख ठांव हे खोरठा साहितें। इनखर एगो बेस पटतइर देखल जाइ-

जते हता बड़-बड़ गुंडा, एम.एल.ए सांसद बइन गेला
जते हला छोट-छोट गुण्डा, मुखिया सरपंच बइन गेला

गजाधर महतो प्रभाकर जीक एगो व्यंग्य कविता देखल जाइ-

खादी पुछल खाखी से, हमनिक दुइओ में मेल काहे
खाखी कहल हमनि दुइओक नाम 'ख' ले

हमनि आम आदमी के खाइ जा ही से ले

सुकुमार जीक एगो व्यंग्य गीत देखल जाइ–

चुइल राखे झापर–झुपुर
माखञ् नाञ् कबहुँ नेल
पिंध के बेल बटन नूनू
बेंग निअर फूइल गेल

ई रकमें व्यंग्य उपर छीट–पुट ढइर रचना पावल जाहे खोरठा साहितें।

चलते–चलते श्रीनिवास पानुरी जीक एगो व्यंग्य कविता देखल जाइ जे 'दिव्य–ज्योति' पतरिकांञ् 1954 ईस्वी छपल हइ।

भउजीक हमर चलन भारी
धोवे खोजय साबुनें तरकारी

प्रो. नीलकमल जीक एगो रचना देखल जाइ–

जोदि मोरे साइस हमर
बावें दहिने पाठा
माञ् कालिगो हमर विसवास राखा

निष्कर्ष– ई तरी हमनि कहे पारि जे खोरठा साहितें फिंगाठी साहित रूप के एगो ढागा–ओसार आर तलिआल परम्परा हइ।

— — — — — —

खोरठा पइदेक विकास

पइद बा 'पद्य' साहितेक एगो भेद हके। पइद के काइब कबिता, गीत आदि नाम सेहुँ जानल जाहे। एतने नाञ् एक समइये तो ई 'पद्य' बा काइब कबिता टा साहितेक 'पर्यायवाची-' रूपें जानल जाहल। कीलेकि आगू लोक बोलथ नाञ् बिचकुन गावथ-। सामाइन बोल-चाल टावहुँ एगो लइ-ताल पावल जा हल। मनेक सुख-दुख टा बेरोक-टोक आपन्हीं आँखेक डहरें बा रावें-रागें मुँह-ले बहराइ जा हल। भासा आर साहित के बिद्‌वान गुलाक कबिता बा पइद के बारे एहे मान्यता हे। तबे तो कबिताक अंग्रेजी परिभासांञ् कहल गेल हे। Poetry is the Spontaneous out burst of powerful inner feeling कबिताक बारे कोन्हों कबि कहल हथ-

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
ढुलक आँखों से चुप-चाप, बही होगी कविता अनजान।"

तभीं तो तमसा नदीक घाइरें ध्यानमग्न रिखि बाल्मिकी कोन्हों ब्याध-शिकारी के तीर से घायल क्रौंची के 'आर्तनाद' सुइन के रिखि के अंतर टा, हिरदइ टा हिल गेलइन आर उनखर मनेक दुख स्वत: (Spontaneously) मुँहले बहराइ गेलइन-

"मा निषाद प्रतिष्ठाम्, त्वमगम शाश्वती समा
यत्क्रौंचा पक्षिणा मिथुना देक, मवधि काम मोहिताम।"

अइसने एगो कबिता

मेनेक आदमीक सुख घरिक कुरचइनी आर दु:ख घरिक, मनेक गुमाइर टा बेगर ककरो कहले कबिता रूपें फुइट बहराइ जाहे। ई भाभें कहल जाइ पारे कि कबिताक जनम आदमीक जनम के कहनी हके।

हिआँ पइद बा कबिता बा गीत के आदिम आर लोकरूप टाक चरचा हमर विसइ नाञ्। हमर बिसइ हे खोरठाक आधुनिक बा सिस्ट साहितें पइदेक बिकास।

खोरठाञ् परिनिष्टित साहित लिखेक परंपरा के आरम्भ रामगढ़ राइज के पाँचवी पीढ़ी के राजा दलेल सिंह (दलसाह) से मानल जाइ पारे। ई 'शिव-सागर' नाम के एगो महाकाइब के रचना करल हथ जे 700 पृष्ठ के हल जकर में 12000 दोहा आर चौपाइ हलइ एकर टावान मिल-हइ। ई शिव सागर के रचना कालेक बिसइयें कबिजी बुझवइल रकम एगो कबिताञ् लिखल हथ तकर से पता चल हे कि उन समइ हलइ 1757 संवत साल। ई समइ टा हलइ औरंगजेबेक शासन काल।

इनखर आर तीन गो रचना पावल जा हे।

(1) राम रामरसार्णव

(2) राज – रहस्य

(3) गोविन्द लीलामृत

गोविन्द लीलामृत के एगो पद के देखल जाइ–

"सुमिरहुं श्री जगरनाथ, भजिलेहुँ बैजनाथ
जमको का करे।
लेत नाम लेगिहें हरिहरे सरिख
नाहक न चिन्ता का करे।" (गोविन्द लीलामृत)

पदमदास

ई रामगढ़ राजा दलसाह के आसरित कबि हलथ। पदमदास के राजा दलसाह के बेटा रूद्रसिंह के पढवेक जिमेवारी हलइन। ई रूद्र सिंह के पढ़वेक लाइ 'हितोपदेश' के पइदें अनुवाद करल हलथ। इनखर एगो आरो रचना – 'काव्य मंजरी' के टावान मिल–हइ।

रूद्रसिंह

रामगढ़ राजा दलशाह के बेटा हलथी रूद्रसिंह। राइज पाइटें उनखर मन नाञ् लाग हलइन। इनखरो मन गीत आर कबिता लिखे आर भगति भावनाञ् रमल हलइन। भरखर जवानी घरी ई आपन बाप से अनुमति लइके सनिआसी बइन गेला आर काँसी जाइ के बास करला। इनखर एगो रचना 'ज्ञानसुधाकर' के पता चलो हइ।

मेनेक 16 वीं–17वीं सताब्दी के खोरठा शिष्ट साहित के आरंभ मानल जाइ पारे। आर एहो कहल जाइ पारे कि खोरठा ष्टि साहितेक जनम राजा घारें भेलइ। थपाइ–थुपुइ खेलना कुदनाउ टा राजा घारहीं भेलइ। खोरठा साहितेक काल विभाजनें एकरा प्राचीन आदिकाल मानल जाइ पारे।

प्रवृति

ई काल के प्रवृति हलइ : धरम–करम, भगवान–भगति। जे घरी राजा दलसाह आर उनखर राज महलें खोरठाञ् कबिता हव–हलइ, सेटा हलइ हिन्दी साहित के रीति कालेक सुरू आर 'भक्तिकाल' के निंझ–निंझउती। सइसे हिन्दी साहिति के 'भक्तिकालीन' 'भक्ति प्रवृति' के हिआँ देखल जाइ पारे। संगे–संगे 'रीतिकालेक' 'रीति प्रवृति' केरो दरसन छाँटे–बेड़े हव हइ। दलसाह के 'राज–रहस्य' आर पदमदास के 'काव्यमंजरी'

काइबें एहें रीति प्रवृतिके देखल जाइ पारे। तइओ ई कालेक पवृतिगत प्रधानता हलइ भाव आर भगति के।

एकर बादें एक दू बछर नाञ् लगातार डेढ़ सउ बछरों ले बेसीक माँझे कोन्हों बोड़ खोरठा रचनाक टावान एतमना बड छेतरें नाञ् भेंटा हइ। जरूर लिखल गेल हवत। सुभीता नाञ् रहेक चलते आर खोज आर सोध काम ई दिसाञ् नाञ् हवेक चलते कोन्हों रचना के आर रचनाकार के टावन नाञ् मिल-हे। ई काल के खोरठा साहितेक 'सुप्तकाल' कहल जाइरे किन्तु इटा खोरठा साहित के विकास के अबोहेला हतइ जोदि एकर सुप्त काल कहल जाय।

एक ढांगा समइ के पेछुमेनेक 19वीं सदिक मांम्मा-मांमी कुछ रचनाआर रचनाकारक सवान मिल-हइ जे रंग-के आर ओखनिक रचनाक पता लाग हे। ऊ सब रचनाकारेक नाम हइन:

(1) तितकी राय	(4) भवप्रीता
(2) गांगू राम	(5) चामूकमार
(3) हाड़ी राम	(6) चोपकी नचनी

मकिन ई सब के कोन्हों एगो गोटा रचनाक पता नाञ् चल-हइ। ई कबि गुलइन तो ढेइर गीत-कबिता रचल हथ मकिन ई सभेक गीत-कबिता बा रचनागुलइन एक ठावें जोहड़वल बा संगरह रूपे नाञ् भेंटा हइ। जोदि कहीं एक-दू गो भेंटइबो करे तो ऊ हाथेक लिखल कोपिं भेंटा हे जे आइझ छपेक बाट देइख रहल हइ। मकिन ई सभे कबि गुलइन के कबिता आर गीत लोकेक कंठें बा मगजें बइसल हइ आर एहे परमपराञ् अखनुँ बाँचल हइ आर लोक बड़ी सहजें ई बात के स्वीकार करो हथ कि इ फलना कबि के गीत लागइ।

तितकी राय जाइतेक भाट हलथ आर आसु कबिता टटका टटकी, चाँड़-चुड़े कबिता जोरेक गुन इनखर ठीन हलइन। सनसनउआ फिंगाठी (चुटीला व्यंग्य) इनखर कबिताक मुइख सइली हलइन। इनखर ई 'व्यंग्य' सइली टा लोकें मने एतना परभाव छोड़ल हल कि जे कोन्हों लोक कोन्हों 'फिंगाठी' बइजवेक चेष्टाओ करथ तो ऊ सभेक नाम 'तितकी राय' पइर जा हलइन।

गांगू राम आर हाड़ी राम, कृष्ण भक्ति धाराक सिंगार रकम गीत जोइर जाइर के नचनी नचवेक आर सामंत जमींदार के रिझवेक काम कर-हलथ।

मेनेक खोरठा सिष्ट साहितेक जनम राजा घरें भेलइ आर सौ साल पेछु ऊ राजा आर जिमिदार के गोड़इती करे लागबा।

आधुनिककाव्य

(क) खोरठा साहित के नवजुग-

मोटा-मोटी एक-डेढ़ सौ साल तइक लगाइत मउखिक रूपें सिंगार-पटार, कृष्ण-गोपिक रास-लीला आर भगवान भगति बिसइयें गीत-नाद जोरेक आर गावे-नाचेक परमपरा चलते रहलइ, मकिन बीसवीं सदीक तेसरका दसकेक निझनिझउती आर चउथा दसकेक सुरूआती मेनक 1940-45 के मांझा-मांझी हजारीबाग जिलाञ् विसुनगढ़ गाँवेक (शीर्षक) 'व्याकुल' के घरें खोरठा कबिता एगो नावां रूपें बा अवतारें जनम लेलइ आर ओइसने किलकारी मारे लागलइ शर्मा जीक अंगनाञ्। मेनेक शर्माजी रीझ-रंग, भगवान भगति, आदि से हइट के निछु सामाजिक बिसइ के कबिता के बिसइ बनाइ के रचना करे लागला। इनखर कबिताक मुइख बिसइ हलइ : अषिक्षा, कानापतियार आर देसभगति।

इनखर एगो कबिताक पटतइर देखल जाउँ-

डाँड़े धोती, काँखें पोथी,
हमर बाबु, हमर सोना,
हमर सुगा पढ़े गेल,
सुनगे अकली, सुनगे खगिया
ऊँच करेजा हमर भेल।

एहे रकम ढेइर अइसन रचना व्याकुल जी करल हथ। इनखर रचना देस-भगति भावनाञ् टाले-टिपे भरल रहो हलइन। अइसन सुने में आइल हे कि अंगरेजी सासन इनखन ढेइर अइसन रचनागुलइन के जब्त कइर लेल हइलन। एगो जानेक जुकुर बात हइ कि व्याकुल जी हिन्दी, उर्दू आर खोरठा भाखञ् रचना करो हलथ। इनखर नाम हिन्दी साहितेंहुँ बड़ी आदरे लेल जाहे। ई हिन्दी कबि जानकीबल्लभ शास्त्री के समकालीन रहो हलथ आर इनखर रचना जानकीबल्लभ शास्त्री सम्पादित 'बेला' नामेक पतरिकाञ् छपइत रहो हलइन।

श्री निवास पानुरी

खोरठा साहितेक पुनर्जागरण काल के बड़का पुरोधा रूपें श्रीनिवास पानुरी जीक नाम बड़ी आदरे लेल जाहे। की ले कि उ बींसवीं सदीम छठा दशक के ओसरउती (1950) से लइ के नब्बे दसकेक माँझा-माँझी 1986 तइक एक लगाइत साहित आर तकर सामाजिक सरोकार के लोकभाषा खोरठाञ् उखरइते गेला। ई माँझे उ दर्जन भइर ले उपर किताब साहितेक भिनु-भिनु बिधाञ् गइद, पइद लिख छोड़ला। उनखर मुइख

रचना हइन (1) बालकिरीन (काइब), (2) दिव्यज्योति (काइब) (3) रामकथामृत (काइब), (4) मेघदूत (अनुदित काइब), (5) मालाक फूल (काइब), (6) उद्बासल कर्ण (नाटक), (7) चाभी-काठी (नाटक), (8) तितकी (कबिता संग्रह), (9) आँखिरक गीत (कबिता संग्रह), (10) सब ले बीस (कबिता संग्रह) (11) समाधान (काइब), आइझेक गीता (कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो के खोरठा अनुवाद) आरो-आरो। एगो आर बात क टवान मिलो हइ जे 1951 इसवीं 'तितकी' नामेक एगो खोरठा पतरिका पानुरी जी आपन संपादने बहरावेक सुरू करल हलथ।

पानुरी जीक कबिताक जइर भाव रह-हलइन झारखंडेक धरतीक 'समृद्धि' तइयो लोकेक अटट गरीबी, सोसन आर तकर से मुक्ति लाइ मनेक छटपटी, 'अस्मिता बोधा आर तकर लागिन 'संघर्ष' खातिर आहवान आदि इनखर कबिताक जइर-भाव रह हलइन। जोदियो पानुरी जीक सुरूआती बेराक अनुबाद रचना 'मेघदूत' आदि कटि दोसर सिंगार 'मनोवृति' के रचना हइ,ख मकिन पानुरीजीक स्थायी भाव तो प्रगतिशीलताइ आर अतिमगौरवबोधा-टाइ रहो हलइ। उनखर दुचाइर गो कबिता क देखल जाउ-

मानभूमेक माटी तरे,
हीरा, मोती, मानिक फरे।
ताउ पेटेक जालाञ्,
मानभूमेक लोक मोरे।
****

खइट खइट दिन राइत,
ककर नखइ पेटें भात।
ककर नाइ देहिं लुगा,
ककर कांपे जाड़े गात।
ककर मुँहले बहराइ एखन,
छोलल-छोलल बात।।
****

नाच बाँदर नाच रे,
मोर चाहे बाँच रे,
ओकर खातिर उँच दलान,
तोर खातिर गाछ रे।
नाच बाँदर नाच रे... ।

दिव्यजोति-व्यिज्योति

पानुरीजीक व्यक्तिगत गरीबीक छापा 'दिव्यज्योति' काइबें फुइट बहराइल हइ। इ

बात आयाँ हइ कि गरीबी मरते दम तक उनखर पीछा नाञ् छोड़ल हलइन। एकर एगो बानगी देखल जाउ-

जी ललचे देइख, कदु दादा छानीं।
मन करे कखन ओकरा तोइर के आनी।
****
पहुना देखि लागे दाँत,

नवजुगेक कबिताक प्रवृति-

नवजुगेक पइदेक मुइख सुर रहे झारखंडी माटीक 'प्रशस्ति गान' संगे-संगे लोकेक अटट आर नासिरूआ गरीबी, दलिदरी आर तकर से मुक्ति लाइ 'संघर्ष' करेक आह्बान। कुल मिलाय के नवजुग के प्रवृति 'आत्मगौरवबोधा' आर प्रगतिशील बा आगु बाढ़ेक कामना।

(ख) पुनर्जागरण काल-

इ जुगें झारखंडेक दइखनी पठारें भासा-आर संसकिरतिक अस्मिता बोधा आन्दोलन के रूप लिएक सुरू कइर देल हलइ आर तकरा हवा मिललइ आकासबानी राँची के स्थापना से। जहाँ से झारखंडी भासा - आदिवासी-सदानी सभे भासाञ् कार्यक्रम संगे संगे कहनी-कबिता, गीत-नाद परसारित हवे त्यागलइ। करे-करे ई आन्दोलन आँधीक रूप धरे लागलइ। मकिन ई आँधी एखन तइक उत्तरी झारखंडे नाञ् पहुँचल हल। एकर माने ई बात नाञ् हइ कि उत्तरी झारखंडे खोरठा भासा-भासी गुलइने माय, माटि आर भासा-संसकिरति के अस्मिता-बोधा नाञ् हलइन। किलेकि हिआँ-आगुवे कहल गेल हइ जे खोरठा भासाञ् भुवनेश्वर दत्त शर्मा 'व्याकुल', श्रीनिवास पानुरी, ए.के. झा, विश्वनाथ नागर, विश्वनाथ दसौंधी 'राज' आदि खोरठा भासाञ् लिखेक सुरू करल हलथ आर ई सभेक रचना भिनु-भिनु पत्र-पतरिकाञ् प्रकासित होव हलइ आर आकासबानी राँची से परसारित हव हलइ। ए.के. झा जी दछिनी झारखंड के भासा-संसकिरति आन्दोलन' के उत्तरी झारखंडे लानेक उता-सुताञ् ढेइर दिन से लागल हलथ आर इटा पुरा हवो हइ राँची युनिवर्सिटी में 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग' के स्थापना आर हुँआ खोरठा भासाक पढ़ाइ सुरू हवेक बाद से। तकर पेछु तो ई भासा-संसकिरति आन्दोलन गोटा उत्तरी झारखंड के टपटपाय के टाइप लेलइ। ई जुग के खोरठा साहित समेत गोटा झारखंडी साहित लाइ पुनर्जागरन के जुग बिदवान गुला मानल हथ। इ जुग हलइ सत्तर के दसक से सुरू भइ के झारखंड अलग राइज बनेक आगु तक एकर सीमा पहुँचो हइ। ई पुनर्जागरन के जुगें खोरठा समेत झारखंडे सब भासाञ्, गइद-पइद आर साहितेक सभे विधाञ् खूब लिखल गेलइ। ई जुगें लिखाइल पइद बिधाक मुइख रचना गुलइन हेंठे देखल जाउक।

1. **खोरठा काठें पइदेक खंडी**- ई ए. के. झाजीक लिखल प्रगतिशील, मानववादी कबिताक संग्रह्व हके। हिआँ जोहड़वल कबिता गिला के झाजी 1868 से 1983 के माँझामाझी लिखल हथे। ई कबिता गुला किताब रूपें छपल के आगु भिनू-भिनू पत्र-पत्रिका, आकाशबानी आदिं छपाइल आर प्रसारितो भेल हलई। किताब 1983 इस्वीं छपलइ।

2. **रूसल पुटुस**- ई भिनु-भिनु कबिक रचना के संग्रह हके। शिवनाथ प्रमाणिक एकर सम्पादक हकथे आर ई 1985 इस्वीं छपल हे। हिआँ जोहड़वल कबिता गिलाक प्रवृति बा स्वर झारखंडेक मुक्तिक कामना, आपन पछानेक (अस्मिता) कामना, मानववादी आर प्रगतिशील बिचार हके।

3. **दामोदरेक कोराञ्**- ई एगो ललित खंड काइब हके। रचनाकार शिवनाथ प्रामाणिक जी हथ। प्रकाशन वर्ष 1986 हई। इतिहासेक आंटा-पाटाव लेताइरें झारखंडेक शोसन आर संसकिरतिक संकट के देखवल गेल हइ इ खंड काइबें।

4. **एक मौनी फूल**- ई किताब संतोष कुमार महतो जीक एक दर्जन ले बेसी प्रगतिशील, यथार्थवादी कबिता गुलाक संग्रह हके। ई किताब 1987 इस्वीं छपल हे।

5. **जयदेव झुमइर**- अनुवादक शेखर गँवार, बाम्हनडीहा, धनबाइद के हकक। प्रकाशन वर्ष 1987 हइ। ई किताब टा जयदेव के गीत-गोविन्द के खोरठा अनुवाद हकइ। अनुवाद बड़ी सटीक भेल हइ आर अनुवाद साहितेक एगो प्रमुख रचना रूपें पछान हइ एकर।

6. **कादो फूल**- रामगढ़ेक धनपत महतो 'गणपति' कर कबिता गुलाक संग्रह हके ई किताब। एकर प्रकाशन खोरठा ढाकी छेतर कमिटी से भेल हइ 1986 इस्वीं।

7. **एक पथिया डोंगल महुआ**- सम्पादक : संतोष कुमार महतो, जैना मोड़। इ भिनु-भिनु कबि गुलाक प्रगतिशील कबिताक संग्रह हके।

8. **समाजेक सरजुइतेक निसइन**- ई खोरठाञ् प्रबंध काइब हके। ए.के. झा जी एकर रचनाकार हथ। इ एगो प्रगतिकामी, मानववादी काइब हके।

9. **पुटुस फूल**- ई डॉ. गजाधर महतो 'प्रभाकर' के कबिता गुलाक संग्रह हके।

कबिताक विषय हइ-

समाजें पसरल भ्रष्टाचार आर विसंगति।

10. **पइन सोखा**- ई खोरठा के नामजइजका गवइया सुकुमार जीक लोक विषयक गीत गुलाक संग्रह हके। मोटामोटी संकलन के सभे गीत छपाइक आगु आकाशवाणी से प्रसारित भइ चुकल हे।

11. **बेलन्दरी**- सम्पादक - शांति भारत। लोक विषयक गीतेक संग्रह हके इ किताब। मोटा-मोटी सोभे गीत गुला छपाइक आगू रेडियो से प्रसारित भइ चुकल हे।

12. **डीड़ाक डोंआनी**– रचनाकार वंशीलाल वंशी। इ एगो प्रबंध काइब हके जकर में औद्योगीकरण के ओजहें बाढ़ल आर्थिक संकट, सांस्कृतिक संकट आर विस्थापन के दरद के विसइ बनवल गेल हे।

13. **सइंतल साड़ा**– रचनाकार : तृष्ण चन्द्र दास 'आला'। ई व्यक्तिगत कबिताक संग्रह हके। इ कबितागुलाक स्वर प्रगतिशीलता, यर्थाथवादिता के हइ।

14. **खोरठा गीत संग्रह**– रचनाकार – शिवनन्दन पाण्डे 'गरीब'। ई रचनाकार के एकल गीत के संग्रह हके। लोक जीवनेक सुख-दु:ख विषय हे ई गीत गुलाक।

15. **कोरइया फूल**– धनवाइदेक बासुबिहारीजीक इ सरस, सिंगार भावेक गीत के संग्रह हके।

16. **बोनेक बोल**– खोरठाक भिनु-भिनु कबि गुलाक प्रगतिशील कबिताक संग्रह हके इ किताब। रमणिका गुप्ता एकर सम्पादन करल हथ।

17. **बिरसा भगवान**– जननायक बिरसाक भगवान बनावेक लाइ ई प्रबंध काइब टा धनपत महतो 'गणपति' जी क एगो प्रबंध काइब हके। बिरसाक जीवन चरित के अलंकारेक ढढ़नचे, अतिशयोक्ति फेचका फाँदाञ् पेंदला बाते बखान करेक चेष्टा करल हथ कबि जी।

18. **कबिता पुराण (बाल कबिता)**– रचनाकार : ए.के. झा। इ प्रगतिशील, आगू बढ़वइया कबिता गुलाक संग्रह हके। समाजेक विसंगतिगुलाक बालक छउवाक तोतरा बोलीं, नावां उपकरणे – साना फानाञ् बड़का चीज के उपरें अंगरी उठकेव चेष्टा करल हथ झा जी, ई किताबें।

19. **मुक्तिक डहर (प्रबंध काइब)**– रचवइया : श्याम सुन्दर महतो 'ययाम'। एगो मुक्ति संघर्षेक जोद्धा शक्ति महतोक हत्या आर झारखंडी सोसन के बेथा-कथा हकइ इ प्रबंधा काइब।

20. **तातल हेमाल**– लोकप्रिय कबि शिवनाथ प्रामाणिकजीक प्रगतिशील, यथार्थवादी कबितागुलाक संग्रह हके इ किताब।

21. **गीतांजलि (खोरठा अनुवाद)**– अनुवादनक : मनमोहन पाठक। ई रविन्द्रनाथ ठाकुर के विश्वाृति 'गीतांजलि' के खोरठा अनुवाद हके। पाठक जी बड़ी बेस भावें गीतांजली के मूल भावना के खोरठाक शब्दें उखरवेक स्तुत्य चेस्टा कलल हथ।

22. **भीस्मेक सत**– ई काइब गोमों भेंडरा निवासी श्री फूलचन्द महतो जीक रचना हके। महाभारतेक भीस्म के की सत् हल,ख सेटा उखरवल गेल हे इ काइबें।

23. **मइछगन्धा (काइब)**– शिवनाथ प्रमाणिक – महाभारत जुद्ध के आगुक कथा के आधार बनाइ के लिखल।

24. **ओंगठा (काइब)**– महेन्द्र नाथ गोस्वामी – एकलव्य के कथाक अधारें लिखल।

25. **बाँवाँ हाथेक रतन**- सुकूमार - भीमराव अम्बेदकरेक जीवनी पर आधारित।
26. **माराफारी**- जनार्दन गोस्वामी - बोकारोक उत्पत्ति आर बिकासेक कथा।
27. **सुलक साय**- विश्वनाथ नागर - कर्ण के जीवनी पर आधारित।
28. **रामकथामृत (काइब)**- श्रीनिवास पानुरी - खोरठाक नवजुगें लिखल काइब।
29. **समाधान (काइब)**- श्रीनिवास पानुरी - खोरठाक नवजुगें लिखल काइब।

आरो-आरो।

खोरठाञ् लिखेक टा जारी हइ। डंड़ाइल नाञ् हइ, थिराइल नाञ् हइ। आइझ तो अइसन जोस चढ़ल हे जे पइत महिनाञ् एक दूगो किताब बहराइये जाहे।

निष्कर्ष-

आइझ से अढाइ सौ बछर आगु खोरठा सिष्ट साहित के जे नेंव धराइल हलइ रामगढ़ेक राजा दलेल सिंहह दलसाह के हाथें, सेटा एखन तक लगाइत बाढ़ते जाइ लागल हे। कटि माँझा-माँझी डँड़ाइल हल, सुस्ताइल हल, कटि जिराइल हल, मकिन निझाइल नाञ् हल, मोरल नाञ् हल। हाँ परिबेस, परिबेसेक रंगें बिसइ बा प्रवृतिटा बदलाइल आइल जरूर। इटा तो हबे करतइ कीलेकि साहित तो हके समाजेक दरपन। परिवेसेक साहित। तो जे कालें जे रकम के परिस्थिति समाजें रहइ सेहे रकम के साहितेक प्रवृतिओ बनलइ। अइसे तो झारखंडी संस्कृति के मूल तत्व हइ 'श्रम', 'समता', 'सह-अस्तित्व', 'सहयोगात्मकता' आर 'प्रकृतिभिमुखता'। झारखंडी संस्कृतिक ई गुण टा सोब कालेक कबिताञ् देखल जाइ पारे। कुल मिलाइ के आधुनिक खोरठा साहित 70 के दशक से सुरू हइ के विकास के डहरें गड़गड़उले बाढ़ल जाइ रहल हे आपन 'प्रगतिशीलता', 'यथार्थवादिता', आदिक साना-फाना लइको। कम्प्यूटर आदि खुजल कर बादें किताबेक छापा-छुपी काम टा ढइर आसान आर सस्ताउ भइ गेल हइ। तकर परभावें किताब छापाक कामें पइर रहल हे। आगुक तुलनाञ् एखन किताब छपवेक टा आसान हइ। सेइ लागिन एखन खोरठाञ् खुब गीत, कबिता लिखलो जाय रहल हे आर छपियो रहल हे। एखन दरकार हइ खोरठा भासा साहितेक 'प्रगतिवादी', 'मानववादी', 'यथार्थवादी', संघर्षचेतना' आर आत्मबोध के सूर के बचाइ राखेक। कहीं इ गुण टा सिराइ नाञ् जाय, सेटाक लागिन हामिन के सचेत रहेक दरकार हइ।

खोरठा कबिताञ् समाजेक सइर-सेरेसताक सुर-

साहित शब्द के जनम सहित श्ञब्द से भेल हे। ई सहित सबद में 'स' उपसर्ग हके। जकर माने हव हे साथ-साथ आर हित के माने हव हे, भलाइ, कल्यान आदि। तब साहित के माने भेल कल्यान के साथ बा भलाइ के साथ। संस्कृत भासाञ् साहितेक बिसइए कहल गेल हे-

सहितस्य भावः साहित्यम्।

हितेन सह् सहितम् तस्य भावः साहित्यम।।

माने साहित वइसन शब्द-रचना के कहल जाइ पारे जकर में समाज हित, लोक हित के भाव अखंड रूपें, आवश्यक रूपें, आयाँ रूपें पावल जाहे। एकर माने साहित लिखेक उदेस टांञ् समाज हित, लोक हित, मानुस हित आर जुग-जुग ले साहित एहे समाज हित बा समाज कल्याण के काम करल आइल हे। समाज के बेस डहर देखावे में, समाज के आगू बढ़ावे में, समाजें कोन्हों लोक हित लाइ करांति लावे में साहित के मुख्य भुमिका रहल आइल हे। सइए लागिन चीन के महान कबि 'लू सुन' साहित्य के उदेस टाक उपरें कहल हथ-

"समाज के सुपट सेरेसताञ् में सरिआवेक दरकार हइ साहित के, किले ना साहित लागे समाजेक सेरेसता।"

लू सुन आरो आगू कहल हथ कि-

"साहितकार जदि समाजे बेस बदलाव नाञ् आने पारे तो सेटा साहित नाञ्।' सरिता नामेक हिन्दी पत्रिका के सम्पादक श्री विश्वनाथ जी कहल हथ जे-

"समाजे की हइ बा कि हव हइ सइटा साहित के नाञ् सुझाइ के साहित के सुझवेक चाही जे समाजें की करे हतइ।'

मैक्सिम गोकर्मी कहल हथ कि-

"जे रचना में सुधे सुख सुविधा, सिंगार-पटार आर लबरा लुझढ़ के बरनन रह हे, सेटा साहितेक रूप बा आंञा साहित लागबे नाञ् करे।'

ई तरी गोटे दुनिआई के बड़का-बड़का बिद्वान आर साहितकार गुलइन साहित के समाज के प्रति दायित्व आर सहजोगी, हितकारी भूमिका के मानल हथ जे सगरे समाज के सब सवांग के सरिआइ के संगे साइट, सपटाई आर सम्हराइ, के सुपट, सोझा, सइर, सरगतवा, सेरेसताञ्, सगरठवे वाला जिगिस्ताक दाइ हइ साहितकारेक मथें। समाज के सरियावे, सत्तावे आर संगठावेक टा लागइ साहित के सही काम।

खोरठा भासा जे गोटा उत्तरी छोटानागपुर आर संथाल परगना के लगाइ 34 हजार वर्ग किलोमीटर पूरब से पश्चिम दुमका से मनातु तक 221 किलोमीटर आर उत्तर से दक्षिण बंदरचुवा से बुटी तक 150 किलोमीटर के माँझा-माँझी डेढ़ करोड़ लोकेक लोकप्रिय भासा खोरठा के साहित भी साहितेक आपन सार्थकता के पुरा करो हे। माने 'लोक कल्याण', 'समाजकल्याण', 'समाज सुधार' आर उत्थान लाइ समरपित हे। कोन्हु भासाक साहित आपन संसकिरति के 'प्रवक्ता' मानल जाहे। माने साहितें संसकिरतिक छापा पवाइल जाहे। दोसर भाभें कोन्हों संस्कृति के अभिबेकति के माइधम तकर भासा आर साहित हवो हे। खोरठा भासा बा झारखंड छेतरेक जे संस्कृति हे, तकर मुइख तत्व हे 'श्रम', 'समता', 'सामूहिकता', 'सहअस्तित्व', 'सहजोग' आर 'सहकारिता'। आर इ

तत्व गुला के जोग के माने हे एक समुचा सइभ आर 'सुसंस्कृत' समाज। खोरठा साहितें झारखंडी सँसकिरतिक इ बेस तत्व टाक झलक सोब-समइ देखल जाइ पारे। खोरठा साहित समाज कल्यान लाइ समरपित हे माने खोरठा साहितेक प्रवृति टाइ हके माइ, माटी आर मातरिभासा आरमनुस। जे सुधे मनोरंजन नाञ् करे, बिचकुन मानव रंजन बेसी करे। खोरठा साहितेक रचना गुलीन ई भावना से भरल हे। खोरठा साहितेक श्रीनिवास पानुरी, भुनेश्वर दत्त शर्मा 'व्याकुल', ए. के. झा, श्याम सुन्दर महतो 'श्याम', शिवनाथ प्रमाणिक, शांति भारत, शिवनंन्दन पांडे, चितरंजन 'चित्रा'स, वासुदेव महतो, गजाधर महतो, परितोस प्रजापति, वंशीलाल वंशी, महेश गोलवार, सुकुमार, दीपक, दिनेश दिनमणि, गोविन्द महतो 'जंगली', कृष्ण चन्द्र दास 'आला', विश्वनाथ दसौंधी 'राज', विश्वनाथ नागर, उत्तम पियुस, धनंजय प्रसाद, मनमोहन पाठक, फालगुनु मरिक कुशवाहा, आर कते-कते गीतकार कबि कथाकार, गद्यकार, उपनयासकार, नाटककार आदि आपन- आपन रचना के माध्यम से समाज के विकृति, विसंगति के दूर करे आर समाज के उठाय के सुपट डहरें डहरावेक चेष्टा कइर रहल हथ। खोरठा साहितेक गुँगु (पितामह), श्रीनिवास पानुरी जी जे एखन दुनिआइएँ नेखथ, बड़ी दिन आगुवे आपन एगो कबिताञ् समाजेक लोक के ललकार के आर उलाहना देइ के कहल हथ-

"एक ना एक दिन हमर बात माने हतो,
गोड़ेक कांटा मुहें धइर टाने हतो।"

माने जिनगी टा फुलेक सेज नाञ्, हिआँ तो सुपट मेहनइत करेक दरकार, तब तो समाज आगु बाढ़े पारे। खोरठाञ् एगो आहना बा कहावत हे- "काम सुन्दर कि चाम सुन्दर।" माने परिसरम के, मेहनइत के महत्व हे सुन्दर चाम के नाञ्। माने गुनगर आदमी जोदि चेहराँञ् सुन्दर नाहिओ हे तइयो ओकरे पुछ हे, मकिन बेलुरा लोक जोदि चेहरा से बड़ी सुन्दर दिसे तइयो ओकर पुछ नाँञ। परिश्रम बा मेहनइत कोन्हों समाज के उपर उठावे पारे। किन्तु आइज सइ परिसरम के प्रतिष्ठा नाञ् भइ के एखनेक समाजें चाम के सुन्दरता के बेसी महत्व देल जाइ रहल हइ। सुष्मिता, ऐश्वर्या राय, के 'प्रतिष्ठित' करल जाइ रहल हे, 'विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता' आयोजित करल जाइ रहल हे। टोला टाटीं, बियुटी पारलर खोलल जाइ रहल हे। आर परिश्रम करवइया लोक के हेला करल जाइ रहल हे। एखन 'कार्य-संस्कृति' नामेक चीजें हेराइ गेलक आर खाली उपरी डिंग-डाग, फटक, फुलाइ आर ढढनच के बोल-बाला भइ गेल हे आर इ प्रवृति समाज के डुबवेक डहर हके। तकर लाइ खोरठा के प्रसि) कबि आर साहितकार श्याम सुन्दर महतो जी आपन एगो कबितांञ्, कहल हथ-

"चाम सुखाय कामे तवो, सोमरिक हवे हेला,
देही देखावे सुष्मिता-ऐश्वर्या, तकर खातिर मेला।

देखा जुगे खेला।

फइर आगू कबि कह–हथ–

"देसेक जते दामी जिनीस, देहीक दायें खरच,
कामेक बदल सिखली सुधे, देही देखवेक ढढचन।

सुष्मिता– अधपुरवा पिधना गातें, जुग जीते खातिर,
देही देखाय, पिधना उघाइर, भेली जग जाहिर।
देश–देश घुइर भुले, गुल–गुल देही देखाइ।
हाँसीं मानिक, मुक्ता झरे धन देलि डिंगाइ।

सोमरी– सोमरी रकम माटिक बेटी काँदे गरीब घारें।
पेटें भुख, आंखी लोर कुहर–हथ बेजारें,
पखन फोरले बरकइत नाञ् अइसनें देसेक रीत।
देही देखाय लोक भोज के ओहे तिरपित।

सथाञ्–सथाञ् सोचा तनि विचार करा अबरी, महान मानुस एकर मइध सुष्मिता ना सोमरी।

विश्वकबि रविन्द्रनाथ ठाकुर एक ठांवे कहल हथ–

"सोबाइ उपर मानुस मानुस ले उपर केउ नाइ।"

किन्तु एरखन समाजें मानुसेक हेला भइ रहल हे इटा बेस बात नाञ्। सइ टा देख खोरठाक लोकप्रिय कबि विश्वनाथ दसौधीं राज कहो हथ–

"मानुस छाड़ा ई संसारें, नाञ् हे केउ बोड़,
भेद–भावेक पुरना चेथरा, अबरी तोञ् छोड़।
मनेक भितरें कह भाई देखल नाञ् हें की लोर?
मानुस सेवा आपन धरम, अब लगाव जोर
मानुस सेवा से दोसर कोन्हों धरम नांञ् हे बोड़।
भइर जिन्दगी मानुसेक खातिर डहरेंक कांटा तोड़,
ककर घारें चुल्हा ठंढा, ककर घारें फुटल थारी,
ककर माँयेक फाटल लुगा, लाजे कांदे भारी।
अबरी तनी आव रे मानुसेक गीत गाव रे।

ईटा सब कोइ जाने जे देश के लोक निडर साहसी, परिश्रमी, मेहनती, होवल से देस चाहे कतनो छोट हे देखते, देखते कहाँ से कहाँ पहुँच जाहे। किन्तु जे देसेक लोग कामचोर, डरपोक, काहिल हव–हथ से देस के बचवइया केउ नाञ्। ए हे खातिर खोरठा जगतमेक महान साहितकार ए. के. झा. आपन एगो कबिता 'मोरेक लुइर' में कहल हथ–

"मोरेक लुइर सिखा संगी,

बांचेक आपने आइ जइतो,
मोरेक लुइर ले बीच भेलें
इतिहास सचे की बांचे देतो?
मोरेक जकर लुइर भेलइ,
बांचेक ओकरा लोभ नाञ्।
करेक जकरा बाइन भेलइ।
कहेक तरक छोभ नाञ्।"

परिश्रम के महत्व के ए. के. झा. जी आपन उपनिआस 'सइर सगरठ' में उपनिआसेक नायक के मुहें कहवल हथ–

"जे बेबसथा के बचवइया, बढ़वइया तोहिनर मेहनइत करवइया लोक खटते–खटते समाज हित लाइ खइप जाइ वाला जंगली, असइभ, लंगटा, कमीना आदि कहा हथ जब कि आञ् बात तो ई हइ जे जीव मुँह जाँइत के खट्इत, खट्इत खिआइ के सिराइ जाइ वाला हरवाहा, मलकट्टटा, मोट ढोवा, कल कारखानाक कुली आदिक बोलें देस दुनिआइ टा डँड़ाइल हइ। शिक्षा हके आलो। शिक्षा नाञ् भेले गोटे दुनिआइ अंधार। अशिक्षित लोक आइख रहइथूँ अंधरा बइन जा हथ।'

सइ शिक्षा के महत्व के खोरठा जगतेक महान गीतकार सुकुमार जी कहल हथ–

"पुता मुरूख रइह जिबे रे
बिना पढ़ल जिनगी अंधार रे
पढेक तोञ् चेष्टा कर सगर घरी खेल नांञ।
सोना अइसन जिनगी के नरक बाठे ठेल नांञ।

हिन्दी साहिते एगो कबिता हे–

आदमी का शत्रु का शत्रु केवल आदमी ही है।

माने मानुस के केकरो से डर नाञ्। आदमी के जोदि डर हे तो आदमी से। कीलेकि आदमी के आदमियत खतम भइ रहल हे। मानुस जानवर भइ रहल हे। एहे भाव के एगो कबिताञ् प्रसिद्ध कबि डोमन साहु समीर जी कहल हथ–

"आदमी होइ रहल हे बिखार, रहिआ तनी सम्हइर के।
डेगें–डेग उगइल रहल हे जहर, रहिआ तनी सम्हइर के।।
ममुसकिल भइ गेल हे अब चिन्हार आपन पर के,
बड़का से बेसिय लागल हे डर, रहिआ तनी संभइल के।
लाइग रहल हे आइग झन–झन के विश्वास पर
कुकरम से भइर रहल हे डहर, रहिआ तनी संभइल के।"

खोरठा के बगरा, नमजइजका कबि शिवनाथ प्रमाणिक के समाजेक नाना रकमेक

विसंगति आर बेड़ाँइल बेबसथा के उपरें उनखर एगो कबिता के देखल जाइ।

"दान-दहेज बिहा में तेज
लोरें भिजीं गेल सोहागेक सेज
सोनाक थाली, तिलक भारी,
बेटा - बेचाय काड़ा गरू तरी।"

समाजे माटीक लछमी, सरसती, दुरगा, काली के पुजा हव-हे किन्तु साखाइत लछमी, सरसती, दुरगा, काली के दुरदशा के कहल नाञ् जाय। ऐहे विसंगति के उपरें प्रमाणिक जी एगो कबितांञ् कहल हथ-

"जे देश दुरगा पूजा करे
से देसें जनिक पाहुर परें।
माटीक देवी के हवे मान,
बेटी संगे तिलक दान
जे देश लखी पूजा करे
तवो लोक भुखे मरे
सरसती जहाँ जाहत पूजल
तावो मुलुक, मुरूख बनल।"

नर-नारिक समानता के उपरें परमाणिक जीक कबिता के देखल जाए-

"नर-नारी भेद कहाँ
नर जहाँ नारी तहाँ
सिरजन कारी नारीक बतर आना रे
लहर आना रे संगी लहर आना रे।"

अंधविसुआस के उपरें प्रमाणिक जीक एगो कबिता देखल जाउक-

एरे मानुस
ई जुगें कि भुत पवाइ
मानुसें की मानुस खाइ?

ई तरी अनेक कबि साहितकार साहितेक भिनु-भिनु बिधाँए समाजेक विसंगति के विरोध कइर के समाजोत्थान कइर रहल हथ।

— — — — — —

खोरठा गइदेक बिकास

कोन्हों भासा के सुरूआती बेरा के साहित गीत, कबिता आदि पइदें ही पावल जाहे। कीलेकि सभइता के सुरूआती घरी आदमी बइजकथ-बोलथ नाञ् बिचकुन गावो हलथ। सइले संस्कृत, अंग्रेजी समेत गोटे दुनिआइ के साहित के आरंभ गीत कबिताय से भेल हे। जोदिओ लोक सहितें लोककथा टा गइदें केहीं रूप हकइ मकिन हमर अर्थ हिआँ गइद के उखरवल रूप से हे।

खोरठा भासाञ् गइद लिखेक उखरवेक परंपरा बड़ी बादें सुरू भेलइ। मोटा-मोटी 20वीं सदीक चउथा दसक से। मेनेक नवजुग के कबि भुवनेश्वर दत्त शर्मा व्याकुल के खोरठाञ् लिखेक सुरू करला तखन से। मकिन खोरठा गइद विधाक कोन्हों साहित रूप श्री निवास पानुरी जी के पहिल नाटक 'उदवासल कर्न' आर 'चाभी-काठी' नाटक से मानल जाइ पारे। से घरी परब-तिहारें बा आरो कोन्हों दोसर-तेसर अवसरें नाटक बा छइब करे के गाँवें-घरे परंपरा रहो हल। सइ परंपरा के बेताइरें लोकभासाञ् नाटक करेक जरूरत महसुस भेल हतइन आर तबे खोरठाञ् नाटक लिखल गेल हवथ। ई भाभें कहल जाइ पारे कि खोरठाञ् गइद लेखन के सुरूआत नाटक से भेल हे। आर समइ हवे पारे बीसवीं सदीक पाँचवा दसक। तकर पेछू तो गइदेक पइत बिधाञ्-कहनी, उपनिआस, निबंध, संस्मरण, जातरा बिरतांत, शब्द चितर आदि भाखाञ् लिखाइक सुरू भेलइ करे-करे। करे-करे ई ले कीलेकि एखन तइक खोरठाञ् के गइद लेखनेक गति नाञ् हल लेखकगुला के आर संगे संगे पाठको के आदत नाञ हल गइद पढ़ेके। तइयो गीत-कबिताक मांझा-मांझी छांटे-बेड़े खोरठा गइदेक कोन्होनी-कोन्हों रूप के दरसन भइए जाहे। हामें हिआँ खोरठा गइदेक भिनु-भिनु साहित रूप के देखवेक चेष्ठा करल हों।

खोरठा भासा आर नाटक

हामें आगुए कहल हों चे खोरठाञ् नाटक लिखेक सुरूआत गाँवे-घारे, परब-तिहारेग नाटक करेक घरी कोन्हों धांसू नाटक के माँग से भेल हतइ। आर ई धाँसू नाटकेक मांग के आग्रह पुरा भेल हतइ खोरठा जइसन लोकभासाञ् नाटक खेइल के। ई परमपरा एखनहुँ दूर-दराज के गाँवे पावल जाहे आर खोरठाञ् नाटक लिखल जाहे।र भलेहुँ ओकर साहितिक महत नाञ् हे। आर ई तत्कालिक माँग के पूरा करेक लाइ लिखल नाटक के गनती सैकड़ों में जाइ पारे। मकिन अइसन नाटक गुलाक कोन्हों अता-पता नाञ् हइ सइले एखन इगुला खोरठा नाटकेक गिनतीं चघल नाञ् हइ। मकिन एखन दरकार हइ गाँवे-घारे

लिखल अइसन नाटक के खोजे के। हवे पारे संकार-पतारें (कूड़ा-कचरा) हीरा मिल जाइ।

बोकारो से प्रकासित खोरठा पतरिका 'लुआठी' के अंक पन्द्रहें नरेश नीलकमल जी के एगो मनपरवा लेख छपल हइ जकर में ऊ ई बात के कहले हथ कि ऊ श्रीनिवास पानुरी जी के आपन साइकिलें बइठाय के जे गाँवे खोरठा नाटक करेक माँग रहो हलइ, सइ गाँवे लेइ जा हलथ आर हुँवा टीम खड़ा कइर के खोरठा नाटक खेलल जा हलथ। मुइख रूप से पानुरी जीक लिखल 'उदबासल कर्न' आर 'चाभी-काठी' नाटक रह हलइ। आर खोरठा भासाञ् लिखल आर खेलल अइसन नाटक के देखेक लाइ थइ-थइ लोक की जनी की मरद जोहड़ हला आर राइत-राइत भर नाटक देखो हलथ। पेछु पानुरी जीक एहे नाटकगिला से प्रेरित भइ के आरो खोरठा नाटक लिखल गेलक।

ई भाभें पानुरी जीक नाटक 'उद्‌बासल कर्न' आर 'चाभी-काठी' नाटक के खोरठा नाटक लिखेक परंपराञ् पहिल मानल जाइ पारे।

उदबासल कर्न-

उदबासल कर्न मानें, निंगछल कर्न, हिगरावल कर्न, 'उपेक्षित कर्ण'। महाभारतेक कथाक के एगो मुइख पात्र 'कर्ण' के आधार लइके पानुरी जी आझुक बेवस्थाञ् पसरल भ्रष्टाचार के उपरें अंगुरी उठवल हथ एक बारगी सरल ठेठ सबदें। बिन सहायक क्रियाअक छोटे-छोटे कबितात्मक वाइक से ई नाटकें खोरठाक भाखा के अद्‌भुत परजोग भेल हइ। नाटकेक भाखा सुइन के कोन्हों गरइ खोरठा भाखी के खोरठा से 'मुहब्बत' भइ जाइ तो कोन्हों हइचकेक बात नाञ्। एतेक सरल, हे एतेक ललित हे आर एतेक मौलिक हे उदबासल कर्न नाटकेक भासा। कर्न आर द्रोणाचाइर्जेक माँझे, द्रोण आर एकलइबेक माँझे, बिन बिहाइल माञ् कुन्ती के भीतरेक बेदना बा बेथा, आत्मग्लानि के देखवेक लाइ पानुरी जी जे भाभें खोरठा सबदेक परजोग करल हथ, जे भाभें छोटे-छोटे बाइकेंक तीरें समाजे पसरल अबेबस्थाक, बेभिचार के उपरे चोट करल हथ सेटा अनुसरनीय आर अनुकरनीय हे आर खोरठा गद्य साहितें एगो अजगुत परजोग मानल जाइ पारे। मकिन दुखेक बात ई नाटक एक लम्बा समइ तइक बिन इंजराइल रहला। मेनेक ई नाटक के रचना पाँचवा दसके भेल हलइ आर जे 2010 सालें छपलइ।

चाभी काठी-

ई नाटक पानुरीजीक दोसर नाटक हके। एकांकी रकमेक ई नाटक बुझा गाँवें-घरे नाटक खेलक जरूरइत के देइख के टटका-टटकी लिखल गेल हवत। खेती बारीक पइरसानी, गाँवे बाढ़ल गरीबी, बेरोजगारी आदि ई नाटकेक मुइख बिसइ हके। ई नाटक तो हके पानुरी जी के ही मकिन ई नाटकें भासाक ऊ जादू नाञ ˎ जे उद्‌वास कर्न

नाटकें पावाहे। कथोपकथनें के ऊ घास नाञ् जे उदबासल कर्नें पवाइ। ई दुइओ नाटक के तुलना करल कर पेछू बुझा हे जे 'चाभी-काठी' पानुरी जी पहिल नाटक हतइ आर तकर पेछू 'उद्बासल कर्न' लिखल गेल हवत। नाटकीयता नाटकेक मुइख विसेसता लागे आर ई नाटकीयता के ई दुइओ नाटकें बेस निर्वाह भेल हे।

मेकामेकी ना मेटमाट–

ई नाटक खोरठाक बहु आयामी रचनाकार ए. के. झा जीक लिखल हकइ। एकर में चाइर अंक हइ आर 17गो मोहड़ा (दृश्य) समाइल हे। ई अंगरेजी कालें किसानेक सोसन आर ओखनिक उपर भेल अतिआचार के लेताइरें लिखल गेल हे। एकर मोहड़ा बड़ी छोटे-छोटे हे आर सबसे अजगुत बात कि झा जी जइसन जनीक ऊँच थान दिवइआ लोक के नाटकें एकोगो जनी पात्र नाञ्। कथोपकथन टा कटि लंबा-लंबा आर भारी-भरकम हइ। भासाक उपरें विचार जबरदस्ती लादल रकम बुझा हे। भासाञ् सगरे अवरोधे अवरोध हइ, कहीं प्रवाइ नाञ हे। नाटकेक सबले बडबात नाटकीयताक कटि कमी ई नाटकें देखल जाइ पारे। नाटकेक 'पृष्ठ भूमि' एखन नखे सइसे कमटि अप्रासंगिको रकम बुझा हइ। ई नाटक तइओ किसानेक दुरदसा आर सोसन जे एखन्हु खेती-किसानी से जुड़ल लोक के हे से भाभें ई प्रासंगिक हे। ई नाटक के झा जी आइझ से 10 बछर आगुए छपाए देल हथ इ एगो बड़का काम।

डाह–

खोरठा गीत संगीत के हुबगर गीत जोरवइआ आर गवैया सुकुमारजी लिखल हथ ई नाटक के। मानुसेक एगो स्थायी भाव 'डाह' बा इरसा बा परजरूपन जब मानुसें जाइग जाहे तो की रंग घार, समाज आर गाँव के बरबाद कइर दे हे, छार-छार पोड़ाइ दे हे, रिस्ता-नाता-गोता के, पीठिआ भाइ की रंग एक दोसर के दुसमन बनाइ दे हे सेटा के सुकुमार जी नाटकेक 3 अंके आर 12 मोहड़ाञ् (दृश्यें) समटेक चेष्टा करल हथ। चेस्टाञ् नाञ् करल हथ बिचकुन सफलो भेल हथ। सुकुमार जी मूल रूपें गीतकार-संगीतकार हेकथ, नाटककार नाञ् तइयोर एकर संगे ई आर कइ गो हिन्दी भासाञ् नाटक लिखल हथ। ई सभे हिन्दी नाटक के मंचन के नजइरें लिखल गेल हे आर जे भागलपुर से परकासितो भेल हे। सुकुमार जी भेंडरा गाँवेक लागथ आर सइ गाँवें सोहराइ-दसेइँ आदि परब तिहारें नाटक खेलेक पुरना परंपरा रहल हइ आर ऊ परंपरा के एगो हुबगर निर्वाह करवइया हकथ सुकुमार जी। ई बात से हिआँ अटकर बा अनुमान लगवल जाय पारे जे एहो नाटक 'उदबासल कर्न' आर 'चाभी-काठी' नाटकेक रकम गाँवे माँग के लेताइरें लिखल गेल हवथ। नाटकीयताक निर्वाह नाटकें बेस भाभें हेल हइ आर कुल मिलाइके नाटक खेलेक नजइरें आर मूल बिसइ के नाटक देखवइया के हिरदयें आर मगजें समाइ

दियेक उदेसें ई नाटक अनखाय सफल हे।

अजगर-

खोरठाञ् छपल नाटकेक लेताइरें 'मेकामेकी न मेटमाट' 'डाह' के बाद तेसर नाटक हे 'अजगर'। 'अजगर' विश्वनाथ दसौंधी जीक अबगा नाटक हकइन। समाजे सोसन आर भ्रस्टाचार ई नाटकेक मुइख बिसइ हके। ई नाटकें सब ले बड बात ई हइ कि समाजें सब रकमेंक सोसन आर परखउक लोक के एके ठाँवें जोहड़ाइ के देखवेक चेस्टा करल गेल हे। गाँवेक महाजन, थानाक दरोगा, मुंदिरेक पुजारी, सब के एके संगे मेसाइ के सोंढ़-मोढ़ लोक के लिलवइआ अगजर रूपें देखवल गेल हे। एक संगे नारी जागरन, जाइत पाइतेक भेद, काना पतिआर आर अतिआचार सब के खिलाफ क्रांतिकारी बिरोध के सुर फुटल हे ई नाटें। भ्रस्टाचार तो एगो अजगर हकइ मकिन एकर रूप टाव भिनु-भिनु हइ। ई नाटकें एक समइए कई गो समसिआ उठवेक आर तकर समाधान ता बड़ी कठिन काम हकइ। तइओ दसौंधी राज जी ई नराटकें चेस्टा करल हथ। ई नाटक खेलल गेल हइ कि नाञ् कोनो सूचना नाञ् हे मकिन नाटक के जोदि खेलल जाइ तो एगो सफल नाटक साबित हवे पारे।

छोटे-छाट नाटक-

ई लेताइरें मुइख रूप से 'बेटवा-पुतहिआ' - भोलानाथ महतो, 'आगु-जनमें' - आकाशखुँटी, 'परास्चित' आर 'आपन मंगल' - मनपुरन गोस्वामी आदिक नाम लेल जाइ पारे। ई सभी नाटक-एकांकी नझटक हकइ आर सब ले बड़ बात कि ई सब छपल हइ। ई सब नाटक छोइड़ के खोरठा समेत आर दोसर-तेसर पत्र-पतरिका - 'तितकी', 'लुआठी', 'इंजोर', 'आदिबासी', 'संगम' आंदि पतरिकाञ् खोरठा नाटक छाँटे-बेड़े छपते रहल हे।

खोरठा नाटकेक प्रवृति

साहित समाज के दरपन हके आर दरपने ओइसने छापा उखर हे जइसन समाज रहो हे, समाजिक बेबस्था रहो हे। झारखंडेक समाजें सोसन, गरीबी, बिस्थापन, असिक्छा तो स्थायी समसिआ हके आर इ समसिआ गुलाके नाटक जइसन साहितेक हुबगर बिध ाञ् उठवेक चेस्टा नाटककार गुलाक मुइख उदेस रहल हे। 'उदबासल कर्न' नाटक तो धार्मिक नाटक जइसन बुझा हे मकिन उ हके एगो प्रगतिसील बा उनरवाँ आर समाजेक खेंड़-खुचरइ (विसंगति) के उटकवइंआ नाटक। आइझेक समाजेक भ्रस्टाचार आर बिसंगति आर लोकेक दोगलापन के देखवेक लाइ महाभारत के पात्र आर पृस्ठभुमि ले बेस आर सटीक परजोग हबे नाञ् करतइ। कुल मिलाइ के नाटकेक प्रवृति पइत

किसिमेक सोसन के उजागर करेक आर तकर बिरोध करेक रहल हे। प्रवृति पइत किसिमेक सोसन के उजागर करेक आर तकर बिरोध करेक रहल हे।

निष्कर्ष-

साहितेक एगो सकत बिधा हवइथुँ नाटके के भबिस कटि उजर नाञ् दिसे। खास कइर के नाटक खेलेक बा मंचन करेक नजइरें। आइझ लोक बड़ी भागा-भागीक जिनगी जी रहल हथ आर केकरो ठीन एकना फुरसइत नाञ् कि एक महीना ले रिहरसल करे, त नाटक खेले आर एगो निस्चित ठाँवे जाइ के नाटक देखे। तब बात फरीच भइ जा-हइ कि जब नाटक खेलले नाञ् जइतइ तब लिखइतइ की ले? आज तो सुनवइआ (श्रोता), देखवइआ (दर्शक) आर पढ़वइआ (पाठक) के भेद मेटाञ् रहल हे टीवी आर रेडियो। हाँ, तबे खोरठा नाटकेक भबिस हइ, जोदि आधुनिक दृश्य मीडिआञ् समाइक चेस्टा करल जाय। आर ई समइ के मांग के लेताइरें नाटको लिखल जाइ। तकर लाइ दरकार हे प्रतिबद्ध पहल करे के।

खोरठा उपनिआस

सदानी भासाक एगो नाम जइजका बिद्वान आर साहितकार बी.पी. केसरी जी कहल हथ कि – कहनी एगो इसथिति बा 'क्षण' के छोट-मोट छेद से जिनगीक बिराट के दरसन कराव हे, आर उपनिआस विधाञ् ऊ विराट के आरो बड़ आर व्यापक रूपें देखवेक उपाइ रहो हे।

हिन्दी साहित कोसें कहल गेल हे कि उपनिआस आधुनिक जुगे के उपज हके जे जुगें, 'अराजकता', 'व्यक्तिवादिता', समष्टि नांञ् बिचकुन व्यष्टि प्रधान भइ जाहे। मेनेक बाहिरे-भितरें गोटे, आर सइ जुगेक उपज हके उपनिआस। ई भाभें जोदि खोरठाञ् उपनिआस लिखेक परंपरा बा सुरूआत बा कटि देरी से भेलइ तकर ओजह बुझल जाइ पारे।

खोरठाञ् उपनिआस लिखेक परंपरा के नेंउ दइदेल्य पानुरी जीके सरकिल के रचनाकार विश्वनाथ दसौंधी राज साइठेक दसकें 'तेतरी' नामेक उपनियास लिख के। मकिन दुखेक बात आइझ तक ई उपनिआस छपल नाञ् हे, ओजह चाहे जे हवो। ई भाभें 'तेतरी' उपनिआस के खोरठा साहितेक नवजुग के रचना मानल जाइ पारे।

खोरठा साहितेक पुनर्जागरण कालहुँ कई गो उपनिआस लिखल गेलइ। जेकर में ए. के. झा जीक 'सइर सगरठ', शिवनन्दन पांडे गरीब के 'लाही', कृष्ण चन्द्र दास आला कर 'उलगुलान' ई सभें उपनिआस एखन तक इंजराइल नाञ्, छपाइल नाञ्। इटा

खोरठा साहितेक बड़ विडम्बना। ढेइर पेछु 2011 ई. झा जीक उपनिआस 'सइर सगरठ' छपलइ।

खारेठाञ् पहिल परकासित उपनिआस के ताज मिलल श्री चितरंजन महतो 'चित्रा'जीक उपनिआस 'जिनगीक टोह' के।

जिनगीक टोह–

हाइस्कूलें मास्टर 'चित्रा' जीक ई उपनिआस कुरमी जाइतेक सामाजिक पृष्ठभूमिं लिखल गेल हइ। कथा कर जइरभाव हे करतइबेक दाएँ परेमेक बइलदान। उपनिआसेक नायक राजेश उच्चसिक्छित जुवक हकेक मकिन आम आधुनिक छोंड़ा रकम ओकर चरितर बड़ी ढुलमुल हइ। ओकर प्रेम तथाकथित उदात (sublimated) आर उच्च आदरसें प्रतिष्ठित रकम बुका तोहइ मकिन राजेश ओकर निरबाह करे में पेछुआइ जा हे। जबकि उपनिआसेक नायिका सबिता प्रेमेक निरवाह करें में नायक ले आगु निकल जाहिक। नायक पइत भावें ओकर से हारते जाहे उपनिआसें। राजेश प्रेम तो कर–हे सबिता से मकिन बिआह करतक कि नाञ् सेटाक पता नाञ्। कोन्हों कामें समाजें अवरोध –विरोध तो हबे करे हे मकिन साहसी लोक सइ अवरोध के काइट के आपन करतइब के पुरा कइर देहथ। मकिन राजेश ठीन अइसन हुब नाञ्, डीड नाञ्, साहस नाञ्। आर राजेश सविता से बिआह नाञ् कइरके एगो दोसर लड़की से बिआह कइर ले हे आर बहना बनाइ दे हे कि घारे आर समाजेक दबाबें दोसर लड़की से बिआह करल हे। अइसन कइह के सविताक नजइरें नाञ् गिरेक उता–सुता करल हे। सेसें राजेश के आपन प्रमिका के दोसर लड़का संगे आपन देखरेख में बिहाक सरंजामें कजइताक (मुख्य कार्यकर्ता) रूपें देखवल गेल हे। उपनिआसेक नायक राजेश के ढुलमुल चाइल–चलन, लेड़बेड़ा बेबोहार आदि देइख के नायकेक उपर सेंसे एगो नकारात्मक भाव पोंगाइ जाहे पाठकेक मनें।

'जिनगीक टोह' उपनिआस बरनन सइलीं लिखल गेल हे मकिन एकर कथाक बुनाइ कटि कसल आर चुस्त हइ। खोरठाक रामगढ़िया छेतरीय भासा रूपें उखरवल ई उपनिआसेक भासाञ् प्रवाह हे, एगो गति पावल जाहे। संबाद गुलाञ् सहज भासा सइली हइ आर मन के छुइ ले हे। सेसें नायक नायिका के मांझे बिजोग हवो हे। आर जिनगीक टोह जारी रह–हे। कुल मिलाइ के खोरठाक इ पहिल प्रकासित उपनिआस साहितेक कोटि के हे।

'जिनगीक टोह' के पेछु जे दोसर छपल उपनिआस के नाम आव हे उ हे– विश्वनाथ दसौंधी राज जीक 'भगजोगनी'।

भगजोगनी-

ई उपनिआस छपल तो हे झारखंड राज्य अलग भेल कर पेछु से भाभें एकरा खोरठा साहित्य आधुनिक जुग के कृति मानल जाइ पारे, किन्तु जोदि एकर रचना काल के देखल जाइ तो इ खोरठा साहितेक नवजुग के कृति मानल जाइ पारे। जे जुगें ई उपनिआस लिखल गेल हलइ से जुगें जमींदार तो नाञ् हला मकिन जमींदारी धौस, जमींदारेक अनिआय आर ओखनिक ठाठ-बाठ के असर बाँचल रहइ आर हवाञ् पैंरो हलइ। कीलेकि कटिके दिन आगु जमींदारी परथाक जइर-मोआइर कोड़ाइ गेल हलइ। जमींदार आइझ तो नाञ् मकिन ऊ आर ओकर आतंक, ओकर सोसन करेक गुन एखनहुँ फुराइल नाञ् हे। बिचकुन कहल जाइ पारे जे कटि बीसें हइल, उनइसे नाञ्। मकिन रूप टा बदइल गेल हइ एखन। भगजोगनी जे समाजें रह हलिक, से समाजें मींदारेक चलती चलो हलइ। आर से समइए बेटी छउआ के इजइत महफुज नाञ् रहो हलइ। एखनहुँ नाञ् हे बिचकुन ओकर ले बेसीए डर हइ आइझ। बेटी छउआ पहिल ले बेसी सांसइतें जी रहल हथ एखन। सामंती सोसनेक के पृष्ठभूमिं लिखल गेल इ उपनिआस जकर नायक एगो जमींदार हके आर शिकार हे ओकर किसान आर किसानेक एगो बेटी जे जमीन्दारेक हवस के शिकार भइ जाहे आर सेसें उ फांसी लगाइ के मोइर जाहिका र तकर रांगें गाँवेक लोग जमींदारेंक खिलाफ भइ के ओकर गढ़-गुढ़ा के पोड़ाइ के छार-छार कर दे-हथ। एगो सुखान्त उपनिआस के बड़का पटतइर हे ई 'भगजोगनी' उपनिआस रखोरठा साहितें। पुरना पृष्ठभुमिं लिखल ई उपनिआस के कथावस्तु कटी अप्रासंगिक बुझा हे किन्तु आगु पहल लेताइरें ई अप्रांसांगिक नांञ्, प्रासांगिक।

सबले बड़ एकर भासागत विसेसता हइ भासांञ् प्रवाहमयता आर लोच। सरल शब्दावलिक परजोग सबले बड़ विसेसता रूपें देखल जाइ पारें इ उपनिआसें। सइ ले गैर खोरठा भासी ई उपनिआस के बेस भाभें पढ़े पारे आर बुझो-हो पारें। आर एहटाइ हइ इ उपनिआसेक जबरजस्त सफलता। कुल मिलाइ के पाठकेक मनें आसावदी दृष्टि पइदा करेक आर अनिआइ के खिलाफ एक जुट हवेक, आगु बाढ़े ले संघर्ष करेक संदेस समाइ दिये वाला इ उपनिआस के एगो सफल आर साहितिक कोटि के खोरठा उपनिआस रूपें देखल जाइ पारें।

पारसनाथ-

ई उपनिआस गिरिडीह के इम्तियाज गदर बाट ले लिखल गेल हे। आपन काआञ् (कलेवर) इ एगो बोड़ कहनी रकम हइ। इ भाभें जोदि एकरा एगो बोड़ कहनी बा 'उपन्यासिका' कहल जाइ तो उचित हतइ।

झारखंडेक एगो बोड़ समइसा 'नक्सलवाद' के आधार बनाइ के लिखल गेल हइ ई उपनिआस। नक्सलबादी सोब के गतिबिधि उचित बा अनुचित सेटाक माँझे एगो बहस खड़ा करेक चेस्टा करल गेल हइ ई उपनिआसें आर सेसें नक्सलबाद के अतिबाद रूपें देखवल गेल हइ। ई उपनिआसेक नायक समाजेक सोसन से अनसाइ के नक्सलबादी डहर धइर ले हे मकिन सेसें ओकर मनें ई बात फरीच भइ जा हइ जे सोसन से अनसाइ के ई डहर धरल हे ऊ सही नाञ् हे।

सइर सगरठ-

ई उपनिआस ए.के. झा जीक लिखल हकइ आर जे खोरठाक पुनर्जागरन जुगें लिखल गेल हइ। एकर कुछ अंस 1984 बछरें तितकी नामेक पत्रिकाञ् छपल कथात्मकता से कपा साहित के आत्मा हकइ सेटाक बेजाक ममी हइ उपकिआसें तकर चलते हई उपनिआस लोके सामहत नाम भेकइ। मकिन गोटा उपनिआस छपल नाञ् हल बहुत दिन तइक। ढेइर पेछु 2011 बछरें ई उपनिआस झा जी के आपन प्रयासें छपलइ। समाजें पसरल बिसंगतिक ऊपरें लिखल ई उपनिआसें झा जी के बैचारिकता से लदाइल हे। सइ खातिर ई उपनिआसें कटि तारतम्यता आर परबाह नाञ् पावल जाहे। उपनिआस कर भासाञ् खोरठाक निछु ठेठ सबद के पुरापुरी परजोग भेल हे तकर चलते खोरठाक साधारन पढ़वइआ खातिर कटि भारी-भरकम हइ।

खोरठा उपनिआसेक प्रवृति

कोन्हों साहित रूप के प्रवृतिक अता-पता तो तब चल-हे जब उ विधांञ् खुब लिखइल-हे, खुब रचना प्रकाशित भेल हे। हिआँ तो कुल जमा तीन-चाइर गो उपनिआस एखन तक छपाइल हे आर इ सभे उपनिआसेक कथावस्तु टाउ अनखाञ् फरक हे। एक बाटे 'जिनगीक टोह' निछु प्रेम कथा हके तो दोसर बाटे 'भगजोगनी' सोसन आर सोसनेक खिलाफ संघर्षेक कथा हके। तो पारसनाथ नक्सलबाद समसिआ पर आधारित हे। ई भाभें उपनिआस के छेतरें प्रवृतिक तलास टाञ् कटि अप्रसांगिक बुझा हे। तइयो ई बात कहल जाए पारे जे कोन्हों साहितिक कृति सेइ समाजेक परिवेस के साब्दिक अभिव्यक्ति हवो हे। सेइ भाभें कहल जाइ पारें कि खोरठाञ् एखन तक जे कोन्हों प्रकाशित अप्रकाशित उपनिआस पावल जा-हे सेटा के बेस भाभे खोइज-पाँइज के प्रवृति के उपरें लिखल जाइ पारें।

निष्कर्ष-

खोरठाञ् उपनिआस विधाञ् कमें नाञ् ढइर कम लिखाइल हे आर बुझा हे आगु इ दिसाञ् आरो बेसी प्रगति करेक आसा टा कटि कमें हे। की आइझ पाठकीयता के

सांसइते जुइझ रहल हे ई साहित बिधा। एक समय हल जखन आदमी ठन फुरसइते-फुरसइत रह-हलइन। खास कइरके पढ़ल-लिखल बेटी छउआ ठिन। आर आराम से कइ-कइ दिन तइकर एगो उपनिआस के आर कभुँ-कभुँ तो एके बैइठकीं बा सिटिंगे पइढ़ ले हलथ गोटा-गोटा उपनिआस के। मकिन आइझ आदमी एतना भागा-भागीक जिनगी जी रहल हे कि आइझ आदमी ठीन खाइक-पिएक तक फुरसइत नाञ् तो आराम से निफिकिर बइठ के उपनिआस पढ़ेक तो कल्पनाञ् नाञ् करल जाइ पारे। सइ से ई कहल जाइ पारे कि खोरठा उपनिआस के भबिस बेस नाञ्। तइयो इ बात निछु आञा कि उपनिआस एगो सकत साहित विधा हके कथा साहित के आर एकर प्रतिस्थाप्य (Subsitute) कोन्हों दोसर साहित विधा नाञ हवे पारे। मेनेक एकर थान कोन्हों दोसर साहित विधा नाञ् लिये पारे।

खोरठा निबंध

खोरठाक निबंध साहिते एखन तक ओतना नाइ लिखल गेल हे जतना हवेक चाही। जोदियो छिटफुट निबंध लिखल गेल हे आर भिनु-भिनु पत्र-पत्रिकाञ् छपइ रहल हे। खोरठाञ् निबंध लिखेक दिगे मुइख रूपें ए.के. झा, विश्वनाथ दसौंधी राज, विश्वनाथ नागर, शिवनाथ प्रमाणिक, नरेश नीलकमल बी.एन. ओहादार, दिनेश दिनमणि, श्यामसुन्दर महतो, महेन्द्रनाथ गोस्वामी 'सुधाकर', धनंजय प्रसाद (देवघर) वासुदेव महतो, शांति भारत, गिरधारी गोस्वामी 'आकाशखुँटी', वासुदेव महतो आदि के नाम लेल जाय परे मकिन खोरठे निबंध के गोइछ अंगुरे गनल जाये पारे। एखन तक मोटे तीन गो गोटीना किताब के पता चलो-

1. 'खोरठा गेइदेक खंडी' ई किताब 1982 में छपल हे एकर में ए.के. झा जीक सातगो बइचारिक निबंध गोछवाल गेल हे।

2. 'खोरठा सदानिक भाषा संस्कृति के विभिन्न पहलूओं पर विचार' (1987) 'खोरठा निबंध'- निबंधकार बी.एन. ओहदारेक ई किताबे विचारप्रधान, फिंगाठी किसिम के 11 गो निबंध गोछवाल गेल हे, जे जनजातीय भासा अकादमी राँची, बिहार सरकार बाट ले 1990 में छपल हे। एकर छाड़ा वासुदेव महतोक भिनु-भिनु बिसइएँ लिखल बइचारिक निबंध एगो संग्रह 'कतरन' में गोछवल गेल हे। 'कतरनें' खोरठा निबंध छाड़ा खोरठा कबिता आर हिन्दी कबिता/हिन्दी लेख के भी संगरह हे जेटिन समइये-समइये भिनु-भिनु अखबारें आर पत्र-पत्रिकाञ् छपल हे।

करंज फूल

केउ कहलइ कनिआ तो रूइस गेल हइ कीले ओकर दुष्टा करंज फूलेक कनबाली नाञ् लानल हइ। कनिए नाञ् कनिआक माइओ रूसल हइ। इ कोई बात मेलइ एतना-एतना गहना-गरिआ हँसली, टाड़, अमबाला, बागू बंद, कमना, बिछिआ, ठेसा, पँइरि, मठिआ, सिकरी, मंगरीका हेन-तेन लाने जारकल मकिन करंज फूल नाञ् लखल तो बुझा कोन्हो नाञ् लानल। अरे नाञ्। हुआँक सोनार गिला के करंज फूल बनवेक लुइरे नाञ् हलइन तो कहाँ ले लानजइ बेचारा करंज फूल। मकिन कनिआ कहाँ मनवइआ। उ माइन तो तबे गेलइ जब ओकर बलें आपन हिआँ से करंज फूल बनाइ के दिएक गछलइ।

करंज फूल हामनिक लो गीवनेंक गहना रूपे कघिआ थान पावलइ सेटा कहेक कटि मुसकिल हइ। करंज फूल गहना-मुरिआञ् कइसे सामिल भेलइ सेटा हइचकेक बात नाञ् द्वइचक तो तब भेतलइ जब उ सामिल नाञ् भेतलइ। कीले ना उ एतना सुंद, नजइर जुड़वा आर मनोहारि हइए हइ। कटि लील छोंह ल ड़के झक साफ-चरक करंज फूलेक सुगढ़ पँखुड़ि गुलाम अनुमन्तिक संयोजन केकरो मन सहजें हइर लिएक खेमोता राखे हे। आर फूल ले बहराइत तीव्र मनमोहक गंध के तो बाते नाञ् पूछा। तभी तो दल के दल भँवरा, बरनी आर मउधेक गुटान हवो हइ करंज गाछेक हानगर गमगमिआ हेमाल जुडाञ्। बसंत रितुम् केउ करंज गाछ के अनदेखि कइर कर काइट के पार भइ गाछ अहसन हवे नाञ् पारे। चाहे उ जइनि होक, मरद होक, जवान होक बा बुढ़ा होक। नवचँइआ, कोंढ़मिसिआ छोंड़ा-छोंड़िक तो कहनाञ् की। बसंत के अइथिं बहार खाइ जाहे करंज फूलेक। गाछ गुला फूल से लदाइ जाहे। करंज फूलेक मादक गंधों पपटाइल हवा-बतास जुग-जुगादि ले कतेक-कतेक सूर नर, माग राछस, गंधर्व, किन्नर, प्रेमी गोड़ा के टानल आइल हे करंज गाछेक जुडाञ्। आर प्रेमी जोड़ाक मने प्रेम पोगाइल हतइन आर कखन नायक करंज फूलेक घोंपा आपन नायिकाक खोंपाञ् खोंइस देल हतइ सेराउ कहेक मुसकिले हइ। एतने नाञ् करंज फूलेक गंके गमगमाइल हवा कुरनि काम हो बाज नाञ् आवल हवत आर गोटे ठोठाञ् काने-कानें चुगली कइट देल हवत छोंडा-छोंडिक लुका-चोरि प्रेम करा। आर फइर बिधवा-बिधुरेक मने मन पाइर देल हवत बिसरल प्रेम-कथा आर तथि गाइग गेल हतइन मनें बेधा।

अलटा भोर भिनसरे पेरांबुर रेलवे टिसनें गाड़ी डडइलइ आर एगो जानल-पइचानल मदें मरल गंध नाके समाइ गेलक तो हामें आपन के रोके नाञ् पारसों आर उ मादक गंधेक दिसाञ् मदहोस टानाइल चइल गेलों। कटि खिने हाम आपन के करेंज गाछेक हेठें

पइलों। आपन घार से हजारो मील दूर पेरांबुर रेलवे टिसनेक प्लेटफोर्म फूल से लदाइल दरजनों करंज गाछ के पाँता-पाँति खड़ा देइख के हामें अभिभूत गइ गेलों आर हइचेक पइर गेलों।

हामनिक गाँवें करंज फूल बाइढ के जमा करे खातिर गाछेक गुडाञ् गाइले नजद-गोतनी गिलाञ् होड़ लाइग गाहे। हामें जाब। नाञ् नाञ् हामें जाब। करंज फूल बाढ़े जाइले होड़ लागत की लेनाञ्, एकतो चुल्हा-चउकिक घुंगे बेधाइल दम घेंटाइआ बाताबरन ले घंटा-घंटा भइर दूर रहेक आजादी दोसर मादकर हवा-बतासें काम करेक लालच। काम? काम की तो फूल जमा करेक। बाह! गोरा खाँची-टोकरि भइर जाइ तइओं अलपे भार। एकरो लेबेस कोन्हो काम हवे पारे की?

जमा करल करंज फूल के गाठाञ् भोइर देस जाहे जे पेछु एकनंबर के माइंद (खाद) बहन गाछे जे खेति-बातिक लागिन अमरित के काम कर-हे। फूल करल कर पेछु करंज गाछ हरिअर, घूसर चापट-चापट फर से लदाइ जाहे तो पतइ बिहिन गोटा गाछ खूब मातबर, तलेबर चासालखे दिसे लाग-हे। सच बात तो इ हइ कि जे चासा आपन बारी-आरी, खेतें-गोंठे दस-बीस गो करंज राखल हे ओकरा तालेबर हवइते तंचक नाञ्। की ले कि करंज फूल खाद, पतझावाद, खरी खाद आर करंज तेल करे हे इंसेक्टी साइड आर पेस्टिसाइडेक काम। जे चासाक संगे एतना गुनगर गाछेक टोली रहे तो रोग-बेआधि आर दलिदरी हुआँ ठठे पारे की?

कातिक अमोसाञ् मेनिक सोंहराइ देवालिक राइते करंज तेलेक बेगर तो कोन्हो काम हवेहे नाञ् खोजे। करंज तेलेक दिआ जखन जगमग-जगमग जरे लाग-हे तखन मखरी गिलाक बोलती मइ जाहे बंद। आइक भले ही तोहिन मसकिटो रिपेलेंट के इजाद करइ के सेखी मारइत हमें मगर करंज तेलेक आगु तो पानिए भरतो।

दामाद बाबू करंज फूलेक मउध पइठवल हथ। मेनेक करंज फूलेक इसके चुइस के बनवल मउध। हकइ तो मउध मकिन सवाद हइ तितकुट। मधुमेह-चीनिआ रोग गइसन हठी कारन (रोग) के अचूक ओसध। मधुमेह के ओसध-मधु कतना अजगहबि बात हइ। जहर के जहरे काट-हे। पाटलों आर उ मादक गंधेक दिसाञ् टनाइल चइल गेलों आर कटि खिनेक पेछु हामें आपन के करंज गाछेक हेठें खड़ा पइलो।

करंज फूलेक साह घरि (मउसमें) मउध-माहि आर लुती-माहि करंज फूलेक रस चुइस के जे मउध (मधु) बनव-हथ सेटा बइन जाहे ओसधि।

करंज गाछेक काइ गो भेदो पावल जाहे। एगो हव-हे बारोमसिआ। बारोमसिआ करंज बारहो महइना फूलते-फोरते रहो हे भेनेक हिनें निंझइलक नाञ् कि हुंदे सलगल। एकर फूल

चटख गुलाबी रंग के हवो हेई। दोसर भेद हवो हइ चहती गे चइत–बइसाख मासें फूलो–फोरो हइ।

आइक किसान गुलाम मांझे करेंज गाछ रोपेक–बंचवेक, एकर महत बतकेक अभियान–चलवेक आञा दरकार हइ चासा गुलाक सुख–समरिधि लागिन आर केमिकल खादेक परजोगे माटिक कम भेल उपज खेमोता बठवेक खाजिन।

आइक करंज आपन अस्तित्वेक लड़ाइ रहल हे। सब पुरना करंज गाछ एक–एक कइर के गिर रहल हे। नावाँ गाछ ना तो रोपल जाइ रहल हे ना बँचवल जाइ रहल हे। आइझ करंजेक महत घइट रहल हे, इ खातिर नाञ् कि एकर गुन कम मइ गेल हे, बिंचकुन इचलते कि लोक के टेस्ट बदइल रहल हे। नावाँ खुंटिक (पीढ़ी) लोग एकर महत जानथ नाञ् सरकार बाटले कंजरवेसन आँव बा योडाइवर्सिटी थ्रो एग्रिकल्चरल प्रैक्टिसेस अभियाल चलवल जाइ रहल हे। हवे पारे इ अभिमानें करंज गाछ करो उध ार भइ जाइ। (समाप्त)

डॉ. बी. एन. ओहदार
प्राध्यापक, जनजातीय एवं क्षेत्रीय
भाषा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची

खोरठा कहनी

हिन्दी साहिते बिदुवान गुलाक मतें 'कहानी' सबदेक जनम–करम के टवान तो भेंटा हइ संस्कृत सबदेक कथन > कहन > कहना > कहानी बा कथनी > कहनी से। मकिन खोरठाञ् कर जनमेक टवान भेंटा हइ आग्रह बाची कहनीं (कहो न!) जोदि कहनी कहवइया के आदर देल जाइ तो कहल जइतइ–

कही नी ! - कहिए न ! - कहो न ! जइसन बाइकें।

कहनी सबदेक जनम–करमेक टवानें इटा फश्रीच भइ जा हे कि एगो सुनवइया हइ आर एगो कहवइया। बेगर कहवइया आर सुनवइआ के कहनी हवे नाञ् पारे। दुइओ में कोन्हों एगो के नाञ् हले कहनी हबे नाञ् करतइ। कहेक आर सुनेक इ परंपरा टा ववा हइ लोक कहनी कहेक बेरांञ्। बेगर कहल केउ कहनी कहवइया कहनी कभुँ कहे नांञ्। आर सुनवइयाक जीव सुनल बेगर माने नाञ् तो कहनी कहेक आग्रह तो हबे कतरइ। आर ई कहनी कहेक आर सुनेक परथा बा चलन टा खोरठाञ् आदि पारिआ से चलल आइल हे। सइले खोरठा कहनीक भंडारें अनगिनइत हे कहनी छोट–बोड़, आदमी के, सिआर के, भाउल के, चोर के, ठग के, राजा के, मंत्री के, आर नाञ् जानी कते–कते छोट–बोड़

आरा ढांगा ओसार हे कहनिक कुल्ही। जे कोन्हों भासाञ् लोक कहनीक परंपरा एतना ढांगा आर ओसार हतइ से भासाक सिष्ट साहितेक की कहनीक कमी हवे पारे? एकर संभावना नाञ् मकिन ई सच बात हइ कि एखन सिष्ट साहितें ओतना कहनी नाञ् हइ जेतना हवेक चाही।

बीसेक सदी के सुरूआती एक-दू दसकेक बेराञ् तो खोरठा सिष्ट साहितें कहनीक कोन्हों टवान नाञ् भेंटा हे मकिन एहे सदीक आधा-अधिक पोंहचत-पोंचहते कहनी लिखेक उता-सु के टवान भेंटा हे। पाचसेक दसकें कहनी लिखे पता चलो हे मकिन इंजरावेक बा छापेक चेस्टा बड़ी बादें हवो हे। तइओ 1957 सालें श्रीनिवास पानुरी सम्पादित खोरठा हिन्दी मासिक पत्रिका 'मातृभासा', 1970 बछरें उनखरे संपादनें बहराइल 'खोरठा' (पखवारी पत्र) आर 1977-78 सालें विश्वनाथ दसौंधी राज सम्पादित 'तितकी' (खोरठा मासिक पत्रिका) में खोरठाक कहनी छपेक सूचना मिलो हे। सतरेक दसके पहिल बइर खोरठाञ् कहनी इंजरइलइ। 80-90 के दसकेहुँ कही लिखेक - इंजरेवक काम भेते रहलइ। मकिन 21वीं सदी के सुरूवे से ई विधाञ् सब ले बेसी लिखल इंजरावल गेलइ।

खोरठाञ् पहिल इंजराइल कहनी हे विश्वनाथ दसौंधी राज जीक कहनी 'महुआ' जे 'खोरठा' नामेक पखवारी पत्रिकाञ् 1970 ईसवी छपल हल जोंदियो इ कहनी बहुत आगु हवइथूँ ई आधुनिक कहनीक डींडा-ढीपाञ् खरा उतर-हे।

'खोरठा' पत्रिकाक बन्द भेल से कहनीक विकासें कटि बेबधान आइ गेलइ। 1977 ईसवबीं 'तितकी' नामेक पत्रिका के प्रकासन कतरास से सुरू हवो हइ आर सेइ अंके तरासेक विनोद कुमार तिवारीक कहनी 'घर जंवाइक घेंचाक ढोल' कहनी छपो हे। ई कहनीं घर भिंजवा दमादेक बेथा-कथा के छापा उखरवल गेल हे। कहनी फिंगाठीक सइलीं (व्यंग्यात्मक) लिखल गेल हे। एकरा संतुलित कहनी तो नाञ् कहल जाए पारे मकिन कहनिक गनती तो गनिये लेल जाय पारे। 'तितकी' के अइगला अंकें गौरी शंकर प्रभास जीक लिखल दू गो कहनी 'ढोलनाक बांसी' आर 'पोड़ल मोढ़िक आंगरा' छपल हे। पहिल कहनि एगो गरू चरवा गोरखिया के आसे-पासें गाँवेक पइरबेसे घुर-हे। कहनी हइ तो छोट मकिन स्वाद लागे हे पढ़े में। दोसर कहनी 'पोड़ल मोढ़ीक आंगरा' उदोगीकरण आर विस्थापन के परभाव के बिसइ बनाइ के लिखल गे हे। कतरास ले बहराइल 'तितकी' 13-14 अंकेक बाद 1978 से 1983 के मांझे कोन्हों खोरठा कहनी पाठक ठीन नाञ् आवो हे। 'तितकी' के 1984 अंके सुखदेव महतोक एगो लघु कथा छपल हइ 'खोरठाक महत्त' नाम से।

1988 ईसबीं गजाधर महतो 'प्रभाकर के पुटुस फुल नामेक कुल छउ गो खोरठा कहनीक संग्रह छपो हे। मकिन ई कहनी गोछेक मांझे 'थाकल राही', 'रोगलाहा' ई दुइए गो कहनी, कहनीक मानके डड़ाँइ पारे।

1989 ईसवीं एक संगें चाइर गो कहनी 'खोरठा गइद-पइद संग्रहें' छपो हे। पहिल कहनी के पतरातु कॉलेजेक प्रोफेसर भुनेश्वर साहुक कहनी 'मांझो' ई दुरघटनाञ् ठुठी भेल बेटी छउवा के ओकर मंगेतर बाट ले अपनाए लियेक भावपूर्ण कहनी हकइ। सइली आर सिल्पेक लताइरें ई आधुनिक कहनी रकम हे। दोसर कहनी हे निदेश कुमार दिनमणिक 'धरम-करम'। ई कहनी मरखी में भोज भंडाराक बेराञ् धरम करम आर नेग-नाग के फेचका-फांदा जइसन करमांड के फोटो उखरवल गेल हे। तेसर कहनी हे हमर (बी. एन. ओहदार) के 'सोंध माटीक टाव'। ई कहनी गांवेक पढ़ल-लिखल लोक के सहर जाइ मांड़ेक आर गांवेक दुरदसा के बिसइ बनाइ के लिखल गेल हे। चउथी कहनी हइ वंशीलाल वंशी जी के 'चासा' जे जमीन्दारी सोसन के अधारे लिखल गेल हइ।

1990 ई. राँची कॉलेज के खोरठा प्रोफोसर डॉ. बिनोद कुमार के एगो गइद-पइद गोछ 'जनजातीय भाषा अकादमी' से छपल हे जकर में छउ गो खोरठा कहनी गोछवल गेल हे। ई सभे कहनीक मांझे 'ओद-दीदा' नामेक एगो बड़ी भावें भोरल कहनी सोब ले उल्लेखनीय हे जे भाव, भासा, सइली आर कहानीकलाक नजइरें एकदम फिट मानल जाइ पारे।

ई मांझे बोकारो, धनबाद ले प्रकासित अखबार 'आज' 'आवाज' आदि हिन्दी पत्र-पत्रिकाञ् खोरठा कहनी छाटे-बेड़े छपइत रहल हे। ई लेताइरें पानुरीक जी कहनी 'कुसुमी' के नाम लेल जाइ पारे।

तितकी' पत्रिकाक प्रकासन 1997 ईसवीं फइर बोकारो से सुरू हवो-हे। एकर में कहनी छपेक सुरू भेलइ। संतानबेक अंके वंशीलाल वंशीक कहनी 'माटीक टान', 'तितकी' 1998 अंके भूषण राम विश्वकर्मा के कहनी 'हिया' छपल हइ। एकर आगू 1997 बछर्ही रामटहल ओहदार के एकल कहनी गोछ 'मइलाइल हवा' छपल हइ। जकर में चाइर गो खोरठा कहनी 'मनमोहन', 'संबंध', 'इन्टरभिउ' आर 'गिआन' गोछवल गेल हे। 1998-99 ई. देवघर ले प्रकासित 'प्रभा रश्मि' आर 'इंजोर' नामेक पत्रिका बहरा हे जेकर में कइ गो खोरठा कहनी छपल हे। 1999 ई. बोकारो बालिडीह ले 'लुआठी' नामेक पत्रिकाक प्रकासन से खोरठा कहनिए नाञ् बिचकुन गोटा खोरठा साहित के बिकासकें गति मिललइ। ई एगो बड़ बात कि एकर पइत अंके एगो न एगो कहनी रहबे करो हइ। 'लुआठी' पत्रिकाञ् पंचम महतो जीक दरजन भइर ले बेसी कहनी

एखन तक छइप चुकल हे। ई कहनीगोछें 'रकत बारी', 'हेराइल हाँसी', 'उदासी', 'दीदीजी', 'करमा' आर 'मनेक बेथा' दुखा बेस कहनी हकइ। बोकारो से तीन अंक निकइल के बंद भेल पत्रिका 'सहिया' में देवघरेक फालगुनी मरिक कुशवाहा जीक कहनी 'कुन्ती माइ' छपल हे। तकर पेछु बालीडीह, बोकारो के जनार्दन गोस्वामी 'व्यथित' जी के एगो कहनी गोछ 'खटरस' छपो हे जकर में चाइर गो बहुत बेस तकनीक गोछवल गेल हे।

एहे आसे-पासें दसौंधी राज जीक 'माटिक पुथइल' कहनी गोछ छपइल हे आर एहे तेलाइरें धनबाद के महेन्द्र प्रबुद्ध गोछ 'बुबु गाछ' रामगढ़ेक अरबिन्द कुमार के 'धुंगा' कहनी गोछ, रामगढ़ के डॉ. डी.सी. राम के कहनी गोछ 'ढरकल लोर' जरक में 7 गो कहनी गोछवल गेल हे आर सभे कहनी घार-पइरबार आर सोसन, अतिआचार के बिसइ बनाइ के लिखल गेल हे। ई कहनी गोछें निछु ठेठ भासा आर आर सइली के परजोग भेल हे।

'जिनगीक टोह' उपनिआस के रचनाकार चित्ररंजन महतो 'चित्रा' जीक कहनी गोछ छाँहइर के नाम लेल जाइ पारे। ई गोछे 10 गो कहनी गोछवल गेल हे। ई सभे कहनी कला आर भासा सइली के नजइरें ओतना पकठाइल नाञ् हे।

रामगढ़ ले बहराइल हिन्दी साप्ताहिक पतरिका 'झारखंड' संदेश' (सम्पादक डॉ. बी. एन. ओहदार) में हुँ छाटे-बेड़े खोरठा कहनी छपते रहल हे जकर में डॉ. बी. एन. ओहदार के 'काछिम' आर 'धनी चल गे ओसाम', पानुरी जीक 'कुसमी' आर प्रहलाद चन्द्र दास के 'नचनी काकी' आर 'धोखा' एखन तइक छपल हइ।

एकर आगु राँची ले प्रकासित 'कथा-संगम' कहानी पतरिकाञ् खोरठाक दू गो **कहनी कसमार, बोकारोक डॉ. रामकुमार तिवारीक कहनी 'झुनिया माञ्' आर महेन्द्र** नाथ गोस्वामी सुधाकर के कहनी 'छुगु काका' छपल हे। ई दुइओ कहनी, राँची में भेल कहनी लेखन प्रतिजोगिताञ् पहिल आर दूसर थान पावल हे।

2010 ई. महेन्द्रनाथ गोस्वामी 'सुधाकर' के कहनी गोछ 'डेगे-डेगे काँटा' आर एगो ढांगा (बोड़) कहनी डहरेक दावेदार छपल हे। 'डेगे-डेगे काँटा' गोछें 10 गो कहनी 'काँटाक डहरें', 'रिन सोध', 'तातल हवा', 'अजाइत', 'हरिनेक सिंग', 'अंधरी बहरी देवी', 'जांगला उपारेक हांसी', 'रेक्ते सोखल आंकुर', 'सुकराक बेटी' आर 'जहरमोहरा' गोछवल गेल हे। ई सभे कहनी झारखंडेक सोबल ले बोड़ समइसा उग्रबाद बर नक्सलबाद के बिसइ के उपरें लिखल गेल हे आर जेकर में उग्रबाद के उचित बतवेक चेस्टा लेखक बाट ले करल गे हे। ई गोछेक सभे कहनीगुला कएँ (आकार) कटि ढांगा ओसार हे। ई कहनीगुलाक आकार के कटि छोट रूपेहुँ लिखल जाइ देखल जाइ पारे।

ई कहनीक सोब ले बोड़ बात हइ लेखक के अनुभूतिक तीब्रता, तकर चलते एकर सभे कहनीगुला एक बेस कहनी साहितरूप बनल हे।

एहे लेतइरें धनबाइदेक प्रहलवा चन्द्र दास के कहनी गोछ 'नचनी काकी' के बड़ी आदरें नाम लेल जाइ पारे। ई कहनी गोछें सात गो कहनी, 'धोखा', 'बइंगन बारी', 'बुधवा माइके गाइ', 'खेपी', 'केलिआ', 'लाबार' आर 'नचनी काकी' गोछवल गेल हे। ढहइत सामन्तबाद से लइ के एखनेक साम्राज्याबाद पुंजीबाद आर बाजारबाद के तेहरा गठजोड़ तक के जातरा के सामाजिक दस्तावेज के रूपेहुँ चिन्हल जाइ ई कहनी गोछ के। मोनेक दोसर भाभें कहल जाइ पारे जे साइठ-सत्तर बछरेक माँझे (1940-2010) समाजे भेल क्रमागत बदलाव के आंकान ई कहनी गोछें देखल जाइ पारे। मेनेक ई सभे हके आर हिन्दी आदिक समकालीन कहनी से जोदि बीस नाञ् हे तो उन्नीसों नाञ् हे।

निष्कर्ष

खोरठा सिस्ट कहनी, कथावस्तु चरित्रचित्रण, पात्र, कथोपकथन, देश-काल, वातावरण, उद्देश्य, शैली, आर शिल्प के नापनाक मांग के जोदिओ पुरा पुरी पुरा नाञ् कर-हे तो एकर माने ई नाञ् कि कहानीक तत्वेक नजइरें एकदम सुनसान हइ।

खोरठा कहनीक कथावस्तु कोन्हों मनेक उड़ान नाञ्, एकर जइर मुवाइर हे घर-गांव, खेत-खलिहान। खोरठा कहनीं परिवेश संभूत चेतना के बसे भाभें देखल जाइ पारे। एखन खोरठाञ् कहनी लिखेक दिसाञ् खुब काम भइ रहल हे। मेनेक कोन्हों महीन अइसन नाञ् हे जे कोन्हों एगो नावाँ आरा कहानीकलाक नजइरें पकठाइल रकम खोरठा कहनी कोन्हों-जी-कोन्हों पत्र-पत्रिकाञ् बा आपन परिआसें छपल आर छपवल जाइ रहल हे। सब ले बड़ बात एखन खोरठाञ् एगो खोरठाक प्रतिनिधि कहानी गोछ लिखेको दरकार हइ। ई लेताइरें हमर (बी. एन. ओहदार) एगो हिन्दी 'समीक्षात्मक लेख' 'खोरठा की समाकलीन कहानियों में यथार्थ के विभिन्न आयाम' के नाम से लिखल गेल हइ जे अखड़ा पत्रिका, राँची आर 'झारखंड सन्देश' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिकाञ् छपल हे। ई दिसाञ् एखन आरो काम करेक दरकार हे।

साहित छाड़ा दोसर बिसइयें लिखल किताब

ई दिसाञ् पहिल बइर डहर देखवइले हत ए.के. झा जी खोरठा बेयाकरनेक किताब लिख के। एकर छाड़ा बासुदेव महतो (विज्ञान शिक्षक) खोरठा भासाञ् दूगो बेंकाकरनेक किताब 'खोरठा बेकायकनेक खोमचा' आर 'खोरठा बेयाकरनेक दमराही' लिखलहथ। इन्खल एगो किताब 'खोरठा लोकोक्ति' खोरठा पटतइर के संगरह हे।

ई रकम खोरठाक गइद अपन विकासे के डहर गढ़ले बढ़ल जाइ रहल हे।

खोरठा आलोचना साहित

आलोचना संस्कृत के 'लुच' धातु के बनल हे, जकर माने हवो हे 'देखेक' (देखना) बा बेस से देखेक। मेनेक कोन्हों चीज के गुन-दोस दुइयो के एक नजइरें तबे एकर परियाइबाची सबद बनतइ समालोचना जरक माने हवो हे बराबइर नइजरें देखेक। एकर एगो आर परिआइबाची सबद हे- 'समीक्षा'। एकरो माने ओहे हे जे आलोचना आर समालोचना के हइ। ई सभे सबद गुला कोन्हों साहितिक रचनाक गुन-दोस विवेचन लाइ बनल हे।

एगो बिद्वान कहल हथ - आलोचना जिनगी से भेंट के नाम हके। मेनेक रचनाकार के मगजें उठइत सिरजन के ढेठ आर तकर गरजन से लइके रचना पुरा हवेक तक के गोटा जातरा बा सफर के जोड़-घटाव हके आलोचना। हिन्दी के धुरंधर आलोचक डॉ. नामवर सिंह आलोचना के 'वाद-विवाद- संगत कहल हथ। आलोचना एक बइर लेखक आर आलोचकेक माझें तो दोसर बइर लेखक आर पाठकोक मांझे संवाद के पुल बनवो हे।

अशोक बाजपेयी कहल हथ-

"आलोचनाञ् आलोचक आपन समइ के सच आर रचनाञ् देल जिनगिक सच के जाँचो हे, परखो, हे, जरूरत भेले कटि हेर-फेर टाव करो हे। मेनेक आलोचना साहित रचनाञ् देल जीवन आर जगत के मांझे लसतंगा, नाता-गोता के जाँच पड़ताल करो हे। आलोचनाञ् रचनाञृ मउजुद रचनाकार आर ओकर गोटा अनुभव के पकड़ो हे, मेनेक संवेदना आर अनुभूति के सच-झुठ के छानबीन करो हे। आगु-पाछु से ओकर संबंध जोड़ो हे आर एगो डइर-बाट तइ करो हे।"

आलोचनाक चाइर बिन्दु हवे पारे, जे आधारें आलोचना करल जाइ पारे-

1. आगुवे ले बनल नियम - कानून बा सिद्धांत के आधारें
2. रचना जे युग के हके से जुगे बनल नियम - कानून के लेताइरें
3. आलोचक आर पाठक के मगजें पइइत रचनाक परथाल के नइजरें
4. रचनाञ् समाइल गुन-दोस आर जिनगिक सच के लेताइरें।

मेनेक साफ हइ आलोचना दू ढंग के हवे पारे सैद्धान्तिक आर बेवहारिक। सैद्धानतिक यार बेवहारिक। सैद्धान्तिक आलोचना एक बार आलोचना के सिद्धान्त गढ़ो हे तो दोसर बार बेबहारिक आलोचना कोन्हों साहितिक रचनाक गुन-दोस विवेचन हे तो दोसर बार बेबहारिक आलोचना सिद्धान्त के साना-फाना के जोगाड़ करो हे। दोस भाभें कहल जाइ पारे सैद्धान्तिक आर बेवहारिक दुइयो आलोचना एक दोसर के पूरक हके।

खोरठाञ् आलोचना के 'ओतन-पोत' हदि-खदी योदि खोदी नामें जानल जाहे।

खोरठा भासाञ् आलोचना के खोज-पांज हेकें देल आधारें करल जाइ पार-

(क) पतरिकाञ् किताब बा रचना के समीक्षा के रूपें।

(ख) किताबेक बा रचनाक टीका रूपें।

(ग) कबि परिचइ के रूपें।

(घ) स्वतंत्र रूपें लिखल आलोचनात्मक निबंध रूपें।

(ङ) आलोचनात्मक निबंध के संग्रह रूपें।

(च) कोन्हों रचनाकार आर तकर गोटा रचना आलोचना रूपें।

(क) किताब समीक्षा रूपें- अइसन समीक्षा मोटा-मोटी खोरठा समेत हिन्दी आदि पत्र-पतरिकाञ् छपल हे। जोदियो आलोचना विधा के गंभीरता के नजइरें अइसन खाँट-खाँट समीक्षा के ओतना महत नाञ् हे, तइयो आलोचना के पहिला दापइन (पायदान) तो माइन लेल पाइ पारे। कीलेना पइत भासाञ् आलोचना के सुरूआती इउर असने रहल हे। हिन्दी साहिमें आलोचना विधाक सुरूआत भारतेन्दु जुग ले हव-हे। आर से घरी हिन्दी आलोचना ओहे अवस्थाञ् हल जे अवस्थाञ् एखन खोरठा भासाञ् हे।

पत्र-पत्ररिकाञ् छपल किताबेक समीक्षा जदि बेसी नाञ् हइ तो कमों नाञ् हे, की ले ने। एखन तक जे कोन्हों किताब खोरठाञ् लिखाइल हे तकर समीक्षा कोन्हों नी कोन्हों पत्र-पतरिकाञ् छपल हे जरूर। ई लेताइरे मुइख रूपें 'लुआठी' आर 'तितकी' पतरिकाका नाम लेल जाइ पारे। 'तितकी' पतरिका अनियतकालीन हवेक चलते 'लुआठी' जे बेनागा बहराइते रहले हे तकर मोटा-मोटी पइत अंके कोन्हों नी कान्हो किताबेक समीक्षा छपल हे। जइसन-लुआठी पतरिकाक अंक -1 में वंशीलाल वंशी के किताब 'खोरठा दर्पण' के समइछा छपल हइ अर समइछक हकथ 'आकाश खुटी' तइसने अंक में 3 मनपूरन गोस्वामी 'महुआ' नामेक गीत संग्रह के श्याम सुंदर केवट समइछा करल हथ। सइ अंके जनार्दन गोस्वामी बेकति के किताब 'माराफारी' के समइछा प्रहलाद चन्द्र दास करल हथ। इस समइछाक कटि एगो टुकरा देखल जाउक - 'बारह मासा' करम बाहरों मइहना भीतर माराफरीक लोक की रकम रह-हला की कर-हला, की रख-हला इ गुलाक बड़ी सुंदर ढंग में गोस्वामी जी गोछवल हथ। नचनिक नाच, टुमइर नटुआ नाच, मांझिक नाच, काली पुजा, दुर्गा पुजा, करमा, जिउतिआ सबकर बरनन करइत-करइत गोटे छोटानागपुरेक संसककिरति आर समाजेक बखान कर-हथ।

लुआठी अंक -4 हिआं श्याम सुंदर महतो 'श्याम' के 'चेउराक मुंडे बेल' काइब के समइछा करत हथ वंशीलाल वंशी जी। पंचम महतो जीक 'फरीच डहर' कइहनी

संग्रह के दिनेश दिनमणि बाट ले करल समइच्छा छपल हे लुआठी पतरिकाक 11 वां अंक। कटि एकर एक अंश देखल जाउक–

''खोरठा सिस्ट साहितेक सघन सिजनेक लगाइत आधा सदी बितल बादहु खोरठा कथा साहित बा कइहनी बिधाक कोना ढेइर कंगाल हइ। खोरठाञ् छपल कइहनिक किताब एखनों आँगुइरें गने जुकुर। ई लेताइरें बालीडीह बोकारो खोरठा कमिटि बाट ले प्रकासित कइहनी संग्रह 'फरीछ डहर' ढेइर खुसी दे हे।''

प्रभावत खबर, दैनिक जागरण, राँची एक्सप्रेस, हिन्दुस्तान आदि हिन्दी पतरिकाञ् छिटपुट खोरठा किताबेक समइछा छपते रहल हे। जे रंग हिन्दुस्तान के अंक में बी.एन. ओहदार के (खोरठ गजल) के बहुत सुंदर समइछा हिन्दी भासाञ् छपल हइ आकर जकर समीक्षक हथ अनिल अंशुमन जी।

(ख) किबातबेक टीका रूप– खोरठाक जतना किताब एखन तइक छपल हे सब किताबेक टीका बा भूमिका रूपें खोरठाक बा आर दोसर बरिष्ठ बा नामजइजका लोक के छपल हे।

जेरंग – 1980 ईस्वीं 'रूसल पुटुस' कबिता संग्रह के भूमिका ए.के. झा जी 'खोरठा लोक सहित' के डॉ. चतुर्भुज आर परितोष कुमार, विश्वनाथ नागर के एकल कविता संग्रह 'रांगा लाठी' के विकल शास्त्री।

नगर के विकल शास्त्री, खैयाम तोर मधुमति (खैयाम के गीत के खोरठा अनुवाद) के शिवनंदन उपाध्याय भूमिका तइसने सुकुमार के गीत संग्रह 'पइन सोख' कैलाश चन्द्र महतो के 'साबुक फूल' (कबिता संग्रह) रमणिका गुप्ता सम्पादित कबिता संग्रह – 'बोनेक बोल' के भूमिका आर टीका लिखल हथ बी.एन. ओहदार एकर छाड़ा ढइर अइसन किताबेक भूमिका आर टीका लिखल हथ विनोद कुमार जी।

हाल हीं बी.एन. ओहदार के किताब–खोरठा भासा एवं साहित (उद्‌भव विकास) के भूमिका, हिन्दी आर नागपुरिक बरिष्ठ रचनाकार डॉ. बी. पी. केसरी आर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग विकास के विभागाध्यक्ष डॉ. कुमारी बासंती लिखल हथ।

(ग) कवि परिचइ रूपें– समइ सिरें खोरठा के पइत पुस्तकें / किताब कवि लेखक आदि के खांटे–खांटे अरा टांगाइ कबि पइरचइ आर खोरठा भासाञ् कबिक जोगदान के उपरें बेस–बेस निबंध छपल हे। जेरंग ए.के.झा जी, श्री निवास, पानुरी, विश्वनाथ दसौंध ी राज, के उपरें बी.एन. ओहदार के बड़ी सुंदर 'समीक्षात्मक' लेख छपल हइ। कटि एकर बानगी देखल जाउक – ''नजरूल इस्लाम (बंग्ल कबि) लूथून (चीनी साहितकार) गोर्की (रूसी साहितकार आर राहुल सांस्कृत्यायन के परम्परा के साहितकार) बिगिआन लागे, समाज के दरपन हाके आर एकर में समाज के आयाँ छापा उखरवेक

चाहि। झाजीक मतें की बा ही हव–हइ तकरा नाञ् सुझाइ के साहित के सुझवेक चाहि जे की करे हतइ। तुलसी दास रकम साहित एक लोक के मनेक सुख (स्वांत सुखाय) नाञ् बिचकुन मोटे लोक बा सामाजेक सुख खातिर हवेक चाहि। एकर छाड़ा पानुरी स्मृति अंक 'इंजोर' आर 'लुआठी' दुइयो पतरिका निकालल हथ जकर में पानुरी साहितेक ढइर चरचा हइ।

(घ) समीक्षात्मक लेख– समइ सिरें बिद्वान गुला खोरठाञ् समीक्षात्मक लेख लिखते हल हथ आर भिनु–भिनु पुत्र–पतरिकाञ् छपते रहल हे। जदियो अइसन लेख के गनती आगुइरें हेले पारे तइओ बड़ी बेस लेख लिखाइल दे हइ। ई लेताइरें सबले आगु ए. के. झा जीक नाम लेल जाइ पारे। इनखर एगो लेख 'साहित ना समाज विगियान' उनखरे किताब खोरठा काठें गइदेक खंडी में छपल हइ।

बी.एन. ओहदार के दूगो लेख खोरठा लेखन परम्पराबादी ना जनबादी प्रेमचन्द साहित आर समाजेक सइ सेरेस्ता। आर खोरठा कविताञ् समाजेक सहर सेरेस्ताक सुर छपल हइ।

(ङ) समीक्षात्मक लेख संग्रहेक किताब– ई दिसाञ् ढइर काम नाञ् भेल हे, जे कोन्हों परयास भेल हइ एखन तक से लेताइरें दूगो किताब के नाम लेक नाइ पारे–

(क) खोरठा सदानी भासाओं के विभिन्न पहलुओं पर विचार ए.के. झा।

(ख) खोरठा भासा एवं साहित उद्‌भव और विकास बी.एन. ओहदार के नाम लेल जाइ पारे।

खोरठा आलोचना एखन अपन गिदरली उमरे हे मकिन मगजे निछु पइकठल रकम हे। दुखेक बात एखन तक एकोगो गोटिना किताब नाइ छपल हे। हेंठे कुछ आलोचना परक लेख के नाम दिअल जाइ रहल हे।

1. 'खोरठाक समकालीन कहनी और यथार्थ। लेखक– बी.एन. ओहदार (प्रकाशित : अखाड़ा पत्रिका राँची 2011ए झारखण्ड सन्देश 2012)।
2. खोरठा लेखन परम्परावादी ना जनवादी 1990 में प्रकाशित।
3. 'खोरठा कविताञ् हिन्दी छायाबाद के असर', अखडा पत्रिकाञ् प्रकाशित 2012।

निष्कर्ष

माइर–कुइट के उपरें देखवल पतटइरेक लेताइरें कहल जाए पारे कि खोरठाञ् समीक्षा विधा एखन आपन अंगनाञृ ठेहुनाक भरे चइल रहल हे। मकिन एखन आयां दरकार हइ आलोचना विधा के समृद्ध करेक। कीलेना एखन खोरठाञ् जकरा जे मन बुझाइ लिख रहल हे। की लिखल रहल हेतकर दिशाक पता नाञ्। तबे तीब्रता आर परमानिकता के छानबीन करे के। रचनाक भीतर के जीवन–जगत आर रचनाक बाहइरेक जीवन–जगत से

तउल–जोख कइर के एगो आलोचना सिद्धान्त गढ़ेके, तबे साहित आपन परिभासा ''हितेन यह साहितम तस्य भाव साहित्यम'' के डहरें गडगडइले आगु बाढ़े पारे।

खोरठा संस्मरण साहित

साहित केर नावाँ बिधा : संस्मरण

गइद साहितेक भितरें आधुनिक जुगे कइएक गो नावाँ बिधाक बिकास भेल हइ, जे समइ–सिरें आपन भिनु पछान आर ठाँव साहित संसारें बनाइ लेल हे। एकर में संसमरन साहित अइसने एगो नावाँ विधा लागे जकर परचलन भारतें बितल सदी में भेल हेइ।

संसमरन साहित के माने मोटा–मोटी ओकर नामे से फुरछाहे। संसमरन माने सामान्य रूपें इआद करा हवे। संस्मरन सबद सम + स्मरण से बनल हइ। ई संस्कृत सबदेक माने हवे हे – 'सम्यक' रूपें 'स्मरण' करा। माने संतुलित भाबें, बेस भाबें इआद करा। साहितेक विधाक ई सबद के भाव फुरछवल जाइ तो फरीछ हवे हे, जे कोनो विसेस घटना बा परसंग बा कोनो बिसेस बेगइत / बेकति बा कोनो परानी (प्राणी) केर खास इआद जखन इयाइद करवइयाक अनुभूति आर संबेदना के रसें डुइब के आखर रूपें, शब्द रूपें उखइर जाइ आर उटा सामाइन के संवेदना आर अनुभूति के छुवे लागे तो 'संसमरन' साहित के रूपें जानल जाइ।

कोई आदमी ओहे घटना परसंग या लोक के इयाइद करे जेटा ओकरा प्रिय हवे बा ओकराँ परभावित करे। कहइक माने इयाइद करे जुकुर घटना, परसंग बा बेकति बा चरित्र बिसेस, विचित्र बा महान हवेक चाही। तभी ऊ संसमरन जनसामाइन बा पाठक (पढवइयाक) केर संवेदनाक उदभावक बने पारे आर तभीं ऊ साहितेक गांठे गनाइ पारे।

देखल जाहे जे संसमरन साहितें लेखक परथम पुरूष रहे हे। बखानी बिसय (वर्ण्य विषय) के संगे–संगे आपन के समानान्तर लइके चलेहे। आर आपनो के बरनन करते चले हे। कीलेकि लेखक ओहेटाक बरनन करेहे जे खुद अनुभव करो–हे, सइले ऊ तटस्थ नाञ् रहे पारे। आपन संवेदना आर अनुभूति के बरनन करते चइल जाइ।

'शैली' के विचार से देखल जाइ तो संसमरन निबंध साहित के एगो भेद रूपें डाँड़ाहे। निबंध जहाँ विचार के प्रधानता रहइ हुएँ 'संसमरनें' अनुभूति के प्रधानता। ई विवरणात्मक बेसी हवे। साहित्य के बिदुवान सब एकराँ जीवनी साहित्य के जाइतें समझल हथिं। मुदा हामर खयाल से इटा उचित नाञ्। कीलेकि आगुवे कहल गेल हे जे संस्मरण साहितें सिरिफ कोनो बेकति या चरित्र के नाई बलुक कोनों परसंग बा घटन के बरननो हवो हे। तो कोनो घटना बा परसंग के इयाइद कइर के लिखल संसमरन के जीवनी कइसें मानल जितइ। हाँ, ई कहल जाइ पारे जे कोने बेकति बा चरित्र के बदें

लिखल संसमरन जीवजी साहितेक समाने बइन जा हे। कोन्हों संसमरन के पूरा-पूरा जीवनी साहित तखने कहल जाइ पारे जखन कोनो चरित्र बा बेकति के गोटा जिनगिक बिरतांत करल जाइ।

खोरठा संस्मरण साहित्य

खोरठा सिस्ट साहित्य एखन छउआ बेराहीं हे। बीसवीं सदिक ओसरउति दसकें खोरठा में साहितेक भिनु-भिनु आर खास बिधाञ् लिखा-पढ़ा सुरू भेल हतइ। से तखन मुइख रूपें कबिता करे बेसी चाट रह-हलइ। गइद साहितें कइहनी के परचलन सुरू भेल हलइ। आन बिधाञ् लिखेक कोनों अनुकूल बाताबरन नाञ् रहइ, ना छपेक कोन्हों माइध म ना पाठक। सइले कबिता छाड़ा आन विधा गुलाक प्रचलन खोरठाञ् ढइर बादें भेलइ - बीसवीं सदिक सोसाध बेराञ्।

संसमरन साहित हिन्दी साहिमों ढेइर बादे सुरू भेल हे सइले हिन्दी साहितेक सगरठें चलवइया खोरठा साहित संसमरन बिधाइँ चिन्हा-परिचय बितल सदि नब्बे के दसकें करे पारे हे। संखिआक नजइरें देखल जाइ तो खोरठा संसमरन आँगुइरें गनाइ जुकुर मुदा गुनेक पाइ-पइलाइ नापल जाइ तो कम नाइँ।

खोरठा संसमरन केर नमूना हामनिक बीचे सबले आगू 1988 में खोरठा गइद-पइद संगरह, नामेक किबातें हाजिर हवेहे। ई किताबें दू गो संसमर छपल हे। "उइड़ गेलक पुलवा रहइ गेलक बास" आर "बरवा अड्डाक अखइ बोर।" पहिल संसमरन गोविन्द महतो 'जंगली', चेटर रामगढ़, निवासी के लिखल। एकर में हिन्दी के नामजइजका लेखक राधाकृष्ण संगे बितबल लेखक के खास इयाद आर उनखर बेकतिक, किरतिक बड़ी 'भावपूर्ण' ढंग से बरनन करल हथ। ई एगो सफल संसमरन केर पटतइर हके।

ई संगरह के दोसरका संसमरन शांति भारत केर लिखल लागे। एकर में खोरठा के आदि कबि 'श्रीनिवास पानुरी' के संगे लेखक के भेल कइएक गो साहितिक भेंट के बड़ी मरमछुआ भाबें बरनन करल हथ। ई संसमरन पढ़वइयाके भाव बिभोर कइर दियेक खेमोता राखेहे।

ई बीचें ढेइर दिन तक खोरठा संसमरन साहितें कोन्होनावां संस्माणत्मक (चनाक रावान नाज भेंटा हइ, अइसन हुआ हइ जे रंग) जइसन अकाल आइ गेलइ। बीसवीं सदीं आर छपल संस्मरनेक बानार नाइँ पावा-हइ। आगू चइल के 21वीं सदिक 2004 में 'लुआठी' पत्रिकाइँ जनार्दन गोस्वामी व्यथित लिखित एगो संसमरन छपो हइ। ई संसमरन टा खोरठाक नमजइजका आसु कवि तितकी राय पर लिखल गेल हइ। ई संसमरने

तितकी राय के बेगतिगइत जीवनेक सभे पहलु के बखान हइ। उनखर सिरजन, मान–सम्मान, खासियत सभे बातेक छापा ई संसमरने उखरवल हइ। सइ ले इ संसमरन ले बेसी जीवन साहित के नझिक डंड़ा हे।

सन् 2004 इसबीं लुआठी पत्रिकाञ् पंचम महतोक 'मने से आवलखेड़का अध पुरूआ जातरा' सिसरक से एगो संसरमन छपल हे। एक पन्नक ई संसमरनें पंचम महतो जी एक धारमिक जाताराञ् आपन संगी के बीचहीं जातराञ् लकवा माइरदिएक कारनें अधपुरूआ छोइड़ के घार घुइर आवेक घटनाक बरनन करल हथ। ई रचना टा संसरमन साहित रूपें कम बिचकुन संदेसपरक घटना रूपे बेसी जानल गाइ पारे।

जातरा संसमरन (यात्रा संस्मरण)

संसमरन साहितेक एगो रूप हकइ जातरा बिरतांत। जातरा बिरतांते लेखके ओइसन जाराक अनुभब रह हइ जे अनुभूति पाठक के संबेदना के छुइ जाय। पाठक ओइसन रचना के पढ़इते–पढ़इते फहम करे जे ऊ आपने जातरा करे लागल हे। कहेक माने जारात के जिअंत बरनन जातरा साहितें जातरा बिरतांत के एगो रूप हवे हे। तकर छाड़ा जातराक निंगसे जीवन दर्सन केरो बरनन के जातरा साहितें देखल जाइ पारे।

खोरठा जातरा बिरतांक केर उपर नजइर देल जाइ तो हामिन के समुख कइ गो जातरा बिरतांत देखेल मिलेहे। सबले पहिले 1989 में छपल 'गइद–पइद संगरह' किताबें डॉ. चतुर्भुज साहुक लिखल 'दारजिलिंग आर गंगटोक जातरा', जातरा बिरतांत साहितेक पटतइर रूपे देखल जाहे। एकर में डॉ. साहु जी आपन बिभाग के बिदियार्थी सभेक संगे करल दारजिलिंग आर गंगटोक केर जातराक सोझा आर सुपट बखान करल हथ। एकर में ऊ छेतरेक परकीरतिक सुंदरइ के छापा उखरवेक कोसिस करल गेल हइ।

दोसर नमुना बी.एन. ओहदार के लिखल छोटानागपुरेक नैनीताल 'नेतरहाट' **के जातरा बिरतांत है। ई रचनाञ् जी नेतरहाटेक 'प्राकृतिक सुषमा' आर हुआँ** के बेरा उगेक आर डुबेक पहर सुरज के सुंदरता के अबिकल छापा आंकल हथ। पढ़इते–पढ़इते आँखिक आगु आयाँ जइसन ई सुंदरता परगट भइ जा है। एहटाव जातरा बिरतांक के एगो बेजोड़ नमूना हे।

सन् 2000 ईसबीं तितकी पत्रिकाञ् 'सँकरी नदीक काछार' नाम से शिवनाथ प्रमाणिक जीक लिखल जातरा बिरतांत टा भेंटा हइ। ई जातरा बिरतांते गिरिडिह जिलाक संकरी नदिक कछारे पसरल टुंगरी–पहारिक खोहेक भीतर लुकाइल आदि मानवेक चिन्हा–मुँदाक खोजाइरें करल प्रमाणिक जीक अनुसंधान जातराक बरनन हइ। बितांतेक बरनन कहुँ–कहुँ बड़ी सजीब लागो हे आर कहुँ–कहुँ लेखकर लेखक सुपट 'रिपोटिंग' कइर के पार लाइग गेल हे। मुदा ई जातरा बिरतांते प्रमाणिक जीक खोजी प्रवृति केर

झलक जरूर मिल जा हइ।

आर एगो जातरा बिरतांत पंचम महतोक लिखल 'गंगा सागर' भेंटा हे। ई लुआठी पतरिकाञ् छपल हइ। एकर में पंचम महतो जी गंगा सागर जातरा के सुंदर बरनन करल हथ। संगे-संगे गंगा सागर के धार्मिक, आध्यात्मिक महत केउ इंगित करल हथ।

कुल मिलाइ के संसमरन आर जातरा साहित के एहे बिबरन हइ। सिस्ट साहितेक केर ई गौन बिधागुलाक उपरे कमे काम भेल हइ। मुदा संखाइ कम रहतो गुने गजगजा हइ।

सबदचित्र-रेखाचित्र

सबदचित्र बा रेखाचित्र कहनी रकम एगो नाँवा बा टटका साहित-रूप हके जकर नाम अंग्रेजी के Sketch सबद के जोखाञ् बनवन गेल हे। स्केच (Sketch) चित्रकला के अंग हके, जकर में चित्रकार बाट ले दू-चाइर गो आड़े-तिरछे, टेढ़ा-बाँका रेखा खींच के कोन्हों चीज, बेकति, चीज-बसुत बा दिरिस के छापा उखरावल जा हे। मकिन रेखाचित्र कोई चित्र बा फोटो नाञ् लागे किलेना फोटोञ् बारीक से बारीक, छोट से छोट चीज टाव के छापा उखइर जा हे। सेइ तरि साहितें जकरा रेखाचितर बा सबदचितरो कहल जाहे ओकरो में कम से कम सबदें कोनो चीज, बेकति बा दिरिस के मन के छुवे वाला आर सजीव आँकन करल जाहे। अइसन कहनी बा सबदचितर जब पढ़ल जाहे तब पाठकेक मने पढ़ते-पढ़ते एगो सहढीठ फोटो मुहामुँही मुहइड़ जाहे आर पढ़वइयाक मने भावना के एगो हिलोर उठे हे जे मन के छुइ ले हे। फोटो बा चितर बनवे के साना-फाना हके रंग, रेखा मकिन सबदचितर के साधन हके सब। सइ खातिर एकरा सबद चितर कहल जाहे। कहुँ-कहुँ अंग्रेजी के स्केच टाउ के परजोग जाने-बेजाने कोइ-कोई करो हथ।

सबदचितर के कहनी से बड़ी मेल हे। दुइयो में छन, घटना बा भाव पर बिसेस धियान रहो हे। आकार के नजइरें दुइयो के आकार खाँट-खुँट रहो हे आर दुइयोधियान रहो हे आर दुइयो में पात्र गुलाक बार्तालाप बा बातचीत (डायलोग) चलो हे आर संगे-संगे कहनीकार के मत बा बिचार बा 'नैरेशन' रूपों टा चलो हे। कहनी आर सबदचितर के मांझे एतना लसतंगा (समानता) हे कि आदमी गड़बड़इये जा हथ आर कहनी के कहुँ सबदचितर आर सबदचितर के कभुँ कहनी कइहे दे हथ। कहनी आर सबदचितरेक माँझे समानता के लेताइरें 'शिप्ले के विश्वसाहित्य कोष' में कहल गेल हे - सबदचितरें भाबना के गहराइ आर अनुभूति के तीव्रता ओतना नाञ् रहो हे जतना के कहनी में। दोसर बात कहनी में 'कथात्मकता' बा कहानीपन के माँग (अपेक्षा) बेसी रहो हे। जबकि रेखाचितरें कटि कम।

कोन्हों बेकति के जिनगीक उपरें सबदचितर तो बनवल जाय पारे मकिन उ जीवनचरितर बा जीवनी नाञ् हतइ। कीलेना जीवनी में छोटे-मोटे सभे बात के सिलसिलेवार राखल जाहे। मेनेक जे बेगति के जीवनी लिखल जाहे ओकर में मोटामोटी सोझासझी बरनन रहो हे। कल्पना के उड़ान के गुंजाइस जीवनी में नाञ् रहो हे मकिन सबदचितर अइसन साहितरूप हके जकर में लेखक आपना भाबना आर अनुभूति के रंग के कल्पना के कुची से दु-चाइर गो सबदें अइसन चितर खड़ा करो हे कि मन के छुल ले हे।

रेखाचित्र के बिसेसता एकर विस्तार का ढांगा आकार में नाञ् हवे। बिचकुन अनुभूति के तीव्रताञ् हवो हे। सबदचितरें बरनन कम से कम रहो हे मकिन संवेदना तीव्र रहो हे। एकर में लेखक कोन्हों एगो खास बिन्दु बा छन से सुरू कइर के एगो खास छन बा बिन्दु में सेस करो हे आर एकर छापा उखराव-हे। सइ खातिर सबदचितर आर रेखाचितर के मुइख बात ही ऊ प्रस्थान बिन्दु बा सुरू करेक ठाँव के टवान बा खोजाइर करेक जहाँ से सुरू करल जाइ। इटा बड़ी कठिन काम हकइ आर जकरा अभियास से पावल जाइ पारे। दोसर सबसे बोड़ बात हइ सब चितर के, उ हइ - एकर संकेत खेमोता। मेनेक सबद चितर सबद आर बाइक से हइट के ढेइर अइसन बात कइह जाहे जे सबदें बा बाइकें समाइ नाञ् पारे। सबद चतिर लिखेक लाइ बिसय के चुनाव बड़ी मुइख बात हके। अइसन बात के चुनल जाइ जकर में बेसी सबदेक दरकार नाञ् पड़े। जइसे : दहादही चाँदनी राइतें ताजमहल के सुन्दर के सबदचितर बा रेखाचितरें तो बाँधल जाइ पारे मकिन शाहजहाँ आर मुमताजबेगम के परेम कथा के सबदचितरें बाँधेक टा बड़ी कठिन काम। जदियो आगु कहल गेल हे कि सबदचितर लाइ बिसइ के चुनाव मुइख बात हइ तइओ बिसय चुनाव लाइ कोनो बंधन नाञ् हइ। बिसइ कोन्होवो वहे पारे।

सबदचितर के भेद

मूल भावना के लेताइरें सबद चितर के कइ गो-भेद पावल जाहे।

जइसे :

1. मनपरवा सबदचितर (संस्मरणात्मक)
2. बरनन करवा सबदचितर (वर्णात्मक)
3. अड़गाही या अलाठी सबदचितर (व्यंग्यात्मक)
4. मनोबिगियानी (मनोवैज्ञानिक)

खोरठा आर सबदचितर

इ बिधाञ् खोरठें ढेइर काम एखन तइक नाञ् भेल हे। दोसर भाभें कहल जाइ पारे, जे भी काम इ दिगें भेल हे, तकरा आंगुरें गनल जाइ पारें। सबले पहिल छपल सबदचितर

बी.एन. ओहदार के 'रइसका' हके जे तितकी नामेंक तीनमसिया खोरठा पतरिकाक बछर 33 अंक 1/83 आर 2/83 लगाइत दू अंके छपाइल हे। इे सबद चितर खोरठा लोककथाक आधारें लिखल गेल हे आर ई बरननाकरवा परकार के सबदचितर हके। एकर एकर बानगी देखल जाउक-

"लांब लसर देहि, खुब चाकर छाती, अइँठाइल-अइँठाइल बाइँह, अमोसा क़े राइत नियर गुजगुज करिया रंग, घोंघचल चुइल काँधा तइक लटकल आर तँहिं गबचावल एगो बाँसेक ककइ। आर पिंधनाव रहे तइसने झझकबारि। मुड़ें बाँधल लाल ललकवारि गमछा, तँहिं गोंजल सतरंगा मेंजुरपाइँख। एड़ीसहर लील गबावल धोती आर डाँड़ाञ बाँसी खोंसल।"

हमरे दोसर एगो संस्मरणात्मक परकार के सबद चितर, एगो कुकुरेक आत्मकथा छपलइ हमरे खोरठा निबंध नामक किताबें। एकर एगो अंस देखल जाउक-

"एक दिन एगो जानी दुगो आपन छोट-छोट गीदर संगे सिकार के खोजाइरें घुरो हलि। अचक्के कुँ-कुँ के साड़ा पाइ के हिने-हुने ताके लागली। साड़ाक पेछाइँ एगो चटाइनेक खोंहें पोंहचलिक तो देखहिक घाँस-फुसेक खोंधाञ् चाइर गो कुकुरेक छउआ कुँ-कुँ कर हलथ। उ जनीक दुइयो गीदर कुकुरेक छउअ देइख के नाचे लागला। बस ! ओखिन चाइरो कुकुर छउआ के आपन खोंहे लेइ आनला। मकिन कुकुर छउआक आँइख तो फुटल रहे नाञ्। कइसे पोसल जइ जानथ नाञ्। एक-दू दिनेक पेछु द गो मोइर गेला - बांचला दू गो......।"

कटि आर आगु देखल जाउक

"हाम्हुँ खेरहा, छगरी, मुरगी जइसन छोट-छोट सिकार मारइत-मारइत अनसाय गेल हलों आर ई गुला चाँड़े भेंटइबो नाञ् करथ। खायेक-पियेक जुलुम भइ गेल रहे। मानुसेक मारल बड़का-बड़का जानवर देइख के लार पिटको हल हमर। आर तबे मानुसगिलाक आसि-पासि रहनाञ् हामें बेस बुझलों। मानुस हाड़ फेइक देइथ तो हाम आपन भाइ-गोतिया संगे राइत के कुँ-कुँ करले आवतलों आर राइत **भइर हाड़ चुसतलों**"

ई दिसाञ् आरो-आरो रचनाकार लिखल हथ, मकिन छपल नखे। एखन दरकार हइ खोरठें जे कोन्हों अइसन रचना लिखल गेल हइ तकरा खोइज के छपवेक बा इंजरावेक आर रचनाकार गुलि के मनोबल बढ़ावेक। ई कामें खोरठाक पतरिका बा आन भासाक पतरिका बड़का भूमिका निभावे पारे।

— — — — — —

खोरठाक साहित्यकार

भुनेश्वर दत्त शर्मा 'ब्याकुल'

जखन खोरठा भासा आर साहितेक बात उठे हे तऽ हटात भुनेश्वर दत्त शर्मा 'ब्याकुल' जी खयाल आइ जा हथ। साहित जगतें खोरठाक नाँव संगाठे में ऊ पेछु नाँइ हलथ। जे सँवइ लोक घरेक बाहरे बा सभा-सोसाइटीं खोरठा बोले में लजा हलथ, ऊ आपन माँइ कोरवा भासा-खोरठे गीत-कविता लिखहलथ आर गइबो करहलथ। बेसी आये तखन उनखर गीत-कविता किसानी आर उलगुलानेक लेताइर केरे सुनल जा हलइ। ऊ एगो चनफनिया कलाकार गवइया आर बजबइया हलथ। ब्याकुल जी पुरना परियाक साहितकार लागथ। उनखर सँवइ खोरठाक कोन्हों साहितिक रूप नाञ हवइ मेंतुक खोरठा बोली गीत-नादे, भुमइर, डोहा, जान कइहनी आर सुन कइहनी रूपीं हली। जेटा परियाक परिया चलले आव हलइ। एकरा ऊ साहित रूपे ढारेक चेस्टा करल हलथ। उनखर रचना सँवइ-सँवयें बिसुन गढ़ेक ''सुखद खोरठा साहित कुटीर'' बाट ले बाहराइल हइ। उनखर रचने परेम, बिरह, गियान, माएक माहातम आर दुलारेक भाव भरल हइ।

ए-गो 'छउआ दुलार' कविते ब्याकुल जी समाजेक बिकास खातिर गाँवेक छउआ सभेक बडाइ कीरंग करल हथिन स्कूल जाइत छउआ के देइख के ओकर माअ के मनें की रंग हुब उठ-हइ सेटा देखेक जुकुर हइ-

हामर बाबु, हामर सोना
हामर सुगा पढ़े गेल।
सुन गे अकली! सुन गे खगिया !
उँच करेजा आइझे भेल!

ब्याकुल जीक कबिता खोरठाही नाँइ हिन्दी आर उर्दू हुँ लिख हलथ। आपन गीतेक आर कबिताक दाराँइ सुतल समाज के जगवेक काम कर हला। उनखर मनें आपन माटी आर मानुस के उपरें परेम आर दरद हलइ। से-ले जखन सोंवसे देसें बिरतानी सासन क खिलाफ उलगुलान सुरू। भेलइ, ओहो उलगुलानेक डहरे डहइर गेला। से कइ घाँव जेलेक खिचड़ियों खाइ भेलइन। सइ लेताइरें 1930 ईस्वी हजारीबाग जेले हिंदीक नाँव जइजका साहितकार रामबृक्ष बेनीपुरी जीक संगे देखा भेलइन। बेनीपुरी जीक संगे किछु काल काटल जकर परभाव उनखर पर परलइन। जेलें 'कैदी' नॉवक एगो पहिल रचना 'कवि व्याकुल' के नॉवे परकासित भेलइन। एकर बादें उनखर लिखल कबिता लगस्तर

प्रताप, वर्तमान, कर्मबीर, लोकमान्य, विश्वमित्र, हिन्दु, पंच, हिन्दुस्तान, बालक, जनता आर जागृति, जइसन दोसर-तेसर हिंदी-उर्दू पतर-पतरिकांइ प्रकासित होते रहल।

एक ठीन मारवन लाल चतर्वेदी जी लिखल हथ- 'व्याकुल' उपनाम से उर्दू भाषा में लिखी गयी भुनेश्वर दत्त जी की राष्ट्रीय कविताएँ सुन कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। ये कवि हैं आर राष्ट्रीयता इनमें कूट-कूट कर भरी है।

हजारीबागेक पहिल सांसद आर नाँव करा स्वतंत्रता सेनानी बाबू राम नारायण सिंह इनरवा राष्ट्रीय कवि कहिये के डाक हलथिन।

व्याकुल जीक पाहिल किताप 'कलमें व्याकुल' 1939 ईस्वीं बिसुनगढ़ हजारीबाग बाट ले परकासित भेल हइल। ई कितापेक कबिताक किछु लाइन देखा-

नौ जवां ! या तो गुलामी को
मिटाकर दम ले,
वर्ना अच्छा है कि बस सर को
कटाकर दम ले।

ई कबितें उनखर मनेक आँया गुलामिक
दरद आर आजादिक तड़प बुझल जाइ पारे।

ब्याकुल जी कबिता पाठ तो करबे कर-हलथ एगो बेस बकता हलत से- ले राम नारायण बाबुक टान देइख ऊ उनखर संगे रही के कांगरेस पाटिक काम देखत। रामगढ़ेक कांगरेस अधिवेसन 1940 के सफल बनवें में उनखर बड़ी जोगदान हलइन।

ब्याकुल जी 17 मार्च 1908 ईस्वीं गिरिडीहेक पासें महथाडीह गाँवे बिसुन गढ़ें रह-हला। तखनी उनखर बाप पंडित बलदेव प्रसार उपाध्याय सिराइ गेला। से-ले उनखर देख-भाल उनखर आजा पं. अयोध्या प्र. उपाध्याय करलथिन। आपन आजा से ही ऊ पहिल भासा बियाकरनेक गियान आर सिखा पइला।

घरें उनखर मन नॉइ लागे से ले ऊ 11 बछरेक उमइरहीं घर से भाइग के काँसी चइल गेला आर किछु दिन पर घुरियो अइला।

जखन ऊ घर से बाहर हला देस-दुनिया के बड़ी नजिक से देखे आर बुझे पइला। से सँवइ गाँधी जी जनजागरन के काम कर-हला देस के कइसें गुलामी से छुटकारा हतइ ओकर उतजोगें लागल हला। 1925 ईस्वीं ब्याकुल जी गाँधी जी के संगते अइला आर आजादिक उलगुलाने लाइग गेला। से सँवय भारतीय समाजे जाइत-पाँइत उँच-नीच छुआ छुइतेक बड़ी जोर हलइ। गाँधीजीक सिख पाँइके हरिजन उत्थानेक कामें लाइग गेला आर आपने 'अंतर्जातीय' बिहा करला। तकर खातिर समाजे कते विरोध सहे परलइन। ताबो कबिक मने जाइत-पाँइत उँच-नीचेक उपरें बिरोधेक भाव बाढले गेलइन आर ऊ समाज

सुधारेक डहरें बाढ़ले गेला।

ब्याकुल जी 17 सितंबर 1984 ई. सिराइ गेला मेंतुक उनखर देखवल डहर सिराइल नखे आगु फरीछ करेक दरकार हइ।

सही माने देखल जाइ तो ब्याकुल जी एगो कबिये नाँइ स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारको हला। उनखर भीतरें चीनी साहितकार लु–सुन रकम किछु–किछु आटा–पाटा नुकाइल हलइ से–टा उनखर जिनगी से बुझल जाइ पारे।

श्री निवास पानुरी जीक खोरठा साहितें जोगदान

नाच बांदर नाच रे,
मोर चाहे बाँच रे।
ओकर खातिर दूध भात
तोर खातिर छाछ रे
ओकर खातिर उंच दलान
तोर खातिर गाछ रे।

के हकइ ई हिञाक लोकेक अवस्था आर नेक बेथा के लोकेक भासाञ् उखरावे वाला! के कहइ लोकभासा के अद्‌भुत परजोग करवइया? के हकइ ! लोक भासाक बेजोड़ सिल्पी?

मानभूमेक माटि तरे, हीरा मोती मानिक फरे,
ताव हिआँक लोक पेटेल जालाञ् मोरे।

के हकइ समृद्ध माटिक लोक भासांञ प्रसस्तिक गान करवइया? माटी तो गुनगार, जे माटी मानिक मोती फरें मकिन हुँआक लोक भुखे मरे, ई कम बोड़ विसंगित नाइ। ई पटतइरेक गोटा दुनियाञ् कहुँ टवान नाञ् मिल हइ! के हकई, ई विसंगति के निछु भाभें आयाँ रूपे दुनियाइए रखवइया?

उपरेक विसंगति के उखरवइया लोक चुप नाञ् बइठे आर इनखर मनें ई बेवस्थाक उपरें खीझ आर विदरोह के भाभ फुइट बहराइल हइ आर ऊ लोकके आह्‌वान करे–हे बा डाके हे, हँकाव हे। ओखनिक उठवेक, जगवेक जिगिस्त करे हे जे लोक ई बेबसीा के शिकार हथ, जखिन के ई बेबस्था बाँचे नांञ् दिए खोजे। आर ओकर मुँह से फुइट बहरा हइ।

आइझ नाञ् तो काइल हमर बात माने हतो।
गोडेक काँटा मुँहें धइर टाने हतो।

के हकइ ! अइसन आह्वान करवइया कबि? के हकइ, हिआँक लोकेक दुख दरद सुनवइयया–बुझवइया, जनवइया ओकर सुखेक कामना करवइया? के हकइ, ऊ बेकति जकर हिरदइए झारखंडेक लोकेक अनखान असेस आर अटट दलिदरि आर दरद टा टपटपाइ के भरल हइ। आर जे हियाँक लोके बुइधेक एगो बोड साखी रूपें डडांइल हइ तो के हकइ ऊ लोक? ई कोन्हों दोसर लोक नाञ् ई हथ खोरठा भासाक अखय बोर खोरठा भासाक बाल्मिकी श्री निवास पानुरी जी। हामें पानुरी जीक बाल्मिकीक दरजा नाञ् देल हों। ई दरजा तो देल हथ हिन्दी साहितेक नाम जइजका साहितकार प. रामदयाल पाण्डेय जी। ऊ कहल हथ कि "मैं तो इसे वैसा ही प्रयास मानत हूँ जैसा बाल्मिकी ने संस्कृत के लिए अथवा सिद्ध कबियों ने हिन्दी के लिए किया।" (रामदयाल पाण्डेय के द्वारा श्री निवास पानुरी जी को लिखी गई चिट्ठी – 1954)

पं. रामदयाल पाण्डेय जी एगो ठांवे आरो कहल हथ – "मुझे तो अद्भूत युग चेतना पानुरी जी की रचना से हुइ है और कितनी ही पंक्तियों से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ। उनकी पंक्ति बड़ी ही युग–चेतना सम्पन्न उद्बोधक तथा ओजस्विनी तेजस्विनी है।"

खोठाक पहिल कबिताक पहिल संपादक विश्वनाथ दसौंधी 'राज' तो पानुरी जीक खोरठाक 'भीष्म पितामह' तक कइल देल हथ। पानुरी जीक परोसाञ् (बडइाएँ) ई बात भुला कोन्हों अतिस्योक्ति नाञ् हइ। ई जाइज रूपें ओकर हकदार हथ, कीलेकि लोक भासाक टटका, ठेठ सबदेक, खेते, खरइयें आर घर गाँवे परचलित सबदेक साहिते एते धारदार परजोग करेक जादूगरी पानुरीजीक छाडा ककरो ठीन नाञ् हवे पारे।

ई आयाँ बात हे कि साहितकार बने खातिर ढेइर ढांगा ओसार सिक्छा के दरकार नाञ् हवे। पानुरी जी एगो बड पटतइर हथ कीलेकि ऊ भागा–जोगी मैट्रिक से उपरें नाञ् जाइ पारला। आर 1939 बछरें बापेक सिराइल आर 1944 बछरें मायेक मरलेक बादेहुँ उनखर उपर परिवार–चलावेक पारसनाथ जइसन बोझ आय गिरलइन। आर परिवार पोसेक लागिन पानेक गुमटीं आइ बइसला। पान, चुन आर कत्था बेचेक कारोबार सुरू करला। मकिन छुटल नाञ् उनखर साहितेक साधना। ई पान बेचा टा आर साहित साध नाक माँझे कोन्हों भेल नाञ्। तइयो ई दुइयो साधना लगसतर चलते रहलन। ई एगो करम जोगिक बडका पटतइरख चाहे कबि रविदासेक परंपरा के बड़का साखि रूपें बरबा अड्डाञ् डंडाइल रहथ। जोग आर भोग दुयोक समन्वयकारी राजा जनक के प्रतिरूप मानल जाय पारे पानुरी जी के।

ई करम जोगी आपन पिछा ना छोडइत गरीबी के रहतेउ लगातइ 40 बछर तइक लगसतर साहितक साधना करते रहला, साहितक सामाजीकरण करते रहला। ई मांझे ऊ

साहितेक भिनु-भिनु बिधा कबिता कहनी, उपन्यास, खंडकाइब, आर लेख आदि 17 गो खाँटी किताब 'बाल-गकिरण', 'मातृभाषा', 'खोरठा, 'रामकथामृत', 'मेघदूत', 'उद्वासल कर्ण', 'चाभी-काठी', 'आरो-आरो कतेक रचना करला। अटुट गरीबी माँझहु 17 गो किताबेक लिखेक उनखा अनबाइद साहित साधना के बुझल जाय पारे आँकल जाय पारे।

पानुरी जीक ई 40 बछरेक साहित साधनाक माँझे उनखर बिचार के नाभान-उठानटा नाञ् भेल हइ से बात नाञ्। ऊ आपन साहित साधनाक सुरूआती बेरा निछु सिंगारेक काइब 'मेघदुत' खोरठाञ् करल हथ तो एहे पानुरी जी आपन साधनाक आखरी पहरें कम्युनिष्ट मेनीफेस्टा के खोरठाञ् अनुबाद करल हथ। उनखर बिचारेक परिबर्तनेक उपरें ए. के. झा जी कहल हथ कि जे पानुरी जी मेघदूत जइसन सिंगार काइब के रचना करल हाि स पानुरी जी कम्युनिष्ट मेनिफेस्टो के जुगेक गीता कहल हथ। ई भाभें पानुरी जी क बैचारिक परिपक्वता के बुझल जाय पारें ई ठांवें आर एहे टा पानुरी जीक असली रूप हके।

लोक भासाक अब्गा, ठेठ सबदेक घारदेवइआ सबदेक खेलाड़ी बा जादुगर पानुरी जी ई दुनियाइ से उइठ जा हथ 1986 बछरें। पानुरी जी एखन ई दुनियायें तो हथ नाञ् मकिन उनखन विचार, उनखर काम सिराइल नखे, थिराइल नखे एखनो मँडराई रहले हे गोटझ खोरठा जगतें। पानुरी जीक अटुट साधना के एखन बांचाइ राखेक हमनिक दाय हे, जिम्मा हे। जोदि हामनि उनखर बिचार, साधना के जागाइ आर बाँचाइ के राखे पारि, ओकर से कोन्हों सीख लिए पारि एकर से बेसी सरधा-सुमन नाञ् भेतइ उनखर प्रति।

विश्वनाथ नागर आर खोरठा साहित

कोन्हो भासा आर तकर सहित परंपरा में जानेक लाइ आयाँ दरकार हइ तकर गोटा पइरबेस - सामाजिक, आरथिक, साँसकिरतिक, राजनीतिक आर भासिक दिसा आर दसा के जाने के।

विश्वनाथ नागर के जनम धानबाइदेक मुदा गाँवें 7 जनवरी 1939 ईसबीं भेल हलइन। ओहे धानबाइद, जे हके कोइलाक खजाना। एहे धानबाइदें कोइलाक खोजाइरें रोजी-रोटिक आर बनिज-बेपारेक खोजाइरें रोजी-रोटिक आर बनिज-बेपारेक खोजाइरें हवे लागल आवेक आर बसेक-माडेक गोटे देस के लोक के। पइरनाम भेलइ कि हिआँक मूलबासी आपन गावे-घारें बेपहचान हवे लागला करे-करे। ललोक हेराइ गेला आपन घारेक देहरिक भितरिंह। करे-करे लुकाइ लागल करम, सोंहराइ, सरहुल आर

जितिआक लह–लही। बिघराइ आर बिलाइ लागल डोहा, चाँचइर, उधवा, झुमइर, झुमटा, खेमटा आर नटुआ के सूरआर ताल। समाजें ढुइक गेल हल समाज के दहेजवइया 'दहेज'। उइड़ चलो हल भोजपुरी, मइथिली अर मगहि भासा आर सँसककिरति। बिसराइल जा हल आपन माइकोरवा भासा खोरठा आर हेराइ गेल हल लोकेक मुँहेक हाँसि। चल–चल औदोगिकरन के ऑधी आर सइ आँधि गिरे लागल हल सामाजिक–साँसकिरतिक मुल्य के सरल, सोझ, लेढा–बांका गाछ। बिसँसकिरतिकरन के गातजारा, चामसुखा तह–तह रउदें आर धोंकाञ् सुइख के हरठ भइ गेल हल धानबाइदेक धरती। मकिन एगो कहावत हे कि जीवित जाइत आर तकर भासा संसकिरति चाँड़े मोरे नाञ् भले कुछ छन खातिर ढँपाइ जाइ, तोपाइ जाइ। मकिन समइ पाइ जे रकम चइत–बइसाख मासें हरठ भेल धरती के फोइर के धरतिक छाती ची के बहराइ जाहे एकदम पोहा, लिचुर, कोमल–नाजुक परासेक लत सइ रकम बिसँसकिरतिकरन के रउदें हरठमेल धानबाइदेक धरति के फोइर के बहराइ गेल हला श्री निवा पानुरी, विश्वनाथ दसौंधी राज, विश्वनाथ नागर, नारायण महतो, नरेश नीलकमल आदि आर राजनीति के छेतरें बिनोद बिहारी महतो आदि।

धनबाइदेंक साहित छेतरें श्रीनिवास पानुरी धुरिक भूमिकाञ् हला आर उनखर चाइरो बट विश्वनाथ नागर, विश्वनाथ दसौंधी राज, नारायण महतो, नरेश नील कमल पूरा कर–हला एगो साहितेक 'वृत' के। आर सइ वृत के एगो चाप (अर्द्धवृत) हला विश्वनाथ नागर।

1957 ईवसीं, जे हलइ राँची आकासबानीक स्थापना बछर ई सभे (पानुरी आदि) बनवल हला 'लोक सेवा संघ' आर 'खोरठा साहित समिति' आर एहे बैंनरे खोरठा–साहित सिरजन करो हला। ई सभेक रचना आकासबानी राँची से परसारित हवो हलइ तखन।

नागर आर उनखर साहित– जादि कालेज घरिक नागरीजीक मन आर हिरदएक गुमाइर के बाइछ देल जाउ तो नागर जीक बेस भाभें सुरूआत 1961 से मानल जाइ पारे जे एखन तइक जारी हे। ई माँझे उनखर जे रचना संसार रहल हे तकरा ई रकम देखल जाइ पारे–

(क) राँगा पारे – 1961–1969 तक के कबिताक संगरह

(ख) दिंडल पाता – तकर पेछुक कबिताक संगरह।

(ग) सुलक साथ – (चांड काइब) महाभारत के परमुख पात्र कर्न के जीवनें आधारित।

(घ) खइयाम तो मधुगीत - खइयाम के 'रूबाह' के खोरठा अनुवाद।

(ङ) झींगाफूल - नागर गीत संगरह, जे एखन तक छपल नाञ् हे।

पत्र-पत्रिकाञ् लेख - समइ-समइ परें भासा-साहित के उपरें इनखर हिन्दी लेख भिनु-भिनु पत्र-पत्रिकाञ् छपते रहल हे जकर मइधें धनबाइद से परकासित ''दैनिक आवाज'' पतरिकाञ् परकासित भेल लेख मुइख हे।

(क) दक्षिणी बिहार की लोक भाषा खोरठा- छपल 7 जून 1992

(ख) छोटानागपुर के घर आंगन की बोली खोरठा छपल 8-15 नवंबर 1992

एक छाड़ा इनखरर कइगो आर किताब खोरठा भासाक उपरें हिन्दी भासाञ् छपल हे जकर में 'खोरठा भाषा का लोक -साहित्य-एक विवेचन'' के नाम लेल जाइ पारे।

नागर साहित आर तकर प्रवृति- जअिओ नागर जी धनबाइद साहित-वृत के एगो पड़ चाप हलथ तइओ इनखर काइबेक छटा आरो कबि से गुदा हइ। इनखर काइबें हइ मनेक सतरंगी उड़ान, प्राकृतिक सुंदरइ आर सेटाञ् एकाकार हवेक कामना, आत्मनिष्ठ 'भावाभिव्यक्ति' आर मेंजुर पाइखेक उठात मन हइर लिएक खेमोता। हिन्दी साहितेक छायावाद 'स्थूल के प्रति सुक्ष्म के विद्रोह' के छाया इनखर काइबें देखल जाइ पारे।

माड़िं डुबल आँखीं मोरा
ढुलु-ढुलु हाय,
नेसाक जोरें गोड़ दुओ
बहइक जोदि जाय,
फेंइक दिहें किरन-जाल
फांइस लिहें मोरा,
ढाइर जिहें आपन रंगे
उठाइ लिहें कोरा।
आइझ हवा चाइल मुइल
जंदे-तंदे बोहे
आइझ मनें ढेव उठे
बिसरल बात कहे।

(तोर इंगितें - 1966)

उलइझ हामें जीवन पथें
हेराइ किछु देलो,
दुखेक चाइर ओइड़ दामें

लोटें डुइब गेलों।
संगी तोर खोजें हामें
कहाँ नाञ्, गेलों,
गीतेक घारें बोहल-बोहल
तोर कछारें अइलों
(दरदें डुबल - 1966)

उपरेक सभे कबिताञ् कबिक एकनिष्ठ भावाभिबेकति बेस भाभें फुरछाहे। नागर जीक 'स्वनिष्ठता' एतेक भारी हइ कि ऊ आगु चइल के फारसी कवि खइयाम के रूबाइ जे एकांत भाव के मधुगीत हके तकर अनुवाद खोरठाञ् खइयाम तोर मधुगीत नामें अनुबाद कर-हथ। आगु नागर जी महाभारत के पात्र कर्न के चरित के आधारें खोरठाञ् एगो खंड काइब 'सुलकसाय' लिखल हथ। सुलकसाय, काइबेक नजइरें एगो पकठाइल-जोवाइल रचना हइ जे खोरठाक अभिबेकति खेमोता के बतावो हे आर खोरठा साहित के समरिध करो हे।

ई खंड काइबें एक ठावें द्रोन कर्न से कहो हइ-

धनुक बान तोरा की सोभतो
तोञ् जे भेलें सूत-पूत,
तोर हाथें कोदाइर गांइत
हार-फार रे कुल कपूत।
जो जो रे करन तोञ् घुइर घर
तोर खेत जहाँ हो दू किता
गाँव धरेक संगति साथी
हित कुटुम माता - पिता।

जे समझएँ पानुरी जी झारखंडेक दुरदसाञ् बेआकुल भइ के लिखहथ-

मानभूमेक माटि तरें, मानिक मोती हीरा फेर
ताव हिऑक लोक पेटेक जालाञ् मोरे।

सइ समइए नागर जी झारखंडेक समसिआ के डेराइ के पथ-छाड़ा भइ जा हथ आर प्रकृति के सुंदरइ आर आपन मतेक बेकति कथा के गीत गा हथ-

आचार-बिचार छोइड़ हामें
डहर-छाड़ा भेलों
रोदेक जालाञ् छाँहुर खोजें
इदाँ चइल अइलों।

जोदिओ नागर जीक गोटा काइबा समइ के मांग के लेताइरें नाञ् हे तइओ इनखर काइब उत्कृष्ट काइबेक बेपटतरिआ नमूना हइ। एकांत भाव आर प्रकृति के सुंदरइ के चितेरा इनखर जोड़ के केउ नाञ्। नागर जीक गोटा काइब ई साबित कइ दे हे कि खोरठा एगो बेजाञ् समरिध भासा आर एकर अभिबेकति खेमोता आकूत हइ। नागरजी खोरठा के एहे रूप के देखवल हथ ई खोरठाक हितें कम नाञ्।

नागर साहित के काइबगत विसेसता-

- एकांत भाव के कबिता।
- गीतात्मकता गेयता सबसे बड़ बिसेसता। सब कबिता के सुरें तालें बेस भाभे गावता जाइ पारे।
- सरल आर सहज सबदेक सही परजोग
- छंदे छंदाइल कबिता। छंद जोजनाक बेस भाभें निरबाह भेल हइ।
- छायावादी काइब प्रवृतिक छाप साफ-साफ झलकइ इनखर काइबें।
- इनखर कबिता दुनिआइक कोन्हों भासाक कबिता के पाँउते डँड़ाइ पारे।
- खोरठाक अभिबेकति खेमोताक दरसन हवे हे इनखर काइबें।

खोरठा भासा साहितेक बरतमान रूप

कोन्हों एगो लोग के मोहड़ा (चेहरा) के सरूप (आपन रूप) खड़ा करेक लाइ दरकार परो हे ओकर आँइख, नाक, कान, लाबार, गाल, ओठ, दाड़ी, मोछ आदि आर तकर लंबाइ, चउड़ाइ, मोटाइ घुमाव आदि के। सइ सकम कोन्हों भासा के साहित के सरूप (आपन रूप) खड़ा करेक लाइ दरकार हवो हइ गोटा भासा साहितेक परंपरा, पइरबिरति आर सामाजिक, राजनइतिक, धारमिक, सांसकिरतिक परिबेस के बेस से जाने आर बुझे ले।

खोरठा भासा के साहितिक परंपरा के सुरूआत बिदवान सब 170 ई. के मानल हथ। सेहे परंपरा के पहिल कबि रामगढ़ राज के पाँचवी पीढ़ी के राजा दलसाह आर उनखर महाकाइब 'सिबसाग', काइब 'रामरसानव', 'राज रहइस' आर 'गोविन्दलीला अमरित' आदि के खोरठाक पहिल सिस्ट साहितिक रचना मानल गेल हे। तकर पेछु दलसाह के दरबारी कबि पदमदास उनखर रचना 'काइब-मंजरी' आर **'हितोपदेश के पइद अनुबाद', दलसाह के बेटा सुंदर सिंह आर उनखर रचना 'गिआन** सुधाकर' हेन तेन रचनाक टावान मिलो हइ। ई सभे साहितिक रचना भगति साधना आर भगवान भगति बिसइएँ हइ। भासाञ् अबधी आर ब्रज भासाक पइरभाव हइ। जे समइए खोरठाञ्

इ सब लिखल जा हल से समइ हलइ हिन्दी साहितें भगति काल के निंघरउति आर देसे रहइ औरंगजेब के सासन। अइसन ढुढझा हइ खोरठाक साहितकार कबि सब के सामने हिन्दी साहित के 'मॉडल' होत आर एहे मॉटल के लेताइरें खोरठाञ् अबधी, ब्रज भगवान भगति आर धरम साधनाक भासा बइल गेल हल सइसें खोरठाक रचनाञ् रचना हवइत होत। भासाञ् अबधी, ब्रज के पइरभाव के ओजह ई हवे पारे कि से घरि अबधी, ब्रज भगवान भगति आर धरम साधनाक भासा बदल गेल हल सइसें खोरठाक रचनाञ् अबधी आर ब्रज के पइरभाव हइ, खाँटी अबधिक रचना नाञ् हकइ। आर ई साहितिक परंपरा चलो हइ मोटा-मोटि एक सउ बछर मेनेक लार्ड कॉर्नबालिस के परमानेंट लैंड सेटलमेंट 1797 तइक।

लार्ड कॉर्नबालिस के बेबसथा से समाजें खुँखड़ी-रूगड़ा लखे एगो नावाँ बरग जमींदार आर सामंत के जनम हवो हइ। ई जमींदार आर सामंत के मुइख पइरबिरति हल, जनता के सोसन आर अइस-आराम करेक। सइ खातिर समाजें खोसामदि, चाटुकार, गोड़इतिदार नाना रंगेक गवइआ, बजबइआ आर नचवइआ चलति चले लागा हइ। गवआ, बजवइआ के गीतेक बिसइ हल, राधा-किरिसन के परेम आर लुझड़ लीलाक बरनन। एहे ओजह ई हवे पारे कि से घरि हिन्दी साहितें 'रीतिकाल' के निंघरउति हल आर हिन्दी 'रीति' कालेहुँ राधा-किसनेक लुझड़ लीलाक बरनन रहो हलइ। खोरठाक रचना मोटा-मोटी गीत बिधाञ् हलइ आर बिसइ हलइ राधा-किसनेक सिंगार-पटार के बरनन। मेनेक सइ घरिक साहितिक परबिरति हलइ सिंगार भावना के बरनन। सइ घरिक कबि रूपें हलथ - भावपिरिता, विनंदियवा, लइछमन पाठक, हाड़ी राम, चामु कमार, तितकी राय, चोमली नचनी आरो-आरो। एकड़ा छाड़ा कतरासगढ़ेक राजा गंगा नारायण सिंह के दुगो छपल किताब 'रघुबर बिनय' आर 'गीता संगीत (1902) के टवान मिलो हे। सबले बोड़ बात ई हइ कि अबधी आर ब्रज भासा के परभाव के बीच कइरेक खोरठाञ रचन हवे लागलइ।

देस आजाद भेल कर पाछु खोरठा साहित के सरूप (चेहरा) बदलाइ जाहे। मेनेक सरूप टा पकठाइ (मैच्योर) जाहे आर भगवान भगति, रास, रंग, लुझड़ देसेक दसा-दिसा, दुरगति, दलिदरि, नित दिनेक जिनगिक पइरसानी आरो-आरो। एतेक किसिमेक समइसा आर ई सभे समइसा छुछे गीत कबिताञ् समाइ पारे? सभे समइसा फुदछाय (अभिव्यक्त) हवे पारे।? नाञ्। एहे लेताइरें एगो बिद्वान के कहेक हइन "कि अतित के छंद से बरतमान के तुफान के बाँधला बा छाँदल नाञ् जाइ पारे।" तकर लागिन दरकार हव हइ एगो नावाँ डोटा (छंद) के आर तबे खोरठा साहितें गइद बिध ाक सुरूआत हवो हे। संगे-संगे भगवान भगति, काना पतिआर, लुझड़लीला अर ढढ़नच

जुग के भइ जाहे अंतर आर सुरू भइ जाहे एगो नावाँ जुग खोरठा साहितें, सेटा आधुनिक जुग नामें जानल जाहे। ई जुगेक साहित के बिसइ भइ जाहे - माञ्, माटि, मानुख आर मातरिभासा। साहितेक पात्र भाइ जा हथ समाजेक हेंजोमारा, खटंगल लोक ओहे ठेरका-ठेरकी, ढंगली, रेंगटा, घीसु, गातजारा, चामसुखा, धोंका आर रउदे घामजारा, हाड़तोरा, काम करइते खइट-खइट के खिआइ आर सिराइ गेल हथ, जखनिक ढोढा भोरे नाञ् पेटेक जाला जाइ नाञ्। साहितेक बिसइ भइ जाहथ गोटे मानुस जाइत के जनमइआ जइनि जाइत जे आइझ तक भोगेक जिनिस रूपें जानल-चिन्हल जा हलथ आर ओहे जइनि जाइत के मानवी, मानुसिक दरजा देल गेलइ खोरठा साहितें। एहे लेताइरें एक ठाँव झा जी कहल हथ-

जोदि कबिता माने सिंगार-पटारेक चरचा,
जोदि कबिता माने लुझरगिरि, लीला लेमटाक बरनन
तबे हलें हमें कबि नाञ्।

झारखंडी संसकिरतिं काम के महत हे, चाम के नाञ्। काम के चिकन मानल जाहे। चाम के नाञ्। मकिन आइझ झारखंड का, गोटे देसें एकर हेला हवइत देइख के श्याम सुन्दर महतो 'श्याम' कहल हथ-

चाम सुखाइ कामें तवो सोमरिक हवे हेला।
देहे देखवे सुसमिता, ऐश्वर्या तकर खातिर मेला।।

जइनि जाइत के पुरूसेक बराबइर थान दियेक आह्वान परमानिक जी कर हथ-

नर नारि भेद कहाँ, नर जहाँ नारि तहाँ,
सिरजनारी नारिक बतर आना रहे
लहर आना, लहर आना रे।

आगु फइर परमानिक जी कह हथ-

जे देस दुरगाक पूजा करे, से देसें जनि पाहुर परे,
माटिक देवो के हवे मान।

एगो कबिताञ् दसौंधी जी कह-हथ-

मानुस छाड़ा ई संसारे, नाञ् के केउ बोड़,
आवरी तनि आव रे, मानुसेक गीत गावरे।।

मेनेक कबिगुरू रविन्द्रनाथ टैगोर के गीत। सोबार उपर मानुस, मानुस ले बोड़ केउ नाञ् के उद्‌घोस हे खोरठा साहितें।

एहे बेराञ् पानुरी जी 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' के 'जुगेक गीता' कइह दे हथ आर सँउसे मेनिफेस्टो के खारठाञ् कबिताञ् उखराइ दे हथ। मेने जनवाद भग गेलइ खोरठा

साहित के मुइख स्वर। एहे परंपरा के साहितकार ए.के. झा जी एक कु गइद–पइद बिधाञ् 'जनवाद चेतना' से टपटपाइल, रचना– 'साहित ना समाज बिगिआन', 'मानसु ना मेड़', 'मोरेक लुइर', 'समाजेक सरजुइत निसइन' आदि–आदि हे।

मेनेक गोटा बरतमान खोरठा साहित के दुगो साहितकार श्रीनिवास पानुरी आर ए. के. झा आपन जनवादी चेतना से भारी प्रभावित करल हथ। एखन ने कोन्हों रचना, जे कोन्हों बिधाञ् लिखाइल हे बा लिखाइ रहल हे, जनवादी चेतना से भरल हे। एहे परम्पराञ् शिवनाथ परमानिक, प्रहलवाद चन्द्र दास, श्याम सुन्दर महतो 'श्याम', गिरिधारी गोस्वामी, पंचम महतो, निदेश दिनमणि, वंशीलाल वंशी, शांति भारत आदि भिनु–भिनु साहित बिधाञ् लिख रहल हथ।

मेनेक खोरठा साहित सोझे रीझरंग बा आनंद उठवेक, बा छुछे आपन मनेक सुख खातिर नाञ् रहइ गेलइ बिचकुन समाज के उनरावे, उसकावे लाइ साना–फाना भइ गेलइ साहित। साहित भेइ गेलइ समाजेक बिगिआन। समाज के सोझा सरगतिया, सरसरिआ, सलसलिआ सगरेठ सोझवेक दाय हइ साहित के। खोरठा सहितें एहे जनवादी सामाजिक चेतना धारा के मांझी झारखंडी 'अस्मिता' आर 'पुनर्जागरण' के सुर एके संगे बाजे हे।

एह लेताइरें पानुरी जी कह हथ–

आइझ नी तो काइल हमर बात माने हतो
गोड़ेक काँटा मुँह धइर टाने हतो।।

मेनेक आपन समिसआक समाधनेक टावान आपने करे हतो। केउ बाहरेक लोक तोरा सहजोग दिए नाञ् अइतो।

झारखंड राइज अलग भेल कर पेछु खोरठा साहितेक सुर जनवादी अखनों हइ बिचकुन कटि आर तलिआइल आर जोरगर। राइज बनल कर आगु सांसकिरतिक अस्मिता आर सोसन, असमान बिकास के बिरूध स्वर रहइ साहित के। झारखंड अलग राइज बनेक आगु खोरठा भासाञ् झारखंड मुक्ति के साहसिक लड़ाइ लड़ल जा हल आर जब झारखंड राइज अलग भेल तकर पेछु एखन खोरठा भासाञ् समाज के उनखा जिगिस्ताञ् साहित लिखाइ रहल हे। समाजे पइरचल आर बगरल भ्रस्टाचार, सामाजिक कुरीति, दहेज, 'भ्रूणहत्या', काना पतिआर आदि परथ के खंडेक बा रगदेक चेस्टा साहितेक गइद–पइद सभे बिधाञ् भइ रहल हे एखन।

मेनेक खोरठा साहितेक गोटा आधुनिक काल बा बरतमान समइ जनवादी चेतना, समाज के आगु बढ़वइआ उनखां चेतना के सरूप हकइ।

झारखंड के अन भासाक साहित आर खोरठा साहित के तुलना–

कहल गेल हे कि पइरबेस चेतना जब सबदें फइट बहरा हे तो उ साहित कहा

हे। सेहे लेताइरें देखल जाइ तो गोटा झारखंडेक पइरबेस मोटामोटि एके रकम हइ तबे साहितेक सरूपो बा प्रवृतिओ एके रकम हवेक चाहि। मकिन अइसन पुरा-पुरा हइ नाञ्। मेनेक खोरठा साहितें जनवादी चेतना जतना धारदार, तलिआइल बा चोख हइ ओतना नागपुरी, कुरमाली, पंचपरगनिया आर अनाइर्ज भासा गुलाक साहितें नाञ् पवाइ। ई आञा बात हे कि कोन्हों भासाक साहित के कोन्हों नि कोन्हों लोक आपन बिचार, आपन दृष्टि, आपन चेतना से परभाति करल आइल हथ जुग-जुग से। जे रकम हिंदी साहित के आचाइर्ज महावीर प्रसाद द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन, भारतेन्दुख निराला आदि तइसने खोरठा के ए.के. झा आर पानुरी आपन निछु जनवादी चेतना आर दृष्टि से परभाबित करल हथ आर ई सब आइझ साहित के परिभासाइ बदइल देल हथ कि साहित मनोरंजन के साधन नाञ्, बिचकुल समाज के उनरावे, उकसावे के साना-फाना बा हथिआर हतइ। मकिन झारखंडेक आरो भासाञ् एखनहुँ कटि आपन पुरना रागें गाइ रहल हथ। जरंग पंचपरगनिया, कुरमाली आर मुंडारी एखनहुँ चैतन्य महाप्रभु के परभाब से मुक्त हवे नाञ् पारल हथ। सइ रकम नगपुरिया साहित एखनहुँ साहितेक ओहे पुरना परिभासाञ् बा साहितेक पुरना 'फ्रेम' में लिखल जाइ रहल हे।

ए. के. झा आर खोरठा भासा साहित

आचाइर्ज महावीर प्रसाद द्विवेदी कर 'अनुशासन', राहुल सांस्कृत्यायन के 'यायावारी' (घुमक्कड़पन), आचाइर्ज चाणक्य के 'हठ', भारतेन्दु हरिश्चन्द्रेक भासा अरा साहितेक पउपरें अटूट निस्ठा, महान बिगिआनी आइन्स्टाइन के 'कला आर बिगिआन के मांझे समनवय के खेमोता', इ सभेक मेसर-कोसर रूप टा के नाम हके ए.के. झा। झारखंडे भासा-साहितेक पुनरजागरन आन्दोलनके एगो जोधा जे खोरठ भासा साहित संसकिरिति आंदोलन के गएे जोधा जो खोरठा भसा साहित संसकिरिति आंदोलन के आपन कांधाञ् उठाइल के एक लगाइत मोटा-मोटी पचीस बछइर तक बिन जिराइल, बिन सुसताइल, बिन थाकल ढोते रहला आर एगो डंटगर ठेकान तक पहुंचाइ छोड़ला। आइझ खोरठा झारखंडेक एगो सब ले सकत, सब ले बड़ छेतरेक भासा बइन गेल हे, नित दिन सब बिधाञ् साहित सिरजल जाय रहल हे, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, झारखंड लोक सेवा आयोग जइसन संस्थाञ् माइनता पावल हे, झारखंडेक द्वितीय राजभासा के दर्जा मिलल हे खोरठा के तो इ एकाय ए.के. झा के खेमोताक बालें। खोरठा भासा-साहित के उनरावे-उकसावे, में झ जीक जोगदान के देइख के 1975 से 2000 तक के खोरठा साहितेक काल के झा जुग मानल जाइ तोइ में कोनो 'अतिश्योक्ति' नाञ्

बिचुकन झा जी के खातिर एगो सम्मान होवे पारे।

नजरूल इस्लाम (बांगला कबि), लू शुन (चीनी साहितकार), गोर्की (रूसी साहितकार) आर राहुल सांस्कृत्यायन के परंपरा के साहितकार ए.के. झा, जे मान-हथ कि साहित मनोरंजन के साधन नाञ् साहित एगो समाज विगिआन हके, समाज के दरपन हके आर एकर में समाज के आञा छापा उखरवेक चाही। झा जीक मतें - 'की हइ बा की होव हइ ताकर नाञ सुझाय के साहित के सुझवेक चाहि जे की करे हतइ।' तुलसीदास रकम साहित एक लोकेक मनेक सुख खातिर (स्वांत सुखाय) नाञ् बिचकुन गोटे लोकेक सुख खातिर हवेक चाही। आर एहे सिद्धांत लेइ के झा जी 1960 से एखन तक लगाइत साहित के समाजीकरण कररले आइल हथ। आपन सिद्धान्त से बीच भइ के कखन्हुँ ककरो से समझउता नाञ् कर-हथ। झा जी साहितेक भिनु-भिनु बिधा - उपनिवास (सइर-सगरठ), नाटक (मेकामेकी ना मेटमाट), कबिता (पइदेक खंडी), गइद (गइदेक खंडी), खंड काइब (समाजेक सरजुत निसइन) आलोचना (भाषा संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार) बेआकरन (खोरठा सदानी भासाक बेआकरन) भासा बिगिआन (खोरठा भासा बिगिआन), खोरठा रस, छन्द अलंकार आरो-आरो किताब लिखल हथ। एख झा जी खोरठाक प्रतिनिधि पतरिका 'तितकी' के मुइख सम्पादक रूपें डंडाइल हथ।

झा जीक मतें साहित खामेखआली (काल्पनिक), कानापतिआ (अंधविश्वास), सिंगार-पटार, ढढ़नच (फूटानी), लेभरा-लुझड़गिरिक (लम्पटई) बखान करेक माधि अम नाञ। एहे लेताइरें झा जी कहल हथ-

'जोदि कबिताक माने सिंगार-पटारेक चरचा!
जोदि कबिताक माने लूझड़तगिरी, लीला लेभराक बरनन',
तबे हले हामे कबि नाञ्।'

(कबिता - तबे हले हामे कबि नाञ्)।

इनखर साहितेक बिसइ हे समाजें पसरल भाइग आर भगवानेक काना-पतिआर (अंधविश्वास) आर तकरा खंडेक उपाइ, जनी-मरदेक मइधें भेदाभेद नाञ् नारी एगो मानवी-मानुसी, भोगेक सामग्री नाञ्, मरदेक खेलना नाञ्। इनखर साहितेक पात्र हथ समाज आर बिकार के सबल ले हेंठेक दापइनें (सीढ़ीं) बइसल समाजेक हेंजोमारा, खंगटल लोक ओहे ठेरका, ठुरकी, ढंगली, रेंगटा, धीसु से रोज खट-हथ हाड़ तोर-हथ मकिन ओखिनक ढोढा भोरे नाञ्, पेटेंक जाला जाइ नाञ।

देखा, ई जाहथ बेचे काठी,
जनी गुली ढांगी, ठुरकी नाटी,

गातें एगो चिकट चेंथरा,
नखइ जकर तुनको आसरा।

(भारतेक मोहड़ा, पइदेक खंडी)

झा जीक साहितें खोरठाक आपन ठेठ सबदेक पूरा-पूरा परजोग के चेस्टा पावल जाहे। आइझेक पढुवां लाइ तो बेगर तीनमुड़िया (बूढ़ा लोक) से पूछले उपाइ नाञ्। ठेठ सबदेक परजोग भले कटि असहज बनइ दे हे, मकिन आपन पहचान-बोध के ओकर ले बेसी मगजे घुँसाइ दे हे। एखन झा जी 'खोरठा साहित परिसद' के निदेशक हथ आर 'खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद' के मुखपत्र 6तितकी' के परधान समपादक हेकथ।

झा जी एगो बेकती नाञ् एगो संस्था, एगो इस्कूल, एगो 'फिलॉसोफी', एगो निछु बिदवान्। खोरठा साहित लाइ एगो सिद्धान्त गढ़ल हथ झा जी माय, माटी माटरा भासा आर मानुस के जो सार्वकालिक हे, सार्वदेशिक हे।

जोदि कहल जाय कि झा जीक जनम पेटरवारेक चण्डीपुर गांवे भेल हलइ आर ई हुँवे कर हकथ तो इटा ठीक वइसन हतइ जइसन कि केउ सूरूज के एगो कोठरी बंद कइर के राखेक चेस्टा करे, कि ले कि झा जी तो आपन समइ के सुरूज हेकथ। इ सुरूज आगु आरो चकते रहे, खोरठा भासा साहित के सगरठ चमचमाइत रहे, झा जीक आलो से।

शिवनाथ प्रमाणिक

जनम - 1950 ई.
जनम स्थान - गाँव बाइदमोरा, बोकारो।
माय - तिनकी देवी,
बाप - मुरलीधर प्रमाणिक
मुइख कीरति - दामुदरेक कोराञ (खंड काइव)
तातल आर हेमाल (कविता संगरह)
खोरठा लोक साहित्य (विवेचन ग्रंथ)
रूसल पुटुस (संपादन / कविता संकलन)

बेकतित के मुइख पोहोइल : खोरठा संस्कीरतिक मरमइग। बीर रस ओर ओञ गुनेक हुबगर कवि। 'स्वर' आर 'शब्द' दुइयोक धनी। खोरठा भासा आर हिंयाक मानुसेक उंचथान दइके समर्पित। हुबसार, चेठगर संगठन करखइया आन्दोलन करखइया। प्रयोगधर्मी खोरठा साहितकार।

"चल डहरें चल रे
डहर बनाइ चल रे
जिनगिक डहरें काँटा
काँटा उखाइर चल रे।"

उपरे उखरवल दमगर, जोरगर पहरिया हाँक, (मात्रा) पयान के डाक दइके खोरठा छेतरक लोक-मानुस के नावाँ चेत भरखइया "मात्र, माटी, मानुस आर मातरी भासा" खातिर झारखंड वासी आगु आवेक आहवान करखइया ई हुबगर कबिक नाम-शिवनाथ प्रमाणिक। शिवनाथ प्रमाणिक जीक जनम बोकारो स्टील कारखानाक विस्थापन परभावित गाँव बादइमोराक मुरलीधर प्रमाणिक आर तिनकी देविक एकमातर बेटा रूपे 1950 ई. में मेल हलइन। साधारण चासा घरे जनमल प्रमाणिक जीक छउवा बेरा अभावें आर बड़ी दुख तकलिफें बितलइन। मुदा कहल जाहे ना, आइग से पोड़िये के सोना चमकेहे। प्रमाणिक जीयो दुःख तकलिफेक आइगें तइप के आगु चइल के खोरठा साहित संसारे सोना नियर चमकला। खोरठा साहित पेरेमी सब केर कंठेक हाइर बनला।

होनिहार पोहाक गुलगुल पात तरी प्रमाणिक जी क छोटेक घरीए सिक्छाकदइके बिसेस टान रह हलइन (,) हाइर सेकंडरी तक केर सिक्छा लिये खातिर इनखरा ढेइर फर्दवाइ सहे परलह लइन आर एकर लेल चंदरपुरा कतरास आर गोमो में रहे परल हलइन। विदियारथी बेराहीं इनखर मनें साहितेक रूचि परचइ गेल हलइ आर आगु चइल के हिन्दी में लिखेले सुरु करला।

70 के दसक तक प्रमाणिक जी आवाज, सहर होगी, अमृतवर्षा जइसन पत्र पत्रिकाएँ हिन्दी कवि आर लेखक के रूपें छपे लागल हला। 80 के दसके उनखर रूझा खोरठा माने, आपन मात्र कोरवा भासाक वाटे टान भेलइन आर तखन से आर ऊ पेछु दने घुइर के नाय देखला। खोरठा भासा आर संस्कीरतिक सेवाइँ अइसन जिमिर जिट लाइग गेला जे आइज उनखर चरचा बिना खोरठा साहित केर चरचा अघपुरवा रहतइ।

प्रमाणिक जी के जदि खोरठाक हुलस्थुलकारी साहितकार कहल जाइ तो कोन्हों अनुचित नाइँ। जानल बात जे आजादी समये से खोरठा साहित केर गतिबिधिक परमुख केंद्र धनबाद छेतर रह-हल। पानुरी जीक साधना सो खोरठा सिस्ट साहित हिंया स्वरूप ले हल आर लोक के खोरठा से, खोरठा साहित जगत से परिचय कखन हला। आगु चइल के खोरठाक-दोसरका केंद्र बनल रामगढ़ छेतर। हिंया से ए.के. झा, बी.एन ओहदार, जी. एम. जंगली, चिटाबन चित्रा हेन-तेन खोरठा के जगवे में लागल हला। मुदा 80 के दसकें प्रमाणिक जीक आगमन खोरठा जगते हवन्हइन तकर बादे से खोरठाक केंद्र बोकारो बने लागे हे। इनखर नेतरित में खोरठा साहित-संस्कीरतिक छिनगल-भिनगल

गतिविधि एगो आन्दोलनेक रूप लइ ले हइ। सम्मेलन, पदयात्रा गोष्ठीक आदि दरदराइ के चले लाग-हइ। इनखरे चेस्टा से बोकारो खोरठा कमिटिक गठन हव-हइ जकर खोरठा के बेपटतरिया जोगदानं हइ। प्रमाणिक जीके हुबगर चेस्टाक परिनामें बोकारोक संगठनेक विस्तार सँउसे खोरठा छेतरे हव-हइ जकराँ खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद के नाम से जानल जा हइ। आइज खोरठा के ई केंद्रीय संस्था लागे जकर से खोरठाक प्रायें समे साहितकार जुड़ल हथ।

प्रमाणिक जी खोरठाक साहित संस्कीरति के एगो 'जुझारू' आन्दोलनकारी के संगे-सगे खोरठाक उँचा दरजाक साहितकार। इनखर साहितिक अवदान संइखा में भले कम हइ मुदा गुने तकर कोनों जोड़ नाइँ। एखन तक इनखर तीन गो मउलिक कीरति छपल हइन। 1986 इनखर पहिल काइब 'दामुदरेक कोराञ' खोरठा साहितेक अनमोल रतन तरी आंइल हइ। दोसरा 1998 में 'तातल आर हेमाल' नामेक फुटकर कविता संग्रह। तिसरका ग्रंथ खोरठा लोक साहित्य (विवेचन-हिन्दी में) 2005 में छपल हइन। तकर छाड़ा 1986 ई. मेंही इनखर सफल संपादनें 'रूसल-पुटुस' नामेक खोरठाा कविता सकलन बहराइल हलइ। अइसें इनखर छिट-पुट ढेइर कबिता, लेख, हेन-तेन भिनु-भिनु पत्र-पत्रिकाएँ बहराइते हइन।

साहित मर्मइग प्रमाणिक जी आपन-धरती मानुस, नारी, आर आपन भासाक समर्पित साधक लागथ। इनखर खोरठा आन्दोलनेक मूल मतर एहे चाइर 'म' लाई - माञ्, माटी मानुस आर मातरी भासा हेकन।

प्रमाणिक जीक क इबे भासा शिल्प दुइयो के 'मणिकांचन' जोग पावल जाइ। चूंकि ई साहित्य शास्त्र के भी जानकार, सइले इनखर रचनाइँ साहित के "तत्व" सुंदर ढंगे गोथल रहइ। 'दामुदरेक कोराञ' इनखर 'उत्कृष्ट' खड काइब हे। ए. के. झा ई कीरति के 'मधुर' काइब कहल हथिन। साइबते दामुदरेक कोराञ् मधुर आर उदात्त प्रेम कइहलीक संगे धरती के सुंदरताक बखान आर धरतिक दइके चेतना के बड़ी सुंदर सजोजन हइ। देखा दू रूपें दू नमूना -

1. महुआ डोह सरइ करंज,
   आम, जाम सिरिसेक संग,
   परास आपन मनें मतंग,
   बाह रे बाह झारखडेक बन।"
2. "झार बोने मुसा आइल
   काटे लागल गाछेक जइर,
   खरइ खरिहाने परइच गेल

जमा करे लइर–घइर।''

प्रमाणिक जीक रचनाइँ बहुत सबइँ मार्क्सवादी चिंतन के फलन देखल जाहे। उनख्र ''बावाँ हाथ'' कविता सोझा– सोझी बर्ग चेतना के वामपंथी तेवरें झकझोरल हथ।

ढेरमोहड़ी (बहुमुखी) परतियमाक धनी जहाँ साहितेक कइएक बिधाइँ आपन कलम चलव–हथ। मुदा इनखर पछान कबिये रूपें हइन।

प्रमाणिक जी जहाँ 'शब्द' के धनी इही 'स्वर' के मामलाइँ इनखर आपन भिनु पेछान हइन ई मंच के हुबगर कबि लागथ। इनखर ओज भरल कविता प्रस्तुति से कवि सम्मेलनेक आसर गरइम उठइ।

खोरठा लोक–गीत–संगीत के गाढ़ी जानकार के रूफ प्रमाणिक जीक जानल जाइ। ई आकाशवाणी आर दूरदर्शन केर पहिल खोरठा लोक कलाकारों के रूपें आपन नाम दर्ज करवलहथ। ई लेताइरें खोरठा राग रागिनिक ई निसेस गियान अरजल हथ।

बोकारो स्टील कारखानाइँ एखन मुइख हिन्दी अनुवादक रूपें काम कखइया प्रमाणिक जी आपन बाकी सवँइ खोरठा आर समाज सेवाइँ लगव–हथ। ई खोरठाक एगो जुग के प्रतिनिधित्व कखइया। खोरठा सेवी। इनखर प्रयोगधर्मी लेखन से खोरठा साहित भंडार लगस्तर अरइत हइ। ई नावा पीढ़ी के प्रेरणा लागथ। इनखर से खोरठा साहित के बड़ी आसा आर भोरसा।

सुकुमार

कला आमन मूल रूपें एके गो हे। साहित, चित्रकला, नाचकला नाटक कला आदि कला के भिनु–भिनु रूप लागे। विदवान गुला मान–हथ कि सब कला एक दोसर में समाइल रहो हे। दोसर भामें कहल जाइ पारे के साहितकार एगो चित्रकारो हवे पारे, नर्तकों हवे पारे, गीतकारों हवे पारे। मेनेक कोन्हो कलाकारें कला के सञे गुन तनि नी तनि पावल जाहे। ई बात के बड़का पटतइर रूपें खोरठाक नाम जइजका गीतकार सुकुमार जी केनाम बड़ी आंदरें लेल जाहेकी लेकि सुकुमार जी गीत गोरल हथ, गीत गावल हथ, साज बनावल हथ, नाटक लिखल हथ, चित्र बनवल हथ मेनेक कलाक सभे भेदें पारंगत हथ।

सुकुमार के मूल नाम सुरेश प्र. विश्वकर्मा हकइन। इनखर जनम 1956 ई. गोमो, धनबाइदेक भेडरा नामेक गाँवे भेल हलइन। मानवशास्त्र बिसहयें बी.ए. करल कर पेछु आइटी आई के डिगरी लेला तकर पेछु उनखर नइकरी लघु सिंचाई विभागें भेलइन।

एगो बात कहल गेल हेकि जे पोंहचल साधु हव–हथ ऊ जोग आर भोग दुइयो

संगे-संग कर-हथ आर दुइओ के बराबइर समान भावें आर इमान से कर-हथ। पुकुमार जी नइकरी कर-हथ तो मन लगाइके आर साहित सिरजनो। कर-हथ ओतने तने-मनें। सुरूआती बेरा सुकुमार जी हिन्दी भासाञ् नाटक लिख-हला, जे भागलपुर से छपो हलइन फिन आपन लिखल नाटक के घरे-गाँवें खेल-हला। मकिन जब झारखडे भाषा के पुनर्जागरण आंदोलन के आंधी उठलइ तखन ई. आपन भाञ्, माटी, मातरी भासा, मानुस के भावना के डोराञ् बंधाइ के खोरठा, भासाञ् साहित सिजन करे लागला आर झारखडेक पुनरजागरण आंदोलन के एगे। सकत खुटा कपे चिन्हाय लागला।

इनखर गोटा रचना-संसार के हेंदे रकम देखल जाइ पारे- खोरठाक छपब रचना-

1. डाह- नाटक
2. लालचंद चरित मानस - खंड काइब
3. बॉवा हाथेक रतन - खड आइब
4. पइन सोखा - खोरठा गीत संग्रह-गोछ
5. सेवाती - खोरठाा गीत संग्रह-गोछ
6. झिंगुर - खोरठा गीत संग्रह-गोछ
7. मंदनमेरी- संपादित गीत-गोछ

खोरठा गीत के कैसेट-

1. पिरित के मरम, 2. पिया रसिकवा, 3. फुलवा रानी, 4. फरीच डहर

हिन्दी भाषाक रचना - हरिश्चन्द्र तारामती, ज्वाला दहेज की, दो भाई, सिकंदरे आजम- आदि हिन्दी नाटक छपल हरन।

खोरठा गवइया रूपें सुकुमार - ई आकाशवानी आर दूरदर्शन दने ले की. हाईग्रेड के कलाकार रूपे चिन्हवल गेल हथ। एक लगाइत 1980 से आइज तक राइज स्तरीय, देस गीत आर भिनु-भिनु छोट-बोड़ मंचे आपन गोरल-बनवल खोरठा गीत गाइ के लोक केलोहा मनवाल हथ आर खोरठा भासा के एगो सकत भासा स्में चिंहवल हथ बा पहचान दियावल हथ।

उनखर कई गो गीत तो अखनुं लोक कंठे बइसल हे आर लोग के मुँह ले आपन्ही फुइट बहरा हइ तखन।

गीत देखल जाउक-

की दुखें तोर आँखि लोर गे घनि, की दुखें तोर आँखि लोर
की तोरा कहलउ केउ कुबोलिया
की तोरा देलउ केटु गारी

कोइली के बेरा बोले काग बोलिया
कोखिया में परे हमर गारी
एहे दुखें हमर आँखि लोर।

मेनेक एगो लोक आपन घनि (बहु) से पूछो हइ जे तोञ् की ले कांदब करो हें, तोर। कोइ गारी-मारी देलउ ने की? तखन ओकर धनी कहब करो हइ केउ हामरा गारी-मारी नाञ् देल हे। हमर बेटा आपन भाखानाञ् बोइला के हेन तेन भाखा कोलब करो हइ से से हमर कोख के गारी परो हइ तकरे चलते काँदो हिअइ।

ई गीत से सुकुमार जीक मनें आपन माञ् कोरवा भासा खातिर केतना परेम हइ तकरा बुझल जाइ पारे।

इनखर पदवी आर सम्मान- खोरठाक उपर इनखर अटूट पिआर आर निसठा आर काम के उपरे समइ-समइ इनखर जुकुरें पदवी आर सम्मान भिनु-भिनु संस्था से देला गेलइ जे ई रकम हइ-

1. खोरठा रतन - 1993 ई. - बोकारो खोरठा कमिटि दने ले।
2. प्रशस्ति पत्र - 1997 ई. - युवा सस्कृत महोत्सव बिहार, पटना।
3. अखड़ा सम्मान - 2006 - झारखडी भाषा साहित्य सस्कृति अखडा
4. राज्य स्तरीय पुरस्कार सम्मान- 2007 - कला- संस्कृति युवा कार्य विभाग, झारखड सरकार।
5. परम वीर अब्दुल हमीद सेवा सम्मान - 2007 - शोषित मुक्ति वाहिनी संस्था।

सेसें कहल जाइ पारे कि सुकुमार आपन गीत, सूर, ताल, राग आर राव से की खोरठा भासी की गइर खोरठाा भासी सभेक मनें खोरठाक उपर एगो कोमल आदर भाव बइठाइ देला आर लोकेक मंठे आपन गीत के सुर आर राग बइठाइ के खोरठाक मान-मरजाद गोटे ठोठाञ्-इलाकाञ्, एगो सकत खूँटा रूपें गाइड़ देला। खोरठा खातिर सुकुमार जी जे कुछ करला ई अनुकरन करेक जुकुर हइ, बंदन करेक जुकुर हइ, आदर करेक जुकुर हइ। एखन ई कुल 56 बछरेक हथ आम् दिने ई आरो सेवा करता आर खोरठा के एगो राष्ट्रीय पहचान देता-एहे कामना हे।

— — — — — —

खोरठाक विकासे पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी आर दूरदर्शनेक योगदान

कोन्हों भासा-साहितेक विकासे मौलिक साहितिक किताबेक छाड़ा पत्र-पत्रिका आर आधुनिक प्रसार माध्यम रेडियो-टी.वी. केरो योगदान हवे हे। इ जघ-ऽ भिनु-भिनु कइर देखेक चेष्टा करल जाहे।

पत्र-पत्रिका- खोरठाक विकासें पत्र-पत्रिकाक योगदान के दू रकम देखेक चाही, एकतो खोरठाक आपन छपल पत्र-पत्रिका आर दोसर, खोरठा छेतरेक अइन पत्र-पत्रिकाय खोरठा रचनाक स्थान, किंबा खोरठाक गतिविधि उपर छेतरिय पत्र-पत्रिकाय 'कवरेज'।

सबले आगु खोरठा भासाक आपन पत्र-पत्रिकाक चरचा करल जा हे जकर से पढ़वइया जाने पारता कि करवन केकर संपादन में कहाँ से की रकम खोरठाक पत्रकारिता जातरा कते दूर तक पहूँचाय आर ओकर स्वरूप की हलइ-हेन-तेन ...।

(क) मातृ भाषा (मासिक)- श्री निवास पानुरी जीक संपादन में जनवरी 1957 से खोरठा हिन्दी मासिक रूपें बरवा अड्डा (धनबाद) से छपे वाला ई संभवतः खोरठाक पहिल पत्रिका हे जे पुस्तिका कार 16 पाताक छप-हल जकर में कविता, कहनी, एकांकी आर समसामयिक घटना उपर 'रिपोर्टिंग' छप-हल।

एकर प्रवेशांकेक संपादकीय में पानुरी जी लिखला, "ई दिगें कुछ बच्छर से हमर मने एगो साध उठ-हल, साध रहे जे आपन मातृभाषें एगो पतरिका बाहर करे पारथली ... जेकर द्वारा समस्त खोरठा भाषीक दुःख-सुख, हर्ष-विषाद, हाव-भाव, रहन-सहन, जगत के सुनवे पारथली जे देशेक आरो भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी उन्नत युवकेक कदमे-कदम मिलाय चले पारतल, देसेक हितें, आपन के लगवे पारतला। ... तो तइसने जोदी सगे स्नेह पावी तो हमनी पारसनाथ ऐसन बोझा हांइस-हांइस ढोबे पारब-आर खोरठाक मुंह उज्जवल करे पारब आर पारब करे राष्ट्रभाषा हिंदी के पथ प्रशरत ...।'

मातृभाषाक दू अंक देखे पइलों मेंतुक गोटइना एकोनाञ। उनखर कवि मित्र विकल शास्त्री जीक अनुसार ई पतरिका ढेर दिन तक बाहराइल।

(ख) खोरठा (पखवारी पत्र) श्री निवास पानुरी जीके संपादने सभवतः अप्रैल 1970 में वरवा अड्डा (धनबाद) से छ पाताक पखवारी पत्र छपेक सुरु भेल जकर सह संपादक हला- प्रो. नरेश नील कमल। एकर में कहानी, कविता, लेख, व्यंग्य आर समसामयिक सामाजीक- राजनेतिक घटना उपर समाचारो छप-हलइ एकर प्रकाशक हला नारायण महतो सचिव, धनबाद लोक सेवा संघ।

एक दू गो गोटइना अंक पढ़े पइलों जकर से पानुरी जीक भीतर नुकाइल पत्रकार के तेवर के अंदाजा पावा हे।

(ग) तितकी (मासिक बुलेटिन) श्री विश्वनाथ दसौन्धी 'राज' जीक संपादने अगस्त 1977 में कतरास गढ़ (धनबाद) से 'खोरठाक' आकारे छः पाताक मासिक पत्र लगातार छपेक सुरूमेल 'तितकी' पूरा-पूरा साहितिक पत्रिका हल एकर में कहनी कविता, व्यग्य रचना, एकांकी छाड़ा आपन नागेक रकम उग्रतेवर के लेखो छप-हलइ। लेखकेक टीम करीब-करीब ओहे देखल जाहे से 'खोरठा' मे हल, अरालें पानुरी जीवा प्रेरणा आर उनखर गोटे टीम के सहयोग रह-लइ, कुछ लेखकेक नाम हे - श्री निवास पानुरी, विश्वनाथ नागर, विश्वनाथ दसौधी 'दास', प्रो. नरेशनील कमल, विनोद तिवारी, असद अली खाँ, गौरी शंकर, लाल प्रभाष, बद्री विशाल, काशी नाथ सिह 'मणि', प्रो. परिक्षित सिंह चौधरी, नारायण महतो-हेन तेन ....।

'तितकी' एगो सुगढ़ पत्र रह-हल एकरखोरठा भासा आंदोलन आर साहितिक विकासे ढेर योग दान हलइ- हालांकी बहुत दिन तक नाञचललइ, एकर पाँच अंक पढ़े पइलों जकर से सइ समयेक खोरठाक गतिविधि आईना रकम देखा हइ।

(घ) तितकी (त्रै.) कतरासगढ़ से 'तितकी' बंद भेल पाँच बछर बाद 1983 साले ए.के. झा के संपादनों कोठार (रामगढ़) में 'तितकी' नामे से एगो पुस्तिकाकार पतरिका बइरइलइ जेता साहितिक रचना से भरल हलइ आर ओकर में कुछ दोसरो झारखंडी भासाक रचनाक थान देल गेलहे। डॉ. बी.एन. ओहदार ओकर व्यवस्थापक आर सहायक संपादक हला।

एकर दू गो 'विशेषांक' खोरठा साहितेक अमुल्य धरोहर हे पहिल एकर लोकगीत संग्रह(तितकी-1-2/84) आर खोरठा सहित सदानिक वेयाकरण (तितकी1-2/84)

(ङ) 'तितकी' (अनियमित) खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद (बोकारो) अप्रैल 1997 मे 'तितकी' नामे में आपन 'मुख-पत्र' पुस्तिकाकार बहरवेक सुरू करल हे जकर में एगो हिन्दी रचनाक खांधा रहे हे। एकर संपादन हिसाबें शाति भारत आर दिनेश दिन मणि के नाम छपेहे। एखन तक (4/2004) अंक छपल हे एकर में भिनु-भिनु साहितिक रचना छाड़ा खोरठा साहितिक गतिविधि योक चारका रहे।

(च) इंजोर (आ.) धनंजय प्रसाद के संपादने मधुपूर (देवघर) से 1997 से एगो हिन्दी खोरठा पतरिका लगातार (लगभग बछरे) छइप रहल हे। एखनतक एकर आठ अंक पढ़ेपइलो संपादक से खोरठा खाँचा टा आर सुगढद्य बनवेक आस करेक चाही।

(छ) लुआठी (त्रै.) बालीडीह खोरठा कमिटी (बोकारो) बाट ले गिरिधारी गोस्वामी आकश खूँटी संपादित लुआठी (खोरठा साहितिक- सांस्कृतिक पतरिका) अक्टूबर 1999 में तिमाही रूप बीस पातांय् छइप रहल हे। एकर में प्राइ सभे साहितिक विंघाइ खोरठा रचना छपे हे, एकर छाड़ा खोरठा साहितिक-सांस्कृतिक गतिविधियो छपे।

एकर कइगो खास अंकेक खोरठा साहिते दामी योगदान हे, खोरठा लोकगीत अंक (अंक- 2, 3 आर 4) श्री निवास पानुरी स्मृति अंक (अंक-9, 10) आर खोरठा लघु कथा विशेषांक। ए.के. झा स्मृति अंक आदि।

लुआठी खोरठा साहिते वाद बिसेस के पछधरता के सुरूवे से विरोध करइत रहल हे। खोरठा भासा आंदोलन के दिसा तइ करे में लुआठी के महती भूमिका हे। खोरठाइ लिखे ले लउतन लिखवइयोक एगो मंच देहे, उहीं ई पूरना रचनाकारो के नउतन पिढ़ीक पढ़वइयाक पासें राखे हे।

सहिया (द्विमासिक) अनिल कुमार गोस्वामी संपादित वोकारो सें जुलाई 2000 से दूमहिनवा पतरिका लगातार चाइर अंक बाहराइल। सहिया में खोरठा छाड़ा अइन झारखंडी भासाक रचना खोरठानुवाद सहित छपा हल।

(ज) सहिदान (फाल्डर) देवघर से फाल्गुनी मरिक कुशवाहा के संपादने जनवरी 2000 साले बाहराइल।

(झ) धरति थान (फोल्डर) गिरिडीह से शिव नंदन पाण्डेय 'गरीब' के संपादने जनवरी 2002 में बाहराइल।

ई तरि देखल जाहे कि पत्रकारिता छेतरें सुरूवेले खोरठाक लेखक अगुवाइल हथ। खोरठा भासा-साहितेक विकासें खोरठा पत्रकारिकाक आपन गहती योगदान हे।

खोरठा छेतरें छपे वाला खास कइर हिंदी पत्र-पत्रिका के खोरठाक विकासे कम योगदान नखे। कुछ के नाम गनवल बिना रहाय नाय जाहे।

खोरठाक महान साहितकार श्री निवास पानुरी जीक बेसी रचना धनबाद से छपे वाला 'युगान्तर' आर आवाज में छपलहइ।

आवाज- खोरठा साहित में धनबादेक हिन्दी साप्ताहिक आर एखन दैनिक समाचार पत्र 'आवाज' के सबले बेसी योगदान हइ। एकर संपादक स्व. ब्रह्मदेव सिंह शर्मा पानुरी जीक संगी हला आर खोरठाक हित चिंतको सेलेल खाली खोरठा रचनाकार के 'आवाज' में छापकेनाय करला-बरन खोरठा पत्रिका 'मातृभाषा' (1947) आर 'खोरठा' (1970) आवाज प्रेसे से छपवेक बेवस्था करला। एखनु 'आवाज' खोरठा रचनाकार के थान देहे।

चमकता आईन- जानेक जुकुर बात हे कि हिन्दी दैनिक चमकता आईना पानुरी जीक गाँव बरवा अड्डा सेंहे छपेहे से लेल उ खोरठा रचनाकार आर खोरठा गतिविधि के बेस थान देहे, खासकइर विश्वनाथ दसौंधी राज, अर्जुन पानुरी, जयप्रकाश दसौंधी हेन-तेन के रचना जखन तखन छपे हे। कुछ दिन अर्जुन पानुरी के साप्ताहिक 'खारठा कॉलम' छपल।

मनमोहन पाठक क अनुवाद करल 2001 में भगवत गीता के खोरठा अनुवाद ध ारा वाहिक रूमें छपल।

बिहार आवजर्बर - आगु 'आज' फेर 'बिहार ऑबजर्बर' के नामें जे पत्रकारेक/साहितकारेक टीम काम कइर रहल हथ उसचेक खोरठाक प्रति टान देखल जाहे। बिहार आबजर्बर खोरठा केंद्रित अंक नायं बहरवल बरन-खोरठा साहितेक उसर गोष्ठीकों आयोजन करल हे। अइसने 'आज' गोटे-गोटे पाता खोरठा साहित के समरपित करल हे।

धनबाद से छपेबाला आइन अखबार प्रभात खबर, जागरण, हिन्दुस्तान, सब चाहे-अनचाहे खोरठा साहितिक-सांस्कृतिक गतिविधि के कवरेज देहथ।

एकर छाड़ा हिआंक साहितिक लघु पत्रिका में हूँ खोरठाक थान रहइ-जेरंग शालपत्र- 1977-78 सालें जे डॉ. वीर भारत तलवार आर मनमोहन पाठक के संपादन में 'शालपत्र' छपल ओकर में खोरठा रचना, रचनाकार संग भेंट वार्ता खोरठा किताब समीक्षा-छपल हे विश्वनाथ दसौंधी, प्रो. नरेश नील कमल, लखी कांत महतो, विश्वनाथ नागर के रचना पढ़े मिले हे।

'युद्धरत' आम आदमी-हिन्दी साहित्यकार रमणिका गुप्ता जी पानुरी जीक संगी रकम मान-हली जखन ऊ हजारी बाग में 'युद्धरत आम आदमी' हिन्दी त्रेमासिक संपादन करेक सुरूकरली दखन ढेर खोरठा रचना छापली। जून 95 में खोरठा में खोरठा केन्द्रित अंक छपलइ 1989 में कइयेक अंक में श्री निवास पानुरी जीक। युगेक गीता (कम्युनिष्ट मि निफेस्टो उपर लिखल काव्य) के धारावाहिक छपली। एखन ई पत्रिका दिल्ली में छइप रहल हे।

राँची से आदिवासी, डहर, संगम पत्रिका झारखंड टाम्स आर झारखडी संस्कृत के पछ घर कइयेक लघु पत्रिका आर भिनु-भिनु स्मारिका में खोरठा रचनाकार छापल जा हे।

इटा लिखइतें संकोच नाञ कि राँची से छपे वाला समाचार पत्रें से हिसाबे खोरठाक कवरेज कम देल जाहे, जे हिसाबे धनबाद के अखवारे। जाउ समये-समये राँची एक्सप्रेस प्रभात खबर, आज आर अइन पत्र-पत्रिका सब खोरठाक स्थान पइत रहथ।

कुल मिलाय एहे कहल जाय पारे कि खोरठाक विकासें एक वाट खोरठाक आपन पत्र-पत्रिकाक सुंदर परंपरा हे उहीं ई छेतरेक भिनु-भिनु पत्र-पत्रिकाक पूरा-पूरा योगदान हे।

आकाशवाणी - 1957 साले राँची आकाश वाणी केंद्र के स्थापना भेलइ आर तकर संघी झारखंडी भासाक साहितकार-कलाकार के मोका मिले लागलइ।

खोरठा भासाइ पहिल कविता पाठ करेक मोका पइला धनबाद के नारायण महतो 'ब्यथित' जी 1957 साले तकर वाद श्री निवास पानुरी, विश्वनाथ नागर, विश्वनाथ दलौंघी राज, प्रो. नरेश नील कमल रकम कवि सब आकाशवाणी में कविता पाठ करला आर ई सब के भेंट वारता चलइत रहलइ। दोसार वाट खोरठा लोकगीत के एगो लंबा परंपरा जे चल लइ से एखन तक जारी हे। एतनेनाञ आकाशवाणी से कहानी, आलेख आर भेंट वारता समये-समयें एखनु प्रसारित हवे हे। हाले (2003) आकाशवाणी राँची से झारखंडेक नवो भाषा के लोकसंगीत के विवेचना धारा वाहिक रूपे प्रसारित भेलइ जकर में खोरठा लोकसंगीत उपर 'आकाश खूँटी जीक मूल आलेख छाड़ प्रमाणिक जी डॉ. गजाधर महतो प्रभाकर जी के भेट आर गरिब, सुकुमार, प्रदीप, अनिता के गीत हलइ। डॉ. बी.एन. ओरदार के आधा दर्जन ले बेसी कहनी प्रसारित भेबइ।

डॉ. बी. एन. ओहदार के (चने) 1980 से अखन तक आकाशवाणी राँची आर हजारीबाग से प्रसारित भइ रहल हे, लगातार।

आकाश वाणी के एफ.एम लैण्ड हजारीबागे सुरूकरल गेलइ तकरो में खोरठा कलाकार आर कवि के हँकवल जाइत रहल हे।

एकर बाधु जे हिसाबे आकाशवाणी में खोरठाक भागीदारी हवेक चाही नाय हवेले तो एकर भीतर कुछ अइन भासा समूह के लोकवइना के कुचेष्टा हे जे खोरठा के दबवेक चेस्टा करेहे।

दूरदर्शन- राँची में दूरदर्शन के छेतरिय स्टुडियो बनल वद हिंयाक कविकलाकार के दूरदर्शन में मोका मिले लागलइ।

पहिलवेर 9 जून 1987 के राँची दूरदर्शन से छेतरिय भासाक कवि सम्मेलन के प्रसारण भेलइ जकर में सवसे पहिले खोरठा कवि रूपे प्रो. बिनोद कुमार जी आपन कविता सुनवला सगे-सगे नागपुरी, कुरमाली आर पँचपरगनियाँ के कवि कविता पाठ करल।

शिवनाथ प्रमाणिक, दिगम सिंह, हिरालाल सोरेन, प्रेमचंद माँझी सब के टीम के लोकगीत कइ बेर प्रसारित भेल।

'आखड़ा' नामेक दूरदर्शन पत्रिका में कइ बेरखोरठा कवि-कलाकार सब के डाकल गेलइ।

असल में राँची में ही आकाशवाणी, दूरदर्शन केंद्र हे आर एकर में राँची आर आस पासेक भासा-भासी समेक बेसी दबदबा हे सेलेल ऊसमेक कवरेज बेसी गिले आर खोरठा कलाकार 'उपेक्षा' के शिकार भई जाहथ।।

सेसे एहे कहल जाइ पारे कि
खुब वेसी नाच भेल्हूँ आकाशवाणी
दूरदर्शन के खोरठा भासाक विकासे जे
योगदान हे ओकर नकारल नाञ जाइ पारे।

2 बी/ 2-178
बोकारो स्टील सिटी-827001
फोन-06542-222437

लोक साहित्य

खोरठा लोक गीत

लोकेक बारे गावल गीत, लोक बट ले गावल गीत, लोक कंठे वइसल गीत। लोकेक हवा - बातासें सोंध माटिक खुसबू रकम पंइराइत गीत। लोकेक दरद बेथा, हांसी - ठठाक कथा कहनिहार गीत गोटे लोक के मनेक रंजन कर निहार गीत। जकर केउ रचनाकार नांञ्, गीतेक उपरें केकरो कॉपी राइट नांञ्, ट्रेडमार्क नांञ्। लोकगीत गोटे समाजेक, गोटे लोकेक साझा संपइत, साझा विरासइत, साझाा थाती।

जिगिआसु गुला पुछ-हथ कहाँ जनमलइ एतेक गीत। निश्चइ तबे लोक गीतेक जनम टा ओइसन समाजें आर समाज बेसस्थांञ् मेल हतइ जहाँ वेकति के महत नांञ महत्वपूर्ण हतइ गोटा समाज। जोदि एक वेकतिओ कोन्हों बनवल हवत वा पावल हवत तो ऊ गोटा समाज के संपइत वेगर कहले बइन जाइत हवत्। से हे भामें लोकगीत केउ एके दू गो लोक बनवल हता किन्तु ओखनिक कहुँ नाम नांञ् की ले कि बेकति तो महत्वपूर्ण नांञ् महत्वपूर्ण हइ समाज, सइ खातिर गीत टा समाजेक साझा संपइतत बइन गेलइ।

जिगिआसु पूछ हथ कखन जनमलइ लोकगी। विद्वानगुला कह-हथ - "मानुस जाइतेक पहिल बाइक तो गीते रहल हतइ"। जिनगी तो सुख आर दुखेक धूप आर छांव। जखन मानुस मनें सुखेक-दुखेक संवेदना से हिलोर उठल हतइ तखन ओकर मुँह ले फुइट बहराइल हतइ काइ गो से वदेक लड़ी आर सइ सवदेक लड़ी टा सूर आर लय के संग पावल हवत तो बइन गेल हवत गीत। एगो बात जाइन लिए कहइ कि प्राकृतिक वातावरण, परिबेस टा भावना के प्रभावित कर-हे। मेनेक जइसन -जइसन परिबेस जे कोन्हों छेतरेक रह-हे तो तइसने लोकगीतेक बोल टाव हव-हे।

खोरठा लोकगीत

खोरठा लोकगीत के जनम के संभावना आर अनुमान उपरे देल गेल लोकगीतेक जनम परंपरा ले भिन्न नाञ। मेनेक जहिआ से मानुस बइजकेक सुरू करलक लोकगीतेक जनम तखने से मानल जाइपारे। दोसर भामें खोरठा लोकगीतेक परंपरा ढइर प्राचीन हे, ई में कोन्हों दू राइ नाञ्। खोरठा भासा छेतरेक आपन भौगोलिक, प्राकृतिक परिबेस हे,

आपन सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक आर भासिक पृष्ठभूमि हे, सइसे खोरठा लोक गीतेक आपन विसेसता हे, आपन प्रवृति आर परंपरा हे।

खोरठा लोकगीत के प्रवृति

खोरठा लोकगीत के जे समाजें जनम भेल हइ से समाज टा प्राथमिक किसिम के समाज हइ जहाँ वेकति नांञ् गोटा समाज बा समूह प्रधान हव-हे, गोटे समाजेक लोक सकत अपनउतिक डोरांञ् बंधाइल रह - हथ। समाज के सीधा संबंध प्रकृति के रूप बदला-बदली रितु परिवर्तण से रह-हे। प्रकृति आर मउसम कटि गडबडाइ जाहइ तो लोकेक पूरा तंत्र गडबड़ाइ जा हे। मेनेक प्रकृतिक उतार-चढ़ाव संगे चल-हे खोरठा लोकेक मनेक उतार-चढ़ाव आर सइ लेताइरें सहितेक रूप टाउ बइसने बन-हे। मेनेक लोकगीत के प्रवृति टा के प्रभावित कर-हइ प्रकृति सइ से खोरठा लोकगीतेक प्रवृति हइ-प्रकृति चित्रण, कीबेक गोटा समाजे प्रकृतिक ऐगा अंग हकइ। के एगो अंग हेकह। सइ लागिन खोरठा लोकगीत मउसम बा रितु के बड़ी जबरजस भावें धरल हे। मउसम से बेमउसम लोकगीत गावल नांञ् जाइ आर जोदि केउ बेमउसम के गीत गाव हे ओकर बउराहा बुझल जा हे।

खोरठा लोकगीत के बिसेसता

मोटा-मोटी गोटे दुनिआइएक लोकगीत के रूप लछन एके रकम हव-हे तइओ पइत छेतरेक लोकगीत के आपन छेतरीय विसेसता पावल जा हे। खोरठा लोकगीतेक विसेसता हेठे रकम उखरवेक विनम्र चेसटा करल जाहे।

(क) मउसम पर आधारित गीत- खोरठा लोकगीत मउसम से अनुशासित हव-हे। मउसम से बे मउसम लोकगीत गावले नांञ जाइ, जोदि केउ गइबो कर हे तो ऊ सोझे बइतलाहा नांञ् कहाइ विचकुन माइरो खाइ पारे। हाँ "आकाश वाणी आर दूरदर्शन "गाव-बजाव हे तो उटा ओकर ना समझी हइ।

उदाहरण-

(ख) खांट-खुंट आकार- लोकगीत ढइर ढांगा ओसार नांञ् हवे। बस मोटे दू चाइर कली के। किन्तु एहे दू चाइर कली में समाइल रह-हे लोकेक दुखेक-सुखेक, हांसी ठठाक आर प्रकृति संग जो नार के कथा।

(ग) सरल सबदेक लड़ी- लोक गीतें सरल किन्तु सटीक सबदेक परजोग टा बड़का विसेसता हइ। जे सबद चांडे उसरे नांञ् आर जे लोकें बेसी पइरचल नखे से सबद के

परजोग हबे नांञ करे। ईटा स्वभाविक हइ की ले कि लोकगीत तो स्वभाविक रूपें फुइट बहराइल मनेक दसा हके, सइ ले बनावटीपन नांञ पावल जा हे।

(घ) खोरठा लोकगीत हके प्राकृतिक गीत- खोरठा लोकगीत के मुइख प्रवृति हे प्रकृति चितरण ईटा कटि जानेक जुकुर बात कि खोरठा समाज प्रकृतिक एगो अंग हकइ आर गोटा लोकेक गतिविधि प्राकृतिक गतिविधि से सीधा प्रभावित हव-हइ। से भामें खोरठा लोकगीत के जोदि प्रकृति के गीत कहल जाइ तो कोन्हों अन्योक्ति नांञ।

(ङ) सामुहिकता- खोरठा गीत एकला गावल नांञ् जाइ। प्राइ समूहें गावल जा हे, किन्तु आइझ काइल स्टेज आदि एकला गावेक परजोग चइल रहल हे। हाँ, एक बात हइ केउ गवइआ तो एकला गावे मकिन समूह ओकरा लोइक ले हे आर दोहराइ दे हे सेटा के ''गीत लोकेक'' कहल जाहे।

(च) खोरठा लोकगीत आर नाच- खोरठा लोकगीत संगे प्राइ नाच चलबे करे। रोपनी, डोहा उदासी, आदि कइ गो अपवाद रूपें हइ, जेकर संगे नाच नाइ चले।

(छ) खोरठा लोकगीत आर ताल- प्राइ लोकगीत ताल से नियंत्रित हवे, दू चाइर किसीमेक गीत छोइड़ के। जइसे जावागीत, रोपनी गीत आदि।

(ज) छंद जोजना- खोरठा लोकगीतें छंदेक रुप जइसन पावल जाहे से रूप टा साहित सिद्धांतें देल रूप से भिन्न हइ। जोदि एक दू गो गीते हइ भी तो सयास नांञ अनायास परजोग हवे पारे। हाँ एकर आपन छंद विधान हइ लयात्मक छंद। लयात्मक छंद के निर्वाह प्लुत वर्ण के परजोग से करल जा हे। एकर सब ले बड़ पटतइर डोहा आर चांचइर गीत हेके दुइओ मूल रूपें एके हे लय आरसूर से फरक करल जाहे हव-हे।

(झ) अलंकार- खोरठा लोकगीतें उपमा, उपमेय, उपमान आदि अलंकार के परजोग तो भेल हइ, किन्तु अनायास आयोजन नांञ्। बिच्कुन स्वभाविक आयोजन हइ। स्वाभाविक ईले कि प्रकृति से लोक के एतना भारी अपनउतिक नाता-गोता हइ कि प्रकृति संगे पइत काज बेपार के तुलना नांञ् चाहइथूँ भइए जा हइ। एगो गीतें हइ-"गढ भीतरें कांदइ दइआ पतसुगी रनिआ" पतसुगी से रानी के तुलना करल गेल हइ की ले कि जे रकम पत सुगी कोमल आर शिष्ट हव-हीक सइरकमें एगो रानी हवे। हिआँ उपमा अलंकार हइ।

(ञ) प्रतीक योजना- खोरठा लोकगीतें प्रतीक के खूब परजोग पावल जा हे। प्राकृतिक उपादान, पानी, बिजली, गाछ-बिरिछ, चरंइ चिनगुन, बरखा, घास आदि प्रतीक रूपें गीते खूब आइल हे।

(ट) खोरठा लोकगीतें सवाल जबाब- खोरठा लोकगीत क एगो जबरजस विसेसता हे कि गीतें सवाल जबाब हव हे खास कइर के चांचइर, टुसु आर डोहा गीतें। रीझवार

सभेक दू दल वइन जा हथ। एक दल गीत गाइके कोन्हों सवाल बा समसिआ राख-हे दोसर दल ओकर जबाब गीते गाइ के दे हे। झांरखंडे कुरमाली लोकगीतेंहुँ ई विसेसता पावा हे। एगो हराबदिया लोक गीत के पटतइर देखल जाइ-

एक दिना गेला रहों गइया-गोरखिया
मारि लेलों फुचिए सिकार
अस्सी ले चौरासी कुटुम ढेकरे
हाड़ छोड़ि मांसे बकुराइ।
असल जे हबें बाबू ताहूं रसिकवा,
एहो गीतेक अरथ बताइ।

खोरठा लोकगीत के महत

जिनगीक जातरांञ् अतीत के वेजांञ् महत हइ। केउ अतीत के विसाइर के छुछे वर्तमान के भरोसें रहे नांञ् पारे। लोकगीत हामनिक लाइ अतीतेक गीत हके। किन्तु हामनिक वर्तमान साहितेक जइर मोआइर तो लोक साहितें हइ। सइ से ई कहल जाइ पारे जे नींव के इटा के जे महत हे सइ महत टा हइ लोकगीत के। दोसर बात लोकगीत टा लोक मानसेक हजारों बछरेक जिनगीक जतराक दस्तावेज हके, जकर साहित्यिक सांस्कृतिक महत हे। मोटा-मोटी कहल जाइ पारे कि जे लोकगीत के ऐतिहासिक भासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक महत हे।

लोकगीत आपन समइ से मुठभेड़ करो गीत हके। आदमी के टक्कर समइ से हबे करो हे, ओहे टक्कर से उपजल गीत हके लोकगीत।

खोरठा लोक गीत के वर्गीकरण

खोरठा लोकगीत के समइ सिरें खांधा- खाधांञ्, बांटेक चेष्टा विदवान गुला करल हथिन। खोरठाक प्रतिनिधि पत्रिका 'तितकी' के लोकगीत विसेसांक (एक टोकी फूल) टांञ लोकगीत के विसइ आर अवसर के आधारें चेष्टा करल गेल हइ। जइसे कि विसइ के आधारें - परकिरति बरनन, रिझुवार, किसानी, चो-ज कोड आदि तइसने अवसर के आधारें - परब तिहारेक गीत - करम, सोहरांइ, बंउडी बीहा तीहा आदि के गीत।

शिवनाथ प्रमाणिक आपन 'खोरठाक लोक साहित्य' किताबें हेठेक रकम बांटल हथ।

1. संस्कार संबंधी
2. मउसम संबंधी

3. प्रकृति विसइ के
4. परब तिहारेक
5. श्रम संबंधी
6. सहिआरी
7. विविध मेसर - कोसर।

एखन तक उपलब्ध वर्गीकरण के लेताइरें आगू आरो आटा-पाटा ढुंढल जाइ पारे। सेटा हामें विनम्रतापूर्वक दिएक चेष्टा कर-हों।

खोरठा लोक गीतेक लेताइरें (प्रसंगे) अवसर बा रितु के बेजांञ् महत हइ। केउ मउसम ले बेमउसम गीत नांञ गावे पारे। जोदि केउ गइबो करे तो ऊ चाहे तो बउराहा कहाइ आर नांञ् तो माइर खाइ। विसइ तो मोटा-मोटी पइत मउसम बा अवसरें मोटामोटी एके रह-हइ। जइसे जिनगीक सुख दुःख आर प्रकृति से नाता-गोता आदि। तो अवसरेंक आधारें हेंठेक वर्गीकरण करल जाइ पारे।

(क) परब तिहारेक अवसर - करम परब - जावा गीत, भदरिया झुमइर गोवार कांदा, गोवार मांगा, हाराबदिया - चांचइर हाराब दिया - टुसु, डोहा

(ख) संस्कार गीत - विआह गीत - लगन बांधा, माडवा छारा, अमलोपिआ, कलसा थापा, दुआइर लागा, पानी काटा, माटी कोड़ा, हेनतेन, डमकच, झुमटा, खेमटा

(ग) काम धंधाक बेरांञ् गावल गीत- धान रोपेक बेरा - रोपनी गीत

डहहर चलेक बेरा - उधवा गीत, टुसु गीत, चांचइर

(घ) मउसम के आधार-

(अ) बरखा मउसम - भदरिआ झुमइर, उदासी, रोपनी गीत।

(ब) बंसत रितुक गीत- डोहा, टुसु, बीहा गीत

(स) बारह मसिआ- झुमइर, झुमइर, झुमटा, खेमटा डमकच।

ई गीत गुला जे कोन्हों अवसरें बा ठावें कटि लोग जोहडला तो सुरू भइ जा हे गीत संगे-संगे चले लाग-हे नाच।

लोकगीतेक जनम कहाँ से गेलइ, कखन से गावेक सुरू भेलइ तकर पटतइर रुपें एगो चांचइर गीत के देखल जाउक।

कहाँ रे चांचइर लेले जनभवा
कहाँ जे गेले छिरिआइ।
करमाहीं रे चांचइर ले ले जनमवा
सोंहराए गेलें छिरिआइ।

मेनेक चांचइर गावेक सुरू करम भसवल के बाद से सुरू भइ जा हे आर सोहंराइ पोंहचते-पोंहचते गोटे पसइर जा हे, से फइर धन कटनी तक चलते रह-हे। धन कटनीक

वाद चांचइर के दोसर लय लइके डोहा चले लाग-हे से भइर गरमी चलते रह-हे। मोटा-मोटी अघहन-चउठ से ब्रीहा गीत सुरू हव-हे से मोटा-मोटी रथ जतरा तक चल-हे।

भादो गणेश चउठ से सुरू भइ जाहे करम जितिआक लह-लही। करम मनवल के बाद सुरू भइ जाहे चांचइर। उपरें देल परिपाटी ले बाहइर गावेक मना हइ, किन्तु ई बंधन टा आइझ रेडिओ टीबीक जुगें कटि ढील भइ गेल हइ।

निष्कर्ष निमराआर

खोरठा लोकगीत आपन माटी, आपन परिबेसें जनमल हे सइसे गीतें पहाड़ी झरनाक उन्मुकतता, हरिनेक चंचलता, सरइ - सखुआक उचांइ आर सीधापन, पहाड़ी नदीक उन्माद, महुआक मादकता, पपीहाक आर्तनाद, पहाड़ी धरतीक उबड़'-खाबड़ आर सबसे उपर आपन माटीं उपजल है से आपन माटीक सोंधपन एक संगे सबटाइ पावल जा हे खोरठा लोक गीतें।

खोरठा लोक गीतें सिंगार

सिंगार के स्थायी भाव हे 'काम'। जिनगीक सबले कोमल 'भावना'। सिरिस्टिक जइर-मोआइर। जिनगीक सब गतिविधिक केन्द्र बिन्दु। सब चाइल बेबहारेक मूल में बइसल हे एकाइ काम भावना। काम भाव निझाइ गेले थइम जाइ सिरिस्टिक गाड़ी। रूइक जाइ दुनिआइएक काज बेपार। सइ लागिन प्रकृति समेत सब केउ 'काम' के जगवेक लाइ आपन-आपन ढर्राञ चेष्टा करल हथ आर एहे चेष्टा टाक नाम हके सिंगार। साहितें सिंगारेक चरचा तो हके एगो मुइख बिसइ।

सिंगारेक दूगो भेद विद्वान गुला मानल हथ-

(क) **संजोग सिंगार**

(ख) **बिजोग सिंगार।**

खोरठा लोक साहित आर सिंगार

खोरठा लोक साहितेक सबले लोक प्रिय विधा हके लोकगीत, जे लोक मानसेक गेय अभिबेकतियो कहा हे सेटांञ् सिंगार के बड़ा मारजादित परजोग पावल जा हे। जोदियो गोट आधेक बेंडाइल रूप टाव पावल जा हे किन्तु अपवाद रूपें सिंगारेक दुइओ प्रकार टा खोरठा लोकगीतें पावल जा हे।

विजोग सिंगार-

खोरठा लोकगीतें विजोग सिंगारेक एगो ढांगा आर ओसार परंपरा हे, संजोग सिंगार ले खुब वेसी। डोहा – उधवा उदासी आर चांचइर गीत तो वियोग सिंगारेके वेस पटतरिआ नमूना हके। बिरही लोकेक उदास हिरदइ से जखन दरदें भोरल सबद आर सुर बहराइ जा हे तखन गीत बइन जाहे। "सॉलीटरी रिपर" जइसन कविताक लिखवइआ वर्ड्स वर्थ जोदि खोरठा गीत सुनल रहतला तो सॉलीटरी रिपर नाञ् कोन्हों दोसर लिखल रहतला।

एगो डोहा गीतेक दरदें डुबल जाउक–

"काहे राजा, काहे राजा रसिका मारवले हो ....
अखरा जे सुना भइए गेल।
अखरा हीं रे, दइआ मकरा बिआइए गेलइ
मंदरा हीं, घुन लागी गेल।

एगो आर डोहागीत देखल जाउक

आसा जे दले सांवरों, दे ले ना भरोसवा हो
नीमा छांही राखले डंडाइ।
नीमा पतइ झरी गेलइ, भंवरा गुंजरी गेलइ।
आवे सांवरो नेखउ विसवास
सोझ सिरें कहइतलें
दुइमन छांड़इतलें, पइते–पइतें पोसाइ पीरित

माने एगो बेटी छउआ एगो बेटा छउआ के कहल हलइ जे ई नींम गाछेक जुडाञ् रहवे हाम अइबो। नायक तो नीम छांहुरे डंडाइ के आसरा देख हे मकिन नायिका नांञ आव हीक तइओ नायक आसरा देखते रह–हे। ई मांझे नीम पतइ झइर गेलइ, नीमेक फूल फइर गेलइ भंवरा गुंजार कइर के चइल गेलइ तइओ सांवरो के पता नांञ्। नायक के आसा टुइट जो हइ, नायिका पर पतिआर सेस भइ जाहइ।

एगो आर उदासी गीत देखल जाउक

असार सावन के मइहना हे। रझ–रझ पानीक झटा–झटी लागल हे मकिन अइसन समइएं पिआ घारें नांञ्। बोर गाछ तरे केउ छोंड तिरी री री वांसी फुइक रहल हे। दुरांञ् एकला ठाढ डींडा छोंडिक (नायिका) मनें उइठ रहल हइ हुक।

बोरा तरे वांसी बाजे ऽ
दुरांञ् डीडा छोंडी ठाठ रे, ऽ ऽ हाइ रे दइआ

ढरकि - ढरकि गिरइ लोर।
चइत-बइसाख मासें, पिआ गेलइ परदेसे
आपन्हु न आवे दइआ चिठियों नी भेजइ रे।
हाइरे दइआ, नाहिं कोन्हों भेजलइ संदेस।

भदरिआ झुमइरें विजोग सिंगारेक मरजादित रूप देखल जाउक-

नदिआ ऊपारे गोरी ऽ ऽ
झुमरि लागल भारी ऽ ऽ
कइसे नाचे जइवइ रे गुइआ, दुइओ कुल मोरल नदिया
मन करे धुरि जाब, मन करे पार जाब
मनें थिति हबे नांञ् रे गुइआ, दुइओकुल...............
झांप देले सभे डुबी जइतइ रे गुड़आ। दुइओ कुल.............

मेनेक-नदीक पारे भारी झुमइर लागल हे। गोरिक मन छटपटाइ रहल हे नाचे जाइक ले किन्तु ओकर ससुर कुल आर बापेक कुल ई दुइओ कुल के मांझे प्रतिष्ठाक नदी टप-टप भोरल हे। नदी पार कइर के गोरी बेचारी की रंग जइतइ एक बटे बापेक कुल। एक मन करे घुइर जाब दोसर मन करे चइल जाब। गोरिक मने बडका भारी बेचैनी हे सोंचे नाञ् पार हीक की करतीक की नांञ।

एगो दोसर भदरिया झुमइर देखल जाउक -

रितु बसंत भेल, पिआ मोके छोडि देल
कुहु-कुहु कोइली सुनावे, अइसन समइ गेल फावे

टुसु गीतें वियोग सिंगारेक रूप देखल जाउक-
टाक देखल जाउक -

एते बोड़ो पूस परबें
रहलें तोंञ् ससुर घरें
बोल गो टुसुमनी, तोर मन कइसन करे
जइसन सोल माछइर हेलाक मारे
मन तइसन करे।
बोल गो टुसु मनी मन कइसन करे।

संजोग सिंगार - खोरठा लोक गीतें संजोग सिंगार भाव कर गीत तो हइ मकिन विजोग सिंगार ले कम। टुसुगीत, डोहागीत, डमकच, झुमइर, चांचइर गीतें काम भावना टा बड़ी मरजादित रूपें बहराइल हे, लोक नायक आर नायिकाक कंठ ले।

एगो चांचइर गीत के पटतइर देखल जाउक -

नायिका करम परबें ससुराइर ले घर आइल हालिक। करम बीत गेलइ, आब दसंइ आर सोंहराइ परब आइ रहल हइ, सेटा तो ससुराइरें मनवेक हतइ। संगे संग पिआ मिलनो हतइ। एह टा सोइंच के नायिकाक मन फुलकित भइ रहल हइ आर ऊ ससुराइर जाइक आर पिआ मिलनेक तइआरी की रंग कर ही सेटा देखल जाउक

करम खेलले मंइआं जीतिआ गे
दइआ सोंहराइ खेलबें ससुरारी
ससुरारी जाबें मइआं, लेसन-पोतन करबें।
दइआ दुबें चाउरें गइआं के चुमाइ
खरिका खोटियें मइआं आंखि काजर करबें
दइआ आरसी देखिए मुसकाइ ।। (चांचइर)

प्रेम आर काम भावना के एगो मरजादित आर अलंकारिक रूप टा एगो भदरिआ झूमइरें देखेक जुकुर हइ-

नायिक सइरसाक बारीं गेल हिक। हुँआ सइरसाक पीअर रंग (दाग) ओकर साड़ीं लाइग जा हइ। ऊ धोबी से आग्रह कर-ही कि चाहे जते खरच हबे, रंग के दाग छोड़ाइ दे। मकिन धोबी कह हइ - पीअर रंग के दाग नांञ छुटतउ। हिंआ पूरा गीतें 'लाक्षणिक' परजोग भेल हइ। सइरसा फूलेक पीअर रंग प्रेम के प्रतीक हकइ मेनेक नायिका के प्रेम भइ जा हइ नायक से सइरसा बारीं। नायिका प्रेम रंग के छुटवेक चेस्टा कर-ही, ममिन प्रेमेक रंग छूट हे कभू?

गीत-"राइ बारी राइ बारी, गेली सरिसा बारी
लागि गेलइ
रे कुसुमी रंग, दगिया लागी गेलइ
देबउ हो धोबी भइया डाला भइर सोनवा,
धोइए दी हें
आगि लगाय देब डाला भइर सोनवा
नाहिं छुटइ रे कुसुमी रंग दगिआ .... (भदरिया झुमइर)

भदरिया झुमइरेक एगो आर गीत देखल जाक-

नायक-नायिका दूइयो एक दोसर के उपरें हाव-भाव, पिंधन-ओढ़न देइख के टान (आकरसन) बाइढ़ रहल हइ। गीत देखक जाउक-

"ककर हाथे सोना रूपा अंगठी हो, हथवा चमकी गेलइ।

अरे हो ऽ ऽ रसिकाक हाथे सोना रूपा अंगठी गो
हथवा चमकी गेलइ।
सावरो के मुड़े बहुरा फूल गो खांपवा धमकि गेलइ।''

नायक के हाथे पिंधल सोना रूपाक अंगठी नायिका के मन के टाइन रहल हे आर नायिकाक खांपाक धम-धम महक टा नायक के आपन बटे टाइन रहल हे। ई दुइयो के मिलाइ के टनाइ रहल हइन ओखनिक मन।

निष्कर्ष निमरा आरें-

इ भाभें कहल जाइ पारे जे खोरठा लोक गीतें सिंगार भावना के ढांगा ओसार परंपरा हे, किन्तु सब ले बड़ बात सिंगार भावना के मरजादित परजोग खोरठा लोक गीतेक विसेसता हे। 'काम-वासना' के मरजादित परजोग जोदि आदमी के ऊँच उठाइ दे हे तो अमरजादित परजोग टा धरितियो सुंघाइ दे हे। सइ लागिन खोरठाक सिंगारिक गीत टा तजेक नाञ, अपनावेक चीज हइ। एकर मरजादा बंचाइ राखेक दरकार हइ की लेकि आइझ ई भागा-भागी आर तथाकथित आधुनिकताक जुगें ई मरजादा हेराइक डर-हे।

खोरठा लोकगीत आर प्रकृति चित्रण-

पइरबेस के प्रति मनेक साबदिक परतिकिरिया के नाम हके साहित, मेनेक जइसन पइरबेस होव हे, साहित के रूप टा वइसने होव हे। खोरठा भासा आर साहित तो प्रकृतिक कोरांञ, कांखाञ जनमल-बाढ़ल हे, तबे खोरठाक लोकगीते प्रकृतिक छापा तो कतेक हतइ सेटा तो आपन्हीं फुरहाइ जा हे। खोरठा छेतरेक लोक तो प्रकृतिक संगे खेले, प्रकृतिक संगे हाँसे आर कांदे, प्रकृतिक संगे नाचेक आर गावेक गीत हके। प्रकृतिक पइत करवटेक छाप टा खोरठा लोकगीतें देखल जाइ पारे की ले कि लोकगीत तो हके लोकमानसेक गीतात्मक अभिव्यक्ति। लोकगीतेक पइत रूप चाहे भदरिया झुमइर हो, चांचइर हो, करम-जावा गीत हो, डमकच, डोहा, टुसु-भादु, सोहराय हो, चाहे हो उदासी, सब टांञ प्रकृतिक भिनु-भिनु रूप टाक दरसन होव-हे। दोसर भाभे यदि कहल जाय जदि खोरठा लोकगीत टा प्रकृतिक करवटेक गीत हके तो ई में कोन्हों अतिश्योक्ति नांञ। एगो भदरिया झुमइरें प्रकृतिक छटा आर लोकमने **उपजल उत्साह के कटि देखल जाउक-**

(1) "साइंझ के बेरा भेइ गेल हे आर झींगा फूल बारी-झारीं फूइल गेल हे। मोटामोटी सब फूल बिहान बेरा फूल-हे, मकिन झींगा फूल साइंझेक बेरा फूले। ईटा प्रकृतिक उल्लास के प्रतीक हकइ आर इ उल्लास से उल्लसित होव-हइक नायिका मन आर उ आपन पिया से कह-हइ, 'हे पिआ, झींगा फूलेक माला बनवा आर आपन हाँथें हमर

खोंपांञ गोइथ दाय तकर पेछू चला गावेंक अखरांञ नाचे जाब की ले कि एखन हामे रीकें बेआकुल भइ रहल हों।

'बेरिया डूबिये गेल, झींगा फूल फूटि गेल।
गांथू पिआ झींगा फूल, खोंपा में लगाइब हो।
खोंपा में लगाइ पिआ भेलि समतुल हो,
चला पिया नाचे जाइब, रीझें बेयाकुल हों।।

(2) एगो आर भदरिया झुमइरें प्रकृतिक करवट के संगे लोक मने उठल हुक के कटि देखल जाउ-

"नदिया के धाारि-धारि, फूटलइ फूल कासी-कुसी,
नूनिक मनऽ नइहर चलि गेल।
कांसि फूल फूटि गेल, आसा मोर बाढ़ि गेल,
देखि-देखि अंखिया टटाइ,
रे भादर कुहकल आय।
कांसर फूल झरि गेल, आसा मोर टूटी गेल
कांदि-कांदि छतिया धोवाय,
रे भादर चलल सिराइ।।

नदि-नालाक धाइरे-धाइरे जब चरक-चरक कांसि फूल झकझकाय के फुइट जाहे तो ससुराइरे बइसल बेटी-छउवा बुझ्झ जा हथ कि भादो महीना आय गेल आर संगे-संगे बाइढ़ जा हइन, नइहर जायके आसा आसरा देखे लाग-हथ लेनिहर के। आसा देखइते उकर नजइर टटाय गेल हे, कांसि फूइल झइर जाहे तब ओकर आसा टुइट जाहे की ले कि भादो तो सिराइये गेलइ, करम परबो पार भेल हतइ तो आब नइहर जाय के कि हतइ।

(3) एहे तइरमा एगो आर भदरिया झुमइरेक भाव देखल जाउक कि, की रंग बोनेक चरइं गुला कखन-कखन आर की-की बोल-हथ आर सेइ रकम नायिकाक मने की रंग पियाक प्रति मने प्रमेक ढेउ उठ-हे। नायिका एकाय घारे हिक, ओकर आइखें नींद नांञ। नींद हतइ की रंग ! राइत भइर भगजोगनी भकार-भुकुर दिया बारले ओकर कोठरीं भूइल चल-हथीं। एहे रकमे आधा राइत पार भइ गेलइ कि भेंगराज चरंइ बोले लागलइ। तबे नायिका भगजोगनीं से पुछहिक - 'अरे भगजोगनी, तोंञ सोझे दिया बारले चल-हें, ना आर कोन्हों जानब करो हें। बताव तो कतेक पहरें तिलइ पंड़की बोल हिक आर की बोल हे, सेइ रकमे कखन भेंगराज चरंइ बोल-हे आर की बोल हे। गीत देखक जाउक-

"कति खिने बोले तिलइ पड़कि भगजोगनी गे,

कति खिने बोले भेंगराज।।
कथि-कथि बोले तिलइ पड़कि भगजोगनी गे,
कथि-कथि बोले भेंगराज।।
पहिल साइंझे बोले तिलइ पड़कि भगजोगनी गे,
आधा राति बोले भेंगराज।।
पिया-पिया बोले तिलइ पड़कि भगजोगनी गे,
धनि-धनि बोले भेंगराज।।

(4) एगो डमकच गीते बसंत रितुक छटा देखल जाय कि की रंग अम्बा मंजरेक रस पी के मधु माइत गेल हे, सेइ रकम पिया आपन धनिक प्रेमे माइत गेल हे-

"अम्बा मंजरे मधु मातलइ हो,
तइसने पिया मातल जाइ।
नागा-नागिन आंचुर छोड़लइ,
तइसने पिया छोड़ल जाइ।

पेछू पिया दगाबाज निकलबइ आर आपन धनी के ठीक ओहे रकम छोइड़ के चइल गलइ जे रकम नाग आपन आंचुर छोइड़ के बेगर कोन्हों मोह ममता के चइल जाहे।

(5) एगो 'डोहा' (उधवा) गीत के भाव देखल जाउक-

कि की रंग प्रकृति उलाहना के पात्र बनल हे। महुआ फूल गिरेक घरी पानी आर बदरीक बेबहार ठीक वइसने भइ जा हे जे रंग कि केउ मुरूख पति आपन धनीक सिंगार-पटार आर छतनार खोंपाक मरम नाय बुझे पार हे आर ओकरा प्रताड़ित कर-हे, जे रकम पानी आर बदरी तो असमइये महुआ फूल के मारिये दे हे। हियाँ महुआ फूल टा प्रतीक हकइ युवती नायिका के, आर पानी आर बिजली टा मुरूख पति के समान हइ-

"महुआ रे महुआ, रसे भोरल महुआ हो, ऽ ऽ
पानी-बिजुरि लइये गेल।
महुआ के तेलें सांवरों, खोंपा चिकनावले हो, ऽ ऽ
खोंपवा बंधले छतनार।।
खोंपवा सरिखे सांवरो, पिया नाहिं भेंटलउ हो, ऽ ऽ
भेटांय गेलउ मुरूखे जरूर।"

निष्कर्ष निमरा आरें-

खोरठा लोकगीतें प्रकृतिक चित्रण के ढांगा परंपरा हइ, सेटा हियां पुरापुरी लिखा

टा मुसकिल हइ, की ले कि हियां समय नांञ, अवकास नांञ। सब ले बड़ बात हइ कि लोकगीतें सबदेक लाछनिक परजोग आर अलंकार जोजना टा देइख के मने हइचक बुझे हे, जे लोक के हामनि असइभ, बुझ हि, से लोक टा असइभ नांञ। कटि हामनिए बेसी सइभ भेइ गेल हि की ले कि हामनी आपन बिरासइत के बिसइर रहल ही। गीतें रस, छन्द आर अलंकार जोजना जदियो अनायासे भेल हतइ तइयो लोक मानसेक रचनात्मक खेमता के बुझल जाय पारे।

— — — — — —

खोरठा लोककथा

लोक कथा माने लोकेक कथा। लोक बटले कहल कथा। लोक बटले सुनल कथा। लोकें पइरचल कथा। लोकेक मनें मगजें बइसल कथा। हजारों बछर से परंपराञ् मुहें-मुहें चलल आइल कथा।

एकरा लोक कहनी बा कहनी नाम्हु जानल जाहे। 'कहनी' सबदेक जनम संस्कृत के 'कथ' से भेल हइ। जैसे - कथ - कथनी - कहनी। जोदि कहनी सबदेक आरो तोड़ल जाइ तो - कह +नी रकम हतइ। जेटाञ् भाव फुरछा हइ जे केउ ककरो कइल रहल हे - कहे ना ! कह नी! एकर से पता चल-हे कि कहनी कहेक में एगो कहवइया आर एगो सुनवइया टा हवेक आवश्यक शर्त हइ।

लोक कहनीक जनम - कहनिक जनम कखन भेलइ सेटाक कोनो ठोस परमान हमिन ठीन नाञ। हमीन ठीन छुछे संभावना हे, अनुमान हे। अनुकरण - नकल, अभिव्यक्ति आर उत्सुकता, कुतुहुलता आदि आदमिक आदिम प्रवृति हके। आर एहे प्रवृति टा हकइ कहनीक जनम के कारण। मोटा-मोटी आदमी जे दिन से बइजके सिखल, सइ दिन से कहनीक जनम मानल जाइ पारे। दोसर भांभे कहनीक जनम आदमीक सभ्यता के जनम के कहनी कहल जाइ पारे। एखन जे कहनीक कहेक आर सुनेक परंपरा हे सेटाञ् कोन्हों बुढ-पुरनीया, आजा-आजी, नाना-नानी कहनी कह-हथ आर सुन-हथ नाती, नतनी, पोता-पोती आरो हेन-तेन गिदर । आर कहनिक कहेक बेरा हतइ कोन्हों फुरसइतेक बेरा बा कोन्हों बइसल-बइसल कोन्हों हलुक काम करेक बेरा।

बुढ़ा-बुढिक तो कोन्हों काम नाञ्। बइसल रह-हथ एकाइ सेइ रकमे छउवा गिदर ठन कोन्हों काम नाञ् पढ़ा लिखा आर खेलेक छोड़ाइ। हवे पारे फुरसइतेक बेरा बढ़ा-बुढ़ी आदि के घेइर के बइस जाइत हता गिदर, बुतरू आर कोन्हों जानेक सिखेक लाइ उत्सुकता बस बुढ़ा-बुढ़ी के कहल हता-आजा कहे ना ! आजी कह नी! नानी कह नी! तखन बुढ़ा-बुढ़ी कहल हता - "की कहिओ?"

कोन्हो कह नी !

एहे रकम गिदर बुतरू बुढ़ा-बुढ़ी के खुब तंग करल हता तो अनसाइ के कहल हता - सुना ! ''कहनीक दू बहनी माछीक दू सिंग

नाचे बरदा धातिंग तिंग।''

चाहे ''एगो हलइ राजा, एगो हलइ रानी/दुइयो मइर गेला सिराय गेल कहनी।

जा भागा सिराय गेलो कहनी। किन्तु गिदर भागला तो नाञ् बिचकुन आरो

जम-जमाइ के बइस गेला आर कहनीक कहेक आग्रह आरो बाइढ़ गेलइन।

तबे की करता बुढा़-बुढ़ी, कोन्हो कहेक तो परबे करतइन। तबे नानी मगजें जोर देल हतीक, कोन्हो इयाद करेक लाइ आर इयाद भेल हतइ से दिन के बात जे दिन बोने पतइ तोरे गेल हली नानी आर हुवें देखल हली एगो खेरहा के फाच-फुच उछलइत। सेटाञ् नुन मेरचाञ् लगाए के नानी कहल हतइ - **"सुना बाबु एगो कहनी। एगो हल बुढ़ी। बुढ़ीक घरे हलइ बिहा। दोना पतरीक जोगाड़े बुढ़ी गेल हली बोने पतइ तोरे। बोने बुढ़ी के एगो खेरहा भेंटइलइ। खेरहा कहलइ नानी! पतइ तोड़े आइल हेंत्र हाँ पतइए तोड़ें आइल ही। तखन खेरहा कहलइ नानी! हमहु पतइ तोइर दियो। हाँ बेटा तोइर दे ना बड़ी नाम लेबो। तबे खेर्‌हा सुरू करल - पतइ तोड़े ठास-ठुस खेर्‌हा नाचे फाच-फुच।"**

एहे रकम कहनीक कहेक आर सुनेक परंपरा के जनम भेल हतइ। सेटा आइझो तक खुटी दर खुटी चलल आइल हे। करे -करे नाना रकमे कहनी जुटते गेलक। ई भाभें कहल जाइ पारे जे कहनीक टवान प्राग्वैदिक जुग ले आगुवे ले हइ। किन्तु कटि सुपट प्रामण नाञ् भेंटाइल से विद्वान गुला वैदिक कथा, गुणाढ्य के वृहद कथा, आचार्य छेमेन्द्र के वृहद कथा मंजरी, कथा सरितसागर, पंचतंत्र, जातक कथा आदि से मान-हथ। किन्तु विद्वान गुला एहो मान हथ कि संस्कृत प्राकृत भाषाक उपरे कथा संग्रह टा केउ रचनाकार के मूल रचाना नाञ्। बिचकुन जे कथा टा लोकें परचलित हलइ सेटाइ के एक ठावें जोहड़वल गेल हइ। विद्वान गुला एक सूरें एहो मानल हथ कि भारते हके लोक कथाक जनम के आदि ठांव आर हिंआञ् ले गोटे दुनियाइएं इ परंपरा टा पसइर गेलइ।

लोक कथाक वर्गीकरण - वर्गीकरण के कोन्हों आधार हवेक चाही। खोरठा लोक कहनीक के खांदा-खादाइ के बांटेक लाइ हेठे लिखल आधार खोजल-पांजल गेल हे।

(1) रूपगत आधार-

(क) गइद रूप

(ख) गइद-गीत मेसर रूप।

(क) गइद रूप- जे कहनी निछू गद रूपें हव-हे। मोटा-मोटी 99 प्रतिशत कहनी अइसने हव-हे।

(ख) गइद गीत मेसर रूप- जे कहनीं बाजे-बाजे गीतो गावल जाहे। जइसे - सातस भाई बहिन, कुटसा चरंइ, चुनगुनिआ आर कउआ। अइसन कहनी गनती के दू चाइर गो हइ।

(2) आकारगत आधार-

(क) छोट कहनी

(ख) ढांगा कहनी

(13) सुखान्त कहनी- कहनी मोटा-मोटी सुखान्त हव हे। उपवाद रूपें एक दूगो कहनी दुखान्त रूपहुँ पावल जाहें।

(14) खोरठा लोककथांञ् समसामयिकता नांञ् पावाइ।

खोरठा कहनीक महत

साहितें कहनी विधा सबलें लोकप्रिय विधा हके। लोकप्रियताटाक ओजह हेंठे लिखल रकम बुझल जाइपारे।

(1) मनोरंजन के बडका साधन- मनेकरंजन टा मानुसेक आदिम आवश्यकता आर सेइ आवसकता टा पुरा हव-हे कहनि आदि सुइन के। मनोरंजन जिनगीक एक रसता के तोइड़ देहे आर फिर ताजा कइर के आगु बाढ़ेक लाइ उतसाह के संचार करहे। आज मनोरंजन के ठेइर साधन हे तकर चलते लोक कहनीक महत आइजेक समइएं ढइर कम भइ गेलेहे।

(2) सांस्कृतिक महत्व- लोक कहनीं आपन समाजेक सांस्कृतिक छापा पावल जाहे। आपन पछान के बाताव-हे आर जिनगीक दरसन के बतावहेक।

(3) समाजेक दसाक बरनन- लोक कहनी से आइज से हजारों बछर आगू समाज के बारे जानल जाइ पारे। रहन-सहन, खान-पिअन, समाज व्यवस्था आदिक टावान लोक कथांञ् भेटा हे।

विकास कथा

लोक कहनी के आड़ा ले गोड़ा तक लेखा-जोखा करल जाइ तो समाजेक विकास के टवान मिल-हइ। जे रकम सब ले आगु कहनीं अंधविश्वास आर नर हत्या आदिक प्रवृति पवा-हइ किन्तु जइसे-जइसे समाज आगु बाढ़ले जाहे कहनिओक रूप तइसने बदइल जाहे। भाउल बांदर सिआर आदिक कहनी पात्र के जगहें राजा, मंतरी, ठग, चोर, भुत, देवता, राकस आदि लइ लेहे।

निष्कर्ष निमरा आरें-

कहनींक विषय के लेताइरें नले गेले पाव-हीं कि खोरठाक मूल बा ठेठ कहनीअइन तो कटि खांट-खुटं हव-हइ मकिन दोसर-तेसर सांस्कृति के प्रभाव जे कहनींअइनें हइ सेटा करे-करे लम्बा भेल जा-हइ। आर खाम ख्याली, काना पतियार, आलौकिकता, भाई-भगवान के चरचाउ टा कटि बाढ़े लग हइ। माइ बाप के बोड़-छोट के आदर दियेक, बेड़ाइल लोक के सजा दिएग, बेस लोक के सुफल मिलेक आदि

कहल जाहे।

(2) कहनी कहवइया आर सुनवइया- कहनी कहवइया मोटा-मोटी बुढ़ा पुरनिया आर नाञ् तो कटि बात बनवा आर सामाजिक किसिमेक लोक हव-हथ। सुनवइया हव-हथ छोट-छाट गिदर बुतरू आदि।

(3) आपन परिवेसेक कथा- खोरठा कहनीं आपन परिवेस बेस भावें पावल जाहे। जे रंग - झार बोन, सिआर, खेरहा, बाघ, सांप, पहार-पर्वत आदि।

(4) आपन समाजिक परिवेश के कथा- खोरठा कहनीं गांव घर, रिस्ता-नाता, जाइत, परजाइत, छोट-बोड़ परिवार आर बेवसथा, भाई - बहिन आदिक छापा बेस भाबें पवाइ। जइसे भाई-बहिन, मोसी-माई आदिक कहनी।

(5) सामजिक परिर्वतनक की कथा- खोरठा कहनींक बेस भाबें नले आर गोड़ा गमवें गेले समाजें परिर्वतन के आर विकास के साफ-साफ छापा पावा-हे। जे रकम सबले ुरना कहनीं गुलाञ् आदमी-आदमी के माइर के खाइ जाहें (सात भाई-बहिन के कहनीं)। बोनेक सिआर, खेरहा आर बुढ़ा-बुढीक नाता-गोताक कहनी, ठग, चालाक, चोर, मंतरी, रानी, राजा, राकस आर ओकर प्राण कोन्हों चरत्र उपर रहेक कहनी (तिलस्मी कहनी)। ई सब कहनी टा गोटा समाज के विकास कथा कह-हे।

(6) मनोरंजन कथा- खोरठा कहनी मोटा-मोटी मनोरंजने करेहे किन्तु भीतरें -भीतरें सिखा बुइधो देइ दे-हे।

(7) सरलता- खोरठा कहनीक खोरठा छेतरेक सरल लोकेक निअर सरल आर सोझ हव-हे। बेसी पेंच-पांच नाञ्, बेसी लाम-काफ नाञ्।

(8) अश्लीलता का अभाव- खोरठा कहनीं अश्लीलता नाहिंएक जुकुर पावाइ।

(9) आपन सांस्कृतिक छापा- खोरठा कहनीं आपन छेतरेक रीति-रिवाज, चाल व्यवहार के बेस पता चल-हे।

(10) भूत-प्रेत सहायक रूपें- खोरठा कहनीं भुत प्रेतटा आदमीक उपर हावी नाञ् हवे मकिन आदमी आपन बुइधेक जोंरें भुइत-प्रेत के आपन धांगर बनाइ लेहे। जइसे - ओते आर तापे भुइत के कहनी।

(11) अलौकिकता कमी- खोरठा कहनीं भाइग, भगवान आर अलौकिकताक ढइर कमी पावा हे। जोदि एक दूगा कइसन कहनी हइ तो ऊ मूल कहनी नाञ्।

(12) स्वाभाविक बरनन- कहनी बरनानात्मक सइलीं कहल जाहे आर एक दम स्वभाविक रूपें सरल सबदें मकिन कभु-कभु मुहावरा आर लोकोक्तियां के परजोग चल हे। अलंकारिक बरनन तो एकम नांञ् हवे।

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रंथ

1. विभाग परियय – जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची।
2. झारखण्ड की भाषाएँ : समस्याएँ और समाधान।
3. झारखण्ड के सदान – डॉ. बी.पी. केशरी
4. मगही भाषा – डॉ. सम्पत्ति आर्याणि
5. झारखण्ड की रूपरेखा – डॉ. राजकुमार तिवारी
6. भारत का भाषा सर्वेक्षण (1) – डॉ. अब्राहम ग्रियर्सन
7. मैथिली भाषा का विकास – डॉ. गोविन्द झा
8. मुंडा लोक कथाएँ – डॉ. जगदीश त्रिगुणानन्द
9. भाषा विज्ञान – डॉ भोलनाथ तिवारी
10. दो-हिन्दी कोष – प्रो. ब्रजबिहारी किशोर नागालैंड भाषा परिषद्, कोहिमा
11. कुडुख हिन्दी कोष – प्रो. ब्रजबिहारी किशोर नागालैंड भाषा परिषद् कोहिमा
12. कुडुख हिन्दी कोष – आगापति तिर्की, राँची
13. हिन्दी व्याकरण – कामता प्रसाद कुरू
14. संताली भाषा शिक्षण – प्रो. ब्रजबिहारी किशोर नागालैंड भाषा परिषद् कोहिमा
15. संताली : द बेस ऑफ वर्ल्ड लैंग्वेज – परिमल चन्द्र मित्रा
16. भाषा के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी – रामविलास शर्मा
17. माल्टो : एक इथनो सेमेन्टिड स्टडी – भारतीय भाषा संस्थान, मैसुर
18. मुण्डा भाषा का व्याकरण – डॉ. रामदयाल मुण्डा
19. पालि महाव्याकरण – भिक्खु जगदीश कश्यप
20. हिन्दी साहित्य कोष – डॉ. धर्मवीर भारती
21. खोरठा भाषा विज्ञान – डॉ. ए.के. झा

सार्वभौम मूल्य के पोषण खोरठा कहनी बेस भांभे भेल हइ। जे भी हइ खोरठा कहनी आपन माटीं जनमल हइ सइ से इ कहनीं माटीक सोंधापन, झारखडींक धरती के उबड़खाबड़पन सरइ सखुया गाछेक सरल सोझापन परास गाछेक बेडौलपन जदियो हे तइयो इ कहनी आपन हे, आपन पछान हे सइ से एकर में मांय आर माटी जइसन अपनौतिक नाता-गोता हे, टान हे, लगाव हे, खिंचाव हे। एकरा बांचाइ राखेक एखन दरकार हे।

– – – – – –

लेखक परिचय



डॉ. बी.एन. ओहदार

जन्म : 2 सितम्बर, 1952

पता : ग्राम-चेटर, पो.- गोसा जिला- रामगढ़ (झारखण्ड)
मो. : +91-9939386799

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक-1974
खोरठा भाषा में स्नातकोत्तर-1986
हिन्दी में स्नातकोत्तर-1994
पी.एच.डी.- खोरठा
शोध विषय : खोरठा के क्रियारूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रकाशन-

1. खोरठा निबंध (वैचारिक निबंध संग्रह)-1990
   प्रकाशक : जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची
2. अनुदितांजलि (दुष्यंत कुमार एवं बहादुरशाह जफर के गजलों का खोरठा अनुवाद)-2006
3. खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्‌भव एवं विकास)
   प्रथम संस्करण-2007
   द्वितीय संस्करण-2012
4. भाषा संस्कृति पर तीन दर्जन से अधिक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित (1983 से अब तक)

शीघ्र प्रकाश्य-

(क) खोरठा लोक साहित्य
(ख) The Cultural Heritage of Jharkhand
(ग) पुरबाक झोंका (खोरठा कहानी संग्रह)
(घ) बतास दूत (खोरठा काव्य)- कुछ अंश साप्ताहिक पत्रों में प्रकाशित

संपादन-

(क) प्रधान संपादक- त्रैमासिक पत्रिका 'करील'
(ख) प्रबंध संपादक- त्रैमासिक पत्रिका 'तितकी'
(ग) मुख्य संपादक- झारखण्ड संदेश (हिन्दी साप्ताहिक)

पदाधिकारी-

(क) निदेशक : खोरठा भाषा साहित्य-संस्कृति अकादमी, रामगढ़
(ख) पूर्व सदस्य : जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार

सम्मान-

(क) खोरठा रत्न- 1990

सम्प्रति-

1. स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
   राँची विश्वविद्यालय, राँची में अध्यापन
2. **गेस्ट फैक्लटी विनोवाभावे विश्वविद्यालय, रामगढ़**

मार्गदर्शन पब्लिकेशन
राँची, झारखण्ड